खुश खबर

"श्री परमात्म मार्ग दर्शक"

यह ग्रन्थ कच्छदेश पावन कर्ता जैनाचार्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्य वर्य पण्डित राज श्री नागचंद्रजी महाराज के हुकम से बाल ब्रह्म चारी मुनिश्री अमोलख ऋषिजी ने अनेक शास्त्र और ग्रन्थो में से उधार कर तीर्थंकर गोत्र उपार्जन करनेके २० बोल पर सविस्तार विवेचन किया गया है इसके रायल अष्ट पेजी १० फारम (४०० पृष्ठ) से भी अधिक होगा (यह छपरहाहै)

और

"श्री मनोहर रत्न घन्नावली"

यह मरुस्थल देश पावन कर्ता जैनाचार्य श्री मलूक चन्दजी महाराजके शिष्य वर्य श्री ऋषि रघुनाथजी महाराज रचित इसमें प्रवर पण्डित श्री रत्नचन्द्रजी महाराज और कवीराज श्री घनोदास जी महाराज कृत स्तव सज्झाय लावणी वगैरा अधिक रसीले विषयों का संग्रह किया गयाहै,

यह दोनोंही पुस्तकें—

लालाजी नेतरामजी रामनरायणजी जौहरी हैद्राबाद वालेकी तरफसे छपरहेहैं सो

अमूल्य भेट दिये जावेंगे. अमूल्य—पुस्तकें

जैन तत्व प्रकाश ॥), मदनश्रेष्ठी चरित्र =) जिनराम सुगुणी चरित्र =) सिंहल कुंवर चरित्र)॥ भुवनसुंदरी चरित्र ॥ चन्द्रसेन लीलावती चरित्र =) तीर्थंकर सहश्री,)॥ भक्तामरम्)॥ इस मुजब पुस्तकें मिलती है सो लिखे मुजब टपाल खर्च भेजकर निम्न लिखित पत्तेसे मगवा लीजिये स्टांप व पुस्तक गैर बदले जावें जिसके हम जुम्मेदार नहीं है

लालानेतरामजी रामनरायणजी जौहरी चार कमान दक्षिण हैद्राबाद.
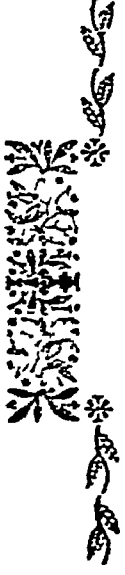
॥ प्रस्तावना ॥

वांछा सज्जन संगमे परगुणे प्रीतिर्गुरौ नम्रता ।
विद्यायां व्यसनं स्वयोषिति रतिर्लोकाप वादाद्भयम् ॥
भक्तिः शूलिनि शक्ति रात्मदमने संसर्ग मुक्तिः खले ।
प्वेत येषु वसंति निर्मल गुणास्तेभ्यो नरेभ्यो नमः ॥ १ ॥

अहो सुश मनुष्यों! आपको पुण्योदय से प्राप्त हुइ सद्बुद्धि द्वारा दीर्घ द्रष्टी से जरा ऊंडा विचार करके देखो कि सुखार्थी प्राणी को इस विश्व मे सद्गुण स्विकार की और दुर्गुण का नाश करनेकी कितनी जबर आवश्यक्ता है जितने प्रकार के जगत में सुख है उनका मूल सद्गुणही है जितने प्रकारके ऊंच पद है वो सद्गुण सेही प्राप्त होतेहे, सा मान्य मनुष्य से लगाकर वडेर महात्माओ जो अहो निश गुणगान वदना नमस्कार करते हें सो सद्गुणीयों केही कर ते हे, और आगामिक स्वर्ग मोक्ष आदि के सुख की प्राप्ती होती है सो भी सदगुणों सेही होती है. ऐसा जो उत्तमोत्तम पदार्थो का दाता जो सद्गुण है, उसको प्राप्त करने की किस सुश को अभिलाषा न होगी? अर्थात् सबही को होगी.

परन्तु जो दुर्गुणों इस आत्मा के अनादी काल के शोभतीहै जो दुर्गुणो इस अन्माके साथ चोरासी लक्ष जीवा ज्योनी में अनेक विलास किये हैं, वो दुर्गुणो इस आत्मा की सङ्गत एकाएक शिघ्र छोड देवे यह होना वहुत असक्यहै. ऐसे महात्मा तो विरले ही हुवेहै कि जो दुर्गुणों की वेडीयों का एकदम निकंद कर सर्व दुर्गुण रहित हो सर्व सत्गुणा का जो स्थान निजात्म गुण व मुक्त जिसके निवासी बने है परन्तु इस विचार से निराशित होना, सुस्त वनना और पर्यत्न का त्यागन कर हाय' क्या करे? ऐसे करते पडे रहना यह शूर वीरों का कृतव्य नहीं है श्री वीर परमात्माका फरमान हैं कि सर्व कार्य की सिद्धी वल वीर्य पुरुषा कार प्राक्रम के फोडनेसे अर्थात् उद्यम करने सेही सर्व कार्य होते हैं. इस हुक्म को अनुसर सद्गुणों के इच्छक को सद्गुण प्राप्ती का उपाय जरूरही करना चाहिये.

वो सद्गुण प्राप्त करने का उपाव भर्तृहरी नृपने नीती शतक में इस तरह से वताये है कि-" वाञ्छा सज्जन सङ्गमे" अर्थात् सज्जनोंके संग की जिसे अभिलाषा हो, क्योंकि सद्गुणों के सागर सत्पुरुष सज्जन जनोही होते है, उनके सग से सद्गुण की प्राप्ती होवे यह स्वभाविक ही है,कहतहै कि-तुखम तासीर और सोबत की असर जरुर होतीही है "पर गुणे प्रीति" जिस वस्तु पर जिसकी प्रीती होतीहै वो वस्तु आकर्षण हो उसके पास स्वभाविक ही चली अतीहै. इस लिये सद्गुण के अभिलाषीयो को सद्गुणी के सद्गुण पर प्रीति करने की ही आवश्यकता है. 'गुरुनम्रता" जिस वस्तु में नम्रता—के मलता होतीहै वोही अन्य वस्तु को गृहण कर सक्तिहै जेसे जलेवी में जो नम्रता है तो वो चासणी को अपने मे प्रगमा मधुर वनजातीहै,और मलमल या रेशममें कोमलताहै तो वो चोलके रगेमे पड सुरगा वनजाताहै,इत्यादि द्रष्टान्त से नम्रता ही गुन ग्रहण कर शक्तिहै. इसलिये सद्गुण इच्छक को जेष्ट गुणोज्ञ के साथ नम्र भाव रहना चाहिये. " विद्यायां व्यसनं" सर्व सद्गुणों का सागर तो विद्याही है इस लिये सद्गुण इच्छक को जेसे व्यसनी व्यसन पोषणे उत्सुक होताहै. तैसे सद्विद्या उत्सुक ता युक्त निरत्र ग्रहण की चाहिये. " स्वयो पितिरति " व्यभिचार ही सर्व दु-

गुणों की खान है, इसलिये सद्गुणी परस्त्री को माता भगिनी तुल्य समज स्वस्त्री मेंही संतोष धारण करते हैं. " लोकाप वादाद्भयम् " लज्जादी सद्गुण का स्थान है. लजालु लोक अपवाद-निंदा होनेसे डरते रहते हैं. इसलिये निंदा कराने वाले दुर्गुण उनसे दूरही रहते हैं " भक्ति शूलिनि " जो प्रभूके भक्तिवन्त-प्रभू की आज्ञा में चलने वाले होते हैं. सद्गुणों उनके ही प्रेमालु हो वहांही चिरस्थाइ होते हैं " शक्ति रात्मदमने " दुर्गुणों को त्यागना और सद्गुणों धारन करना सहज नहीं है जो अपनी आत्मा को अपने वशमें-कानूमें रखने सामर्थ्य होते हैं सोही सद्गुणी बन सके हैं " संसर्ग मुक्ति खलेष्व " अर्थात् सद्गुणियों के सद्गुणों का नाश कर दुर्गुणी बनाने वाला दुर्गुणी-खल-मूर्खों का संसर्ग-परिचय-संगतही होता है. कुसंगत से बडे२ महात्मा बिगड गये हैं, ऐसा जान सद्गुणी सदा दुर्गुणियोंके संगमें दूर रहते हैं. इत्यादिगुणो संयुक्त होते हैं, वोही सद्गुणकी प्राप्ती कर सुखी होते हैं, इन सर्व बातोंका हूबहू चित्त अन्तःकरण को दर्शाने यह " चन्द्रसेण लीलावती चरित्र " बडाही असर कारक है बगोक्त श्लोक में कहे हुवे सद्गुण संपन्न चंद्रसेण राजा और लीलावती राणी थी कि जिनोपर महान् संकट पडतेभी जिनोने सद्गुण का त्याग नहीं किया जिससे वो दोनो भवमें सुख पाये और उनकी संगतसे दुर्गुणी भी सुधर कर सद्गुणी बन सुखी हुवे. और बगोक्त गूण रहित जो कनकरथ राजा और कुसीता राणी हुइहै कि जो दोनो लोक में दुःख पाये, और सद्गुणी की संगत से सुखी हुवे इत्यादि बातका इस चरित्र में कथन किया गयाहै.

हमारे सुभाग्योदय से परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के स्थविर तपस्वी जी श्री श्री. **केवलऋषिजी** महाराज वृद्ध वस्था के कारण से यहां स्थिरवास विराजमान हैं, उनकी सेवामें बाल ब्रम्हचारी मुनिश्री **अमोलखऋषिजी** (इस ग्रन्थ आदिके कर्ता) बिराज मान हैं, इनके सद्बोध से आजतक ३०,००० छोटी बडी पुस्तकें

अमूल्य भेट. दीगइहै. तदनुसारही यह ग्रन्थ सिकंदराबाद (दक्षिण-हैद्राबाद) निवासी उदार प्रण.मी भाइजी सागरमलजी गिरधारीलाल जी सांकला के. रु १००) और उदार प्रणामी भाइजी सहश्रमलजी जुगराजजी अलीजातके रु) १०० यो रु २००) " जैनतत्व प्रकाश " पुस्तक की दूसरी अवृती छपवाइ उसमे भाइ मुलतानमलजी सांकला की धर्म दलालीसे अधिक हुवे उस खरच से और ज्ञान वृद्धी खाताके कुछ द्रव्यकेखरचसे यह चन्द्रसेण लीलावती चरित्र छपवाकर अमूल्य भेटकिया जाताहै. इसे पठन श्रवण मनन करके सद्‌गूणी बनेंगे तो इस ग्रन्थके कर्ता का और प्रसिद्धकर्ता का श्रमसफल हुवा समजा जायगा. विशेषु कि विशेषं.

चारकमान-दक्षिण हैद्राबाद
श्रीवीराब्द २४३८ विक्रमार्क १९६८ पौष पूर्णिमा }

सद्गुणवृद्धी का इच्छक
लाला सुखदेव शाहजी ज्वालाप्रशाद.

चन्द्रसेण लीलावती चरित्रका शुद्धी पत्र

पाठकगणों ! अव्वल नीचे लिखे मुजब सुद्धारा कर फिर यत्नासे पढियेजी.

पान	पृष्ट	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
३	२	८	वहाने	वहोत्र
४	१	५	राख्यो	दाख्यो
"	"	१२	इण	दण
५	१	२	ता	ति
"	"	५	पात	पति
६	१	८	तुख	सुख
"	२	१	पगे	पग
७	२	२	भेरी	भेरी
"	"	४	पुण्य	पुण्य
८	२	१०	जलबो	जलेबी
९	१	६	सोहाग	शोभा
१०	२	१२	भरो	भरोसो
१३	१	१	पखी	पेखी
"	"	३	आणंनदी	आणदी
१४	२	३	गाथ	गाचे
१५	१	१४	जाडी	जोडी

पान	पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
१६	१	६	जा	जो
१८	२	६	दाइ	दोइ
१९	१	नोट	सिंह	सर्प
२०	२	४	झडे	झाडे
"	"	"	न्यापतो	न्यापतां
२१	१	१०	था	या
"	"	"	मे॥	मेरे
"	"	११	हे	दे
"	"	१२	मांदे	माहे
२२	१	१	शे	में
"	२	१४	पिर	पीयर
२४	२	१०	निश्वय	निश्चय
२५	१	१३	लादु	लादू
२६	२	३	खह	सह
"	"	७	चुयरे	चुंबरे
२७	१	१०	सुन्धी	सुगन्धी

पान	पृष्ठ	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
२७	२	१३	म्हारा	म्हारा
२८	२	५	थोरे	०
२९	१	१	हारीं	०
,,	,,	१३	नाथ	नाय
३०	१	४	मु	सु
,,	२	१	प्रफ र	प्रकार
३१	१	१	पलींन	पल्लीं
३२	३	२	हा	हीं
,,	,,	५	म्हाराय	महाराय
,,	,,	१४	दोख्या	दाख्या
३१	,,	१	गींत	गति
११	१	१२	घणी	तणी
३१	२	४	कोढी	कोटी
,,	,,	,,	विनान्यन्ती	विनाश्यति
३८	१	५	परखी	परस्त्री
,,	,,	६	नम	नाम
,,	,,	७	काचिक	कीचक
,,	,,	१४	उपता	उपती
३९	१	२	कीज	कोजे
,,	२	३	दइथा	दइया
,,	,,	८	दीसा	दासी
,,	,,	१४	पररतणो	पस्ताणो

पान	पृष्ठ	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
४०	२	७	जाणां	जाणीकरीं
४३	१	१३	मग	मगल
,,	,,	१४	हाय	दाय
,,	२	२	प्रबर्य	प्रबन्ध
४	१	९	झीण	झीणा
४	२	३	चाकरा	चाकरी
,,४५	२	११	भां	आं
४६	१	१४	किमा	किम
४७	१	५	हूल्लाल	हुल्लास
,,	२	६	तापक्षा	तापथी
४८	२	७	परपकार	पर उपकार
.		८	प्रकास	प्रकासे
,,	,,	११	युं	स्यूं
,,		१४	क	कर
४९	१	७	भ्रम	भरम
.	,,	१४	तु	तू
५	२	४	धार्याथासी	धार्यानथासी
,,	१	३	यत्री	पवित्री
,,	,,	४	ममाधी	समाधी
५	२	९	इण	इणथी
२	२	३	लगासीरे	लगासी
		९	लाभो	लगो

पान	पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
		१२	*	* ॥ दुहा ॥
५३	१	७	जावो	जोवो
		८	पां	पांच
५४	१	१३	कुस्दी	कुन्दी
५५	१	६	ग्रही	ग्रहती
		७	उष्णप	उष्न
५६	२	३	।भइ	भाइ
		१२	।दत्र	रुदत्त
५७	१	३	भ॰पुर	भरतपुर
	२	६	वड२	वडकरे
५८	२	४	मोठो	मोठो
	२	१	रक्षप	रक्षाढालए
		१४	तमजाइ	समजाइ
५९	१	१४	उयर	ज्वर
,,	२	१	थैद्री	वैठी
६०	१	६	पटे	पडे
		नोट	पशान	पशीना
	२	१३	जिन	विजय
६१	१	१२	द्रुप	द्रुप्ट
६२	२	१०	रह्यर	रह्यांरे
६३	१	१	लागयो	लाग्यो

पान	पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
,,	,,	४	याइ	याइआइ
६५	५	७	श्यम	शाम्र
,,	[1]फूट नोट पीछे के श्लोक का अर्थ है			
६७	१	६	कर	०
६९	२	४	लज्ज	लज्जा
७०	२	१३	द्वूनी	दूनी
७१	१	१	धाणी	थाणी
,,	,,	२	जो	जी
,,	,,	४	पसिा	पासी,
,,	,,	,,	करसां	करसां
,,	,,	५२	होडी	दोडी
,,	,,	१२	चां	जी
		१३	वायपुर	विजयपुर
७२	१	४	नेहनी	केहनी
,,	,,	७	देखाय	देख्यास
७३	१	१०	होय	हो
,,	२	५	जगाह	जगाय
७५	१	१४	ठाती	ठानी
७६	२	१०	भुत्रचो	भुत्तचो
७७	१	८	फत्की	पंक्ती
,,	२	११	हेहले	देहले

पान	पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
८०	२	८	गर्जाव	गर्जा
८१	१	१४	किप	किम
८२	१	१२	मूल	ढालमूल
	२	१२	चला	चली
८३	१	२	पीछे	पीछे२
"	"	४	मधव	माधव
"	२	५	अमोक	अमोलख
८४	१	६	इम	ज्यों इम
"	"	९	एक	यह
८५	२	२	ऊदरी	ऊठणरी
८६	१	१२	पानी	मानी
"	"	१३	सफट	संकट
८७	१	१३	कांड	कांइ
८८	२	२	उतरी	उतारी
९२	१	२	विविद्ध	विशुद्ध
"	"	५	चात्यो	चाल्यो
"	२	९	मेंहल	मेहल
९३	२	२	भगरी	भगारी
९४	१	११	खहे	कहे
"	२	१४	पुकार	पुकारे
९५	१	७	जावा	जावो
९७	२	३	नं	तं

पान	पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
"	२	२	वक्ष	वृक्ष
९८	२	४	॥ देय	देय ॥
९९	२	१४	नहींआ	नहीं तो आ
१००	२	४	गाथाके अंकमे भूलहै	
११०	२	१	फांठ	कांठे
११५	१	३	मरा	मेरा
११६	२	७	अी	अरी
११७	१	५	नात	त ात
११८	१	१०	रिया	पीया
११९	१	१	कधाइ	कीधाइ
"	२	४	अत्यान्घा	अत्यान्न
१२१	२	८	मपतग	मधू पतंगआ
१२३	२	३	जमन	जन
१२४	२	९	कमित	कीमत
१२५	१	११	उक्षीया	उघीया
१२७	२	८	मयो	मर्यो
१३२	१	१३	व र य	फराय
	२	१	जाडी	जोडी
१३५	१	१	पाली	पाले

पान ९३ की २ पृष्ठके ५मी ओलीमे १७ मी गाथाके आगे
ते अवला करस्मी कहोजा रस्यू मानजो जासी मोहानी नहीं—
पान ९८की १ पृष्ठके २ ओलीमे १५ मी गाथाके आगे —
फा० सब दुःख क्षिणम भूलगी प्रिया महाराप्राणकी आण फा०

॥ ॐ ॥

॥ श्री परमेश्वराय: नमः ॥

॥ शील महात्म ॥

॥ चन्द्रसेन लीलावती चरित्र ॥

॥ दुहा ॥ जय जय जगगुरु जग तिलो । जग रक्षक जिनराय ॥ यशः जिनको विख्यात जग । प्रणमु उनका पाय ॥ १ ॥ आदि जिनन्द आदि कारी । चौवसी जिन चन्द ॥ तस चरणां बुज सेवतां । होवे परमानन्द ॥ २ ॥ गणपत गोतम गणधरु । लब्ध तणा भन्डार ॥ आदि देइ सव श्रमण को । लुली करुं नमस्कार ॥ ३ ॥ गुरुपद कमल मुझ मन अली । ज्ञान रसे त्रप्त कीध ॥ तस चरण को शरण ले । करुं मनोर्थ सिद्ध ॥ ४ ॥ वाघेश्वरी जग इश्वरी । श्रीमुख प्रगटी जेह ॥ मुझ मन इच्छा है श्रूती । पूर्ण करजो एह ॥ ५ ॥ ॥ सहू तणो आश्रय ग्रही । धरीमन उछरंग ॥ शील तणी महिमा

कहूं । सुण जो चतुर्विध संघ ॥ ६॥ ॐ॥ श्लोक–शार्दुल विक्रिडित वृतम्॥ तोयत्यग्नि रपि
स्रजत्य हिरपि व्याघ्रोपि सारंगती । व्यालोप्य श्वति प्रवतो य्युप लति क्ष्वेडोपि पियूषति
॥ विघ्नो प्युत्सवति प्रियत्यरिरपि क्रिडा तडांग त्याय । नाथोपि श्वगृह त्यटव्यपि नृणां
शील प्रभावद ध्रुवं ॥ १ ॥ ॐ ॥ शील थकी लीला लहे । कमला करे किलोल ॥ अरि
करी हरी जेहरी डरे । थाय मन चिन्त्या कोल ॥ ७ ॥ शीलवंत चन्द्रसेण नृप ।
राणी लीलावती पवित्र ॥ विघ्न समय शील पालियो । तेहनो सुणियो चरित्र ॥
॥ ८ ॥ वी- कथा नहीं सु कथा यह । सुण्या थी मालम थाय॥ निद्रा वी कथा परिह
री । सुणियों चित लगाय ॥ ९ ॥ ॐ ॥ ढाल १ ली ॥ तावडा भीमो सो पड जे ॥ यह
दशी ॥ श्रोता सुणजो चित लाइ । शील वन्त की कथा सुणंता । श्रुती पवित्र थाइ
॥ यह आंकडी॥ लघू द्विप तो जंबू द्विप है । सर्व द्विप मांहि ॥ नव क्षेत्र तिण मांही अनो
पम । कर्म अकर्म साही ॥ श्रोता ॥ १ ॥ तिण माहे भरत क्षेत्र नीको । यम
दिशा मझारो ॥ वंग देश अति चंग दीप तो । महीतल शिण गारो ॥ श्रोता ॥२ ॥ तास

* अर्थ–अग्नि पाणी जसी, सिंह मृग जैसा, सर्प डोरी जैसा, जहर अमृत जैसा, विघ्नस्थान उत्सव जैसा, समुद्र क्रिडा करने । तलाव जैसा, और जंगल घर जैसा शील के प्रभाव से होजातेहैं

शिरोमण विजयपुर नगरी । विजय कर वसाइ ॥ नव जोजन की लाम्बी चोडी चौकी-
नी भाइ ॥ श्रोत ॥ ३ ॥ तेहने मध्ये राज भवन छे । नव खन्ड ऊंचाइ । नव रंगे करी
अधिको शोहे । देखत मोहाइ ॥ श्रोता ॥ ४ ॥ तिण महल के चारुं दिशा में । वजार
चौपड पाइ ॥ मेहल हवेली वजार दुकाना । पक्ति वन्ध रहाइ ॥ श्रोता ॥ ५ ॥ आगल
जाता पुष्प तणी परे । बहूरंग फैलाइ ॥ द्विवट त्रिवट चौटव गलियां । करी है सफाइ ॥
॥ श्रोता ॥ ६ ॥ गढ करी वींटी छे नगरी । वुरंज करी सोहे ॥ पोडशैतं द्वार चौदिश मां-
हो । देखन मन मोहे ॥ श्रोता ॥ ७ ॥ नगरी वाहिर चारों कानी । वगीचा मनोहरो ॥
द्रुम पुष्य फल कर भरीया । सहू ऋते सुख कारो ॥ श्रोता ॥ ८ ॥ तिण में वंगला घणो-
हे चंगला । पुष्करणी फूवारा ॥ सहू ऋतू की निपजत है सदा । शोभा श्रेय कारा ॥ श्रो
॥ ९ ॥ धर्म शाळा विशाळा कूपादि । विश्रामो ग्राम वारो ॥ पंथी जन ने साता काजे
। जोग सहू सारो ॥ श्रो ॥ १०॥ विजयसेन राजा देशाद्विप । अरि विजय कीधी ॥ पुरुष
माहें त सिंह समानो ॥ कीर्ती वहू लीधी ॥ श्रोता ॥ ११ ॥ पुत्र तणी परे प्रजा पाले
। न्याय प्रमाणे चाले ॥ सज्जन ने तो है मन मोहन । दुर्जन ने शाले ॥ श्रोता ॥ १२ ॥
॥ श्लोक ॥ धर्मान्या शील शोभा । न्याय नीति विचक्षणम् ॥ प्रजा जन्य प्रति पालंती ॥

मिती राजस्य लक्षणम् ॥ २ ॥ ढाल ॥ रुप सुन्दरी राणी स्याणी । सीता समजाणी ॥
मिष्ट वाणी सकोमल पग पाणी । विचक्षण गुण खाणी ॥ श्रोता ॥ १३ ॥ श्रूती सागर
मंत्री श्रूती आगर । नागर गुण पूरो ॥ न्याय मुरोले समान बतावे । राज को वहे धूरो
॥ श्रोता ॥ १४ ॥ शामादि चउ दंड ने जाणे । परजा हित राखे ॥ सारासार को जाण
निपुण मति । कीर्ती सुख चाखे ॥ श्रोता ॥ १५ ॥ ॐ ॥ श्लोक-मालानी ॥ नृप्ती हित
कर्ता द्वेषता याति लोको । जन पद हित कर्ता त्यजते पार्थिवेना ॥ इति महती विरोधे
-तमान समान । नृप्ती जन पदाना दुर्लभ कार्य कृता ॥ २ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ नगर लोक
पण न्यायवंत है । धन बहूलो घरमां ॥ विनय वन्त ने न्याय का पक्षी । चाले अपनी
दरमा ॥ श्रोता ॥ १७ ॥ दूंदाला फूंदाला रुपाला । गुर्णायाला सुखमाला ॥ छोगाला ने
छेल छबीला । दीन प्रतिपाला ॥ श्रोता ॥ १८ ॥ ॐ ॥ श्लोक ॥ यथा देशस्तथा भाषा ।
यथाबीजं तथांकुरं ॥ यथा भूमी स्तथा तोयं । यथा राजा तथा प्रजा ॥ ४ ॥ ॐ ॥ढाल॥ छत्तीस
वरण और चार कोमका । लोक सुखी सारा ॥ निज कुलकी रीति प्रमाणे । वरते संसारा
॥ श्रोता १९ ॥ धन धान्य ने दोपद चोपद । पूर्ण घर मांही ॥ भिक्षुक जन तिहां थोडा
। सुखी हे सघलाही ॥ श्रोता ॥ २० ॥ धर्म-स्थानक बहुला छे पुरमा । सती

संत सुख पावे । दान पुन्य दयादि गुण से । पुर घणो शोभावे ॥ श्रो ॥ २१ ॥ स्वचक्री ने परचक्री को । भय नहीं कोइ ॥ राजा सामान्त सह प्रजाके । नित्यानन्द होइ श्रोता ॥ २२ ॥ वैरकत ढाल रसाल श्रोता । मन्डण इण मांही ॥ आगे वरणन सुनो दे श्रवन । अमोल ऋषि गाइ ॥ श्रोता ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ शयन भवन में एकदा । सुख शय्या के मांय ॥ रुप सुन्दरी राणी निशे । सूती सुख में आय ॥ १ ॥ [illegible]मित कला पूरण करी । उडु गण परिवार ॥ मुख वगासी आतां थकां । पेठो उदर मझार ॥ २ ॥ इन्दू स्वप्न अवलोकके । जाग्रत थइ तेवार ॥ हर्ष वदन गेयगती करी । प्रितम पास पधार ॥ ३ ॥ राग मञ्जुल करस्फर्शथी । भूपत जाग्रत थाय ॥ आदर देइ राणीको । भद्रसणे बेठाय ॥ ४ ॥ पूछे कन्त प्रेमे भरी । आगमको विचार ॥ शिरसावर्त अंजली करी । कान्ता करे उचार ॥ ५ ॥ ढाल २ री ॥ उगरसेन की लली ॥ यह ॥ सुनो गुनी जन लोक। पुण्य थकी मिले वांछित थोक ॥ आं० ॥ मैं सूती थी श्वामी शय्या मझार । सुख थी स्वप्न लियो श्रेय कार ॥ सुनो ॥ १ ॥ पूर्ण कला शशी सह परिवार । आइ प्रकाश्यो शीतलाकार ॥ सुनो ॥ २ ॥ मुजने वगासी आइ ताम । महारा पेट मांही पेठो निशश्वाम ॥ सुनो ॥ ३ ॥ इम देखी ने जागृत थाय । नाथ आप पास में आइ चलाय ॥ सुनो ॥

४ ॥ सुन राजाजी इम स्वप्न विचार । मन माहे आनन्द पाया अपार ॥ सुनो ॥ ५ ॥
पुत्र हासी कुल उद्योत कार ।नाश करसी ते शत्रू अन्ध कार ॥ सुनो ॥ ६ ॥ इम सुनी
राणी हार्षित थाय । तिहां थी ऊठी निज मन्दिर आय ॥सुनो ॥ ७ ॥ शय्या में बैठी करे
विचार । रखे बीजो स्वप्न आयां फल जाउं हार ॥ सुनो ॥ ८ ॥ धार्मिण दासीयों बोलाइ
ते वार ॥ कर्या जागरण धर्म कथा उच्चार ॥ सुनो ॥ ९ ॥ प्रात थया नृप सेवक बोला-
य । शभा मन्डप ने सज्ज कराय ॥ सुनो ॥ १० ॥ स्वप्न पाठ को तब तेडाय । नृप
आइ विराज्या शभा के मांय ॥ सुनो ॥ ११ ॥ जोतषी न्हाइ धोइ हुवा तैयार । आया
नमीं बैठा शभा मझार ॥ सुनो ॥ १२ ॥ शास्त्र देखीने बोले विबुद्ध । बहाले स्वप्न माहे
तीसं स्वप्न शुद्ध ॥ सुनो ॥ १३ ॥ तिण माहे चउदेंह कह्या प्रधान । तिण मांहिलो एक
देखे राजान ॥ सुणो ॥ १४ ॥ सर्व जोतषी का अभित राय । तिम राष्ट्र पति तुम पुत्र
थाय ॥ सुनो ॥ १५ ॥ नृपत को सुन हर्ष्यो वदन । पण्डित को दियो बहूलो धन ॥
ो ॥ १६ ॥ पण्डित खुशी होगया निज घर चाल । भूधव आइ कह्या राणी को हाल ॥
सुनो ॥ १७ ॥ गर्भ की राणी करे प्रति पाल । सुखे तीन मांस वीत्या तत्काल ॥ सुनो
॥ १८ ॥ कमोदनी कन्त पीणो पानी में घोळ । इसो राणी ने उपनो डोहल ॥ सुनो ॥

१९ ॥ यो डोहलो पूरो होवे केम । राणी जी चिन्ता माहे पड्या ऐम ॥ सुनो ॥ २० ॥
अंग रक्षक चटी नृपने चेताय । नृप पूछो राणी कने आय ॥ सुनो ॥ २१ ॥ राणी जी
कह्यो डोहला नो विरतंत । में पूर सूं इमराय दीवी शंत ॥ सुनो ॥ २२ ॥ राय बेठा
सभा में आय । डोहलो पूरण की चिन्ता मन माय ॥ सुनो ॥ २३ ॥ मन्त्री देखी पूछी
योताम । राजाजी राख्ये मन को काम ॥ सुनो ॥ २४ ॥ मन्त्री कहे चन्द्र प्रभा मझार
पंय पाल मेलो मध्यान आवे जार ॥ सुनो ॥ २५ ॥ पछे घोलीने पावो खीर । इम इच्छा
पूरी होसी रण धीर ॥ सुनो ॥ २६ ॥ इमही कियो उपाव तत्काल । राणी इच्छा पूरी
हर्ष्यो नरपाल ॥ सुनो ॥ २७ ॥ सुखेर वीत्या सवा नव मांस । प्रसवतां पुत्र थयो उजा
स ॥ सुनो ॥ २८ ॥ दासी वधाइ दी नृपने जाय । तास वडारण स्थापी घर मांय ॥
सुनो ॥ २९ ॥ दिन ऊगां नृप मोत्सव कराय । अति आनन्द हुयो नगर के माय ॥
सुनो ॥ ३० ॥ छट्ट दिन राती जोगो दिराय । बारमें दिन दियो भानु वताय ॥ सुनो ॥
३१ ॥ सज्जन भेला कर दियो दसोऽण । चन्द्रसेण नाम कियो स्थापन ॥ सुनो ॥ ३२
॥ सुक्रपक्ष का ईन्दू जेम । बुद्धिबल रुप तेज वधे तेम ॥ सु ॥ ३३ ॥ पंच धाय करे प्रति
पाल । बृद्धि पामे ज्यों चंपक गिरी झाल ॥ सु ॥ ३४ युग्म ढाल में जन्म अधिकार ।

अमोलऋषि कहे पुण्य प्रकार ॥ सु ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ वसु वर्ष वय सुत तणी । हुइ
जाणी नृपाल ॥ विद्याभ्यास कराववा । विबुद्ध बुलाइ कुशाल ॥ १ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ मात वै
री पित शत्रू । बालो येन पाठते ॥ न शोभते शभा मध्य । हंस मध्य बको यथा ॥ ५ ॥ ❀ ॥
दुहा ॥ इम विचारी कलाचार्यने । पास बेठाया कुंवार ॥ यथा विधी पढाइने । कीजे शि
घ्र होंश्यार ॥ २ ॥ पुन्य वंतने विद्या तणो । कठिण नहीं कुछ काम ॥ स्वल्प दिना में
कुँवर जी । सीख्या कला तमाम ॥ ३ ॥ बहोत्तर[७२] कला पुरुष की । चौसट[६४] महीला की
जान ॥ चउदे[१४] विद्या अठारह[१८] लिपी । धर्म राज नीती पहचान ॥ ४ कंबूज मे पर्य शोभे
तिम । शोभानिक हुवा कुँवार । सुवर्ण सुगंध दोनों मिल्या । कमी नहीं कोई सार ॥ ५ ॥
❀ ॥ श्लोक ॥ विद्या नाम नरश रूप मधिकं , प्रच्छन्नं गुप्तं धनं ॥ विद्या भोग करी यशःसु-
ख करी , विद्या गुरुणां गुरु ॥ विद्या बन्धू जनो विदेश गमने । विद्या परम देवतं ॥ विद्या
राजस्य पुज्य ते हि धनं । विद्या वीहीनो पशुः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ पण्डित प्रवीन जान तस
। लाया शभा मझार ॥ सचिव प्रश्न पूछीया । शिघ्र उत्तर दे कुंवार ॥ ६ ॥ तुष्टी नृप क-
ला चार्यने । धनदे पहों चाया घर । कुंवर सुखे निश्चिन्त रहे । हिवे लीलावती जिकर ॥
७ ॥ ❀ ॥ ढाल ३ जी ॥ जोवोरे घर दीपक वीना ॥ यह ॥ पूर्व देश मांहे दीपतो । भरत

पुर मनो हारोहो ॥ गढ मन्दिर ऋद्धि करी । स्वर्ग पुरी अनुहारोहो ॥ १ ॥ जोवोर प्रिता लक्षण ॥ टेर ॥ प्रिती सदा सुख दाइहो ॥ दोनों गुनी जन जोमिले। तो बडी अधीकाइहो॥ जोवो ॥ २ ॥ जयसेन राजा तिहां तणा । न्याय नीती गुन धारोरे ॥ अरिगंजन जन रंजनों । शूर वीर सिर दारोरे ॥ जोवो ॥ ३ ॥ पद्मावती राणी तेहने । शील रुप गुण धामोरे । पति वल्लभ पात वृता । बश कियो गुणे कामोहो ॥ जोवो ॥ ४ ॥ मन्त्री-सज्जनेसन्न छे । चारों बुद्धि निधानोहो॥ सुखदाई राय राष्ट्र ने । राज धुरंधर जानोहो ॥ जोवो ॥ ५ ॥ प्राण थी वल्लभ नृपने ॥ लघु भाइ सम जाने हो ॥ पडदो नही कोई बात को । क्षिण अन्तर नहीं आलेहो ॥ जोवो ॥ ६ ॥ प्रधान जेष्ट भ्रत सम । काण मर्यादा राखे हो । खान पान गान मान में । अन्तर थी प्रेम दाखे हो ॥ जोवो ॥ ७ ॥ । ❀ ॥ श्लोक ॥ ददाती प्रति ग्रह्मा ती । गुह्य मक्षती भाशंक ॥ भुक्त भोजय चैव । षंड विधीप्रिती लक्षणम् ॥ ❀ ॥ ढ़ाल ॥ खीर नीर मिलियां थकां । एक रुप बन जावेजी ॥ धीज करे वन्हिं ताप में । एक ही भाव बिकावेजी ॥ जो ॥ ८ ॥ ❀ ॥ सवैया क्षीर की संगत नीर करी । तब देगुन आप समान कियो है ॥ ताप लग्यो जब उन क्षीरन को । जान्यों नहीं पन आप जर्यो है ॥ नही देख के नीर गियों पद्मा कर। कूद अ-

ग्नि मांही आन पड्यो है ॥ हीर अलियो मित्र मिल्यो । प्यारे मंत्रीः कर्यो तो ऐसो क-
ह्योहै ॥ ७ ॥ ७ ॥ ढाल ॥ पछ राजा नीर मंत्रवी । इण द्रष्टान्त लेणोहो ॥ ॥ ऐसा जो
गवने जगत् में । तास ही सज्जन केणोहो ॥ जो ॥ ९ ॥ राजाराणी प्रेम से । संसारिक सु-
ख भोगेहो ॥ एक दिन राणी सुख सेज में । स्वपन लियो पुण्य जोगेहो ॥ जोवो ॥ १० ॥
हरियो भरियो पेख्यीयो । वगीचो सुखदाइहो ॥ पेठो ते आइ मुख विषे । जागी राजाने ज-
णाइहो ॥ जो ॥ ११ ॥ गर्भ रह्यो मांस तीसरे । डोहलो वन जोवा नो आइहो । सवा नव
मास पूर्ण हुवा । पुत्री प्रसुत थाइहो ॥ जो १२ ॥ बारमे दिन दिशोटण करी । सज्जन
परजन ने जिमाइहो ॥ स्वप्न डोलहा प्रमाण थी । नाम लीलावती ठाइहो ॥ जो ॥ १३
पंचधाय थी मोटी हुवे । सवने लागे प्यारीहो ॥ प्रेम घणो प्रधान थी । खलवाने धावे ला
रीहो ॥ जो ॥ १४ ॥ काका २ कहे प्रेमथी । सदा संग तस रहावेहो ॥ खाइने आगे चालने
। आइ काय नहीं आवेहो ॥ जो ॥ १५ ॥ गुण सुन्दरी नारी मंत्रीकी । ते पण तास
लडावेहो ! पुत्रथी अधिकी गिने । इम सुखे दिन वीतावेहो ॥ जो ॥ १६ ॥ तिणकाले
तिण अवसरे । चरण करण गुण धारीहो ॥ क्षांती ऋषि पधारीया । उतर्या वाग मझारीहो
॥ जो ॥ १७ ॥ ग्राम जन सुणी एकथा । मनमें अति हर्षायाहो ॥ माली खबर दी रायने

। शिर पात्र तस वक्षाग्याहो ॥ जो ॥ १८ ॥ चतुरंगी शैन्या सजी । मुनि दरण को जाबहो ॥ सामंत सेठने राणीयां । सहू नृप संगे आवेहो ॥ जो ॥ १९ ॥ विधीथी सहू वंदन करी । नम्र सन्मुख वेठाइहो ॥ पर उपकारी मुनिवरा । देशना तब फरमाइहो ॥ जो ॥ २० ॥ ❀। दोहा ॥ सरवर तरवरे संत जन । चौथा बूठे मेहँ ॥ परोपकार के कारणे । चारों धारी देह ॥ ८ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ अनित्या नी शरीरानी । वेभवं नैव शाश्वतं ॥ नित्यं समिहितो मत्यू । कृतव्यं धर्मः संग्रहः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ देह संपत अशाश्वती । श्वपन सम दरसाइहो ॥सज्जन दुर्जन सारिखा । धर्म कियां सुख पाइहो ॥ जो ॥ २१ ॥ इत्यादि देशना सुणी । धरा पति वैराग्याहो ॥ शाश्वतसुख वरवा भणी । अशाश्वत थी मन भाग्याहो ॥ जो ॥२२॥ राज दियो मंत्री भणी । लीलावती संभलाइहो । राजा राणी जोडथी । ली.दिक्षा सुख दाइहो ॥ जो ॥ २३ ॥ ज्ञान भणी तपस्या करी । अणसण कर स्वर्ग पाइहो ॥शंकर लोचन ढाल यह । अमोलख ऋषि गाइहो ॥जो ॥ २४ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ ॥ मंत्रीका राजा हुवा । प्रिती के प्रशाद ॥ परजा पाले प्रेमथी । मेटी दुःख विखवाद ॥ १ ॥ लीलावती लीला करी । शुक्ल शशीपर जेह ॥ गुण तन कला वृधी हुइ । रुप अनोपम गेहं ॥ २ ॥ सौम्ये तन मृग लौचनी । व्याले वेणी हैरी लंकँ ॥ दंती गमण नर मन

रमण । करण चतुर निशंक ॥ ३ ॥ अधरारुण शुक नाशीका । मीनेउर कुंर्मपगे ॥ हाव भाव विलास जो । सुर पति, रहे थग ॥ ४ ॥ रुप अनोपम छवी छकित । सव वरणव नहीं थाय ॥ छवी उतारी तेहनी । देशो देश लेजाय ॥ ५ ॥ चित्रदेख गुण सांभलीं । मोहाया बहु राय ॥ उत्सूक हुवा परणाण भणी । मानता ले मनमांय ॥ ६ ॥ मांगण दूत आया घणा । सज्जन जी करे विचार ॥ केहने परणावूं एक यह । करनो कोइ उपाय ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ४ थी ॥ मांग २ वर मांगणी ॥ य ॥ नारी जगमें मोहणी । करे बहू तेहनी आसहो ॥ एहने छोडे धनजे । मोटीया जग आहे फासहो ॥ नारी ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥ विस्तारितं मकर केत नढीवरेण । स्त्री संज्ञित वडिश मात्र भवा बुराशौ ॥ येनन्वितस्तद धरामिष लुब्ध । जीव मत्स्यान विक्रष्यपचति त्यनुराग वन्हो ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ सज्जन सेन मति आगला । चिन्तवे मनमें आमहो ॥ एक नृपने दिया थका । वदलसी नृप तमाम हो ॥ ना ॥ २ ॥ सहू जना खुशी रहे । झगडा पण नहीं थायहो ॥ कुँवरी र मन भावतो । वरने वरसी चायहो ॥ ना ॥ ३ ॥ इम मन मांहि विचारने ।

अर्थ-जसे भोइ मच्छीयों का पकड कर पचाता है तैसे भव रुप समुद्र में पंडे जीव रुप मच्छकों स्त्रीरुप भइकी योनी रुप जाल में स्तनन रुप मांस से लोलपी वनां कर फसा कर प्रेम रुप अग्नि में कामी पुरुष को पचाती है.

सवरा मन्डप तेवारहो ॥ तैयार करायो चूंपस्यू । खरची द्रव्य अगार हो ॥ ना ॥ ४ ॥
सुन्दर पत्री लिखाइ ने । सुँजें पुरुषने हाताहो ॥ देशो देश पहोंचावइ । वात करी विख्या
त हो ॥ ना ॥ ५ ॥ पात्रकी वांची करी । भूपत घणा हर्षाय हो ॥ सर्व जणा इम चिं-
न्तवे । हमे परणस्या जाय हो ॥ ना ॥६॥ आपर का मन थकी । दुल्हा वण्या सहूकोय हो
ऋद्धि सजाइ करी घणी।आडंबरे पूजा होयहो ॥ ना ॥७॥७॥श्लोक॥शुभार्यां व्यवहारेच। वैरी पु
सुसरे घरं ॥ अडम्बरा नि पुज्यते । स्त्रीषु राजं कुले पुचे ॥ १० ॥ ७ ॥ ढाल ॥ मगध
अंग वंग देशना । काशी अने कुशाल हो ॥ वीर सोरठ कच्छ वच्छ ना । काशमीर पंचा
ल हो ॥ ना ॥ ७ ॥ इत्यादि बहू देशना ॥ नृपती ऋद्धि लेय हो ॥ मन अधिकाइ धर-
ता थका । चाल्या दमामा देय हो ॥ ना ८ ॥ भरतपुर चल आविया । भरत नृप सहूने
बधाय हो ॥ साता कारी स्थान के। सहू ने दिया उत्तराय हो ॥ ९ ॥ सन्मान खान पा-
नादिक । भक्ति करी सवाय हो ॥ विसुक्षित हो सहु नृपति । मन्ड पे बेठा आय हो ॥
ना १० ॥ निज २ स्थान वेसीया । देइ मूछे ताव हो ॥ लीलावती ने वरण को । लाग्यो
घणो उम्माव हो॥ना ॥ ११ ॥ लीलावती तिण अवसरे । स्नान शिणगारे सज्ज हो ॥ दा
सीया संग परिवारी । जावे इन्द्राणी लज्ज हो ॥ ना ॥ १२ ॥ सवैया ॥ अंजन मंजन

चीरे । दोउ कर कंकन कुन्डल जोरी ॥ फूल की माल झलकती भाल । तिलक तंबोल असखर्सी भेरि ॥ "धमके घूधरी चँमके दुलहरी । नखवेसर नेवर कंचूकी डोरी । ज्ञान कहे चतुराइ सखी । यो सोलह शिणगार सजावत गोरी ॥ ११ ॥ ढाल ॥ मन्डप में आवी तदा । शोभे सहु मे शिरदार हो ॥ तारांगण में चन्द्र जिम । हाथ में पुष्पको हार हो ॥ ना ॥ १२ ॥ सर्व देख चकित हुवा । जोवे मुखान्मुख हो ॥ जेहने यह रंभा वरे । तस जन्म कृतार्थ लेख हो ॥ ना ॥ १६ ॥ दरपण में दरसावती । दासी नृप नो रुप हो ॥ नाम गौत्र ऋद्धि आदि । कहती मुख थी स्वरुप हो ॥ ना ॥ १४ ॥ मगधपती अरी गंजनो । चंपा नो मही पाल हो ॥ कच्छ पति महा प्राक्रमी । कुशल काशी नो विशाल हो ॥ ना ॥ १५ ॥ काशमीर कनक पुरी । कंखरथ नृपाल हो ॥ दुमुखसेण मंत्रीश्वरु । राज कलाये खुशाल हो ॥ ना ॥ १६ ॥ तिहां कुंवरी स्थंभित थइ । कंखरथ हर्षाय हो ॥ पण मन पाछो वालीयो । आगे चलती थाय हो ॥ ना ॥ १७ ॥ तबते नृप प्रधान ने । मनमें धर्यो अमरोषहो ॥ पुण्य विना किम पामीये । हुयो घणो अपसोष हो ॥ ना ॥ १८ ॥ आगे चलतां आवीया । विजयपुर राय कुँवर हो ॥ चन्द्र कुँवर चन्द्रकला समो । देखी मोही अपार हो ॥ ना ॥ १९ ॥ वर माला कंठे ठवी । चन्द्र

कुंवर वर कीधहो ॥ जोडी मिली रती कामसी । थया मानोर्थ सिद्धहो ॥ ना ॥ २० ॥
वेदे ढाल पूर्ण हुइ । सवरा मन्डप अधिकाइ हो ॥ अमोल ऋषि कहे चरित्र को । रच्यो बीज ए मझार हो ॥ ना ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ जय२ कार तिहां हुवो । खुशी हुवा सब राय ॥ एक कंवरथ नृपने । मनमें भाया नाय ॥ १ ॥ आपणी २ शैन्य ले । नृप गया निज गाम ॥ लग्न मोछव मंड्यो भरतमें । सज्जन सेन नृप धाम ॥ २ ॥ विजय पुरथी आंवीया । विजय सेण परि वार ॥ स्वागत कीधी तस घणी । वृत्या मङ्गला चार ॥ ३ ॥ लग्न दिवस शुभ स्थापीयो । बाज्या वाजिन्त्र हर्ष पुर ॥ मङ्गल गावे गोरडी । दुःख दोहग सहू दूर ॥ ४ ॥ मेघधारा पर खरचता । द्रव्य दोनों राजिन्द ॥ द्रव्य तिहां सर्व संपजे । वृत रह्या आनन्द ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ५ मी ॥ कपूर होवे अति ऊजलोरे ॥ ॥ य० ॥ लग्न तणा दिन आवीयो जी । वंर राय हुवा तैयार ॥ ऊगटणो पीठी करी जी। स्नान करी श्रृंगार ॥ चतुर नर । जोंवो पुण्य प्रकार ॥ १ ॥ टेर ॥ केसऱ्या जामो पेरी योजी । रत्न मुगट शिर धार ॥ जरी सेलो कड बान्धीयो जी । गल अठारे सऱ्यो हार ॥ ॥ च ॥ २ ॥ इत्यांदि शृंगार थी जी । शोभ्या इन्द्र अनुहार ॥ गेयंदा रुढ हो चालीया जी । वाजिन्त्र ने झणकार ॥ च ॥ ३ ॥ ❀ ॥ मनहर ॥ ढोलक मृदंगे दंसु । झालर

नफेरी ढांक । गडगडी वीणां शंक । डमरु मुमंगहै ॥ श्रीमंडल डोगडधाट रावण हाथो घडीयाल । तम्बूरो पंकावन । हुडक रणसिंग है ॥ भूंगल कंशील जंगे । सारंगी नगारा पुंगी । सरणाइ खंजीर । मजीरा ढप अंगहै ॥ मनुपंग घूघरा । अंगो वोरवाव भेरी । वरघू छत्तीस सब । बाजिन्त्र के अंग हे ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ आर्य अनार्य देशनीजी । झुन्ड दासी कालार ॥ स्वदेश वेश भाषा विशेष जी । गीत करे उच्चार ॥ च ॥ ४ ॥ इम अनेक ठाठा रंभस्यू जी । आया तोरण द्वार ॥ सासू पुत्री वर पूंखने जी । लेगइ चौरी मझार ॥ च ॥ ५ ॥ कर मेलण मोचण आदेजी । संसारी विवहार ॥ पहरावणी ने दायजो जी । कीधो घणो श्रेयकार ॥ च ॥ ३ ॥ परणीने घर आवीयाजी । पोषण सहू परिवार ॥ चतुर रसोइया हाथ स्यूजी । पकवान किया तैयार ॥ च ॥ ७ ॥ मनहर ॥- मोती चूर मगद पूरी ॥ जलबी खाजे मुरमुरी । वडा पकोडी चुरचुरी । राबडी दुध पीजीये ॥ घेवर केसर्या पूर । पेडा दोठ कंद और । गुपचुप घी संजूर । सीरा पूरी लीजीये ॥ अम्ब केल भाजी शाख । राइता में डाली दाख । चांवल कूर मेली दाख । घृत भी रेडीजीये ॥ बतीस भोजन प्रकार । तेंतीस सलाण सार । लपालप मेले मुख । येर नही कीजीये ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ सहू परिवार संतोषीयो जी। लायक देइ सन्मान

निज नगार जावा भणी जी । तैयार हुइ तत्र जाने ॥ च ॥८॥ पहों चावण ने चाली-याजी । नृपादि सहू परिवार ॥ पुत्री वियोग हित शिक्षानाजी । गावे गीत साथ नार ॥ च ॥ ९ ॥ आँख आंश्रून्हाखती जी । गुण सुन्दरी तेवार ॥ लीलावती उर लगाय ने जी । शिक्षा दे सुखकार ॥ च ॥ १० ॥ सासू सुसरा वड़ा तणी जी। लज्जा धरजो नित्य ॥ पति वयण मत लोप जोजी । रही जे सदा वनीत ॥ च ॥ ११ ॥ मरम मोसा नहीं बो-ली ये जी । सील रत्न ने संभाल । दान धर्म कर जो सदा जी । दोनों कुल सोहाग वि-शाल ॥ च ॥ १२ ॥ थनै कहणो घणो न लगे जी । ठेठ थी तूं छे सुजाण ॥ बच पनथी केहनी जी । लोपी नहीं कांण आंण ॥ च ॥ १३ ॥ मोटा घर में जावणो जी । मिलणो मुशकिल फेर ॥ माया विसारो मती जी । राखजो हमपर मेहर ॥ च ॥ १४ ॥ सज्जन विजयजी से भणे जी । तुम खोले हम वाल ॥ ऊँच नीच कांइ हुवे तो । कीजो सदा संभाल ॥ च ॥ १५ ॥ विजय जी कहे तुम पुत्री काजी । हम कुल की शृंगार॥ कुँवरी ने पण संतोष ने जी । दी शिक्षा हितकार ॥ च॥ १६ ॥ सीम लगन पहोंचाय ने जी । पाछा फिर्या भरतराय ॥ कुँवरी गुण संभारता जी। सुखे रहे घर अ य ॥ च ॥ १७ ॥ विजय सेन आदि सहू जी । सुखे मुकाम करंत ॥ विजयपुर ढिग आवीया जी । छिवडे

हर्ष धरंत ॥ च ॥ १८ ॥ सामंत पुर जन बधाइने जी । लेगया मेहल माय ॥ लीलाव ता घणी नम्र थइ जी । लागी सासूजीरे पाय ॥ च ॥ १९ ॥ चिरंस्वागी पुत्र वती हुवो जी । बढावो धर्म कुल मान ॥ भंडार तणी कूंची दीवी जी । राखे जीवन प्रान ॥ च ॥ २०॥ हाथ खरची में आपयिां जी । मोटा २ ग्राम ॥ नवरंग नवा मेहल रहण ने जी। दिया सहू आराम ॥ च ॥ २१ ॥ वैभव सुख दुगंदक परे जी । विल से चन्द्र कुँवार ॥ चन्द्र चांदणी सारखी जी ॥ प्रिती आपस में अपार ॥ च॥ २२ लीलाववती सुख थी रहेजी । पांडव मी यह ढाल ॥ अमोल कहे आगे सुनोजी । संयम लेवे नृपाल ॥ च ॥२३ ॥ ॥ दुहा ॥ तिण काले तिण अवसरे । सुमती ऋषि अणगार ॥ चरण करण गुण सागुरु । घणा मुनि परि वार ॥ १ ॥ जिन पद माहे जे करे । अप्रति बन्ध विहार ॥ सद्बोध देइ तारता । भव्य समुद्र संसार ॥ २ ॥ मनोरम नामे उध्यान में । समो सर्या ऋषि राय ॥ आज्ञा लेइ वन पाल की । उतर्या बाग में आय ॥ ३ ॥ माली लेइ भेटणो । आया कचेरी मांय ॥ मुनि आगम की वारता । सांभली हर्ष्यो राय ॥ ४ ॥ चतुरंगणी शैन्य सजी । आया वंदन काज ॥ प्रषदा बेठी भराय नें। दे उपदेश मुनि राय ॥ ५ ॥ ● ॥ ढाल ॥ ६ ठी ॥ रेलाला विछियो म्हारो वाज नो ॥ यह ॥ रे

श्रोता ॥ सांभलो श्रुत लगाय ने । कांइ यो संसार असार रे श्रोता ॥ तन धन जोबन कारमो । जैसे विजली को चमत्कार रे ॥ श्रोता सांभलो ॥ १ ॥ श्लोक ॥ श्रियो विद्युल्लोला, किति पय दिनं यौवनं मिदं ॥ सुखं दुःखा क्राता । वपूर नियंत व्याधि विधूरं ॥ गृहा वासः पासः । प्रणयाति सुखं स्थैर्य विमुखं ॥ असारः संसारः । स्तदिह नियतं जागृत जनाः ॥ १४॥ ७ ॥ रे श्रोता काल अहेडी सारखो । कांइ ताक रह्यो निशाण रे श्रोता ॥ न जाने किण वक्त में । यो तो हरण करी जासी प्राणरे ॥रे श्रोतासां०॥२॥ रे श्रोता सुख कारण यो जीवडो । कांइ उद्यम करे अपार रे श्रोता । ते दुःख रुप होइ परग में । कांइ इण भव परभव मझार रे श्रो ॥ सां ॥ ३ ॥ निश्चल सुख जो चाहिये । तो संयम करो अंगीकिर रे० ॥ नहीं तो श्रावक पणा आदरो । तो पण निकलसी सार श्रो ॥ सां ॥ ४ ॥ रे० पंच महा वृत मुनितणा । कांइ श्रावक का वृत बार रे श्रो० ॥ इण ने आराध्या जे जीवडे । तिणरो थयो निस्ताररे ॥ श्रो ॥ सां ॥ ५ ॥ रे० इत्यादि धर्म देशना । सुणी हृर्ष्या भव्य जनरे श्रो० ॥ केइ श्रावक पणो आदर्यो । नृप कर्यो संजम को मनरे श्रो ॥

अर्थात्—लक्ष्मी बिजली जैसी चपल, योबने थोडे दिनका पावणा, सुख जो दुःख रुप, शरीर व्याधी कर कर भरा हुवा घर बास कैद खाने जैसा, इत्यादि सयोग वनने से यह ससार असार गिनाजाताहै, ऐसाजान अहो सुखार्थीयों! जागो२!!

सां ॥ ६ ॥ रे० हाथ जोडी ने इम कहे । तहत बचन मुनिराय रे श्रोता ॥ सरध्या पर-
तीत्या निशंक मे । फरसणरी मन मायरे श्रोता ॥ सां ॥ ७ ॥ मुनि कहे उतावल की
जीये । प्रति बन्ध करणे नायरे श्रोता ॥ वंदना करी राय चालीया । आया राज रे
मांय रे श्रोता ॥ सां ॥ ८ ॥ राणी ने कहे राय जी । हमे लेशा संयम भार रे रा-
णी ॥ आज्ञा दीजे बेग स्युं ॥ हिवे ढील न करणी लगाररे राणी ॥ सां ९ ॥ हो-
सायब संयम मार्ग दोहीलो । थानो सुख माल शरीरहो श्वामी ॥ परि सहा सहण दोहि
ला । तिहां किम रहे मन स्थिरहो श्वामी ॥ १० ॥ अहो राणी कायर ने छे दोहिलो।
सूरारे मन सहज रे राणी ॥ हम क्षत्री पाछा नही हटां । शिघ्र रजा मुज देजरे राणी ॥
सां ॥ ११ ॥ अहो सायब राज काज यह सायबी । इण री कुण करसी संभाल हो
राजा । चन्द्रसेण छे नानड्यो । कोइ हम अवला अवतार रे राजा ॥ सां ॥ १२
॥ अहो राणी जीवता सहु रक्षा करे । काल खुटया किम थायरे राणी
काल को भरो छे नहीं । न जाने किण वेला आयरे राणी ॥ १३ ॥ सां ॥
अहो राज इम कठोर मन किम थयो । हम दया नावे लगार रे राजा । इत्ता दिनारी प्रितडी
कांइ किम तोडों निरधाररे राजा ॥सां॥१४॥ अहो राणी जो साची होवे प्रीत । तो चालो हम

लारे राणी। तो अखन्ड प्रिती रेवसी। होसी आत्मको उधारेरे राणी ॥सां॥१५॥ अहो राजा आप छोडे संसारने। तो में किस्यो करस्यूं रेयरे राजा ॥ आप मुनि में आर्जिका। इम नि-भाव स्यूं नेहरे राजा ॥ सां ॥ १६ ॥ रेश्रोता राणी वैरागी देखने। बोलायो चन्द्र सेण कुंवाररे श्रोता। राज करो पुत्र चेनमें। हम लेस्या संयम भाररे श्रो ॥ सां ॥ १७ ॥ कुंवर यह वचन सांभली। कांइ छूटी आंश्रूकी धाररे ॥ अहो तात आप मुजे छोडी गया। तो मुजने किणरो चाधार हो तात ॥ सां ॥ १८ ॥ अहो पुत्र राज करण जोग तूं थयो। म्हारे साधनो हिवे जोगरे पुत्र। परभव खरची लेवस्यूं। जो सुखीया होवां आगे लोगरे पुत्र ॥ सां ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शेर ॥ वैपार तो यहांका वहुत किया। अब वहांकाभी कुछ सोदालो ॥ जोखेप उधरकी चडनी है। उस खेप को यहां से लदवा लो ॥ उस रहामें जोकुछ खाते हो। उस खाने कोंभी बंधवालो। सब साथी पहोंचे मजलस पर। अब तुमभी अपना रस्तालो ॥तन सूखा कुबडी पीठ भइ। घोडे पर झीन धरो बाबा ॥ अब मोत नगारा बाज चुका। चलनेकी फिकर करो बाबा ॥१५॥❀॥ढाल॥ अहो पुत्र अबतो हम रहस्या नहीं। इम सुणी पिताका वेणरे श्रोता ॥ चन्द्र कुमर चुपको रह्यो। राज दियो ताम तत्क्षिण रे श्रोता ॥ सां ॥ २० ॥ रेश्रोता श्रूती सागर सचीव ऐ देखने। तिणने आयो वैरागरे

श्रोता । सोमचंद प्रधान बणायने । नृप साथ हुवो महा भागरे श्रोता ।। सां ।। २१ ।।
रेश्रोता राजा राणी प्रधानजी । तीनो विभुक्षित थायरे श्रोता ॥ कुंतीया वण की दुकान
से । पातरा ओगा मंगायरे श्रोता ॥ सां ।। २२ ॥ रेश्रोता सैंहंश्र पुरुष तोके जिसी ।
शिवकामें आरुढ होयरे श्रोता॥ सजन पुरजन संग परिवर्या । आया बागमें सोयरे श्रोता
॥ सां ॥ २३ ॥ पंचमुष्टी लोचन करी । लीनो संयम भाररे श्रोता । परिवार वंदी घरगया
। तीनो मुनी सति से वाररे श्रोता॥ सां॥ २४॥ करणी कर स्वर्गे गया । महा विदेह थइ
मोक्ष जायरे श्रोता ।। कार्तिक मुख जित्तो ढाल ए । ऋषि अमोलख गायरे ।। श्रोता ॥
सांभलो ॥ २५ ॥ ❀ ।। दुहा ।। चन्द्रसेण नृपत हुवा । जिम जोतषी मे सोम ।।
न्याय नीती सुरीती थी । सुख थी पाले कोम ॥ १ ॥ ❀ ।। श्लोक ।। इन्द्रात नृपत्वं
ज्वालान, प्रतांप । क्रोधंयमा, वैश्रमणा वितं ॥ सभ्य स्थिती राम जनार्दन भ्यां । मः
दाय राज्ञ क्रियते शरीरं ।। १६॥ ❀ ।। दुहा ॥ दिन२ बधे संपदा । पुण्य तणे पसाय ।
पंच धर्म करी नृपजे । तेही राज निभाय ॥ २ ॥ श्लोक ॥ दुष्टस्य दंड, स्वजनस्य पूजा ।
न्यायेन कोशस्य, च संप वृधी ॥ अपक्षपातो, निजराष्टे चिन्ता । पंचापि धर्मा नृप पुंगवान
॥ १७ ॥ दुहा ॥ सोम चंन्द्र प्रधान तस । बुद्धितणा भन्डार ॥ सुखसेन शैन्या पति

शूर वीर सिरदार ॥ ३ ॥ श्रीधर भन्डारी जी । रक्षक कोश का जेह ॥ गतिहूं मन्त्री रायका । धरता अधिको नेह ॥ ४ ॥ गेंदू नामे हजूरायो । श्वामी भक्त होंश्यार । और परिवार संपती घणी । सर्व जोग श्रेय कार ॥ ५ ॥ विजय पुरने पाग्वती । भील पल्ली बहु जेष्ट ॥ उपद्रवी घणा भीलडा । क्रूर स्वभावी नेष्ट ॥६ ॥ संग्राम करी तस वश किया । बधो शैन्य प्रताप ॥ चन्द्र नृप इन्द्र समा । सोहे रिद्ध सिद्ध आप ॥ ७ ॥
॥ ढाल ॥ ७ मी ॥ सहेल्याए आंबो मोरीयो ॥ यह ॥ तिण अवसर भरतपुर नयर मे । सज्जन सेण हो गुण सुन्दरी साथ ॥ बात करत विनोदनी । लीलावती हो यादज तव आत ॥ सुण जो कथा चित लाय ने ॥ टेर ॥ १ ॥ गुण सुन्दरी कहे स्वामी सुणो । निर मोही हो तुम दीसो छो पूर ॥ लीलवती मुज लाडली । परण्या पाछे हो न बूलाइ हजूर ॥ सुण ॥ २ ॥जिन विन घडी सरतो नही । तिण ने हो वर्ष वीत्या चार ॥ कभी याद कीनी नही । नही मंगाया हो समाचार । सुण ॥ ३ ॥ महीपत कहे शाणी सुणो । म्हारा मन में हो हुवे कभी को विचार । पण मोटा घर थी लावणो । वेगो किम हो होवे इण वार ॥ सुण ॥ ४ ॥ हिवे प्राते बुद्धि सागर भणी । भेजस्यू हो विजय पुर मेय ॥ थोडा दिन रे माय ने । ले आवसी हो लीलावती तेय ॥ सुणो ॥

विजयपुर पधारीये ॥ राजान सेण सज्जन हो दाखे । ने प्रधान दिन दूजे ॥ ५

५ ॥ दूजे दिन प्रधान ने । दाखे हो सज्जन सेण राजान ॥ विजयपुर पधारीये
लेइ आवोहो लीला वती जान ॥ सु ॥ ६ ॥ चन्द्रसेण भूपालने । कीजो हो हम छलने
जुहार ॥ मिलवाकी मन मे घणी । ते होसी हो पुण्य फलसी जेवार ॥ सु ॥ ७ ॥ तुम
विचक्षण छोघणा ॥ घणो तुम ने हो कहणो पडे नाय ॥ सुख शांतीसे पधार जो । बुद्धि
वन्ता हो जावे तिहां सुख पाय ॥ सु ॥ ८ ॥ जो हुकम श्वामी आपको । इम कही
हो हुवा शिघ्र तैयार । चतु घंट रथ आरुड हुइ । ते चाल्या हो करी ने नमस्कार ॥ सु
॥ ९ ॥ विजय पुर चल आविया । नमियाहो चन्द्रसेण ते आय ॥ जय विजय वधावीया
लाइ पत्रिका हो दीनी सामे ठाय ॥ सु ॥ १० ॥ चन्द्रनृप खुशी हुइ । बुद्धि सागर
को करायो सत्कार । सुख समाचार पूछीया । कर्यो हो योग सहू उचार ॥ ११ ॥ ❀ ॥
पत्र-मरहठ ॥ आपकी सुद्रष्टी मिला । कृपा भाव करी अत्र । निश दिन सर्व विध । वरते
आनंद मे ॥ तव सदा आरोग्य । कुशल संपती भोग्य । सुजस सुबुद्धि वृद्धी । सदा रहो
सुख वृंदमे ॥ येही मुज आस । विश्वास हे तुह्मारो खास ॥ नेह लीला नि भावो । जैसे
वृद्धि चन्द्र में ॥ देखन दीदार । जीवन तरसत अपार । नित्य वसी रह्यो चित्त । आप
मुख अरि बिन्द में ॥ १८ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ कागद वांची नृपती । चित पाया हो अ

तिही आणंद ॥ प्रिती पखी अंतस तणी । जेगो जाण्यो हो सुसराल समर्द ॥ सु ॥ १२ ॥ बुद्धिसागर प्रधान ने । पहोचाया हो लीलावती महल ॥ राणी जाइ पियर तणा । अणंनदी हो मनेम अति फेल ॥ सु ॥ १३ ॥ सुख समाचार पूछीया । खुश खबरी दी तिण हर्षाय । अणंदी घणी मन विषे । भक्ति भोजन हो प्रिती थी कराय ॥ सु ॥ १४ ॥ बुद्धि सागर रहे सुख मे । पूरी हुइ हो एविश्भाजित्तीं । ढाल ॥ अमोलऋषी कहे आगले । सहु सुणियों हो कर्मा का हवाल ॥ १५ ॥ ७ ॥ दूहा ॥ कर्म वली है जक्त मे । चैतन्य करे तस संच ॥ आवाधा काल पुरा हुवा । टले नहीं ते रंच ॥ १ ॥ हरी हर इंद्र ने चन्द्रते । कर्मे पाया दुख ॥ तोइहां चन्द्र सेण को । कहवो वरणवस्यूं मुख ॥ २॥कारण से कार्य हुवे॥निमित मिलि विच आय ॥ तिम सवर मंडप विचे ।जेजे बीज रोपाय ॥ ॥३॥तेह तणो द्रुम जे भयो।लाग्या पत्त पुष्प फल॥ते चरित्र श्रोता जनो।सुनो हो मन विमल ॥४

ढाल ॥ ८ ॥ मी ॥चार प्रहर नो दिन हुवेरे लाल ॥ यह ॥ काशमीर देश तणे विषेरे लाल । कनक पुर वर सेहर हो श्रोता जान ॥ कंखरथ राजा तेहनारे लाल ॥ दुमुख प्रधान पर मेहर हो श्रोता जन ॥ १ ॥ जोवो विचार कामी तणोरे लाल । कामी कपटी होय हो श्रोताजन ॥ अंतर वाहिर जुजुवारे लाल ॥ कामीना काम होय हो श्रोताजन ॥ २ ॥

राजा प्रधान दोनों लम्पटीरे लाल । उपर से घणो प्रेम हो श्रो० ॥ अना चारी परजा हुइरे लाल । रइयत रहे राय जेम हो श्रो० ॥ जो ॥ ३ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ राज्ञि धार्मिण धर्मिष्टा । पापे पाप समे सभाः॥ राजा ने मन वृतते । यथा राजा स्तथा प्रजा ॥ १९ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ एक दिन नृप प्रधान जीरे लाल । बेठा एकान्त जाय हो श्रो० ॥ चारित्रि कथा करवा लगारे लाल ॥ कामीको ज्ञान कैसे आय हो श्रो० ॥ जो ॥ ४ ॥ दुहा ॥ ज्ञानीसे ज्ञानी मिले । तो ज्ञानकी लूंटा लूट ॥ मूर्खसे मूर्ख मिले । वो करे मांथा कूट ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ सवरा मन्डप की कथारे लाल । निकली तिहां तिणवार हो श्रो० ॥ राय कहे प्रधान स्यूरे लाल । केसी सुन्दरथी नारहो श्रो० ॥जो ॥ ५ ॥ साक्षात रती समीरे लाल । तैसी और न कोय हो मंत्री श्वर ॥ मुजने ते वरती हूंतीरे लाल । पण चन्द्र सेण लिये जोय हो मंत्रीश्वर ॥ जो ॥ ६ ॥ तास छवी मुज मन थकीरे लाल । भुलाय नहीं क्षिण एक हो मं० । अहो निश चेन पडे नहींरे लाल । किम पूरे ए टेक हो मं० ॥ जो ॥ ७ ॥ ऐसो उपाय वतावीये लाल । लीलावती आवे हाथ हो मं० ॥ दुमुख जी कहे सांभलोरे लाल । फिकर न करो भूनाथ हो राजेश्वर ॥ जो ॥ ८ ॥ में जाइ आवूं विजय पुरेरे लाल । चौकस करवा काज हो रा० ॥ शैन्य सामंत ऋद्धि सहूरे

लाल । देखी आवूं सब साज हो रा० ॥ ९ ॥ म्हारी पहली पत्नी तणोरे लाल । पीयर लक्ष्मीधर गेह हो रा० ॥ ते भन्डारी चन्द्रसेनकारे लाल । सहू वतासी तेह हो रा० ॥जो॥१०॥भूधव कहे जलदी करोरे लाल।एसलाछे ठीकहो मं० ॥पाछे साज रुजाव स्यांरेलाल हो जास्या निर्विक होरा ॥ ॥ जो ॥ ११ ॥ दुमुख अश्वा रूढ हुवारे लाल । आया विजयपुर तास हो श्रो० ॥ । भन्डारी घरे उतर्या रेलाल ! भक्ति भाव किया जास हो श्रोता ॥ जो ॥ १२ ॥ एकान्त दोनो बेठनेरे लाल । पूछे भन्डारी जी तास हो ॥ सा जन ॥ मुज भगिनि भूआ पछेरे लाल । आप को किहां छे वास हो सा० ॥ जो ॥ १३ ॥ दुमुख कहे शिष्ट पुर तजीरे लाल । हू जाइ वस्यो कासलीर हो सा० ॥ कनक पुरी छे स्वर्ग समरे लाल । तिहां कंखरथ अमीर हो सा० ॥ जो ॥ १४ ॥ सचीव मुज ने बणावियोरे लाल । तिहां ही थयो मुझ व्याव हो सा० ॥ एकही कन्या तेहनेरे लाल । सहू भेला रहां धर औछावहो सा० ॥ जो ॥ १५ ॥ लक्ष्मी धर कहे कांजियेरे लाल । शिष्ट पुर दियो किण ताय हो साज्जन ॥ दुमुख कहे मुज हस्त छेरे लाल । संभाल करूंछू जायहो सा ॥ जो ॥ १६ ॥ फिर पूछे भन्डारीजी रेलाल । कंख रथ छे केसा राज होसा० ॥ राज काज शैन्या दिक रेलाल । भाखो योग जे साज हो सा० ॥ जो ॥

१७ ॥ दुमुख कहे ते राजवीरे लाल । छे न्यायवंत सुख कार हो सा० ॥ तेजवंत बलवंत घणा रेलाल । दुर्जन गया सहु हार हो सा० ॥ १८ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ आप २ की पर संस्या करे । कुल की येही रीत । उंटा केरा व्याव में । गद्धा गाव गीत ॥ २० ॥ ❁ ॥ ढाल॥फिर पूछे दुमुख जी रेलाल।कहो इहां को वृतान्त होसा०॥भन्डारी कहे संभलो ॥इहां छे चन्द्रसेण रावहो सा०॥जो ॥१९॥शूर वीर महाप्राक्रमी रेलाल।दिन२चडतो प्रतापहोसाजन सामन्त प्रजा प्रेम धरे घणोरे लाल । ऋद्धि सिद्धि ये सोहे आप होसा० ॥ जो ॥२० ॥ दुमुख कहे देखाडी येरे लाल । राज सायबी मुज तांय हो सा० ॥ लक्ष्मी धर संग ले चल्यारे लाल । आया राज मेहल मांय हो ॥ सां ॥ जो ॥ २१ तिण अवसर लीला वती रेलाल । उभी थी गोख माय हो सा० ॥ दुमुख मोहीया मुरछा पड्या रेलाल । भन्डारी पूछे ताय हो सा० जो ॥ २२ ॥ दूमुखः कहे ठोकर लगी रेलाल । कामीन बो-ले सत्य हो सा० ॥ राजसभा में आवियारे लाल । जो भुप आमत्य हो सा० ॥ २३ ॥ अश्चर्य अधिको पावीयारे लाल । इन्द्र सम ऋद्धि श्रेकारहो सा० ॥ भन्डारी संग घर आवीयारे लाल । करता मन मे विचार हो ॥ जो ॥ २४ ॥ थोडा दिन रही करि रेलाल । फिर चाल्या निज देश हो श्रोत० ॥सिर्द्धी ढाल पूरी हुइरे लाल । कहे आमोल

सुणो शेष हो श्रोत० ॥ जो ॥ २५ ॥ ॥ दूहा ॥ दुमुख रस्ते चालता । मन में करे बिचार ॥ लीलावती मुज राणी हुवे । ऐसो करुं उपचार ॥ १ ॥ घर पोताने आवीया । बठया सोचे उपाय ॥ कुरुदत नाम मंत्री तस । मिलण तास ढिग आय ॥ २ ॥ पूछे चिन्ता किसी करो । गया हूंता किन ठाम ॥ दुमुख कहे विजयपुर जोइ । अभी आयोछूं आम ॥ ३ ॥ पत्नीराय चन्द्रसेन की । साक्षात इन्द्राणी समान ॥ कंख रथ हरवा च-हे। मुज भेज्यो थो तान ॥ ४ ॥ तेहि पेखी आवियो । कर तो तेह विचार ॥ इत्ते तुम पधारीया। पेखी हर्षो अपार ॥ ५ ॥ ढाल९ मी ॥ नणदल हो नणदल ॥ यह० ॥ देखो कपटी को कपट पणो । कपटी धूतारा होयहो सज्जन॥ कुरुदत्त कहे आगे कहो। तुम करी आया सोयहो सज्जन ॥देखो ॥ १ ॥दूःख मुख दरसावे नहीं । खरो पोतो नो विचार हो सज्जन । कुरुदत्त कहे मंत्री हुइ । कपट न करो इनवार हो सा ॥ देखो ॥ २ ॥ दुमुख कहे भाखु कीस्यो । मुज मन मोटी बात हो सा० ॥ इश्वर कृपाए सिद्धि हुवे । तो फिर मजा आत हो स० ॥ देखो ॥ ३ ॥ कुरुदत्त कहे म्हारी सुणो । एक तो एकही होय हो स० ॥ दो एके ग्यारा हुवे । काम करे कहो सोयहो स० ॥ देखो ॥ ४ ॥ सिद्ध साधक नी जोडी कही । रामलक्ष्मण की जोड होस० ॥ तो प्रतापी रा-

मग तणी । छिन मे लंका म्हांखी तोड होस० ॥ देखो ॥ ५ ॥ तिण थी विचारजे तुम
तणो । दीजिये मुजने सुणाय होस०॥ शंक अन्तर राखो मती ।शक्ते होस्यू सहाय होस
० ॥ देखो ॥ ६ ॥ हर्षीने दूमुख भणे । तुमथी गुप्त न बात होस० ॥ लीलावनी मोहनी
तणे । में पेख्यो तिहां गोत होस० ॥ देखो ॥ ७ ॥ हातो हात विधीये घडी ॥
लेइ जगत् को सार होस० ॥ बीजी नारी नहीं विश्वमें । लीलावती अनुहार होस० ॥
खा ॥ ८ ॥ कुरुदत्त कहे इण बात में । आधिकाइ किसी कहवाय होस० ॥ ते राणी ।
महाराय की । अपने हाथ किम आय होस० ॥ देखो ॥ ९ ॥ व्यर्थ इछा नहीं किजीये ।
रांक रतननी पेर होंश ॥ दुमुख कहे इम ना कहो । उपाय राख्यो में हेर होस० ॥ देख
॥ १० ॥ कंख रथ महाराज की । मरजी पण छे एय होस० ॥ तेहने हुं भरमाय ने ।
शैन्य सजाइ संग लेय होस० ॥ देखो ॥११॥ जास्यां हमविजयपूरे । देवा चन्द्रनृपनेभ -
गाय होस० ॥ ललितावती वश आणस्या । सिद्ध हमारो उपाय होस० ॥ देखो ॥ १२ ॥
कुरुदत्त कहे बुद्धि तुम तणी । तुच्छ दीसे इणबात होस० ॥ ते राणी होसी कंख रथ की
। अपणे हाथ कांइ आत हो स० ॥ देखो ॥ १३ ॥ दुमुख कहे आगल सुणो । ते असी
अपना राज मांय होस०॥तब कोइ उपाय कंख रथ भणी । देस्या थेमं सदन पहोंचाय हो

स० ॥ देखो ॥ १४ ॥ फिर प्यारी लीलावती भणी । कर लेस्यू मुज वश होस० ॥ इम इच्छा सहू सिद्ध हुवे । गुप्त कह्या तुज कश होस० ॥ देंखो ॥ १५ ॥ कुरुदत्त तहे भली कही। तुम मतलब इण मांय होस०॥ तुम राजा वा राणी तुम तणी । मुज हाथे सीं आव होस० ॥ देखो ॥ १६ ॥ दुमुख कहे हूं तुज भणी । बनास्यूं महारो प्रधान होस० ॥ भूलू। नहीं प्यारा मित्र ने । पक्की यह शमारी जबान होस० ॥ देखो ॥१७॥हर्षी भणे कुरुदत्त-जी । मुज सरीखो कोई काज होस० ॥ होवे ते प्रकासीये । जो मुज थी लगे साज हो स० ॥ देखो ॥ १८ ॥ दूमुख कहे हिमत धरी । तूम जो करो एक काम होस० ॥ तो थोडा माहे आपणी । सघली पुगे हाम होस० ॥ देखो ॥ १९ ॥ हम जावां शैन्य लेइने ।-विजयपुर जिण वार हो स० ॥ चन्द्र सेण सामा आवसी । शैन्य सामंत सहूलार होस० ॥ देखो ॥ २० ॥ तिण वेला तुम गुप्त पणे तिहां । जइ चन्द्र सेण मेहल लांय होस ॥ लीलावती लेइ भागजो । शिष्ट पुर रहजो जाय होस ॥ देखो ॥ २१ ॥ बहोत करी कंख रथ की करूं संग्राम में घात होस०॥मैं राजा तुम प्रधान जी ।लीलावती प्यारी थात होस० ॥ देखो ॥ २२ ॥ सल्ला ठसीये तस मने।पाया हर्ष अपार होस०॥बचन पक्का दोनों किया । करो निज२काम धार होस० ॥ देखो ॥ २३ ॥ मनोराज बणिया उभे ॥ कुरुदत्त

देखो गया निज घेर होस० ॥ दूमुख राय ना मन विषे । उपजे हर्ष की लेहर होस० ॥ अमोल कहे बचो ॥ २४ ॥ जोवो श्रोता कार्मा तणा । कृतघ्नता ना सवाल होस ॥ देखो ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ कुरुदत्त घरे गया । पाप थी । एहुइ निद्धी ढाल होस ॥ १ ॥ दुमुख पण हुइ मन खुशाल ॥ प्रधान आपण होवस्यां । मंत्री हुसी नरपाल ॥ अब तो काज सिद्ध होय॥ राजी हूवा । हुवा एक से दोय ॥ सिद्ध साधक दोनो मिल्या । अब तो काज सिद्ध होय॥ २ ॥ राजा ने भरमाइ ने । शैन्य करावू तैयार ॥ विधाता देवो बुद्ध मुज । काम पडे जिन पार ॥ ६ ॥ रात थोडी गइ अछे । जाणो नृपती पास ॥ अब तो होसिः एकला । तत् क्षिण उठ्यो हुलास ॥ ४ ॥ सयन भवन ने पाखती । बैठ्या था राजिन्द ॥ दुमुख आया देखके । पाया घणो आनंद ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १० मी ॥ श्रीरामजी नारन पाइ हो ॥ यह ॥ महीपाल तिण ने पास बेठाया । अति घणो सन्मान्याइ हो ॥ कब आया तुम विजयपुर थी । पूछे तब राजा इहां ॥ सुणो कपटी तणी कपटाइ हो ॥ १ ॥ टेर ॥ दुमुख कहे अबी भोजन करने । आयो आप पासाइ हो ॥ आपका दरसन ने मन चहा तो । ते अब हूवेछे पूरा इहां ॥ सुणो ॥ २ ॥ नरिन्द्र कहे कहो विजयपुर कहानी । काम फत्ते थासी भाइ हो ॥ मुज दिल हरणी म्हारो हाथे । कहोजी किण दिन आइ हो ॥

सुनो॥३॥कार्य तोहोतो नहीं स्वामी । कर तां कोड उपाइ हो ॥ पण आप को दास ग-
यो थो । तिणथी सहु सिद्धि थाइ हो ॥ सुनो ॥ ४ ॥ कांइ हुवो ते मुजने कहोजी । देर
करो मत कांइहो ॥ शंका कोइ लावो मत मनमां। कृता कर सा थाइहो ॥ सुनो ॥ ५ ॥
मंत्री दाखे सुनो महाराजा। विजयपुर की सुघडाइहो ॥ साक्षातते स्वर्ग सरीखी । देखत
मन मोहाइहो ॥ सुनो ॥ ६ ॥ चन्द्रसेणमहाराज तिहां का । साक्षातइन्द्र साइहो ॥ शू-
रवीर ने चतुर विचक्षण । शत्रू रह्या धुजाइहो ॥ सुनो ॥ ७ ॥ सामंत मंत्री नी नृपत पर
प्रेम अधिक दरसाइहो ॥ तेपण प्राण झोंके नृप काजे । इन्द्र शभा ज्यों देखाइहो ॥ सु-
नो ॥ ८ ॥ नगर लोक पण राजा जैसा । धर्म नीती वरताइहो ॥ नृपने साठे प्राणने खर
चे । सहु सायवी सुखदाइहो ॥ सुनो ॥ ९ ॥ इत्यादि सामग्री तेहनी । एकथी एक स-
वाइहो ॥ ते देखीने म्हारो जीवडो । अधिक गयो मुरजाइहो ॥ सुनो ॥ १० ॥ महीपत
भाखे प्यारा मंत्री । वात विषम पडी जाइहो ॥ अपना राजमें फूट घणीछे । कार्य सिद्ध
किम थाइहो ॥ सुनो ॥ ११ ॥ मनमे आस धणीथी महारे ॥ ते वात सुणी विरलाइहो।
हादेव! हिवे किस्यो करूंमे । निश्वास नृप न्हख्याइहो ॥ १२ ॥ मंत्री कहे फिकर नही
कीजे । हिम्मत धरो मनमाइहो ॥ हिमतथी विषम सम होवे । हिमत हार्यां हराइहो ॥

सुनो ॥ १३ ॥ ❀ ॥ मनहर ॥ हिमतजो होय तो हरएक काम करी सके। हिमतथीं बाघ मोटा हाथीने विदारेछे ॥ हिमतथी नारी पण हथीयार हाथ ग्रही । महा रण माहे मोटा मरदने मारेछे ॥ हिमतथी भूत प्रेत तणो भय भागी जाय । हिमतथी मणी धर हाथ मांही । धारेछे । हिमत जो हीया माहे होय दलपत कहे । बूडताने बाह्य ग्रही । नरे अने तारेछे ॥२१ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ बुद्धिवंतने आगल श्वामी । बलवंत रहे वेठाइहो ॥ जंबुक बुद्धिथी मोटा सिंघने । न्हाख्यो कूपने मांइहो ॥ सुनो ॥ १४ ॥ भूप कहे अहो मंत्रीश्वर।बुद्धि ऐसी को उपाइहो । लीलावती आवे मुज हाथे । मानु उपगार थांराइहो ॥ सुनो॥१५॥उपाव एक दाखु में श्वामी ।जोउपज्यो मनमाइहो॥ तिण प्रमाणे जो करस्योतो । कार्य निश्चय थाइ हो ॥ सुनो ॥ १६ ॥ प्रात समय शैन्यापति बुलाइ । शैन्या लेणी सजाइ हो ॥ शैन्यापति ने इहा राखणो । राजरक्षा ने तांइ हो ॥ सु ॥ १७ ॥ फिरवानोमिश करी निकलणो । भेद न को जान पाइ हो॥ चुप चाप विजयाढिग पहाड में ।दिन का रहणो छिपाइ हो ॥ सुनो ॥ १८ ॥ सांज समय सहू लोक तिहां का । घरधंदा में फसाइ हो ॥ आपां एक दम जाइ पडस्यां । देश्या सहू न घवराइ हो ॥ सुनो ॥१९ ॥ नाके २ चोका वेठाइ । घेर स्या मेहल ने जाइ हो ॥ में कुछ सूभट लेइ साथे । जा

स्यू महलेर मांइ हो ॥ सुणो ॥ २० ॥ चन्द्रसेन ने पकडी बान्ध स्या । लीलावती करां
वश मांइ हो ॥ लंका पती मुखें ढाल अमोलख दाखी । सुणो जे चिचमां थाइ हो ॥सु
नो ॥ २१ ॥ ※ ॥ दुहा ॥ इम वातां करता थका । बेठा कंवरथ राय ॥ पति जैसी
पत्नी हुवे । सेर जैसी सेर आय ॥ १ ॥ कुसीता राणी राय की । शैन्यपति संग नेह ॥
ते दिन वचन दियो हूतो । राते आस्यूं तुम गेह ॥ २ ॥ ते तैय्यार हुइ तदा । बेठी
जावा काम ॥ प्रधान नृप वाते लग्या । अवसर पाइ जाम ॥ ३ ॥ आइ शैन्यापति घरे
। मन मे हुइ हुल्लास ॥ वाट जोता महा शैन्यजी । वक्त हुइ बहू तास ॥ ४ ॥ ते तले
आइ देखने । हर्षित हुवा अपार ॥ आदर दे बेठाइ ढिग । करेविनोदविचार ॥५ ॥ ※॥
ढाल ११ मी ॥ राम आया जमना खोटा ॥ यह० ॥शाणा नागी चरित्र लो जोइ । सुण
फन्द न फसजो कोइजी शाणा ॥ टेक ॥ शैन्यपती कहे तुम दरसण ने । में थो घणो
तरस्योइजी ॥ शाणा ॥ १ ॥ मोडो आज कियो किम प्यारी । ते बोली खुश
होइरेजी ॥ शा ॥ २ ॥ पहली राय अकेला बेठाथा । रखे ते आये मायोइजी । शा ॥
३ ॥ पीछेसे प्रधानजी आया । वातां सुणती सोइजी ॥ शा ॥ ४ ॥ अपना मतलबकी हुं
ती वातां । शन्यधी कहेतो कहोइजी ॥ शा ॥ ५ कहे राणी काले या परस्यू । शैन्य था

णी रुज होइजी ॥ शा ॥ ३ ॥ विजयपुर लीलावती कारण । लडवा जावसी राजोइजी ॥ शा ॥ ७ ॥ थे कोइ तरह को मिश करीने । । रहजो इण ठोडोइजी ॥ शा ॥ ॥ ८ ॥ पछे आपांने फिकरन कांइ । करस्या मन चिन्तयोइजी ॥ शा ॥ ९ ॥ इण बातने भूलजो थे मती । सोगन म्हारी जाणोइजी ॥ शा ॥ १० ॥ म्हारो मन तुम मांइ धर्यो थो । आणो पडे अवसर जोइजी ॥ शा ॥ ११ ॥ लोकलाज जरा रखणी पडेछे । थां विन म्हारे न दुजोइजी ॥ शा ॥ १२ ॥ शैनपती खुश होइ बोले । प्रभु सहायक थयोइ जी ॥ शा ॥ १३ ॥ हांस विलास करी फिरी राणी । कंवरथ दुमुख दोइजी ॥ शा ॥ १४ ॥ शल्ला जची राजा के मनमे । कहे करस्यू तुम कह्योइजी ॥ शा ॥ १५ ॥ मुज कारणतुम दुःख सह्यो घणो । विजयपुर चरी आयाजोइजी ॥ शा ॥ १६ ॥ दूमुख कर जोडी तब बोले । हम आपका दासोइजी ॥ शा ॥ १८ ॥ आपकी कृपा दृष्टी चाहिये । नृप कहे रात घणी होइजी ॥ शा ॥ १८ ॥ हिवे प्रधानजी घरे पधारे । थाक्यो होसो जाबोसोइजी ॥ शा ॥ १९ ॥ मुजरो कर दुमुख गया घर । मनडो तस हरक्योइजी ॥ शा ॥ २० ॥ राय जा बेठचा सयन सेज पर । राणी तिहां नहीं जोइजी ॥ शा ॥ २१ ॥ चारी कानी जोइ महलमे । पतो न तस लाग्योइजी॥ शा ॥२२॥फिकर करता फिर आइ बे-

ठा । राणी आइ तिहां पेख्योइजी ॥ शा ॥ २२ ॥ राजेश्वर सेज बेठां निहाली । उपाव
तब घडयोइजी ॥ शा ॥ २३ ॥ पंत्त्या पास की सूनी ओरी मे । पेसी ते छानेइजी ॥
शा ॥ २४ ॥ ठसक २ तब रोवा लागी । राय सुन करे अचंभोजी ॥ शा ॥ २५ ॥ आइ
राय तब तास बोलावे । तिम २ ज्यादा रोइजी ॥शा ॥ २६ ॥ थाने तो लीलावती चाहि
ये । मने तो अब मरणोइजी ॥ शा ॥ २७ ॥ इम कही माथो कूटण लागी । नृप तस
हाथ पकडेयाइजी ॥ शा ॥ २८ ॥ थारे से ज्यादा महारे नही दूजी । नही पाडूं अंतरो-
इजी ॥ शा ॥ २९ ॥ लीलावती ने थारी दासी बणास्यूं । तूं पटराणी होइजी ॥ शा ॥
३० ॥ विजयपुर को राज लेवाने । जावूंगा में फजरे इजी ॥ शा ॥ ३१ ॥ इम समजाइ
सेज पर लाइ । तासहँस्यां मुखडोइजी ॥ शा ॥ ३२ ॥ रुद्र संख्यानी ढाल ए भाखी ।
अमोल कहे चरित्र ए होइजी ॥ शा ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ देखो नारी चरित्र ने । पा
र कोइ नहीं पाय । कथा तेह वरणवतां । अंत कभी नहीं आय ॥ १ ॥ ❀ ॥ छपाय ॥
तिया चरित्र लख करे । प्रित लाग्यां संग जोडे ॥ दिन डोरडे डरे । राते वासिंगण मोडे
॥ ऊंदर स्यूं औचके । कान केहरी को झाले ॥ देहली स्यूं गिरपडे । चडे प्रवत शिख
राले ॥ भर्या समुद्र तर नीसरे । रीता मांहे बूडी मरे । कवी कहे अहो गुनी जन । त्रि

या चरित्र एता करे ॥ १ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ बडा २ ने हराइया । रामा महीमंड मांय ॥ मरदां ने रांड्या कर्या । कहतां मन शरमाय ॥ २ ॥ ❀ ॥ मनहर ॥ बांकडी मूछडीवा-ला । रंगीला नेरढीयाला । छेलने छोगाला भाला । नारीये नमाडीया॥ मानी मछराला । ज्ञानी ध्यानी वली गुण वाला । दूंदाला फूंदाला । चे'र चन्डाल चाडीया ॥ बृद्ध जवान बाला । जोगी भोगीने दयाला । वरण उज्वल काला । भामाय भमाडीया ॥ देवताने द्रगपाला । जल थलव्योम वाला । खोडा दास श्वर पाला । रामाए रमाडीया॥ १ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ देखो कपट कुसीता तणो । राजन दियो भरमाय ॥ काज आपणो साधवा । बण बेठी ज्यों शाह ॥ ३ ॥ ऐसी नीच स्त्री थकी । मूर्ख रह्या लोभाय ॥ कंवरथ भरमी गया । सूता सुखरे मांय ॥ ४ ॥ प्रात थया थी शिघ्रता । कंवरथ नाम राय ॥ रातकी बात ने याद कर । मोटी शभा सजाय ॥ ५ ॥ मंत्री नी शला जिसा । बोले तब भूपाल ॥ राज बढावां आपणो । यह क्षत्री की चाल ॥ ६ ॥ विजय पुर तावे करण । हम मन हुवो विचार ॥ सामंतादि शूर सब । वेगा होवो तैयार ॥ ७ ॥ सहू हुकम ते मानीयो । मंत्री बोले ताम ॥ महा मेन शैन्या पति । तुम करो एसो काम ॥ ८ ॥ चतुर्थंश शैन्य सहित । इहां रह्यो रक्षा काज ॥ पौणी दो हम साथ सज । जे उत्तमो त्तम आज ॥ ९ ॥ ● ॥

ढाल १२ मी ॥ भुजंगी छन्द ॥ नृप कहे वेगी करो सजाइ । इम काम में ढील करणी
जी नाही । गर्गा महूर्त पिछली रात माहीं । तिण वेलां यहां थी होणो विदाइ ॥ १ ॥
शैन्या पति तुम रहजो इहां ही । प्रजा की संभाल करजो सदाइ ॥ फोजदार वयण ते
सीश चडाइ । मानी आज्ञा आप जे फरमाइ ॥ २ ॥ सज्ज तणी तब भेरी वजाइ । नृप-
त हुकम सहू को सुणाइ ॥ शुरा श्रवण कर आनन्द पाइ । कायर का रह्या हीया थरराइ
॥ ३ ॥घटा जैसा काला ने मदमत वाला । गुंजारव करे सूंडा दंड उछाला ॥ अम्बाडी
हेमे चमका विद्युमाला । गाजी रह्या गज सत त्रितॉलि[४३००] ॥ ४ ॥ तुरंगा कुरंगा ज्यू भया चौ
फाला । हणणाट करता नेत रोशाल ॥ सत पांचसो पॅलॉण[५००००] बैठा मुछाला । थइ २ ना
च.ते धोला लाल काला॥५ ॥ घणणाट घुंघरु पली जो बाजे । रेशम जरी भरखोली विरा
जे । छोट श्रृंग धोरी मोटा भलाजे । रथ शास्त्र भरीया दो सहेश्र[१०००] साजे ॥ ६ ॥ शूरा
म हा बीरा सुभट संगे । वक्तर शास्त्र सज्या नव२ रंगे ॥ लॅक्षएॅक[१००००००] धरता लडवा उमंगे ।
मरे मारे न हटे विकट जंगे ॥ ७ ॥ चउ विद कटक विकट ऐसा सजीया । रणा
सिंघा कजोश शैन्य में गजीया ॥ देखी पिशुन्प दल भग जाय लजीया । ऐसा चडया
॥ धरिहेमन रजीया ॥ ८ ॥ नृपत मंत्री अटण कर न्हाया । वक्तर शास्त्र शिरे अंगे सजा य

धरी हर्ष बेठा मयंगल आया । पंच रंग नेजा गगन फर राया ॥ ९ ॥ चली फोज चौज धरणी थरर धूजे । रज चडी गगने सूर्य नहीं सूजे ॥ पाद धडाकें ऊंडी खाड रुंजे । सरोवर जल तो हो जायछूः जे ॥ १० ॥ धर कूंच करता विजय पुर ढिग आया । छिपी पहाड झडे सबी दिन रहाया ॥ निशी व्यापतां पुरने घेरा दिराया । निशाण बन्धी मौरछा जहां जमाया ॥ ११ ॥ द्वार रक्षके शिघ्र द्वार लगाया । बुगल फुंकी ने उपद्रव जणाया ॥ नगर जन काने नहीं सुन पाया । शत्रू तणा दल दावज पाया ॥ १२ धढडड छोडी सेत्घनी जारे । खडडड खडक्या नगर लोक त्यारे ॥ भडडड भड क्या द्वार रक्षवारे।सडडड फूंकी सर णाइ कोट वारे॥१३॥कोट द्वार तोडी नगर मांहेआया।गली २ नाके निशाणा लगाया॥पुर लोक घरके मांहे भराया । अहो प्रमेश्वर यह संकट कैसः आया ॥ १४॥ अन्दर रह्या सिरदार लेइ खड्गहाथे। शत्रूतणी करवा धारी घात ।।क्या करे तम घोर छारही रात । पोता की शैन्या नहीं को संघाते ॥ १५ ॥ भय पामी पुर जन घर छोड भाग्या । कितनाक तो परमेश्वर ध्याने लाग्या ॥ कितनाइ तो निद्रा मांहे थी जाग्या । किताक धन नारी स्वजन त्यागा ॥ १६ ॥ कितनीक महिला वस्त्र राहित जावे । छोटे बाल बच्ची को छाती लगावे ॥ कोइ किनकी संभाल करने न पावे । संकट समय आडो कहो कौन

आवे ॥ १७ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ न साजार्थे विंत्त । सुत सज्जन सतरीप ॥ नच भार्या भ-
ग्नि । न मितवर्ग तथ मपि ॥ न बन्धू मरणांते । सरण मपि कौपिन दश्यते ॥ श्रीजिन
प्रणिताला । धर्म मपि मे कास्ति केवलं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ चन्द्रसेन नृप हाक सुणी
तब कान । तत्क्षिण गोख माहीं आये राजान ॥ मारो २ पकडो छोडावो को म्हान ।
दोडो आवो कोइ अहो भगवान ॥ १८ ॥ इत्यादि श्रवणी चिन्ते महाराजा । अहो प्रभू
यह क्या होवे अकाजा ॥ इतन में गेंदू आया घबन्याजा । पूछे नृप यह क्या होता बला
जा ॥ १९ ॥ गेंदू धूजतो बोले मूमू महाराजा । सस शत्रू को अअ आया आज ॥ मूमू
मारे प्रजा कांप गलाज । सूसू सार कोइ करो राखो लाज ॥ २० ॥ सुणी धराधव अति
क्रोध भराया । वक्तर पहरी खड्ग हाथे सहाया ॥ शूरत्व अंग अभंग भराया । अरे कोन
दुष्ट मेरे पुर में आयः ॥ २१ ॥ लीलावीता पास गेंदू बेठाथा । खूब होंश्यारी रखना मे॥
भाया ॥ संभलाइ पत्नी भवन नीचे आया । झट पट शत्रू के सामे जो धाया ॥ २२ हे
उतजेन अपन लोकों को दीया । अहो मारो दुष्टोंको इनका क्या लीया ॥मैंास ढाल मारे
भूजंग छन्द कीया । अमोल कहे वीर रस कोन पीया ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ नृपती आ
या जान कर।शूर हुवा शिरदार ॥ मार हाण करवा लग्या । पीछो न जोवे लगार ॥ १॥

चन्द्र नृप आयो लाखी । कंवरथ की शैन्य ॥ उलटी उदधी पूरज्यों । बोलनी मुख कू-
बेन ॥ २ ॥ जुज शिरदार ने चन्द्रनृप । शत्रूदल अपार ॥ जाणी ने पाछाहट्या । किस्यो
करे जुजार ॥ ३ ॥ दुमुख अबसर देखकर । कुरुदत्त को चेताय ॥ शतैंदो सूभट साथ ले
। चन्द्र सदन घेराय ॥ ४ ॥ विश्वासू नर साथ ले । पैठो महल के मांय ॥ लीलावती
जोता फिरे । करण फने इच्छाय ॥ ❁ ॥ ढाल १३ मी ॥ श्री अभी नन्दन दूःख निकंद
न ॥ यह ॥ लीलावती घबरावण लागी । हरण करण भीती जागीजी ॥ रखे दुष्ठ मुज्ज
शीलने भांगे । चोबाजू जोवे थागीजी ॥ देखो दुष्ट तणी दूष्टाइ ॥ टेर ॥ १ ॥ गेंदु क-
हे फिकर करो मत कांइ ।चालो मुज साथ मांइजी ॥ देवूं आपके पीहर पहोंचाइ । तिहां
रहस्या सुख माइजी ॥ देखो ॥ २ ॥ नृपती शत्रूने भगाइ । भरतपुरथी लेसी बुलाइजी
॥ रखे शत्रू पकडले जाइ । पाछें करस्या कहो कांइजी ॥ देखो ॥ ६ ॥ लीलावती कहे
चालो भाइ । जहां तुझ इच्छाइजी ॥ गेंदू राणी ने बान्धी पीठपर । जिम ओलखे कौइ
नाइजी ॥ देखो ॥ ४ ॥ गुप्त मार्गथी बाहिर निकल्या । द्रष्टी न कोइके आयाजी ॥ ग्रा
म बाहिर भरतपुर के मार्ग । अनुसारे चाल्या जायाजी ॥ देखो ॥ ५ ॥ चन्द्रनृप लडत
एकला रहीया । शिरदार भागा जोइजी ॥ तत्क्षिण फिर आया मेंहल मांही । रखे ली-

लावनी लुप्त होइजी ॥ देखो ॥ ६ ॥ देखी मेहलशेंते नहीं पाइ । तब मन मांहे घबराइ जी ॥ दासी एक कह्यो गेंदू लगयो । तब जरा धीरज आइजी ॥ देखो ॥ ७ ॥ शत्रू तणो जोरो घणो जाणी । गुप्त रस्ते तिण वारोजी । नगर वाहिर भूपत चन्द्रआया । करता केइ विचारेजी ॥ देखो ॥ ८ ॥ कूरुदत्त आदि शत्रू का सुभट । सहु मेहल फिरीने जोयाजी ॥ राजा राणी कोइ नहीं पाया । तब निराशते होयाजी ॥ देखो ॥ ८ ॥ धक्का धूममें रात विहाणी । ऊग्यो जब दिन कारोजी ॥ कंवरथ बेठा चन्द्र नृप गादी । सिंघस्थान स्वान ज्यों धारोजी ॥ देखो ॥ ९ ॥ जीत तणी धुंदवी वजाइ । नाके २ चौकी बेठाइजी । रखे पाछो कोइ करे मस्ताइ । सहु हौशियारिःथी रहाइजी ॥ १० ॥ जाहिर खबर गामो गाम पहोंचाइ । जिहां चन्द्रलीलावती आइजी ॥ तेहनी खबर जो देसी लाइ । तेजागीरी पाइजी ॥ देखो ॥ ११ ॥ जे चन्द्रसेन का आज्ञा धारक । राजा उमरावज कोइजी ॥ कंवरथकी आज्ञा धारो । न मान्या सजा होइजी ॥ देखो ॥ १२ ॥ न्यायतणीतो वातन जाणे पोंलापोल चलाइजी ॥ छोटा मोटा की शंक न माने । दानाने देवे डराइजी ॥ देखो ॥ १३ ॥ अनाचार नगरमें चाल्यो । वधी घणी निशरमाइ जी ॥ राज मंत्री काछ लम्पटो । तोदूजा को कहणो कांइजी ॥ देखो ॥ १४ ॥ मोटा कुलवंत नी

लज्जा । रही नहीं तिहा कांइजी । गुप्त पणे ते संपत लेइ । दूजे देश रह्या जाइजी ॥ १५ ॥ चोर चुगलने लुच्चा ठगारा । लंपटी कपटी अन्याइजी ॥ कृतघ्नी विश्वीने धुतारा । तिणथी नगर भराइजी ॥ देखो ॥ १६ ॥ तिण अवसर तिहां कनकपुर को । देव धर विप्र जाणोजी । लडाइ मांड साथ आयोथो । राजानो नोकर कहवाणोजी ॥ देखो ॥ १७ ॥ भारती नामे तेहनी नारी । श्रीधर पुत्र गुणवंतोजी । तास नारी गोरी नामे सो हे ।सहु विजयपुर मां रहंतोजी ॥ देखो ॥ १८ ॥ ते गोरी कोइ कारण उपने । गइ राजा बागडाने मांइजी ॥ कंखरथ रूप देख मोह आयो । पकडी मेहले बेठाइजी ॥ देखो ॥ १९ ॥ देवधर श्रीधर खबर ये जाणी । ततक्षिण नृप पास आइजी ॥ नरमाइ कहे अहो अन्न दता । महारी वहू दो पहोंचाइजी ॥ देखो ॥ २० ॥ श्रीधर पकडाइ केद कराइ । कनक पुर दियो पहोंचाइ ॥ घर धन लूंटी लियो तेहनो । डोकरा डोकरी घवराइजी ॥ देखो ॥ २१ ॥ दुरा वन मांहे जाइ वर्साया । चाराकी झोंपडी बनाइजी ॥ मुशकलसे करे उदर पूरणा । कर्म गतीये दोर्याइजी ॥ देखो ॥ २२ ॥ पोता का घरसे नही चूक्यो । तो पर को कहणो कांइजी ॥ ढाल तेरमी अमोलख गाइ । अन्याइ तजे सुगुणाइजी ॥ देखो ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ इम अन्याय देखी करी । सुख सेन्न लक्ष्मीश्वर ॥ वनीता पि र

पहों चाय ने । तिहां रह्या चिन्ता कर ॥ १ ॥ सब प्रजा चन्द्र सेणने । याद करे धर प्रेम ॥ आप किहां गया छोडने । म्हाणो होसी केम ॥ २ ॥ राजा अन्याइ मिल्या । परजा हुइ हैरान ॥ फिर सुख ते कधी पेखस्या । अहो श्री भगवान ॥ ३ ॥ तीनों मंत्री चन्द्र सेन का । राज लेवण के उपाय ॥ दाव उपाव जोइ रह्या । किस्यो करां इण ठाय ॥ ४ ॥ एकदा गुप्त आवास में । मिली तीनो मंत्रीश । सल्ला आपस में करे । जिम पूरे यह जगीश ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १४ मी ॥ धर्म रुची ऋषि वंदू ॥ यह ॥ लक्ष्मी धर को ठारी बोले । सुणो मंत्रीश्वर म्हारो ॥ आपां सेवक चन्द्रसेण का । तो करो सुख उपचारो ॥ होमंत्री सुण जों महारो विचारो ॥ टेर ॥ १ ॥ स्वपना मे यह बात न जानता । ऐसो संकट आसी ॥ लाखां मनुष्य का पालन हारा । विदेश माहें सिधासी ॥ होमंत्री ॥ २ ॥ सुख शेन शैन्या पति बोले । क्या अब कहना भाइ ॥ क्या मगदूर किसी दुशमन की । जो चन्द्र नृप सन्मुख धाइ ॥ होमंत्री ॥ ३ ॥ वडा २ नृपती ने नमाया । भीलाधिप वश कीधा ॥ सुर पति तेहनी होड करे नहीं । पण विचित्र कर्म का वींधा ॥ होमं ॥ ४ ॥ क्या मगदूर दुष्ट कंख रथ की । जो हम सन्मुख आवे ॥ काम किया धाडायती सरीखा । यह क्षत्री जती नहीं फावे ॥ होमंत्री ॥ ५ ॥ जो रण भूमीमे सामा आता । तो

हम मजा बताला ॥ निमक हलाल करता तिण ठामे। पण दगासे हम ठगाता ॥ होमंती ॥ ६ ॥ सोमचंद सचीव जी बोले। विचार मन केइ उपजे। पण मालक विन करां कि-स्यां आपां। जेहथी कार्य यह संपजे ॥ होमं ॥ ७ ॥ पण कायरता करनी न जोगी। जिसको अन्न आपां खायो। जीवतां सूधी प्रयत्न करने। करस्यां काज सहू चहायो ॥ होमं ॥ ८ ॥ रामने उद्यम से सीता पाइ। राक्षस रावण हराइ ॥ लंका जैसी नगरी ना मालक। भविषण ने कीधाइ ॥ होमं ॥ ९ ॥ धातकी खंड से द्रोपदी लाया। पांडव कृष्ण नरे सो। उद्यम साहस थी इम बहूला। काम कीधाछे विसेषो ॥ होमंती ॥ १० ॥ तिण कारण आपां उद्यम करांतो। सहू कार्य सिद्ध थावे ॥ येही सल्ला महारी मानो। तो गइ संपत कर आवे ॥ होमं ॥ ११ ॥ पहिली चन्द्र सेन भूपती केरो। ढूंढी पत्तो लगावो ॥ फिर सहू कार्य यहजे थासी। येही साचो उपावो ॥ होमं ॥ १२ ॥ विशेष वात में चार न कांइ। होण हार सो थाइ ॥ गइ वातरी चिन्ता करां तो। हाथ में कुछ नहीं आइ ॥ होमं ॥ १३ ॥ आप दोनो रहजो इण स्थाने। वंदो वस्तने काजे ॥ अपना स-जनने संभालो। पहोंचाइ गुप्त साजे ॥ होमं ॥ १४ ॥ शंन्या ने पण हाथ में राखजो। जे वक्त कामें आवे ॥ और सर्व योग उपाव कीजो। सुज्ञ छो अवसर दावे ॥ होमं ॥

१५ ॥ मे तो आवी प्रदेशे जास्यूं । पुर ग्राम वन ने तपास्यूं । चन्द्र सेणनो पतो लगा स्यूं ॥ तवही वीसामो खास्यूं ॥ होमं ॥ १६ ॥ दोनों कहे धन्य २ तुम तांइ । साची सेवा वजाइ ॥ पीछे को कुछ फिकर न कीजे । योग जे करस्यां सघलाइ ॥ होमं ॥ १७ ॥ होंश्यारी से आप सदा रहजो । दुःख से तन वचाजो ॥ अवसरे समाचार जणाजो । वेगा चन्द्र नृप लाजो ॥ होमं ॥ १८ ॥ सचीव ततक्षिण भेप पलटायो । विदेशी सजाव सजायो ॥ अन्यकोइ ओलखण नहीं पावे । लागे न वैरी उपावो ॥ होमं ॥ १९ । खरचन न बहू द्रव्य संग लीधो । हलको वचन गुप्त रेवे ॥ गुप्त पणे निकल ने चाल्या । दोनो जना सिद्ध केवे ॥ होमं ॥ २० ॥ सोम चंद्र प्रदेश सीधाया ॥ ढाल लोकें राजु मांही । अमोल कहे किम पतो लगावे । ते आगे सुणजो भाइ ॥ होमं ॥ २१ ॥ दुहा ॥ तिण अवसर विजय पुर में । अन्य भवन के मांय ॥ दुमुख ने कुरु दत्त मिल । करे वात चित लाय ॥ १ ॥ दुमुख मूछ मरोड कर । भूज दोइ ठोकंत ॥ कहो प्यारा मंत्री मम । हम कैसे काम करंत ॥ २ ॥ राज लिया विजय पुरका । चन्द्रसेन दिया भगाय ॥ हम बुद्धि के आगले । इन्द्र करी सके काय ॥ ३ ॥ हम कह्या सो सिद्ध किया । रहा सो करस्या फेर ॥ तुमने काम किस्यो कियो। कहो शिंघ्र ना देर ॥ ४ ॥ जीव वस्यो मग प्रेमल।।लीलावती के

मांय । किहां छिपाइ तेहने । देवो शिघ्र बताय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १५ मी ॥ वेद रवी स्युं मन वस्यो ॥ यह० ॥ कुरुदत्त कहे मंत्री सुणो । कियो में किया प्रमाण ॥ होमंत्री ॥ शैन्य संगाते आवीयो । तेहना तुम छो जाण होमं ॥ विचार सुणो दू मित्र को ॥ टेर ॥ १ ॥ आप लडाइ में लागीया । चन्द्र सेन आया तिनवार होमं० ॥ तुम कह्यो जिम जोगज बण्यो । में आयो मेहल मझार होमं० ॥ वि ॥ २ ॥ चारुं कानी पहरा रख करी । में गयो मेहल ने मांय हो मं ॥ चौकस कीधी अति घणी । ते तो मिलीन मुझ नांय हो मं ॥ वि ॥ ३ दुमुख कहे झुटो लवी । ठट्ठा करणी नाय हो मं ॥ तूं करे मस्करी माहेरी । एथी म्हारो जीव जाय हो मं०॥ वि ॥ ४ ॥ देर हिव क्षिण मत करो । शिघ्र दे मुज ने बताय हो मं०॥ इम कही हाथ धरी तेहनो । ऊठ ले चाल्यो मांय हो मं ॥ वि ॥ ५ ॥ खेंच हाथ कुरुदत्त तस । वेठाये ते ठाम हो मं० ॥ नही निश्चय में हंसी करुं । सोगन खाया जाम हो मं० ॥ वि ॥ ६ ॥ सोगन सुणी व्याकुल हुवो । हय २ यह किस्यो काम होमं ॥ तिण कारण में एवडो । परपंच रची आयो आम होमं० ॥ वि ॥ ७ ॥ संग्राम कियो तस कारणे । सेंकडा नर घम शाण होमं० तो पण काम हुवो नहीं । मेहनत निष्फल सहू जाण होमं० ॥ वि ॥ ८ ॥ आंख्या थी आंश्रू झरे । मुखवी न्हाखे निश्वास होमं० ॥

मस्तक हाथ लगाइने । बैठो होइ निरास होमं०॥ वि ॥ ९ ॥ कुरुदत्त कहे शाणा हुइ । बावला सम करो कांय होमं०॥ धैर्य धरो शूरा हूइ । सोधो कोइ उपाय होमं०॥ वि ॥ १० ॥ दुःमुख कहे कोइ जायने । पतो लावे तास होमं०॥ तो उपाय आगल चले । करिये चिन्तित खास होमं०॥ वि ॥ ११ ॥ कुरुदत्त कहे ते हूं करूं । जाइ विदेशे सोध होमं०॥ पकडीने लाइ देस्यूं । साथ ले जावू जोध होमं० ॥वि ॥ १२ ॥ ते अबला जासी किहां । होसी किहा भूपीठ होमं०॥ फिकर जरा तुम मत करो । समजायो बोलियो मीठ होमं० ॥वि ॥१३ ॥ सुणी दुमुख खुशी हुवो । शाबास महरा प्राण होमं०॥जो लादेवे लीलावता । तो तुझ करस्यूं प्रधान होमं०॥ वि ॥ १४ ॥ कुरुदत्त चिन्ते मन विषे । एनो मूर्ख शिरदार होमं०॥ तेतो चतुर सुजान छे । किम करसी अंगीकारहोमं०॥वि॥१५॥ ए तो कालो कू रुपीयो । ते इन्द्राणी अनुहार होमं०॥ जोडी किम बन से सही । किम लम जावू गवांर होमं० ॥वि ॥ ॥ १६ ॥ पण अपनो जावे किस्यो । पकडी ला देवू हाथ होमं० ॥ कुबुद्धि तो यह छे खरो । वण जासी नरनाथ होमं० ॥ वि ॥ १७ ॥ प्रधान मुजने वणावसी । वली ज्यूंनो मंत्री मुझ होमं० ॥ इम चिन्ती हुकारो भर्यो । लीलावती लादू तुझ हो मं०॥ वि ॥ १८ ॥ होशार चार सुभट लिया । भेष आपनो पलटाय होमं०॥ ध-

न लियो खरचन घणो। साहस धर्यो मन म्हांय होम०॥ वि॥ १९॥ लीलावती ने जोववा। कुरुदत्त चाल्या तब होमं० ॥ दुःमुख जी हर्ष्या घणा। काम तो होसी अव होमं ॥ वि ॥ २० ॥ तीथीं ढाल पुरण हुइ। पहिला खन्ड की येह होमं ॥ अमोल ऋषि कहे आगले। बात रशिक घणी छेह होमंली ॥ विचार ॥ २१ ॥ ❁ ॥ खन्ड सारांस हरीगीत छन्द ॥ चन्द्र सेण भूप अधिक श्वरुप। कर्मे प्रदेश संचर्यां। तस राणी गुन खाणी। लीलावती पीयर पंथ वर्या। सोमचंद मंत्री गुनज्ञली। चल्या खवर करवा भणी ॥ कुरुदत्त रत्त दुमुख वयणे। लीलावती ग्रहवा तणी ॥ १ ॥ यह चारनो अधिकार आगे सार श्रोता सांभलो ॥ प्रथम खन्ड मांहे मंड। विहंड मन को आमलो ॥ यह हुल्लास बुद्ध प्रकाश सम। ऋषि अमोलख इम कहे ॥ गावे गवावे सुने सुनावे। तेह नित्य मङ्गल लहे॥२

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के
बाल ब्रह्म चारी मुनि श्री अमोलख ऋषिजी महाराज
रचित शील महात्म श्री चन्द्रसेन लीलावती
चरित्र का प्रथम खन्ड समाप्तम् ॥ १ ॥

॥ प्रणमू सिद्ध साधू भणी । सिद्ध साधन मुज काज ॥ चरणा बुज सुधा सेवनां । वक्षे चिन्तित साज ॥ १ ॥ नमु मैं चन्द्र जिनेश्वरु ।चन्द्र वरण सुख कार ॥ बाह्या भ्य न्तर शिव करण । अर्पे सुख उदार ॥ २॥ दो विद्ध धर्म आराध कर । दोविद्ध कर्म नियो नाश ॥ दोविध जन आराधता । पूरे पूरण आस ॥ ३ ॥ दो विध शांती दायका । गुरु गुण गुरुवा होय ॥ तस पद पङ्कज सखजे सम । वंदू विनय थी सोय ॥ ४ ॥ कर्म बलीहै जक्त में । शुभा शुभ दोप्रकार ॥ शुभ सुख दुभ दुःख देतहै।सम से सुख अपार ॥५॥ ❁ ॥

श्लोक ॥ ब्रह्माएन कुलाल वनय मितो ब्रह्मान्ड भन्डो दरा ।विष्णू एन दशाव तार ग्रहणो क्षिसो महा संकटे ॥ रुद्रायेन कपाल पाणी फुटके भिक्षाटन कार्यतः । सूर्योः भ्रम्यति नित्य मेव गगने तस्मैनमः कर्मणे ॥ १ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ प्रथम छेला जिन भणी । कर्म घेरीया आय ॥ तो दूजा को किस्यो दाखवूं । भुक्त्या थी सुख पाय ॥ ६ ॥ हरि हर इन्द्र नरिद्र ने । दिया कर्म दुःख पूर ॥ चन्द्रसेण तो नृपतीहे । तेहनो किस्यो हे भूर ॥ ७ ॥ जब ते नगर से निकल्या । जामें नी जामें प्रमाण ॥ प्रदेश कभी फिरिया नहीं ।

* अर्थात्— भर्तृहरी कहते हे कि , ब्रह्मा कुम्भार के माफिक होकर श्रष्टी बनाइ, विष्णु दश अवतार धारन कर महा संकट में पडे महादेव मूरद का खोपरीकी हड्डी हाथमें ले घरोघर भिक्षा मांगी, और सूर्य कमफ,वशमें पड रात्री दिन परियटना करताहै, ऐसे २ महान् जनों को कर्मोने संकट मे डाले तो दूसरे का कहनाही क्या? इस लिये कर्म को नमस्कार है ॥ १ ॥

रस्ता का था अजान ॥ ८ ॥ विजय पुर बाहिर दक्षिणे । अटवी महा भयकार ॥ तिण
मग चाल्या चन्द्र नृप । करता मन विचार ॥ ९ ॥ ॐ ॥ ढाल १ली ॥ आइरे पनोती
जरा सिन्धनेरे ॥ यह० ॥ चन्द्रसेण जी आगे चालीयारे।अंग लडाइ को पोशाकरे ॥ खड्गछे
जेहना हाथ मेरे । कपडा पर जमी चलतां खाकरे ॥ १ ॥ जोय जो विचित्र गति कर्मनी
रे ॥ कर्म समो नहीं कोयरे ॥ उदय आयां थकां जीवडारे । क्षिणमे राजा का रंक होय
रे ॥ जोय ॥ २ ॥ चिन्ता करता थका चलीयारे । रजनी में तम रह्यो छायरे ॥ कांटा
कांकरा पगमे चुबरे । खाडों आयां लचके पायरे ॥ जोय ॥ ३ ॥ इम निशा विती कुन्त
भइरे । ऊग्यो दिन कर तामरे ॥ द्रष्टी पसारी जोवे तदारे । नहीं मनुष्य नहीं गामरे ॥
जो ॥ ५ ॥ दोय जोजनरे आंतरेरे। वन एक आयो सुख काररे ॥ पत्र पुष्प फले भर्योरे
। तरुवर विचित्र प्रकाररे ॥ जो ॥ ६ ॥ पेखीने अश्चर्य भयारे । में आयो किण ठायरे ॥
दिग मुढ भया समझे नहींरे । ठेर्या तेही जागायरे ॥ जो ॥ ७ ॥ वक्तर शास्त्र सहू खो-
ल नेरे । मेल्या छे तरु तल तामरे ॥ सरोवर कांठे आवी यारे । जोइ ते सुख को ठामरे
॥ जो ॥ ८ ॥ स्नान मंजन तिणमे कियोरे । वस्त्र सुकाइ पेररे ॥ क्षुद्या त्रसी कारणेजी
। निरोगा पाका फल हेररे ॥ जो ॥ ९ ॥ रुमाल माहीं लेइ करीरे । सरपाज बैठा खाय

रे ॥ मन विचार केइ उपजेरे । आर्त अति चित आयरे ॥ जो ॥ १० ॥ कंठ कवल ऊत
रे नहींरे । वरजोरी थोडो सो खायरे ॥ छाणी ने उदक प्रासीयोरे । पुनः ते तरुतल
आयरे ॥ जो ॥ ११ ॥ सम जागा पूंजी करीरे । रूमाल तिहां विछायरे । शास्त्रादि उ-
सीसे दइरे ॥ सूता चन्द्र महा रायरे ॥ जो ॥ १२ ॥ एक नरना विजोगि यारे । निद्रा
न लेवे रातरे ॥ कोट्यान नर त्रिजोगी नीरे । कहवी किसी यहां वातरे ॥ जो ॥ १३ ॥
❀ ॥ श्लोक ॥ विद्या वंच्छा पर नार रक्ता । त्रिवियोगी सज्जनं स्य मुक्ता ॥ परस्य ठेया
धी नरसं रोगी ॥ षष्ट प्रकारो न लभन्ति निद्रा ॥ २ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ जोत्रो विचित्रता
कर्म कीरे । एक क्षिण में हुवे फेर फाररे ॥ राव तणा रंकज हुवोरे । देखीलो प्रत्यक्ष
विचाररे ॥ जो ॥ १४ ॥ उष्न सुगन्धी नीर थीरे । कन्क कळसे करता स्नानरे ॥ ते आज
गुदला तोय मांरे ॥ डूबाया तन प्रानरे ॥ जो ॥ १५ ॥ सुन्धी तेलादी मर्दवारे ॥ कम
कर रहता तैयार ॥ ते हाथे मेल उतारी योरे । गंधीला जलनी लाररे ॥ जो ॥ १६ ॥
सुवर्ण रत्नका वाटकारे ॥ जीमता विविध पकानरे ॥ ते तरु फल भक्षी रह्यारे । वस्त्र खन्डे
जानरे ॥ जो ॥ १७ ॥ पान बीडा मशाला भर्यारे । खाता लीलावनी हाथरे ॥ तेहनेपुं
गी मोसर नहींरे । देखो भव्य तव्य साक्षातरे ॥ जो ॥ १८ ॥ सुखमाल शय्या में पोढ

तारे । ते पड्या कंकराली भोमरे ॥ इम सहू उलटा हुवारे । पाप रो प्रगट्या जोमरे ॥
१९ ॥ कर्म फियांथी फिरे सहूरे । इम जाणी भव्य जीवरे ॥ डरो अशुभ कर्म संचतारे ।
जिम नहीं भोगवो रीवरे ॥ जो ॥ २० ॥ संयम ढाल माही कह्योरे। चन्द्रण कर्म प्रकाररे
॥ बाकी रह्यो ते आगे सुणोरे । कहे अमोल अणगाररे ॥ जो ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥
मेदनी धव शयनासने । चिन्ता करे चित माय ॥ देव जिसी ऋद्धि माहेरी । क्षिणमें
गइ विरलाय ॥ १ ॥ पूर्व कृत अघ पर गट्या। दिशा थइ मुज एह ॥ अरण्य में धरणी
पड्यो । एकाकी यह देह ॥ २ ॥ इन भवे तो में केहनो । कीधो नहीं अन्याय ॥ सर्व
ज्ञ जाने पाछली । जे प्रगट्या यें आय ॥ ३ ॥ किहां नगर रह्यो मांहेरे । किहां म्हारो
परिवार ॥ किहां प्यारा मान्वि सरु । किहां लीलावती नार ॥ ४ ॥ स्वप्न समी संपत हुइ
। गत काले इण वेल । राज तखत बेठो हुंतो । आज पड्यो मध्य गेल ॥ ५ ॥ ❀ ॥
ढाल २ रीः ॥ जीवेरे जीवो वीरा वालहारे ॥ यह० ॥ चन्द्रसेणर चन्द्रसेण चिन्ते एहवोरे
। म्हारी परजाका कांइ हालरे ॥ तेपापीरे ते पापी लूंटी हसरे ॥ दुःख देसी चंडालरे ॥
चन्द्र ॥ १ ॥ म्हारारे म्हारा राज मै सुखीहतारे । ते पड्या परवश जायरे ॥ जिम मृगरे
जिममृग फासीगर करेरे । तिम परजाने संतायरे ॥ चन्द्र ॥ २ ॥ ❀ ॥ कुंडलिय ॥ लो-

भी कामी के मने । दया रती नाहोय॥ जर जोरु की लाल से। अनर्थ करेहे से.य ॥ अनर्थ० ॥ हित आहित नहीं जाणे । गुरु सज्जन की शीख । जरा हिरदे नहीं आणे ॥ दाखं संत अमोल खोल हृदय लो जोय ॥ लोभी० ॥ ३ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ मंत्रीश्वररे मंत्रीश्वर ने शैन्य पतिरे ॥ तीजा भन्डारी गुन खानरे ॥ म्हारारे म्हारा वाला मंत्री सरुरे । दुःखता होसी तास प्रांनरे ॥ चन्द्र ॥ ३ ॥ प्यारारे प्यारा सज्जन माहेरारे । मुज काज पाया दुःखरे ॥ तस कामरे तसकममें आयो नहींरे । कांइ जाणसी ते मुखरे ॥ चन्द्र ॥ ४ ॥ खबरजरे खबरते करसी माहेरीरे । किहां मिलसी मुज आयरे।अहो प्रभूरे अहोप्रभुते स्ववश रहोरे । वैरिरे वश मत थायरे ॥ चन्द्र ॥ ५ ॥ म्हारीरे म्हारी वाली सुन्दरीरे। चिंतवतां छूटी आंस्यू धाररे ॥ कंठ जरे कंठज छाती दट गड़रे । ऊठ वेठा ते वाररे ॥ चन्द्र ॥ ६ ॥ टेकोरे टेको लयो तरु थुढ कार । वस्त्रे आंसूं पुंछरे ॥ प्राणनीरे प्राणकी प्यारी ली-लावतीरे।तुज दुःख मुज हीये खुचरे॥चन्द्र ॥७॥मुज समरेमुजसम गती थारी हुसीरे । गेंदूले जासी किण ठोडरे॥तूं छेरे तूंछे अबाला पातलीरे । कधी न गइ मेहल छोडरे ॥ चन्द्र॥ ८ ॥ वासजरे वास बने तूं किम कररे । किम चले कोमल खुल्ले पायरे ॥ शीतजरे शीत ताप किम सेवसीरे । किम रहसी फल खायरे ॥ चन्द्र ॥ ९ ॥ रवी तणीरे रवी किरणे कु

मलावतीरे । ते मुज पापी प्रसंगरे ॥ दूःख मारे दूःखमा अचिन्त्य जाइ पडीरे । में नही व
चा सक्यो अंगरे ॥ चन्द्र ॥ १० ॥ चिन्ता मारे चिन्ता में परवश हूवोरे । भरमथी ली
लावती जोयरे ॥ रोवे मतरे रोवेमत प्यारी प्राणथीरे।छोडीन जावूं तोयरे ॥चन्द्र॥ ११ ॥ऊ-
ठ्यारे उठ्या तेहने झाल वारे । पड्या वृक्षे टकरायरे ॥ मस्तकरे मस्तक फूट्यो पत्थरेरे
थीरे । रक्तकी धारा बहायरे ॥ चन्द्र ॥ १२ ॥ चमकीरे चमकी तब वेठा हूवोरे । तरु
टेके वेठ्या आयरे ॥ फाडीनेरे फाडीने वस्त्र बांन्धीयोरे । निज मस्तके तव रायरे ॥ चन्द्र
॥ १३ ॥ वायजुरे वायु शीतस लाग्या थकांरे । ताप चड्यो तव अंगरे ॥ थर २ रे थर
धूजे तेहथीरे। भइ मती तव भंगरे ॥चन्द्र॥ १४ ॥ ठन्डिलनी ठंडिलनी बाधा हूइरे।ऊठी सर
तीरे आयरे ॥ ढाल जरे ढाल वन्धे अमोलख केहेरे ॥ चन्द्र नृप गति जो वो भायरे ॥ च
न्द्र ॥ १५ ॥ ● ॥ दुहा ॥ तिण समे चारू भीलडा । हाथ में तीर कावाण ॥ गोफण
कंड बान्धी करी । लगी लंगोटी ताण ॥ १ ॥ काला महा विहामणा । मस्तके मोटा
केश ॥ आँख पीली रोशे भरी । बचने उपजे द्वेश ॥ २ ॥ दया नही तस रंच मन । चौ
री तणो वैपार ॥ जीव बध भक्षण करे । डर न धरे लगार ॥ ३ ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥ A ॥
दुष्ट नृपश्च ग्राम रक्षकार्ये ।ज्ञाति वन्हि चोरै पारधी यश्च॥क्रोधी कपटी धूर्तस्य मांसभक्षी

हारी । नवी दश्या एते दश स्थाने ॥ ४ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ दुःखी देखी दुजा भणी । खुशी
ते होवे मन ॥ जो सुखियो देखे कदा । तो लुंट्यो चहावे धन ॥ ४ ॥ पापी चारे: तेस्करा ।
आवे तिण दिश चाल ॥ आगे श्रोता जे करे । सुणो ते चन्द हवाल ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल
३ री ॥ कर्म न छूटेरे प्राणियां ॥ एक कहेरे दादा सुनो । आजनो दाडो केवो होयरे ॥
साहू शिकार मिली नहीरे । क जाने मु किस्यो जोयरे ॥ १ ॥ सुण जोरे गति कर्मातणी ॥
॥ आं ॥ दूजो कहे सुण माहेरी । काले साहू मली थी सीकार ॥ तीजो कहेरे काल नो
। मानस होतोरे गमार ॥ सु ॥ २ ॥ चोथो कहे घावरो मती । तेदेखो सरवर तीर ॥
धन गाडीने किहां जायरे । हार्या चहुना जी हीर ॥ सु ॥ ३ ॥ धामो वेगारे धरो तस ।
ते धांमी जासी किहां लप ॥ इम कहता चारों दोडिया । चन्द्र सेण झाल्योरे झप ॥ सु
॥ ४ ॥ लात मुकी ने लाठीथी । मारण लागारे मार ॥ नृपती अश्चर्य पा रह्यो । यह कि
सी गति कृतार ॥ सू ॥ ५ ॥ पुछे तेहथी राजवी । तुम कौन मारो मुज किम ॥ मनमें
होवे ते प्रकाशदो । करु में तुम कहो जिम ॥ सू ॥ ६ ॥ वनचर कहे हमें कोन छां । थ
ने सूजेछे नाथ ॥ मूका नही तुज जीवतो । धन दाटी किहां जाय ॥ सु ॥ ७ ॥ ते धन
म्हाने देखाडदे । जेजन करसी लगार ॥ नही तो कुचो निकालस्या । तने मारी इण ठाय

॥ सु ॥ राय कहे हुं जाणू नहीं । धन दाटण कीरे बात ॥ झाडे जावा बेठयो हूंतो ।मत करो म्हारी रेघात ॥ सु ॥ ९ ॥ भील कहे शाणो घणो । लपराइ करे धींठो बन ॥ पं-चातथी हम समजा नहीं । बता बेगो किहां धन ॥ सु ॥ १० ॥ ❀ ॥ इन्द्र बिजय ॥ धन की लाय बडी जग में । या खाय गइ मोटा जनने ॥ कुधर्म निशर्म कुकर्म करे । नहीं डर लाय जरा मनने ॥ प्रदेश फिरे पर प्रान हरे । सज्जन हणे कष्टेद तनने ॥ सुखी दुःखी लालची न देखे । अमोल सुखी छोडी धनने ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ इम कही मार न लगा।धक्का मुक्की ते वार ॥ जोर किस्यो करे वापडा । हम तूज सारीखा चार ॥ सु॥ ११ ॥ हाथ पड्यो गला विषे । सुवर्ण भूषण जोय ॥ खुशी हुइ तोडि लिया । अरे यो मोटो है कोय ॥ सु ॥ १२ ॥ ए धूतारो मोट को । फिर मारन लागा मार ॥ सज्जनवियोग ताप दुःखथी । भूप होइ रह्यो लाचार ॥ सु ॥ १३ ॥ ततलेते गिरी बहार विषे । शब्द हुवो असराल ॥ धावोरे पकडो दूष्टने । सुणियों पांचो ते काल ॥ सु ॥ १४ ॥ रायने छोडी भागी गया ॥ राजा धैर्य धार ॥ आइ बेठो ते तरु तले । करतो मनमें विचार ॥ सु ॥ १५ ॥ जेहनी हाकथी चउ भग्या । ते नर एथी बलिष्ठ ॥ अहो प्रभू ए करसी किस्यो । ध्यावे पर मेष्टी इष्ठ ॥ सु ॥ १६ ॥ मारथी अंग अकडा गयो । दुःखे चमके ते

वार ॥ तिहांइ ते सोइ गयो । करतो केइ विचार ॥ सु ॥ १६ ॥ तापे थर २ कांपतो । भगावण भणी शीत ॥ वक्तर वस्त्र पहरी लिया । बान्धी शास्त्र क्षीत ॥ सु ॥ १७ ॥पुन सुतो तेहि स्थानके। चालणकी शक्ति नाय॥ सेवक कोइ नही पाखती।आर्त चित आति आ य मु ॥ १८ ॥ क्षिण संभारे स्वाजन भणी । क्षिण प्रजा करे याद । क्षिण चिन्ते लीला वती मने । क्षिण करे विखवाद ॥ सु ॥ १९ ॥ सकल्प विकल्प मन हूवे । पुनः तिहां बे ठो होय ॥ ध्यान धर्यो नवकार को । जिम सुखी आत्मा ते होय ॥ मु ॥ २० ॥ ढाल कही कर्म दंडकी ॥ श्रोता सोचोरे मन ॥ अमोल कहे डरो कर्मथी । धर्मथी सुख पावे तन ॥ सु ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ एतले नर आवा तणो । काने पड्यो भण कार । झाडी दट दीसे नही । ध्यान चुक्यो ते वार ॥ १ ॥ चिन्ते तेहि भीलडा । दूजाने ले संग ॥ हिवे आपणा शरीर नो । निश्चय करसी भंग ॥ २ ॥ पण कछू हरकत नहीं । हिवे शास्त्र मुज पास ॥ थोडा हुवा तो सर्व ने । देस्यूं काल ग्रास ॥ ३ ॥ तिण वेला म्हारा कने । अरिगंजण नही कोय ॥ तिण थी में परवश हुयो । पण हिंवे तमाशो जोय ॥४॥विन छेड्या नही छेडणो॥ए उत्तम आचार इम धारीने मही पती बेठो तिहां चुप धार॥ ५❀ढाल४थी॥कंवरां साधुतणों आचार॥यह०॥सुणतो भीलतणो विचार।राजा बेठोवन मझार

॥ टेर ॥ ते चोरोंकी नहीं ए वाणी । कोइ दूजो है प्रकार ॥ शत्रू तणा जो भट हुवा तो । करनो कांइ प्रकार ॥ सुण ॥ १ ॥ थोडा हुवातो सर्व जना ने । मेलूगा यम द्वार ॥ रखे ज्यादा हो पकड ले जावे । न्हांखे केद मझार ॥ सुण ॥ २ ॥ दीना नाथ जग रक्षक अर्हं । आपही को आधार ॥ इण संकट से पार उतारो । मिलावो मुझ परिवार ॥ सु ॥ ३ ॥ इम विचारी धैर्य धारी । झाडी छिद्रे ते बारे ॥ नर नेडा आया जाणी ने । जोवे द्रष्ट पसार ॥ सु ॥ ४ ॥ दोय भीलडा आता दीसे । विखर्या सिरका वार ॥ फाटी चिन्दी तूंतडा लटके । बान्धी सीस संवार ॥ सु ॥ ५ ॥ धष्ट पुष्ट शरीर जिनोका । बलिष्ट द्रढा कार ॥ काली प्रभा वाली चमडी । दीसे नशां जार ॥ सु ॥ ३ ॥ बान्धी काछडी तंग कसीने । कम्बल स्कन्ध धार ॥ इत्यादी तस रुप शोभावे । आवैठा दूजा पसवार ॥ सु ॥ ७ ॥ मण्यो भील पूछे कृष्नाने । तूं क्याथी आवे इण वार । कृष्नो कहे हूं विजय पुर थी।जावुं मुज आगारे॥सु ॥ ८ ॥ किम जावे विजय पुर छोडी । कृष्नो निःश्वास डार। कहे स्यूं क हूं कर्मेडा कथनी । हुवो गजब निधार ॥ सु ॥ ७ ॥ धाडाती एक शत्रू आयो। सामी रात गिमार ॥ करी धिंगाइ दिया घवराइ । पुर पति ने सिरदार ॥ सु ॥ १० ॥ राजा राणी सामंत आदि। कोइ न रह्या ते ठार ॥ अन्याइ फेलाइ नगरमे । परजा कर पुकार ॥ सु ॥

११ ॥ ए अनर्थ जोड़ हूं जावूं । पलीने पतिने हार कहस्यू वीती हकी गत सारी।भेज्यों नाका दार ॥ सु ॥ १२ ॥ सहस्र पचास आपां सहू शूरा । चन्द्र नृप आज्ञा धार ॥ किम दुःखी होवा दां भूपने । करस्या जंग जुजार ॥ सु ॥ १३ ॥ मण्यो कह्यो अरे खोटो घणो हुवो । गया अपना सिरदार ॥ चालो वेगा अपनी पल्ली । करां वन्दो वस्त ए वार ॥ सुण ॥ १४ ॥ कृष्नो कहे क्षुधा लागी मुज । रोटलो पेटे डार ॥ ए सरोवर मां पाणी पीने । चलां आगे निजद्वार ॥ सु ॥ १५॥रोटलो काहडयो कृष्नो तक्षिण । दो विभाग कर जार ॥ आध्यो दियो मण्या ने तांइ । दोनो करे तव अहार ॥ सु ॥ १६ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ गरीबां घर उधारत्ता । सेठ हुवाहै सूम ॥ कली की रचना देख कर । अकल होवे गुम ॥ १ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ भूप वचन वनचरका सांभल । मन हुवो शीतल गार ॥ अरे यहतो हे म्हारा सेवक । डरन रह्यो लगार ॥ सु॥ १७ ॥ ततक्षिण ऊठी आलस मोड्यो । चमक्या भील ते वार ॥ अरे वन देव कोइ प्रकट्या । दूर ऊभा भय धार ॥ सु ॥ १८ ॥ नृप कहे डरो मत भाइ । मत करो कोइ विचार ॥ मैं परदेशी कर्मे क्षोभोना। भाग्य हीन निराधार सु ॥ १९ ॥ निडर भील हूवा मनमांही । सूणी नृप उचार ॥ कहे आपसेंमे मोटो नर कोइ । पेरण जरी जर तार ॥ सु ॥ २० ॥ रुपे रुडो छे राज सम । किम आयो रान म-

झारं ॥ ध्यानँ ढाल कही ऋषि अमोलख । आगे सुणो अधिकार ॥ सु ॥ २१ ॥ ● ॥
दूहा ॥ दोनों भील अहार करणने । बेठा पूनःते ठान ॥ तेहने पासे तत क्षिने । आ
बेठा राजान ॥ १ ॥ कृष्नो कहे धराधवने ॥ तमे कोन महाराज ॥ किसा ग्रामथी आवी
या । इहां रन मा किस्ये काज ॥ २ ॥ अवनीश चिन्ते चितमें । पुरो पतो कहूं नाय ॥
जिहां लग कर्मछे बांकडा । तिहां लग रखुं छिपाय ॥ ३ ॥ ❋ ॥ कुँडलिया ॥ सांइ अप
ने चित्तकी भूलन कहिये कोय ॥ तब लग मनमें राखिये ॥ जब लग कार्य होय ॥ जब ॥
भूल कबहुं न कहिये । दुर्जन तातो होय । आप चूपको हो रहिये ॥ कहे गिरधर कवि
राय । बात चतुरन के तांइ ॥ करतुतही कर देत आप कहीये नही सांइ ॥ १ ॥ ❋ ॥
दुहा ॥ साथ ऐहने रेइने । जावो पल्ली पती पास ॥ तेतो पहचानी लेसे । करस्या फिर
जिम आस ॥ ४ ॥ बात वनाइ नृपतीते । भील भणी समजाय ॥ ते सुणियो श्रोता सहू ।
होनहार तें थाय ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ढाल ॥ ५ मी ॥ जगत गुरु त्रसलानंदन वीर॥ यह०
॥ नृप चन्द्र कहे भाइ सुणोजी । मुज परदेशी वतन ॥ वीती बात बहू माहेरी । तुमआ
गे करूं कथन ॥ भविक जन नीच ऊंचलो जोय ॥ टेर ॥ १ ॥ विजयपुरनो रहवासीयो
जी । वैपारी महारी जात ॥ परदेशे फिरवाभणी । हुं निकल्यो सज्जन संग्घात ॥ भवि

॥ २ ॥ भील कहे इण वन विषेजी । किम आया शिरकार ॥ मुखडा ऊपर आप केजी। दीसे दुःख अपार ॥ भवि ॥ ३ ॥ धराधर कहे कर्म जोगथी में ॥ आयो इण वन मांय ॥ दुःखी कहो किण कारणे भाइ । फिरवाथी मुख कुमलाय ॥ भ ॥ ४ ॥ वनचर कहे संयू मनुष्यनेजी । एतलो समज्ये नाय ॥ तमारो मुख छे जोसमा जी तिणथी पूछ्या आय॥ भ ॥ ५ ॥ स्यान पेखी समजे तेहिजी । मनुष्य जात कहवाय ॥ नहीतो ढांडो राणको जी । इनमें शंका नाय ॥ भ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ उदे रीतो अर्थ पशुनापि ग्रह्यते । हयाश्च नागाश्च वहंति नोविता ॥ अनुक्त मप्यु हति पण्डितो जनाः । परेगित ज्ञांन फलाही बुध्याः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ नूपत कहे साची कहीजी । महारा मनकी बात ॥ ऐसा दया वन्त जक्त में भाइ । थोडाही देखत ॥ भ ॥ ७ ॥ सुनो हकीगत माहेरी भाइ । आजही भुक्ति जेह ॥ मरण थकी हुं उगर्यो जी । पुण्यतणे संगेह ॥ भ ॥ ९ ॥ चार चोर मिल्या हुंताजी । मारी म्हने खुब मार ॥ धन खोसीने लेगया । इम कियो घणो बेजार ॥ भ ॥ ९ ॥ हांक सुणी थाणी तेहीजी ॥ भागी गया इण वार॥ यह संकटथी में बच्यो भाइ । थाणोही उपकार ॥ भ ॥ १० ॥ कृष्नो कहे किहां दुष्टेजी । जो आवे हम हात ॥ तो करता निश्चय हमेजी । ते चारो की घात ॥ भ ॥

मूज कर्म फिर्यां इणवार ॥ बान्ध्या सो
११ ॥ नृप कहे दोष नहीं तेहनो भाइ । मूज कर्म फिर्यां इणवार ॥ बान्ध्या सो
हा भोगवू । कर्म उदय न चले उपचार ॥ भ ॥ १२ ॥ पुनः कृष्नो कहे ते कहोजी । किमे
पड्या इण वन मांय ॥ राय चिन्ते करणो किस्यो ॥ एतो पूछे सहू वीत्याय ॥ भ ॥ १३
॥ मिथ्या पण लगे नहीं जी । ए मुज ओलखे नाय । इम कही समजाइ ने । हूं कर्म
करुं म्हराय ॥ भ ॥ १४ ॥ गइ राते विजय पुरे पेजी । पड्या धाडा यती आय ॥ मुजने
प्रकडन चावता पण । हाथ लग्यो में नाय ॥ भ ॥ १५ ॥ रातरा मग दीस्यो नहीं भाइ
। निकल आयो इण ठाम ॥ और कुटुम्ब सहू माहेरो भाइ । न जाणूं गयो किण गाम ॥
भ ॥ १६ ॥ ए वीती माहारी कही जी । ए हीज दुःख मुज मन ॥ पुनः कृष्नो कहे
कीजीये हिवे । किहां करधो छे गमन ॥ भ ॥ १७ ॥ राय कहे सूजे नहीं मुझेजी । बुद्धि
थइ छे गुम्म । कृष्नो कहे महारे संगे जी । चालो जोमन तुम ॥ भ ॥ १८ ॥ पल्ली पती
ने मिलावसांजी । ते देशी तुमे साज ॥ कुटुम्ब मिलासी थांयरो जी । इम सुण हर्ष्या राय
॥ भ ॥ १९ ॥ रोटलो खावो हम तणो लो । लो तुम तीजो भाग ॥ राय कहे में भोगव्ये
जी । फल आहार ए जाग ॥ भ ॥ २० ॥ खाइ पीइ निवृत हुइजी । चाल्या तीनों संग ॥
अमोल ढाल महा वृत कीमें । दोरुया सज्जनता रंग ॥ भ ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ चन्द्र

नृप चित चिन्तवे।एकही खानी मांय ॥ रयण कंकर दो निपजे । प्रत्यक्ष दीठो ह्यांय ॥ १ ॥ एक ते चारो भीलडा । निर्दय चोर कठोर ॥ ए पण दोनों भीलछे । विवेक दया कुछ और ॥ २ ॥ मिष्ट वचन थी माहेरो । पूछ लियो सहू भेद ॥ महारो दुःख देखी करी । इण चित पायो खेद ॥ ३ ॥ एहने साथे रेइने । भेटां पछी नाथ ॥ काज करुं सहू माहरा । करी शत्रूकी घात॥४॥इत्यादि विचरना । करता नरवर जाय ॥ होण हारनी अजब गत । सुणो श्रोत चितलाय ॥ ५ ॥ ढाल ६ ठी ॥ शाल भद्र भोगीरे लोए ॥ यह० ॥ भील संग चन्द्र नृपती जी । अटवी उल्लंघता जाय ॥ सवा जोजन लग आवीया जी। राय जी थाक्या सवाय ॥ चतुर नर । होण हार लो जोय ॥ टेर ॥ १ ॥ मारगथी कुछ वेगलो जी । थो छो टो सो ग्राम ॥ तिण नाहे ते भील का जी । होतो कोइक काम ॥ च ॥ २ ॥ राय थी कहे बेठो इहांजी । थाक्या होसो महाराज ॥ इण ग्राम में होइने जी । हम पाछा आस्यां ह्यांज ॥ च ॥ ३ ॥ भीलगया ग्राम ने विषे जी । नृप बेठ्या तिण ठाय ॥ थाक थी पग सणणा रह्या जी । ताप थी जीव घवराय ॥ च ॥ ४ ॥ शीतल पवन संयोग थी जी । शान्त थयो तव चित ॥ विचार केइ चित ऊपजेजी । जाणे भील ने मित ॥ च ॥ ५ ॥ विश्वास लायक मानवी जी । प्रिती इण ने अपार ॥ बचन एह

बदले नहीं भी पूरा भरोसा दार ॥ च ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इन्द्र विजय ॥ अल्प खाइ संतोष रखे । अरु निरुद्योगी कभु नहीं रहावे ॥ महा वन में निर्विक रहे । विश्वास दियां फिर जान बचावे ॥ शूर पणो सह सिख घणा । संग्राममें जा सीस कटावे॥तस्कर लस्कर में अगवाणीं । भील के गुण अमोल बतावे ॥ ५ ॥ ❀ ढाल ॥ पक्ष जेह धारण करे जी । तेह नहीं छोडे हेर। पक्षी कारण आपणो । जीव देन करे देर ॥ च ॥ ६ ॥ शूर पणो इण में घणो जी । धरे नहीं पछाजी पाय ॥ स्वाभी भक्त एतो खरा जी । द्रढ साधन उपाय ॥ च ॥ ७ ॥ मुज पलीने मिल कोजी । पतो लगासीजी एय ॥ इण सहाये शत्रू दमीजी । लेस्युराज मूज मेय ॥ च ॥ ८ ॥ तरु टेके विचार मेंजी । नृप गया गुंगाय ॥ तेतले अश्वना पग तणोजी । अवाज नृप कर्ण जाय ॥ च ॥ ९ ॥ द्रष्टी खोली पेखताजी । वसू स्वार चाल्या आय । चिन्ते शत्रू तणाछेए। केद करसी इण ठाय ॥ च ॥ १० ॥ छिपवाकी जागानही जी । भाग्योतो नहीं जाय ॥ क्षत्री नन्दन शत्रू नेजी । पीठ कबहू न बताय ॥ च॥११ ॥ भटपण जोइ नृपनेजी । लाया तूरी दोडाय ॥ चौपाखे आघेरीयोजी । पकडण झपट लगाय ॥ च ॥ १२ ॥ खड्गम्यान दूरो कगीजी । नृप पण सन्मुख होय ॥ झटा पटी करतां थकाजी । मर्या स्वारते दोय ॥ च ॥ १३ ॥ एक स्वार पाछल रहीजी । नृप

कर परते वार ॥ लाठी मारी जोरथीजी।छूट पड़ी तरवार ॥ च ॥ १४ ॥ कुदीने चारों ज.
णाजी । लियो नृपने सहाय ॥ थाक तापना जोगथीजी । निवल तन नृप तांय ॥ च ॥१५
॥ ऊंदी मूसक्यां बंधीनेजी । दिया घोडा पर डाल ॥ मजबूत बान्ध्यो डोरथीजी । जिम छू
टण नहीं पाय ॥च॥१६ ॥ शमशेर नंगी करीजी । दो आगळ दो लार॥दो आजू बाजू र
ह्याजी । नृप पूछे ते वार ॥ च ॥ १७ ॥ गुन्हो किस्यो छे हम तणोजी । बन्धी किहां चा
ल्या भ्रात ॥ भट कहे अरे चोरटा तूं । मुशकले आये हाथ ॥ च ॥ १८ ॥ नृप कहे इण
जन्ममें । चोरी कधी करी नाय ॥ भमेंथी मुज क्यों बान्धीयोजी । छोडो करुंगा लाय ॥
च१९॥भट कहे वश बोले मतिरे।नही तो खासी मार॥हमतो तुज लेजावस्यारे।कन्कपुर नृप
द्वार॥च॥२०॥मेदनी पती चूपको रह्योजी।बोल्यामेंनही सार॥होणहारसो होवसीजी।हुवापरवश
इण वार॥च॥ २० ॥ दिन तीन ते अन्तरे जी।कन्क पुर आया तेय॥तलवर सन्मुख खडो
कियोजी।भट सहू वाती केय ॥ च ॥ २१॥ यह तस्कर जबरो घणो जी । मार्या दोय स-
वार । पंदरे दिनथी जोवतां जी । हाथे आयो अवार ॥ च ॥ २२ ॥ राय पुकारी ने कही
जी ।मैं नहीं हूं चोर जार । विना गुन्हे मुझ बान्धी योजी । छोडो करी विचार ॥ च ॥
२३ ॥ बूंब सुणें नहीं रायकी जी । मारण लागा मार ॥ लाठी छूटी कोरडा जी । अहो२

कर्म प्रकार ॥ च ॥ २४ ॥ भाखसी मां केदज किया जी । श्री चन्द्रनृपाल ॥ दूजा खन्ड लेश्या तणी जी । ऋषि अमोल कही ढाल ॥ च ॥ २५ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ तिण अवसर कन्क पुर विषे । शैन्या पति महा सेन ॥ राज तणो करे काज ते । जिम तस्कर ने रेने ॥ १ ॥ कन्करथ राजा तणी । राणी कू सीता नाम ॥ लिया चरित्र निपुणते । विष थी भरी तमाम ॥ २ ॥ प्रगट शैन्या पति संगे । भोगवे इच्छित भोग ॥ लाज काज करी वेगली । न अंकुश को जोग ॥ ३ ॥ तृतिय जाम दिवसके । चन्द्र नृप लेइसंग ॥ कोत ाल आया तदा । राणी मेहल अनुखंग ॥ ४ ॥ बोलाय शैन्या धीशने । दासी ने कही समाचार ॥ गोखे रही शैन्य पति । पूछो तस होन हार ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ७ मी ॥ चामडारी पूतली भजन करले ॥ यह० ॥ शाणा सुणो सहीरे। नारी चरित्र को पार नहींरे ॥ टेर ॥ राणी पण चोर देखन । आइ गोख मांय ॥ रुप देखी भूप तणो ।गइ मोह वाय ॥ शाणा ॥ १ ॥ अहो २ रुप एहनो इन्द्र अनुहार ॥ काम ।क्रिडा इनसे करुं । तो सफल जमार ॥ शाणा ॥ २ ॥ शैन्यपति भणी राणी दाखवे एम । एतो नर गरीब छे कीजो इण पर खेम ॥ शाणा ॥ ३ ॥ चोर तणा लक्षण तो दीसे इण में नाय ॥ छोडी देवो इणने इहां दया दिल लाय ॥ शाणा ॥ ४ ॥ राणी को हुकम तब प्रमाण कीध । चन्द्र

सेण बन्धन छोडी दीध ॥ शाणा ॥ ५ ॥ तिण समय कासीद एक आयो चलाय ॥ पत्र ठव्यो शैन्या पति कर मांय ॥ शा ॥ ६ ॥ वांची पत्र कहे राणी तांय । पोलास पुर मुज जाणो इण बेलाय ॥ शाणा ॥ ७ ॥ अन्दर थी खुशी उपर थी नाराज । राणी रजा दी शैन्य पती ने त्यांज ॥ शाणा ॥ ८ ॥ दासी हाथे राणी सराजाम पहों चाय । वे शिघ्र जाइ तिण केदीने तांय ॥ शा ॥ ९ ॥ जीमजो तृप्त होइ पीवो शीतल नीर । दुःखी देखी तुम तांइ आवे मुज पीर ॥ शा ॥ १० ॥ जीमाइ शिघ्र लावीजे मुज पास । इम शिखा वासीने पठावी उल्लास ॥ शा ॥ ११ ॥ चंन्द्र नृप भणी दासी दिया पक्वान ॥ राणी कह्यो जिम सुणायो सब बयान ॥ शा ॥ १२ ॥ सुणी भेदनी पति मन हर्षाय । । धर्मात्मा राणीजी दीसे छे थाय ॥ शा ॥ १३ ॥ अहार करी राजा राणी मेहल मे आय ॥ भद्रिक भाव जाणे आप साय ॥ शा ॥ १४ ॥ मर्यादे दूर ऊभो द्रष्टी भू पर ठाय । उत्तम नर पर स्त्रिया जोवे नाय ॥ शा ॥ १५ ॥ ❀ ॥ मनहर ॥ दीवाकी लोल समान । काम नी का नेन जान । कामी नर पतंग ज्यों । बाले निज तनहै ॥ मांजर ज्यों बोले सुन्दर । जार नर जानो उन्दर । गटको करीले झट । हरी लेवे मनहै ॥ मोर ज्यो सुदराकार । व्याल सम जाणो जार । तक्षिण करे अहार । ठग्या वडा जनहै ॥ ऐसी त्रिया

गीत जोय । अवनी सामे द्रेग होय । अमोलख नर सोय । धन्य धन्य धनहै ॥ ❀ ॥ढाल
॥ राणी उल्लास लाइ बोलावे ताम । किहां ना रहवासी छो कांइ थांरो नाम ॥ शा ॥
१६ ॥ नृप सुण चिन्त ए शत्रूनो स्थान । सचो पत्तो कदापि कहणो नही जान ॥ शा ॥
१७ ॥ ठन्डे वाक्य भूपके प्रदेशी म्हारो नाम । जिहा उदर पूर होवे तेही मुज गाम ॥
शा ॥ १८ ॥ आया कांइ प्रयोजने इण ग्राम मांय । मुज लायक काम होतो देवो फरमा-
य ॥ शा ॥ १९ ॥ नृप कहे म्हारा मनथी आयो नही ऐथ । परवश लेजावे जाणो पडे
तेथ ॥ शा ॥ २० ॥ कर्म वश प्रदेशे जातां मार्ग मांय । चोर कर भट पकडी लाया इण
ठाय ॥शाणा ॥ २१ ॥ राणी कहे दुष्ठ सीपाइ । कर्यो खोटो काम । अरे अरे दुष्टा ने न
दया आइ नाम ॥ शाणा ॥ २२ ॥ आत्रा देवो शंन्य पती कुटावु तस खाल । थे किस्यो
डर न राखो रहो खुशाल ॥ शाणा ॥ २३ ॥ दूजे खण्ड भय निवारण कही यह ढाल ।
चन्द्र नृप शीलवंत राखे व्रत पाल ॥ शाणा ॥ २४ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ किहां परिवार हैतुम
तणो । सुत सज्जन ने नार ॥ राणी कहे कृपा करी । फरमावे एवार ॥ १ ॥ सज्जन
नारी नाम सुण । नीर आयो नृप नेण ॥ स्मरी दुःख हीयो भर्यो ।
निकसे न मुख थी वेण ॥ २ ॥ राणी नृपने रोवतो । देखी बोले आम ॥ प्यारा प्रदेशी

जी तुमे। दुःख न करो निकाम ॥ ३ ॥ दुःख थाणो देखी करी । कुरुणा आवे मोय ॥
जे जे वीत्यो तुम विषे । सुणावो मुजने सोय ॥ ४ ॥ किया विना किम जाणीये । बी
जा मन की बात ॥ अन्तर न रखो मुज थकी । जोडी कहूं छू हाथ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल
८ मी ॥ थूल भद्र कियोजी चौमासो । वैश्या केरी शाल में जी महरा राज ॥ य० ॥ ध
न्य २ ते नर जगत् । राखे शील रतनेजी ॥ काम दुष्ट ॥ संकट समय तेहा करे खुब ज-
तनेजी ॥ काम दुष्ट ॥ धन्य ॥ १ ॥ राजा बिचारे मन । आपण शत्रू राजमेंजी ॥ का०॥
साची किहां थकां बात । पडा दुःख साजेमजी ॥ का ॥ धन्य ॥ २ ॥ पुर्ण करी बिचार ।
धैर्य दिल धारनेजी ॥ का ॥ वस्त्र से पूंछी अनन । करयों उचारनेजी ॥ काम ॥धन्य
धन्य ॥ ३ ॥ सुणो बाइ मुज बात । वीतीजे मुज तणीजी ॥ का ॥ मुज पत्नी रही बन
मांय । फिकर करसीते घणीजी ॥ का ॥ धन्य ॥ ४ ॥ कृपा करीने आप छोडायो मुज
भणीजी ॥ का ॥ हिवे जाइ तिण ठाम । खबर लेस्यू तिण तणीजी ॥ का ॥ धन्य ॥ ५
॥ राणी नेणे नीर लाय । कहे भुंडो थयोजी ॥ का ॥ ते बिचारी रहसी किम। पति यहां
आइ रयोजी ॥का॥ धन्य ॥६॥ थे मनुष्य गुनवंत । मोटा दीसो मनेजी ॥ का ॥ एक क
रो मुजकाज । गुप्त कहु छूं तनेजी ॥ का ॥ धन्य ॥ ७ ॥ नृप कहे मुज जोग तेह । होवे

करवा जिसोजी ॥ का ॥ आप हुकम थी तेह । शक्ते करस्यूं तिसोजी ॥ का ॥ धन्य ॥८
॥ इम सुण राणी वेण । पंचशर व्यापीयोजी ॥ का ॥ लज्जा छोडी तेह ।विषय मन स्था
पियोजी ॥ का ॥ धन्य ॥ ९ ॥ और बीजो कोइ काम । म्हारे तो छे नहीजी ॥ का ॥
विरह तुम्हारे विजोगथी में दाजी रहीजी ॥ का ॥ १० ॥ गाढा लिंगन देय । शीतल मु
ज कीजियेजी ॥ का ॥ देखी रुप पडी मोह फंद । खोले मुज लीजियेजी ॥ का ॥ ध ॥
११ ॥ इम कही उठी तेह । पकडन राजा भणीजी ॥ का ॥ राजा विस्मय पाय । चिन्ते
या कैसी वणीजी ॥ का ॥ ध ॥ १२ ॥ राजा पाछा दिया पांव । राणी उभी रहीजी ॥
का ॥ विराजो इण सेज मांय । वाणी मधुरी कहीजी ॥ का ॥ ध ॥ १३ ॥ ❀ ॥ गाथा
॥ सयणासणही जोगेही । इत्थीओ एगत णिमंताणं ॥ एताणी चेव सेजाण । पेसाणी वि
हु विहु वाणी ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ राजा अधोकर दृग । कहे बाइ कांइ कह्योजी ॥ का ॥ मै
समजो कछु नांथ । हृदय नहीं श्रधयोजी ॥ का ॥ ध ॥ १४ ॥ ❀ ॥ गाथा ॥ नोतासु

अर्थ-❀ शय्या आसन आदि की आमंत्रण एकान्त में कर स्त्री पुरुष को मोहफास मे फसाती है। विद्वान इसे जाल जान फसते नहीं है . अर्थ—उत्तम नर स्त्री से आंखों नहीं मिलाते हैं . एकान्त सहवास नहीं करते हैं . तो अनाचीर्ण सेवन करना तो दूरही रहा ! ऐसी तरह सत्पुरुषे शीलका रक्षण करते हैं .

चखु सन्धजो । नो विय साहसं समाभजाण ॥ ना सहाय सा विहरज्जा । एवं मप्या सर
खी ओहोइ ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ कुसीता मुख मटकाय कहेथे शाणा दिसोजी ॥ का ॥
किती परिक्षा करोमोय । बोली २ ने इसोजी ॥ का ॥ ध ॥ १५ ॥ तन मन म्हारो स-
र्व । थांर अरपण कियाजा ॥ का ॥ प्राणनाथ करो महर । शतिल करदो हियोजी ॥ का
ध ॥ १६ ॥ सफल करो मुज काय । भोगवी भोगनेजी ॥ का ॥ ऐसो अवसर पाय । वि
सरो मत जोगनेजी ॥ का ॥ १७ ॥ भूप कहे मोटा होय के इम किम बोलयिेजी ॥का॥
योगा योग हीये तोल । फिर वाहिर खोलियेजी ॥ का ॥ ध ॥ १८ ॥ तुम राजा की प-
टनार । हमे प्रदेशियाजी ॥ का ॥ महारे उपर आप । खोटा मन किम कियाजी ॥ का॥
ध ॥ १९ ॥ बरो बरी का स्यू प्रेम । कियां सुख लीजियेजी ॥ का ॥ में गरीव तुमजेष्ट
। कहो किम रींजियेजी ॥ का ॥ ध ॥ २० ॥ राणी कहे मुज मन । थाने मोटा मानिया
जी ॥ का ॥ सिधीसत्य नृप ढाल । अमोल बखाणियाजी ॥ का ॥ ध ॥ २१ ॥ दुहा ॥
क्षिती कंत कहे भग्नि सुणो ।तुम शाणी गुण वन्त ॥ मोटा घराणा घणी । एह करवो न
कलपन्त ॥ १ ॥ में नहीं मोटो मानवी । दुःखी प्रदेशी लोक ॥ निर्धन निर्बल निकर्मी
। मोहित हुवा तेफोक ॥ २ ॥कर्म करता सोहिल । हंसी खुशी ये वन्धाय ॥ भोंगवती

वक्त जीवडा । रुदंता न छुटाय ॥ ३ ॥ पूर्व भव संच्या जिका । भोगवू हीवणां पाप ॥ इण भव यह कृतबकरी । भोगवूं किहां कहोआप ॥ ४ ॥व्याभिच्यारने सारिखो । मोटो नहीं कूकर्म ॥ इण कारण मानी माहरो । धारो थोडीसी शर्म ॥ ५ ॥ ❀ ॥श्लोक॥परयोनी गतंवीर्यं । कोठीपुंज्य विनान्यन्ती ॥ तीर्थ हानी तपोहानी।ब्रह्महत्या सतानिचः ॥१॥ ॥ ❀ ॥ ढाल ९ मी ॥ नहीं संदेह लगार निरोपम ॥ यह० ॥ धन्य २ ते नर वक्त पर द्रढ रहे । धन्य तेहनों अवतारो ॥ संकट समय बृत द्रढ राखे । सुधरे तेहनो जमारो ॥ धन्य ॥ १ ॥ राणी भाखे सांभलो सज्जन । इण मां पाप तुम दाखो ॥ मनमें विचार करीने प्यारा । पाछे जबान से भाखो ॥ धन्य ॥ २ ॥ कोइक भिक्षुक क्षुद्या पिडित । याचत आवे तुम पासे ॥ तेहनी इच्छा पूर्ण करतां । किस्यो फल होवे तास ॥ धन्य ॥ ३ ॥ सर्व सत्पुरुष धर्म कहे । अने तुम किम पाप वतावो ॥ पुण्य को स्थान छोडि ए जासों तो पाछे करसो पस्तावो ॥धन्य॥ ४॥ मही धरकहे योगो जे याचक।तेहने दान देवाय में परदेशी गरीब छू वाइ । मुज थी दान किम थाय ॥ धन्य ॥ ५ ॥ कूसीता बोले हू याचकणी तोलो । इच्छा पूर्ण कीजे ॥ ऋतू दानकोफल छे मोटो । वेद संभारी लीजे॥ धन्य ॥ ६ ॥ व्यभि चार ने तुम दान वतावो । बुद्धि भ्रष्ठ थइ थांरी ॥ स्त्री का

संग कन्या थी प्राणी । उपजेनर्क मझारी ॥ ध ॥ ७ ॥ राणी कहे जग सहू नर्क में जासी केहने घर नहीं नारी ॥ बुद्धि म्हारी भृष्ठ बतावो पण वात विचारो नी थांरी ॥ ध ॥ ८ ॥ स्वस्त्री ने परस्त्रीमां । फेर घणोछे बाइ ॥ जग सहू स्वस्त्री संभोगे । जे पंचनी साक्षीये व्याइ ॥ ध ॥ ९ ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥ चत्वारी नर्क द्वरा ॥ प्रथम रात्री भोजनम् परस्त्री गमनं चैव । साधनन्त कायकं ॥ १ ॥ ❁ ॥ परस्त्री को संग किया थी । दुःख घणा बली पाया ॥ कितनाक कां तो न म सुणावूं । जे गन्थान्तर गाया ॥ ध ॥ १० ॥ रावण पद्मोतर ने कीचक । मणी रथ आदि घणाइ । परस्त्री नो संग करता । गया नर्क गति मांइ ॥ ध ॥ ११ ॥ थे पराइ वाजो लुगाइ । थांपर हक नहीं म्हारो ॥ कंम्व रथ सम नाथ तुमारो । पतिवृता पणो धारो ॥ ध ॥ १२ ॥ राणी भाखे इन्द्र अने चन्द्र । परस्त्री भोग कीधो ॥ थे तो जाति मनुष्य में उपजा । वश म्हारा परचो घणो लीधो ॥ ध ॥ १३ ॥ अहो तेहना कांइ हवाल थइया । राणी साहव विचारो ॥ चन्द्र न कलङ्क ने इन्द्रने सहश्र भग । तो में मनुष्य अवतारो ॥ धन्य ॥ १४ ॥ मैं हारी थें जीत्या जाणो म्हारा थी नहीं रहवाय ॥ पाप लागे तो मुजने लागसी । इण में थांरो कांइ जाय ॥ ध ॥ १५ ॥ तुम मनतो छेजीं नहीं जरा भर । पण में उपता कहूं थाने ॥ थाणी जवान थे

पूरी पाडो । जे वाचा पहिली दी म्हाने ॥ ध ॥ १६ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ बांय वदल बाटो बदल । बचन बदल वेशूल । यारी कर क्ष्वारी करे । तिनके मुख पर धूल ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ गुरु मुख से में धारण कधा । पर महिला पच्चखाण ॥ किंचित सुखने कारण बाइ । नहीं भांगू जिन आण ॥ ध ॥ १७ ॥ और दूसरो काम बतावो । अबी करी बतावू ॥ जिवत की आसा नही राखू । तो में साचो कहवावू ॥ ध ॥ १८ ॥ विना कारण । मुज बचन भंग को । दोषण शिर नहीं दीजे ॥ बोलणो जोग जे होवे तुमार तो । हृदय विचारी बोलीजे ॥ ध ॥ १९ ॥ में तो विचार करीने बोली । जो तुमने बुरो लागो ॥ मांफी मांगु हाथ जोडने । मुजने तुम मत त्यागो ॥ ध ॥ २० ॥ इम जो तुम मुज छेह बतासो तो । स्त्रि हित्या शिर लेसो ॥ म्हारी चहाती वस्तु तुम पास है । आस हे मुजने देसो ॥ ध ॥ २१ ॥ वाडं करी नृप शील ने राख्यो । ढाल अमोलख गाइ ॥ धन्य जेहसहा पुरुष चन्द्र नृप सम । तेही शभामें गवाइ ॥ ध ॥ २२ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ अवनीश कहे बाइ सुणो । थे मांगो जे वस्त ॥ ते देवा सरखी नहीं । कारण ते अप्रसस्त ॥ १ ॥ गुरु मुख में धारण किया । पर महीला पच्चखाण ॥ किंचित सुख के कारणे । नहीं भांगू जिन आण ॥ २ ॥ वृत जे लेवे नहीं । तेतो पापी कहाय ॥ लेइने भांजे जिका । ते महा

पापी गिणाय ॥ ३ ॥ इण भव पर भव दुःख लहे । इण सरीखो न अधर्म ॥ जाणी दे खी एहवो । किम कीज कहो कर्म ॥ ४ ॥ मरनो तो कबूल छे । पण न करुं एहवो काम ॥ तिण कारण तुम एहनो । म करोहट निकाम ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १० मी॥ बंधव बोल मानोहो ॥ यइ० ॥ राणी कहे सुणो साहीबा । थे इम किम बोलोहो ॥ दासी तणी अरजी जरा । हीया मा तोलोहो ॥ धन्य २ चंद नरिन्दनेहो ॥ आं ॥ १ ॥ किंचित सुख किम दाखवो । जाव जीव न छोडूहो ॥ आप तणी सहु आज्ञा । कदापि न तोडुहो ॥ धन्य ॥ २ ॥ राज पाटने सायबी । मांगो सो देस्यूंहो ॥ मुज पति नारी दूजी करी । में तुम संग रहस्यूंहो ॥ धन्य ॥ ३ ॥ किंचित सुख इण कारणे।बाइ। मे नहीं बतायोहो ॥नर आयुष्य सुख तुच्छ छे । आगम मांही गायोहो ॥ धन्य ॥ ४ ॥ ❀ ॥ गाथा ॥ जहा कुसं ग्ग उदयं । समुद्दं ण सम मिणो ॥ एवं मणुसगा कामा ॥ देव कामण अंतिए ॥ १ ॥ ❀ ॥ इण कारण इण हट्टने। छोडो तुम बाइहो ॥ हर गिज में नही आचरुं । अनाचीर्ण तांइहो ॥ धन्य ॥ ५ ॥ नृपांगना कहे प्याराजी । निरास न कीजेहो ॥ गरीबडी बिल २

अर्थ—जितना समुद्रके पाणी में और कुशाग्र के औंस बुंदमें, अन्तर है. इतना देवता के भोग सुख में और मनुष्य के सुख में अन्तर हैं. अर्थात् मनुष्य के तुच्छ सुख है।

करे । दया दिल लीजेहो ॥ ध ॥ ६ ॥ जोथे छेह देवा लग्या तो । क्षिण मां मरस्युंहो।
पचेन्द्रिने नारिहित्या।थाणे शिर परस्युंहो ॥ ध ॥ ७ ॥ दयालू दीसो मने । निर्दय कि॰
म थइयाहो ॥ तुम चरणरी किंकरी । जरा आणोजी दइथाहो ॥ ध ॥ ८ ॥ शेशी कहे ए
क दया किया । नव लक्ष जीव जावेहो ॥ चोर होवूं गुरु कन्तको । इम मन नही थावेहो
॥ ध ॥ ९ ॥ तुम मोटा रायनी अंगना । हुइ इम किम बोलोहो। विषय अन्धता पर हरी
। जाति कुल तोलोहो ॥ ध ॥ १० ॥ थांरे कमी किण बातरी । लघूताइ न कीजेहो ॥
गेहला पणो ए परि हरो । लज्जा तन धरीजेहो ॥ ध ॥ ११ ॥ धन सुख छे थागे घणो
। दास दीसा परिवारहो । राजेश्वर पति तुम तणा । भर योवन मझाराहो ॥ ध ॥ १२ ॥
थे अन्याय करवा लग्या । तो प्रजा करसी कांइहो ॥ अनीती पन्थ धारण कियां।अपकीर्ती
थाइहो ॥ ध ॥ १३ ॥ मनुष्य जन्म उत्तम कुले । वार २ न आवेहो ॥ पुण्य पाप खोटा
खरा । करे ते संग ले जावेहो ॥ ध ॥ १४ ॥ ☙ ॥ श्लोक ॥ दुर्लभ प्राप्तं मानुष्य जन्मं
। हाहा मुदा हारितं मया ॥ पापं च केवलं धात्वा । रामो रामे धनः धनं ॥ १ ॥ ☙
॥ ढाल ॥ इण कारण तुमने कहूं । एसी बुद्धि न लाणोहो ॥ खोटा कर्म किया थकां ।
पाछे पडे परताणोहो ॥ ध ॥ १५ ॥ राणी कहे एसा शास्त्र जग । पेदा क्यों थइयाहो ॥

त्रिद्युत् पडो । पोथा परे । म्हारे लाय लगियाहो ॥ ध ॥ १६ ॥ ⊛ ॥ श्लोक ॥ ओलसू मंद बुद्धिश्च । सुखी नो ध्याधी पिडितं ॥ निद्रालु कामिका चेव । पडते शास्त्र वार्जितं ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ में नही समझूं ए वातने । कह्यो मानो के नाहीहो ॥ पोथा थोथानी कुकथा । क्यों इहां चलाइहो ॥ ध ॥ १७ ॥ इन्दु राय कहे कू कर्म । में इच्छूं नाहींहो॥ तो करगो दूरो रह्यो । थे क्यों रह्यो लोभाइहो ॥ ध ॥ १८ ॥ चन्दा क्रोधे प्रजली । बोले भ्रकुटी चडाइहो ॥ एकवार ओजु ना कहे । मजा देवू बताइहो ॥ ध ॥ १९ ॥ तूं कहे एकवरको । मुझे डर बतावेहो ॥ नहीं करुं नहीं करुं नहीं करुं । कर थने ज भावेहो ॥ ध ॥ २० ॥ अरुण नयन कर नारडी । कहे अधम्म नचार ॥ कुरवन पणो किम आचरे । बन्ध छोडाव्याजी चारे ॥ ध ॥ २१ ॥ म्हारो हुकम माने नही । मोटी वातां वणावेरे ॥ मै नो कर्मांकी वडवडूं । तू गुनराइ जणावेहो ॥ ध ॥ २२ ॥ भूप कहेरे दुष्टणी । अब ज्यादा मती बोले हो ॥ इतनी देर क्षमा करी । तूं छे जारणी तोले हो ॥ ध ॥ २३ ॥ विगर विचारी जो बोलसी तो । शिक्षा पासी हो ॥ नीच जात छे थायरी । तेहथी नाहीं विमासी हो ॥ ध ॥ २४ ॥ ⊛ ॥ श्लोक ॥ न जार जातस्य लिलाट श्रृंग । कुल प्रसु तस नपाणी पद्मं ॥ यदा२ मुचति वाक्य वाणं । तदा जाति कुल प्रमाणं ॥ १ ॥ ॥ ढाल

। कुसीता कहे म्हारा राज मे । मने शिक्षा करसीरे ॥ तूं करेके देखां में करुं । थारों जोम उतरसीरे ॥ ध ॥ २५ ॥ पाछे पश्चतासीघणो । पहिला हीचेतावूं हो ॥ मानले कहणी म्हरी । तो सुख बतावुं हो ॥ ध ॥ २६ ॥ वीजे हुलास सील राम में । न्टपती धर्मे रही या हो॥धन्य २ ऐसा सत्य वंत । अमोल ऋषि कहीया हो ॥ ध ॥२४ दुहा ॥ चन्द्रसेण कहेरे पापणी । जिभ्यान राखे वश ॥ वार २ बोलें इसो । अजुन निकल्यो कश ॥ १ ॥ फिर ऐ वचन जो कहाडसी । पासी दुःख भरपूर ॥ ऐसी चन्डालण थकी । प्रभु । रखो सदा दूर ॥ २ ॥ कोपातुर हुइ जाणी । कहेरे बोल संभाल ॥ अब थारा पुण्य खुट गया ।।आयो थारो काल ॥ ३ ॥ में तूझने सुख अर्पवा । कीना घना उपाय ॥ पण निर्भागी तु खरो । तो किम चाले दाव ॥ ४ ॥ देख तू मजा म्हारा । किम देवे दुःख पूर ॥ संभाल निज इष्ट ने हिवे । करावू हड्डी चूर ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ॥ ११ मी ॥ धन्य २ श्रावक पुण्य प्रभावक ॥ यह० ॥ भव्यजन सुणजो एकण चित्त । त्रिया चरित्र मोटो जगमाही ॥ टेर ॥ इम बोलती कुसीता तिहां । घवराइने चिल्लाइ ॥ दोडो २ रे सुभटो जल्दी । कोन आय घूसा मेहल मांइ ॥ भवि ॥ १ ॥ महारी इज्जत माहे हाथ घाल्यो । करण आ-

यो छे अन्याइ ॥ छोडावो शिघ्र एहना करथी । पवडोर उरदी आइ ॥ भवि ॥ २ ॥ इम हाक सुण सूभट दोडी । शिघ्र राणी भवने आइ ॥ ततक्षिण चन्द्रा वतायो चन्द्रने । अहो पकडो इणरे तांइ ॥ भवि ॥ ३ ॥ मेहल नीचेका तल घर मांही । न्हाखी दो इण रे तांइ ॥ सीपाइ धर तेहमे न्हाख्यो । तालो दीयो लगाइ ॥ भवि ॥ ४ ॥ कुंजी राणी पासे राखी । कहे भट थी जावो भाइ ॥ सूभट रुहू गया निजस्थाने । राणी वैठी आ मेहल मांइ ॥ भवि ॥ ५ ॥ क्षिण भर जक्क पडे नहीं तेहने । सेजमे पडी लोट लगाइ ॥ सर्व सर्वरी तडफी निकाली । जरा न आइ निद्राइ ॥ भवि ॥ ६ ॥ रवी प्रकासत चटपट राणी । तालो खोली भूंवरा में जाइ ॥ चन्द्रराय रह्या मौन धरी ने । न देखे न बोलाइ ॥ भवि ॥ ७ ॥ नम्र मधुर गिरा थी कहे सा । म्हारो कह्यो थें मान्यो नाइ ॥ तो कचरा में रह्या पडीया । तेम घोरे कहाडी रैंइ ॥ भवि ॥ ८ ॥ तोरुक तकीया छोडी थाने । लोटणो पड्यो निशे धरत्यांइ ॥ तुम दुःख देखी मैं दुःख पावुं । पण तुम हट छोडो नाइ ॥ भ ॥ ९ ॥ धरापत कहे थारा महेल थी । हजार गुणो सुख है ह्यांइ ॥ हाथ जोडी कहू हे परमेश्वरी । तूं इहां ऊभी मत रहाइ ॥ भ ॥ १० ॥ राणी कहे हाल तक थारी । मन की न मिटी गुमराइ ॥ क्यों तू थारी हड्डी भंगावे । विचारकर जर मन मांइ ॥ भ

॥ ११ ॥ कर्यो २ पूरण विचार में । हिवे तुझथी डरुं नांहीं ॥जल्दी हट तूं मुज सन्मुख थी । नृप कहे तो मुज सुख थाइ ॥ भ ॥ १२ ॥ रखे भागी जावे यह किहां । इम धारी सीपाइ बुलाइ ॥ इसके पगमें बेडी डालो । नहीं छोडता ए चपलाइ ॥ भ ॥ १३ ॥ नोकर तो हुकम का गरजी । बेडी नृप पग पेराइ ॥ अपना हाथ से तालो लगाइ ।पाछी आइ मेहल मांइ ॥ भ ॥ १४ ॥ चन्द्रसेन की मोहनी मूर्ती । तेहने हृदय रही ठसाइ ॥ काम ज्वर तस अंगमें व्याथो । अन्न पाणी भावे नाहीं ॥ भ ॥ १५ ॥ पूरी मंडले दिन कर आया । तन सिणगट षोडश सजाइ ॥ अटक मटक कर चटक दाखणी । कामी देखी ललचाइ ॥ भ ॥ १६ ॥ युग चेटीसे बोले चन्डी । ते केदीने लावो उठाइ ॥ दासी हुकम प्रमाण करीने । नृप पास तत्क्षिण आइ ॥ भ ॥ १७ ॥ मिष्ट वयण समजावे भूपा ने । ललकारी दी तिण तांइ ॥ पांच मिली चेटी तत्क्षिण । उठा करी मेहल में लाइ ॥ भवि ॥ १८ ॥ भोंह कबान नेणका बाण । ताकी राणी नृपके मान्याइ ॥ ज्ञान खड्ग से अध विच छेदे । जरा न जोवे सामाइ ॥ भवि ॥ १९ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ कान्ता कटाक्ष विशिषा न दहनी यस्य । चितन निर्दहति कोप कृसानु ताप ॥ कृषंति भूरी विषयाश्च न

लोभ पास । लोक त्रय जयन्ति कृत समिदंस्य धीरा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल । मंजुल काम दीपावण वाणी थी । नृप जरा रींजा नाहीं ॥ गुप्त अंग उपांग बताया । नृप मन चाल्यो न जराइ ॥ भवि ॥ २० ॥ अहो अबतो जरा समजो मनमें । फोडा पडे छ देही माही ॥ म्हारी आत्मा संतोषो तो । सुख बतावू स्वर्ग साइ ॥ भवि ॥ २१ ॥ धरापत कहे में इण दुःख से । लक्ष गुणा भुक्तूं गाइ ॥ थारे मन आवे सो कीजे । पण निलर्ज्ज बचन म कहाड बाइ ॥ भवि ॥ २२ ॥ तुम दुःख दाता बचन नहीं बोलूं । आवो पवित्र करों म्हारी काइ ॥ थाणो हुकम शिर उपर धरुं में । बोलती पकडू चुप काइ ॥ भवि ॥ २३ ॥ नृप कहे हुं जो वैरो हूं तो । तो ऐसा बचन सुनतो नाइ ॥ माननी कहे किम निन्दा करहे । म्हारा बचन माने तूं नाइ ॥ भवि ॥ २४ ॥ नहीं नहीं नहीं मानू तुज वचन में । मरण श्रेयछे मुज तांइ ॥ क्यों म्हारे तूं पाछे पडीहे । श्याम मुख कर मेश दाइ ॥ भवि ॥ २५ ॥ इम सुणी कामनी कामतुरी । नृप के उपर पडि जाइ ॥ कुचेष्टा करवा लागी तव ॥ राजा जी क्रोधे भराइ ॥ भ ॥ २६ ॥ बेडी पेर्या लातकी मारी । काकडी ज्यों दी गुडाइ ॥ दूरी पडी लागी शक्त अंगे । असूरत क्रोधे थाइ ॥ भवि ॥ २७ ॥ अरे थारे पग कीडा

अर्थ– स्त्रीके नेत्र रुप कटाक्ष बाणोंसे जिनोका हृदय भेदाया नहीं' चित चला नही कामदेव सीकारी के फासमें फसा नहीं' विषय आमिष मांस भक्षा नहीं. ऐसे धीर वीर पुरुषोंने तीन लोक का जय एक क्षिण मात्र मे किया है.

पडजो । इम शराप दिया बहु लाइ ॥ बूंब पाडीने भट बुलाइ । दोडी आया घणा सीपाइ ॥ भवि ॥ २८ ॥ कहे बताइ अरे दुष्ट यों । म्हारे लारे पड्याइ ॥ मारी कूटी कूंदी करो खूब । लेजावो ढोर ज्यों घींसताइ ॥ भवि ॥ २९ ॥ कीडा की भाखसी मे बूरजो । दीजो मत पानी खवाइ ॥ सडी२ ने मर जावे यो । ऐसो उपाव करजो भाइ ॥ भवि ॥ २९ ॥ ❀ ॥ इन्द्र विजय ॥ कामनी कूतरी दोइ बराबर । रींजे तो चाटे ने खीजे तो काटे ॥ भामनी भेकड तुल्य बनी । यशःकीर्ति सुख संपती दाटे ॥ कामनी पापनी सांपनी तापनी । पोशक ने पण न्हाखे उचाटे ॥ समर्थ छे खोडी दास कहे नर । एहनी आगल कोइय न खाटे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ मृत्यूक पशू पर भूपने घींसता । लेगया कारागृह मांइ ॥ ॥ खोडा माहे पांव घाली ने । कोटडी में दिया बेठाइ ॥ भ ॥ ३० ॥ अहो२ देखो कर्म तणी गत । केद पडी दुःख भुक्ताइ ॥ नारी देखी सुरनर मुनि चलीया । चन्द्र न चल्या ..ह अधिकाइ ॥ भवि ॥ ६१ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ विश्वामित्र परास रादि मुनियो व तारबू प्रणासनाः ॥ तेपि स्त्री मुख पंखज सु ललिते द्रष्ट वेत्र मोहं गता ॥ शाल्यंन्न धृत पयोदधि यूतं भुजन्तिये मानवाः । स्तेषां मिदय निग्रयहो यदि भवेत् विध्यास्तरे त्सागरं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ स्त्री चरित्र विलोको है कैसो । सुणता चमत्कार मन पाइ ॥ अबला काम

करे छे सबला । सात दोषहै स्वभावाइ ॥ भवि ३२ ॥ ❀ ॥ अनृतं साहसं माया । मूर्ख त्व अतिलोभता ॥ अशौच निर्दयत्वंच । त्रिणा दोष स्वभाजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥कंखरथ छोडी शंन्या पति किया । तस तज चन्द्र स्युं ललचाइ ॥ इम अनेक वसें तिया मन में । मूढ मूर्ख रह्या ललचाइ ॥ भवि ॥ ३३ ॥ धन्य २ श्री चन्द्रसेण नृप । ब्रह्म व्रतकी राखी दृढताइ ॥ हिव सुणो लीलावती सती कथा । जे आगले खण्ड गवाइ ॥ भवि ३४ ॥ द्वितीय खण्ड सील सत्य मन्डन ॥ अंगे ढाल पुर्ण थाइ ॥ अमोल ऋषि भणे श्रोता वक्तको । पाठन श्रवणे सुख वरताइ ॥ भवि ॥ ६५ ॥ ❀ ॥ ❀ खन्ड सारांस हरीगीत छन्द ॥ चन्द्रसेण राजा गुण ज्ञाजा । शील भली परे राखीयो । कुशीता राणीको अवगुण जाणी । नही केहने भाखियो ॥ चारित्र नारी किया अपारा । तास फन्दे नही फस्या ॥ सम्यक्त्व रत्न का गुण सत्य शील । अनुभवे हृदय ठस्या ॥ स्वल्प काल को दुःख । आगे सुख पुर्ण पावसे । वक्ता अधिक रस आण सक्के ॥ श्रोताने सुणावसे ॥ शील रास हुल्लास द्वितीय । निज मति अमोलख ऋषि कहे ॥ गावे मवावे सूणे सूणावे । तेह नित्य मङ्ग लहे ॥ २ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री

अमोलख ऋषिजी रचित. शील महात्म श्री चन्द्रसेण लीलावती चरित्र
का चन्द्रसेण प्रवर्य नामक द्वितीय खन्ड समाप्तम् ॥ २ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ प्रथम समरु प्रमेष्टी को । अर्हंत सिद्ध सर्व साध ॥ तीपदे तीकरण शुद्धि से । प्रणमु वार अगाध ॥ १ ॥ उरस्थान रह्या थका । शान्ती शान्ती करी लोए ॥ षोडसमां जिनवर तणो । सदा सरण हो मोय ॥ २ ॥ त्रि ताप हरण त्रि जयकरण । ज्ञानादि त्रि दातार ॥ तिरी शिव वरजे वक्षे । ते सद्गुरु नमस्कार ॥ ६ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ ब्राह्मी सुन्दरी राजमती द्रौपदी । कुन्था सीता मृगावती । कौशल्या सुलसा पद्मावती । शिवा जयति सत्यवति ॥ सुभद्रा चन्दना दवदंती । इत्यादि बहुता सती ॥ कितिय सुरा रक्षती किती स्वाती । प्रणमु ब्रह्मवृत धरती ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ सति शिरोमणी लीलावती ॥ संकट सह्या अपार ॥ पण ब्रह्मवृत नही खन्डीयो । पाल्यो खान्डा धार ॥ ४ ॥ केइ सतीने संकट समय । हूवा देवता सहाय ॥ ए सती नर स्व शक्त थी । रही विमल अधिकाय ॥ ५ ॥ जे नर जग में सत्य वंत । तस नारी सती होय ॥ चन्द्रसेननी अंगना । लो लीलावती जोय ॥ ६ ॥ किण पर संकट तिण सह्या । राख्यो सील रतन ॥ श्रोता सुणो स्थिर चित करी । मनो

रम्य यह कथन ॥ ७ ॥ ते काले विजयपुर में। कामिये कियो अन्याय ॥ चन्द्रसेण सामा गया । कुरुदत आयो मेहल माय ॥८॥ जे काले सती लीलावती । गेंदु दासनी लार ॥ पीयर मार्गे संचरी । हिवे आगल अधिकार ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ढाल १ ली ॥ निरमल शुद्ध समकित जिन पाइ ॥ यह० ॥ सुणजो सति तणी अधिकाइ। शील किणपर रखियेभाइ ॥ टेर॥ग्राम वाहिर आ घुडशाल माही सेकेकाण लियो खसाइ ॥ लीलावती तिण पर बेठाइ । भरतपुर मग चाल्याइ ॥ सुण ॥ १ ॥ जाम जामन्ना गइ तिण अवसर । महा तम रह्यो छाइ ॥गेंदू आगे अश्व बाग धरीने। अनुसारे ले जाइ॥सूण ॥२॥पीछे को पण डर हे मन मे । रखे कोइ पकडे आइ ॥ दुष्ट तणे जो वश में पडिया । तो फिर कर सीकांइ ॥ सुण ॥ ३ ॥ शीतल वायु थी कोमल काया । थर २ रही थर्राइ ॥ झीण अंबर पतली कम्मर । तुरी हिचके लचकाइ ॥ सूण ॥ ४ ॥ बन मे जावे स्वपद घणा आवे जावे। मन में धस्काइ ॥ इम घणा गाउने उलंघ्या । व्यति कर मेजब राइ ॥ सूण ॥ ५ ॥ भानु को प्रकाश पछ्याथी । अंग आइ गरमाइ ॥ आगल २ चाल्याइ जावे । न करे किहां थिरताइ ॥ सूण ॥ ६ ॥ शिरावणी की वक्तज आइ। पास न कुछ खावाइ ॥ दूध राबड्ये। मेवा मिठाइ । सहु रह्या स्थान धन्याइ ॥ सू ॥ ७ ॥ जिम २ दिन करं आवे उचो

। तिम २ वढे खुद्याइ ॥ तडको तेज उपर से लागे । शरीर गयो कुमलाइ ॥ सु ॥ ८ ॥
॥ ॥ इन्द्र विजय ॥ भूख कुलीन अकुलनि करे । अरु भूख घरोघर भीख मगावे ॥ नी
चकी चाकरा भूख करावेरु । निर्मळ वंश मे मेल लगावे ॥ भूख भमावे विदेश विपतदे
। दीन दुःखी मशकीन कहावे ॥ भूख समो नही दूःख जगत में । पापणी भूख अभक्ष
भखावे ॥ १ ॥ नेडो कोइ ग्राम न दीसे।लीजे सराजाम जाइ ॥ इम विचार करता जा
वे । दिवस रह्या थोडाइ ॥ सूण ॥ ९ ॥ कुलग्राम एक आयो एतले । गया ते तिणरे
मांइ ॥ धर्मशाला मन गमतीं देखी । उपाधी दीधी ठाइ ॥ सुण ॥ १० ॥ दिन थोडो
सो रह्यो जाण ने । गेंदू करी चपलाइ ॥ खान पान लेवा गयो ग्रामे । निशी मे न जीमे
वाइ ॥ सूण ॥ ११ ॥ तिण अवसर तस ग्राम पटेल्यो । यौवन मद छावाइ ॥ परदारानो
लम्पट मोटो । नाम मुकंद कहाइ ॥ सु ॥ १२ ॥ एक रुप दूजो वल वंतो । धन स्वजन
बहु लाइ ॥ अज्ञानीने जाती हिणो । कम क्यो करे मरताइ ॥ सु ॥ १३ ॥ ॥ श्लोक॥
मराठी ॥ अधीच मर्कट तशातही मद्य प्याला। झाला तशांत जरी वृश्चिक दंश त्याला॥
झाली तयास तदन्नर भूत बाधा । चेष्टा वदु मग किती कपीचा अगाधा ॥ १ ॥ ॥ढाल
॥ ते तिहां आयो तव फिरवाने । कु मिलोने संगाइ ॥ धर्मशाला में सुन्दरी देखी ।

भर योवन दिव्य काइ ॥ सु ॥ १४ ॥ मुकुंद कामातुर तव थइयो । ए मुज स्त्री जो थाइ
। वैभव सुख विलस्युं इण साथे ॥ सफल जन्मतो म्हाराइ ॥ सु ॥१६॥ कोइ दाव उपाव
करीने । करुं म्हारा वश मांइ ॥ पटेलण वणावूं इणने । इच्छित सुख वताइ ॥ सु॥ १७
॥ इम विचारीं बोले सतीसे । इहां तुमसे न रहवाइ ॥यहतो शिरकारी धामछे । निकलो
झट बाराइ ॥ सू ॥ १८ ॥ कहे लीलाबती सुणो भाइ । हम नोकर गयो गाम मांइ ॥
ते आया से सरजाम हम । मेलसां अन्य जागाइ ॥ सू ॥ १९ ॥ देर करण का काम न-
हीं है । काम दार अवी आइ ॥ जाग इहां अच्छी नहीं देखे । तो इज्जत म्हारी जाइ ॥
सु ॥ २० ॥ जो तुम से नही वजन उठे तो । उठाइ हमारा सिपाइ ॥ थे कहसो तिण
जागा मांइ । झेल देसी ले जाइ ॥ सू ॥ २१ ॥ अहो भाइ किम करो तुम घाइ । मे जा
तिकी लूगाइ ॥ आदमी आया मालम पडसी ! किण स्थान निशें रहाइ ॥ सु ॥ २२ ॥
कहे पटेल हम वाडा मांइ । जागाहैजी सुखदाइ ॥ कोइ तरहकी चिन्ता मत करो। तिहां
देवूं मे पहूचाइ ॥ सु ॥ २३ ॥ तात्क्षिण भट अपणो बोलाइ । सरजाम उठवाइ ॥ एक ज
णो ते हुय लय चाल्यो । ते अबला करे कांइ ॥ सू ॥ २४ ॥ तेहने लारें गइ लीलावती।
बाडा मे दी बेठाइ ॥ पेरायत नोकर वेठायो । ए जात्रां नही पाइ ॥ सू ॥ २५ ॥ कहे ली

लावती नोकर म्हारो । आसी धर्म शाल मांइ । कृपा करीने इहां भेजजो । ढील न होवे जराइ ॥ सु ॥ २६ ॥ हां कहीने गयो मूकंदो । चिंतग तारा ढाल माइ ॥ आग बात सुणो उतपातनी । ऋषि अमोलख गाइ ॥ सुणो ॥ २७ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ गेंदु खादिम नीर लेइने । धर्म शालामे आय ॥ लीलावती दीठी नही । मनमाही धस्काय ॥ १ ॥ कोइ शत्रू आयन । लेगया तेहने घेर ॥ के इहां कोइ हरण करी । फिकर हूवो केइ पेर ॥ २ । मूकन्द देख्यो टेलतो । पूछे अति नरमाय ॥ कहो शिरकार हम बाइजी । इहाथी गया किण ठाय ॥ ३ ॥ मुकंद कहे अबी इहा । आयो एक जुवान ॥ करी मस्करी ते नार संग । दीधो तेने खान ॥ ४ ॥ तेऊठी गइ तास संग । दीठी म्हरे नेण । अत्रकांइ जाणा नहीं । कह्या मिथ्या इम वेण ॥ ५ ॥ ढाल २ जी ॥ इण वाने केशर उड रही ॥ हह० ॥ गेंदू सुणी अश्चर्य हुवो । किम वोले हो यह ऐसी बात के ॥ बाइ साहेब ऐसा नहीं । किमथयो ए विच मा उत्पात के ॥ कपटी सूं पूरो नहीं पडे ॥ भां ॥ १ ॥ तत्क्षिण ढूंढण चालीयो । चारुं कानी हो कोस दो कोस माय के ॥ ढूंढ्या पतो लागो नही । पाछो सूतो हो धर्म शाला में आयके ॥ क ॥ २ ॥ निद्रा पण आवे नहीं । चिन्ता हो चितउपजे अनेक के ॥ सती शिरोमणी बाइजी । नही बांछे हो अन्य नर ने ए टेक के ॥ क ॥

॥ ३ ॥ पण ए किम बोलीयो । इणरी द्रष्टी हों मुने दीसे हराम के ॥ लाज्यो नहीं इम बोलतां । रखे होवे हो कोइ इणराही काम के ॥ क ॥ ४ ॥ काले पत्तो लगावस्यूं । सूनो हो इम करतो मन्योग तो ॥ इम विचार विचार में । निद्रा आइ हो भूख थाकेन जाग तो ॥ क ॥ ५ ॥ लीलावती जोवे वाटडी । गेंदूने हो गया हुइ बहू वारतो ॥ बोले तिण पहरादार थी । जाइ लावो हो भाइ नोकर हमार तो ॥ क ॥ ६ ॥ पेहरा दार कहे बाइ ते । अजु तांइ हों आयो दीसे नायतो ॥ पटेलजी जाता कह्यो । वो आवेगा तो भेजूंगा इण ठाय तो ॥ क ॥ ७ ॥ फिर कहे लीलावती । भाइ वजार में करो चौकस जाय के ॥ देर घणी हुइ तेहने । इहां लावो हो हूं लागू तुम पायतो ॥ क ॥ ८ ॥ भट कहे इम किम करो । मालकणी हो होसो ग्राम का आपके ॥ आपने एकली छोडने । नहीं जावूं हो में कहूं छूं सापके ॥ क ॥ ९ ॥ लीलावती कहे इहां रहो । करजे हो अश्वमाल रखवाल तो ॥ में जाइ लावूं जोइ ने । पाछी आस्यूं हो अबी इहां ही चालतो ॥ क ॥ १० ॥ ते कहे हूं जावा दूं नहीं । नोकर की हो नकरो फिकर लगार के ॥ थे होसो मालक ग्राम का । घणा नोकर हो रहसी हुकम मझार तो ॥ क ॥ ११ ॥ सती कहे तुझ बोली मे । भाइ मुजने हो कुछ समजे नाय के ॥ किमा बेठाइ इहां मने । कहो मनरी हो सहू बात

समजाय के ॥ क ॥ १२ ॥ जट कहे ते पाटेलजी । तुमने देखी हो घणा गया मोह वा-
य के ॥ पटेण करसी तुम भणी । समजाहो अब रहो सुखमाय के ॥ क ॥ १३ ॥ मन
मनीं मजा मान जो । केइ नोकर हो रहसे हुकम हजूर के ॥ राजी हुवा दिखो मन वि-
षे । खुद पटेल हो करसी कह्यो मंजूर के ॥ क ॥ १४ ॥ ❁ ॥ मनहर ॥ अल्प पैदासी
देख । उल्लासी कंगाल माने । दिल माहें जाने ।मुज सम न कमावूं है ॥ खेड बीच रहे ।
पेडे खावे जो गुड के कधी । दूसरे को जाने खिन । मेंही माल खावूं है ॥ लाखों का
उथेला सदा । होता है जिनो के आगे । उन को क्या जाने नागे । जन्म के गमावूं है ॥
अरल की लट और । अगड दादुर जानो । सागर सक्कर खानो । अमोल यो पोमावूं है॥
१ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ इम सुणी क्रोधा तुरी हुइ । पगथी हो उठी शिर लगी झालके ॥ क॥
अरर अकारज मोटो हूवो ।आयो दीसे हो अब म्हारे काल के ॥ क ॥१५ ॥ अरे दुष्ठ इण
कारणों। थे कीनो हो अबलाथी कपट के ॥ फसांइ इहां लायन । जिम तीतर ने भद बा
ज झपट के ॥ क ॥ १६ ॥ अरे दुष्ट निकल तू इहां थकी । विन कारण हो मुज किम
सताय के ॥ ते कहे हुं जावू नही । कधी धडथी हो शिर होवे जुदायके ॥ क ॥ १७ ॥
जो तूं इहासे जासी नहीं ॥ तो फोडस्यूं हो अबी महारो सीस तो । इम सुणी ते डरपी

यो । कहे बाइ हो तुम मत करो रीसके ॥ क ॥ १८ ॥ में कह्यो तुम मुख भणी । थांरे हो नहीं आयो दाय के ॥ तो थेइ दूःखीया हूसो । इण मांहे हो म्हारो कांइ जायके ॥क ॥ १९ ॥ इम कहीते उठ चल्यो । बाडा के हो दियो तालो लगाय के ॥ पटेलने जाइ कह्यो । ते सुणने हो कछु गिणती न लाय तो ॥ क ॥ २० ॥ मुझ वशमां आइ पडी । करस्यूंहो एक क्षिणमा वशतो ॥ तीजा हूल्लाल सीलरासनी । थुंग ढालज हो कहे अमोल शीलसततो ॥ क ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ लीलावती चित चिन्तवे । बात पडी कूढब ॥ अग्न झालथी नीसरी । भाभर में पडी अब ॥ १ ॥ आगे कीसो होसी माहेरो ॥ शील रहसी किण पेर ॥ आत्मघात्त रखे नीपजे ।अहो दैव कीजो खेर ॥ २ ॥ निशा पडी तम ब्यापीयो । कोइ नहीं तस पास ॥ एकान्त स्थान बेठकर । मन में करे बिमास ॥ ३ ॥ इण भव तो कीधो नहीं । स्वपना में अन्याय ॥ पर भवनी बीतक कथा । जाणे श्री जिन राय ॥ ४ ॥ स्वपना में नहीं जाणती । नहीं सुणी ऐसी बात ॥ ते दुःख म्हारो जीवडो । भुक्तैहै साक्षात ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ३ री ॥ ललिन छन्द ॥ जगत् पति प्रभू सरण थायरो । ऐसी वक्तमें तूही माहरो ॥ सज्जन साथ तो सर्व छूटीयो । अरर कर्मने सुख लूटीया ॥ १ ॥ राज सायबी सब दूरी रही । सुखकी वातता स्वप्नसी भइ ॥ किणरीं सहायता

माहेरें नहीं।अरर गति केहवी माहेरीथइ ॥२॥ दुष्ट शत्रू की किम बिगडी नीति । क्षत्री जा
तिकी नहीं ऐसी रीति ॥ धाडायती जिसो उठ आवीयो । अरर शूरानो संग भगावियो ॥
६ ॥ प्राण के पति सारना करी । रावी ने समय गया पर हरी ॥ न जाणो किहां जाइ
ने वस्या । अरर कर्मथी दूःखमें फस्या॥४॥कभी एक कोसतो चालवातणो। काम न पड्यो
हिवे किम चालणो ॥ वनमां वास तो किम करो नाथजी । हिवणा कौनहै आप साथजी
॥ जराक वायू थी शीत लागती । अब शीतनो किस्तरे भागती ॥ तनक तापक्षाथीस्याम
होवता । हिव किण परे धूप खोवता ॥ ८ ॥ सयन करता सदा सुकु माल गादीये। हिवे
रहवा भणी कुण जगा दीये ॥ यों परदेशां तणां दुःख छे घणा । कब पार होवसी अहो
आपना ॥ ९ ॥ इष्ट देव से ऐही वीनती । राजा साहेब ने दुःख होवो मती ॥ सहाय
उनकीसदा कीजिये ।गरीब अबला की खबर लीजीये ॥१०॥ धर्म शाल मां गदू जो आव
सी । खान पान की वस्तु लावसी ॥ मुझे न देखसी तो खेद पावसी। अरर तेह तणे
मने सां फावसी ॥ ११ ॥ कुलंछनी कदा मने जो जाणसी । किसी कल्पना मने ते आण
सी ॥ सत्य भेदतो कुण बतावसे । अरर दर्द तास कुण मिटावसे ॥ १२ ॥ इम कल्पना
अनेक आवती । मोहणी बसे छाती भरावती ॥ ततले गेहमां खड बड तो हुइ । ऊदर

नोल कोल फिररह्या जइ ॥ लीलावती सुणी धैर्य मन धरी । इण धर माहे ने कोरहे खरी ॥ १३ ॥ द्वार ढिग रही उंचश्वर कही । कोण सदन में जवाव नं दइ ॥ वहु वार इम सती पुकारीया । उत्तर न मिल्यो वैम धारीया ॥ थर २ धूजीये अंग जेहनो । शरर छुटीयो पसीनो देहनो ॥ ज्वर अंगमा तात्क्षिणे चडी । धूजती एकान्त जाय ने पडी ॥ १५ ॥ समुद्र सारखी तरंगो आवती । दुःख भय थकी उर धडका वती ॥ दूशाला विषे अंग छिपावती । ज्ञान जोगसे मन समजावती ॥ १६ ॥ भूख प्यास तो लागी अति घणी । किणने कहे दुःख कुण तिहां धणी ॥ पूरा कृत पाप उदय आवीया । अरर मने तेही आइ सतावीया ॥ १७ ॥ अर्हंत सिद्धने साधूजी तणा । धर्म आसरो म्हारे घणो ॥ एह संकट प्रभु वेगी निवारजो । गरीव अवलानी अर्ज धारजो ॥ १८ ॥ तिउ खन्ड तिहू ढाल ए भनी । ललित छंद मे सती नी कथनी ॥ अमोल ऋषि कहे आगे सांभलो । मुकंद राम का मन को आमलो ॥ १९ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ वाडापट खुलवा तणो । सुणियो सती अवाज ॥ चिन्ते गेंदू आवीयो । धैर्य आवी त्यांज ॥ १ ॥ हर्षी कहे भाइ कौनहै । मुकंद कहे तेवार ॥ भय म धरो को मन विषे । हूं छू ग्राम सिरदार ॥ २ ॥ लीलावती कहे भाइजी । चाकर म्हारो जेह । अजु लगण आयो नही । खवर जाणो ते केह ॥ ३ ॥

नोकर आप बेठावी यो । ते·में गेंदू काम । भेजो बजारे जोववा । ते नहीं आयो आम ॥ ४॥ कृप करी म्हारा परे । मिलावो मुज नोकर । मुकंद राम तब हर्षने । जवाब देवे इण पर ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ४ थी ॥ किण विध तिरसीरे चैतनिया थारि आत्मा ॥ यह ॥ सज्जन सुणजो हो । सत्यवन्त सतीकी वारता ॥ आं ॥ नोकर थांणा जोवाने हम । फिऱ्या घणा बजार ॥ धर्म शाला के पास उभा । पत्ता न पाया लगार ॥ स ॥ १ ॥ एक मनुष्य में जोवा भेजी । आयो हुं इहां चाल ॥ ते अबी तस जोइ लासी ।उे कैंसी सहु ह वाल ॥ स ॥ २ ॥ लीलावती कहे भाइजी थाणा ।मनस्यूं में उपकार ॥ परपकार किया थी भाइजी । सुखिया हूवे संसार ॥ स ॥ ३ ॥ पटेल मिष्ट वयण प्रकास तुम कृपा थी सुख थासे ॥ जो म्हारो कयो करसोतो । तुम आत्म सुख पासे ॥ स ॥ ४ ॥ धूजी लीलावती मन मांहीं । सीतल वचन उचारे ॥ पतिवृता का वृतन भंग । ।ते हुकम सिर म्हारे ॥ स ॥ ५ ॥ जो मुज लायक होणे सरीखो । भाइजी काम में कर युं ॥ वचन विचारी उचारजो भाइ । योग हासीसो आचरस्युं ॥ स ॥ ६ ॥ लम्पटी कहे तिण मांहे कांइ । योगा योग न दीसे ॥ प्रिय म्हारा पर प्रेम धरीने । पूर्ण करो जगीस- ॥ स ॥ ७ ॥ चमक्यो चित कू वयण सुणीने । अंग संकोचन कीधो ॥ उंडो विचार क

सांतोय । सद्बोध इण पर दीधो ॥ ८ ॥ अहो पटेलजी हो शूद्ध मांइ । के कोइ अमलज
पाधो ॥ परस्त्री ने प्रिये बोलावो । जरा विचार न कीधो ॥ स ॥ ९ ॥ यह नहीं थाणो घ
र भाइ । केफ मे भूली आया ॥ परदेशी माणस हम उतर्या । बोलण विचार न लाया ॥
स ॥ १० ॥ शुद्धमे आइ आँख उघाडों । यह घर देखो केहनो ॥ तुम घर तुम नारीने
ओलखो । मुद्रित खोली नयनो ॥ ॥ स ॥ ११ ॥ परस्त्री ने पर घर मांही । यह वचन
न ऊचरिये ॥ दोष अठारा कह्या केफ का । ते करवो पर हरिये ॥ स ॥ १२ ॥ ❀ ॥
॥ श्लोक ॥ निद्रा हांस्य अप्रतीतं चित भ्रमं । मूर्छा वचाल चंचलं ॥ मोहं व्यासी मदं
छक प्रमाद प्रितीहानी कलहं ॥ बुद्धि विनाश मुकत्वं विकलता कमातूर ॥ धुम्रण निर्ल
परवस्य केफ दोष अष्टादशः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ मुकंद कहे में अमल न पीधो । भांग
माजुम नही खाइ ॥मदन तणो म्हारे नशो चडियो । ते तुमथी उतराइ ॥ स ॥ १३ ॥
गाढा लिंगन करने म्हारी । मदन केफ उतारो ॥ मुजतन घरने संपत सहुनी । मालिकी
तुम कर धारो ॥ स ॥ १४ ॥ वार २ निर्लज्ज वचन सुण । सती क्रोधे प्रजलानी ॥ अरे
नीच तुझ लाजन आवे ।बोले अयोग जवानी ॥ स ॥ १५ ॥ इण कारण तूं गरीब गाइने
। इहां लाइ फसाइ ॥ इसे रस्ते चल्यो पटेल्या । किम रहसी ठकुराइ ॥ स ॥ १६ ॥ तु

ज मे न लक्षण उत्तन मरना । ए नीच जात का कामो ॥ ग्राम पति परस्त्री सहोदर । किम करो द्रष्टी हरामो ॥ स ॥ १७ ॥ मुकुंद तब जरा गरम होइने कहे अरी सुणरी स्याणी ॥ म्हाते नीच बणावेछे पण । थारी होसी धूल धाणी ॥ स ॥ १८ पाछे तूं पस्तावो करसी । थारो धान्यो थासी ॥ तिण कारण कर कहेणी म्हारी । तो सुख इच्छित पासी ॥ स ॥ १९ ॥ लीलावती कहे अरे ज्रट तू । कू बचन मत सुनावे कालो मुह कर निकल इहाथी । क्यों मुज मार्यो चावे ॥ स ॥ २० ॥ मुकंद कहे क्षम्या कर हिवणा । ढाल चौथी में जावूं । इम कही गयो मुकंद वाहिर । कहे अमोल आगे सुणावूं ॥ स ॥ २१ ॥ ॥ दुहा ॥ द्वारे कुल्प लगायने ' मुकंद गयो निजघेर ॥ लीलावतीं तिण समे । फिकर पिशाच लियो घेर ॥१ ॥ सकल्प विकल्प चितहूवो । नयन छूटी जल धार ॥ दुःख हृदय मावे नहीं । उमंगी निकले वहार ॥ २ ॥ किहां पीयर किहां सासरो । किहां सहाय करणार ॥ मार्ग में अण चिन्तीयो । पडीयो दुःख महा भार ॥ ३ ॥ दुःख ऐसो नहीं सह सकू । करुं किम भगवान ॥ आत्म हित्या करतां थकां । भवर होवूं हैरान ॥ ४ ॥ इम चिन्ता करतां थकां । निद्रा आइ तेवार ॥ रात्री गइ रवी प्रगट्यो । करियो धर्म विचार ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ५ मी ॥ मुज विन तडी अब

धारो साहिब ॥ यह ॥ सुणो सज्जन सती सिरोमण साची । काची नहीं लगार ॥ आं ॥ प्राते गेंदू धर्म शालमां । मनमे करे विचार ॥ राणी साहेब की खबर जो करणी । किहां मिलासी करतार ॥ सुणो ॥ १ ॥ ग्राममे फिर्या घणी चोकस कीनी । पूछ्यो घणा थी विचार ॥ कुबुद्धि थी डरे सहूमाणस । न कह्या किण समाचार ॥ सुणो ॥ २ ॥ ❀ ॥ छपय ॥ कुबुद्धी नम्र नरजेह । तेहने शरम न आवे ॥ धन जोबन के जोर । तोर अभिमान जणावे ॥ अकृत्य करे न डरे । लडे लाजवंत से जाइ ॥ लाजवंत शरमाय । जाय ते अधिक पोमाइ ॥ नागा से आगा रहो । जो यशः सुख की आस ॥ नित्यानन्द वर्ते अमोल । तोड कुबुद्धि कीं फास ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ दिन चढ्या परगाम भणीते । चाल्यो जोवा काज ॥ अन्य ग्राम का दाना नरथी । पूछे कुल ग्राम समाज ॥ सुणो ॥ ३ ॥ वृद्ध दाखे तिण ग्राम के मांहीं । न्याय नहीं है लगार ॥ मुकन्द पटेल्यो जार लंपटी । काम तेहने अकन्यार ॥ सुणो ॥ ४ ॥ अङ्गि·त आकार बतायो तेहने । औलखीयो तिणवार ॥ अरे दुष्ट तेहीज कु बुद्धि । में तबही जाण्यो बिचार ॥ सुणो ॥ ५ ॥ अबे सुस्ती को अवसर नाहीं । करणो वेगी उपाय ॥ निमक हलाल करूं इण अवसर ॥ जे पाल्यो मुज तांय ॥ सुणो ॥ ६ ॥ इम निश्चय कर शिघ्र तिहांथी

कुलग्राम आयो तेह ॥ छिप कर रहियो किण ने कहियो । हिवे लीलावती गत केह ॥ ७ ॥ ते दिन ऊगा पटेल मूकन्दे । दासी लीवी बुलाय ॥ बूडी कूड़ी रुडी सूडी । वैररम्प कतरी खाय ॥ सुणो ॥ ८ ॥ लालच देइ कहे वाडा माहेली । नारी ने तू समजाय ॥ म्हारा वश-मा शिघ्र थाय । तूं तैसो कर उपाय ॥ सुणो ॥ ९ ॥ भोजन भोगववा वक्त हुइ है । श्रेष्ट लेइजा आहार ॥ और मांगे सो मंगाइ दीजे । जिम धरे मुज पर प्यार ॥ स ॥ १० ॥ भोजन थाल रसाल लेइने । चाली बुढी हर्षाय ॥ डगमग करती मस्तक धुजाती । आइ नोरा माय ॥ सुणो ॥ ११ ॥ द्वार शब्द सुणी डरी लीलावती । रखे दुष्ट ते आय ॥ पण बुड्ढी डोकरी देखीने । धैर्य मनमां लाय ॥ सुणो ॥ १२ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ धुर्त वैश्या वैको वैन्ही । अँही नारी वँद्री फलम् ॥ व्योपारी दूती श्वनवमम् । बर शोभित अंतःश. विषः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ सती पास दूती आइ वैठी । ऊंच वचन बोलाय ॥ वृद्धवय धारक तस जाणी । सती दादी कही बतलाय ॥ सुणो ॥ १३ ॥ इण संकट मा हे दादीजी । आपको आसरो माय ॥ इण वाडाथी मुक्त करावो । औरन वांच्छु कोय ॥ सुणो ॥ १४ ॥ हूं छु आपकी धर्मकी पुत्री । लज्जा राखो माय । इम कही रुदंती पगे पडी कहे॥मू न नोकर दो मिलाय॥सुणो॥१५॥ डोकरी बोले खारक तोले।पुत्री मतकर दुःख।

धैर्य धरतूं जराक मनमे ।सब आपूं तुज सुख ॥सुणो१६॥थारो मन मान्यों सहु करस्यू ।रोव मत मुज पुत्री॥उठवेगीलेशीतलजलए॥मुख धोले पलीयत्री॥सु॥१७॥मन गमतापक्कान लाइ छुाते भुक्त डर छोड॥थोडी जीवने कर ममाधी॥फिर पूरुं तुझ कोड ॥ सु ॥१८॥ सती कहे मुज खाणो पीणो । सूजे नहीं इण ठाम ॥ पहिली मुजने इहां थी निकालो । जिम पामू आ राम ॥ सु ॥ १९ ॥ कहे डोसी में कह्यो तुज पहले । चिन्ता न करणीं लगार ॥ थारो कह्यो में तो जब करस्यूं । कर पहिलां यो अहार ॥ सु ॥ २० ॥ पांव पडी कहे लीला वती । मां तुझ कह्यो करुं प्रमाण । ततूक्षिण मुख धो खावा बैठी । गले न उतरे धान ॥ सु ॥ २१ ॥ डोसी मुख अवलोकी बोले । तुं दुःखी दीखे अपार ॥ पण म्हारा हुकम में चालीतो । दुःख न रहसी लगार ॥ सु ॥ २२ ॥ इम मीठी२ वात बणावे ।सती समजे सत्य सव । प्रमाद ढाल कही ऋषि अमोलिख । सुणो डोसी गत अब ॥ सुओ ॥ सुणो ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ करजोडी लीलावती कहे । हूकम फरमावो सोय ॥ त हूं खुश होइ करुं । जो मुज लायक होय ॥ १ ॥ हर्षी तव वृद्धिका भणे । शुण शाणी हित वात । इण ग्रामका पटलके । राजा तुल्ये न आत ॥ २ ॥ रुपतो माधव सारीखो । प्राक्रम भीम समान ॥ शूर सिंह समानहैं । कलाए गुरु अभिधान ॥ ३ ॥ गज गाजी वाहण

घणा । नोकर केइ हजार ॥ और सुख संपती छे घणी । करो तेह भरतार ॥ ४ ॥ फिर
सवा पोडो पिलंगमे । करो नित्य नव सिणगार ॥ काम कदा कुछ मत करो । छूटो मजा
संसार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ ६ठी ॥ यातो नाम धरावे भाजीरे ॥ यह० ॥ इम डोकरी
की सुण वाणीरे । लीला वती क्रोधे भराणी ॥ ग्रास सुख में को थूकी दीधोरे । कुल्लो
पाणी को कीधो ॥ १ ॥ दूरी फेंकी दीवी ते थालीरे । आंख्या माहे छाइ लाली ॥ थर २
अंग धूजण लागीरे । निशंक बोले ज्यों लागी आगीरे ॥ २ ॥ में तो तुजने जाणती डो-
सीरे । कांइ अक्कल थारा मां होसी ॥ बूडी नी बुद्धि गइ बूडीरे । तूंतो निकसी अतिही
कुडी ॥३॥ मेतो जाणती तुजने मांजीरे । म्हारो जीव थयो पेखी राजी ॥ या दाना पणा
को डर लासीरे । मुज नै इण सुख थासी ॥ ४ ॥ एतो सज्जन पनो करसीरे । पर भवको
डर विल धरसी ॥ होसी पुण्य पाप जाणन हारीरे । दया लासी मन मझारी ॥ ५ ॥
लेतो सर्व बात हूइ ऊंदीरे । तूंतो निकली कुबुद्धिनी फूंदी ॥ जे म्हारे हुंती आसारें । ते
तो पडिया अवला पासा ॥ ६ ॥ खोटा कर्म मांहे मन थारोरे । चंडालणी सरीखो जमा
रो ॥ इण धन्दे कठास्युं लागीरे । दुष्ट बुद्धि किम थारी जागी ॥ ७ ॥ ऐसो दुती पणो
करसीरे । यो पाप किहां जाइ भरसी ॥ साठी में बुद्धि थारी न्हाठीरे । इण कारण ली-

नी कोठी ॥ ८ ॥ धोला मांहे पड गइ धूलीरे । तुंतो पर भव को घर भूली ॥ त्वचा तन की लटकाणी । थारीं अक्कल हुइ धुल धाणी ॥ ९ ॥ बचन कहाडती नही शरमाइरे । थारी जिभ्या किम चली बाइ ॥ दानी तूं नानी स्युं खोठीरे । आगे भव मा उठासी पोठी ॥ १० ॥ थारो मुख देख्या पाप लागेरे । थारों नाम लिये दुःख जागे ॥ इण कारण मुख कर कालोरे। दे जल्दी इहांथी टालों ॥ ११ ॥ ते डोसी कहे रिसाइरे। गाल्या क्यूं देवे शाणी बाइ ॥ इण मांहे म्हारो कांइ जासीरे । थरा किया तूंही पासी ॥ १२ ॥ मैं कही तुज सुखकी बातांरे । थारा कर्म मे लिखीछे लाता ॥ तूंतो हिवे घणी पस्तासीरे । जब थारी पूरी कुन्दी थासी ॥ १३ ॥ में तो तुज ने सूख देवा आइरे । तूंतो आइ छे दुख लिखाइ ॥ में तों चहाती थारो सारोरे । कर्म आगे किणरो बारो ॥ १४ ॥ लीलावती कही रीसाइरे । बड २ मत कर बूडीं बाइ ॥ थारा वयणे मुज तन छीजेरे । तूंतो मुखडो बन्ध कर रीजे ॥ १५ ॥निकले नी इहां थी वेगीरे । के म्हारो जीव तुं लेगी ॥ विनबो लायां क्यों आइ रे । किण दुष्ठी तुजने पठाइ ॥ ११ ॥ बुद्धी कहे या में चालीरे। पाछे फोडजे थारी कपाली ॥ थारा जिभ्या तणा फल लेसेरे । देख थारी गुमराइ किम रेसे ॥ १७ ॥ इम कह्या तूं नही समजेरे । पटेल साथे जूता फाग रमजे । अबी पटेलजी इहां आ-

सीरे थारी गुमराइ सवी गमासी ॥ २८ ॥ डोसी मुख मचकोडी चालीरे । रीसे धूजे अंग
ने कपाली ॥ बाडाने तालो लगाइने । मुख बड २ करती जाइ ॥ १९ ॥ यह कँाया ढा
ल प्रकाशीरे । हिवे बुडी लगत्यां लगासीरे ॥ कहे अमोल सील सहाइरे।आइ सहू त्रिसा
टल जाइ ॥ २० ॥ ❋ ॥ दुहा ॥ मुकुंद पटेल निज घर विषे । वणिया मनका
राव ॥ लींलावती वरवा भली । अधिको लाभो चाव ॥ १ ॥ ते तले आवी डो
करी । बडती २ तिण पास ॥ उत्सुक हो पुछे मुकूंद । वीतक करो प्रकाश ॥ २ ॥
क्रोधासुर डोसी वदे । तेतो वडी छटेल ॥ मीठासे वश न हुवे । कून्दी कर पटेल
॥ ३ ॥ मनोहर। मीठी २ वाणी कही । उंच्च २ उसे लही । कदर अधिक द
इ । हित शिक्षा दीजिये ॥ मूर्ख त्यों त्यों अकडाय । लाने नहीं हित वाय । ल-
डन सन्मुख थाय । तासूं काहा कीजिये ॥ ऐसे से काम कव । जान बूज पडे
जव । निकालना कोइ ढव । दूर डर रीजिये ॥ नहीतो न डर वासू । विन मोल
कहे तासू । मक्कर हु करे तासू । ठक्कर हू लीजिये ॥ १ ॥ ❁ ॥ तूंतो जात मर
दकी । ते अवला कहवाय ॥ तुज सरीखा वली भणी । सहजे वश ते थाय ॥ ४॥
इम लगती लगायने । वृद्धिका निज घर जाय ॥ लीलावती रीजावता।मुकुंदराव सज थाय॥

५ ॥ ❁ ॥ ढाल ७मी ॥ क्षमा वंत जोवो भगवंत नोजी ज्ञान ॥ यह ॥ खुर मंडन द-रावीयोजी । पीठी अंग कराय ॥ उगटण मंजन करीजी । भाले तिलक लगाय ॥ दुष्ट जन । न छोडे दुष्ट स्वभाव ॥ आं ॥ १ ॥ जरी जर तार भर्यो सज्योजी । सहु अंगे पोशाक ॥ भूषण हेम भणी जड्याजी । पेहरीं हुवा चाक पाक ॥ दुष्ट ॥ २ ॥ तेल सुगंधी अतर आदिजी । फूल गंजरा गल पेहर ॥ तेंवोले मुख राचीयोजी । हुवो ते इन्द्रनी पेर ॥ दुष्ट ॥ ३ ॥ हिवे दिन कब आथमेजी । चट पटी लागीरे तन ॥ घटिका वैरण हो रहीजी । तलपी रह्यो तस मन ॥ दुष्ट ॥ ४ ॥ कामातुर व्याकुल थयोजी । तन मन नरहे ठाम ॥ ततलेरवी पश्चिम छिप्योजी । आयो वाडामें जाम ॥ दुष्ट ॥ ५ ॥ लीलावती चमकी घणींजी । तत्क्षिण हुइ सावधान ॥ थर २ अंग कम्पी रह्याजी । मनमां अर्हत ध्यान ॥ दुष्ट ॥ ६ ॥ मुकन्द ऊभो सन्मुखेजी । सती नहीं सामे जोय ॥ ॥ क्षिणन्तर ते वोलियोजी । कर जोडी नमी सोय ॥ दुष्ट ॥ ७ ॥ मुंज उभा वार हूइ घणीजी । तुम न वोलावो केम। इम निर्दयी किम हुइ रह्याजी । धरो न जरासो प्रेम ॥ दुष्ट ॥ ८ ॥ जो अपराध मुज थी हुवो तो । कीजे शिघ्र प्रकाश ॥ विना गुन्हे रुसी रह्याजी । भली न लाग हांस ॥ दुष्ट ॥ ९ ॥ कोपातुर सती हुइ जी । वोले सुण चन्डाल ॥ सन्मुख मत आ

म्हारे जी । जो चहावे खुश हाल ॥ दुष्ट ॥ १० ॥ पांव पडी मुकन भगेजी । इम निष्टूर मत थाय ॥ प्रिय दयाकर माहेरीजीं । नहीं तो मुज जीव जाय ॥ दुष्ट ॥ ११ ॥ मांगे सो अर्पण करुं जी । तुजथी दूजी नबात ॥ सती कहे मत बदालिये जी । देजे मुजने च-हात ॥ दु ॥ १२ ॥ ज नर बचना बायडाजी । लापर ते कहवाय । सच कहे देशे मांगी यो मुज । बदलसी तो नहीं वाय ॥ दुष्ट ॥ १३ ॥ इम सुण मुकन्द खुशी हुवो जी । जाणे ललचाणो हे मन ॥ कहे सांगो जो चाहीये तुम । पक्को म्हारो बचन ॥ दुष्ट ॥ १४ ॥ धन वस्त्र गहण तणी जी । म्हारे कमी नहीं कांय ॥ हूं गुलाम छूं तुम तणो जी । कहूं सौ देवुं लाय ॥ दु ॥ १५ ॥ सती कहे भाइ मुज भणी जी। धन संपत नहीं चहाय ॥ इण स्थान थी कहाडी ने मुज । चाकरने दे मिलाय ॥ दुष्ट ॥ १६ ॥ जो तूं साचो बचन को छे । तो इत्तो देमोय॥ भर पाइ वीरा सहू में।कहूं छू पग पड तोय ॥ दु ॥ १७ ॥ इम सुण पटेल मुरजावीयो जी । कहे किम बोले एम । में दुःखियो हुयो घणो अब्र । धर थोडो सो प्रेम ॥ दुष्ट ॥ १८ ॥ सती कहे सुखी यो न हुत्रे जी । ज्यादा पासी दुःख ॥ जिन २ छल कियो सती तणो जी। जो तूं तस सन्मुख ॥ द ॥ १९ ॥ रावण का दश शिर गयाजी । पद्मोत्तर कियो नारी वेस ॥ कीचो कीचक को नीकल्यो। जी । मणी रथ

कारण मे कहूंछुं । मत कर यह मन्योग ॥ दुष्ट ॥ २१ ॥ पटेल कहे हु भोगवुंगा । तुज कारण सहु दुःख ॥ पग पडुं हुं थावरेदे । गाडा लिंगन सूख ॥ दृष्ट ॥ २२ ॥ नरमांइकी धी घणी में । पडीछे मुज वश आय ॥ गपोडा में समजु नही मे । माने के नहीं मुज वाय ॥ दृष्ट ॥ २६ ॥ अब हूंतो रह सकू नही छूं । कर हूंतो बलत्कार ॥ शीधाथी माने नही तो । येहि मूज आचार ॥ दूष्ट ॥ २४ ॥ देखां सहायक कुण हूवे तुज । इम कही पकडन जाय ॥ भैय ढाल अमोल कहेजी । जावो सहायक कुण थाय ॥ दूष्ट ॥ २५ ॥

॥ दूहा ॥लीलावती चिल्लवाइ । उठदे पाछा पां ॥ सीलरक्षक सहाय हूइ । देवो दूष्ठथी बचाय ॥ १ ॥ गेंदू हूंतो ढूंकडो । हाक पिछाणी तेह ॥ वाइ साहेब इण स्थान मे । दूष्ठ कोइ दूःख देय ॥ २ ॥ तत् क्षिण भीत उल्लंघने । आवी पडीयो मांय ॥ सोटों मारी मूकन्द ने। तत क्षिण दीयो गुडाय ॥ ३ ॥ अरर कर नीचे पडयो । गेंदु वेठो उपर॥ थपड मुकी लातथी । कुरदी करी भली पर ॥ ४ ॥ मूकुन्द उर धग को पड्यो । प्रगटयों कोइ देव ॥ शुध्द वुद्ध सहू भुली गयो । पाप तणा फल लेव ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ८ मी ॥ में तो म्हाके पीयर चाल्या ॥ यह ॥ लीलावती इम जो हर्पाइ । ए कूण आयो चलाइजी॥

इण वेला वृत प्राणं बचाय । सील सहाइजी ॥ भावियण सुणजोजी । पाप तणा फल क
डवा भाइ । कोइ मत लुणजोजीं ॥ स आं ॥ १ ॥ मूकून्द तणी तव दया आइ । रखे
मारे मरजाइजी॥ कहे सती भाइ छोडदोइणने ।दया लाइजी ॥ स ॥ २ ॥ इश्वरी हुकम
राखण कारण । तेहने छोडी दीधोजीः ॥ तत क्षिण पाय पड्यो आ सती ने । बोले इण
विधोजी ॥ स ॥ ३ ॥ माताजी यो गेंदू छूं मे । भेटी आणन्द पायो जी ॥ जो लीला-
वती घणी हर्षाइ । भलो भाइ आयो जी ॥ स ॥ ४ ॥ किम मुजने जाणी इण जागा ।
प्राण थें महरा बचायाजी । गेंदु कहे इहां बात करण को । अवसर नायाजी ॥ स ॥ ५
॥ पटेलनी पागडी खोलीने । मुसक्या ऊंधी बान्धी जी ॥ लटका दियो वाडाने वाहीर
। वृक्षनो फान्दी जी ॥ स ॥ ६ ॥ ततक्षिण तुंरी सज्ज कराइ ॥ सती उपर बेठाइ जी ॥
भरत पुर के मारग चाल्या । देरन कांइजी ॥ स ॥ ७ ॥ दिन ऊगा मुकन्दना सज्जन ।
घरमे तस नहीं जोइ जी ॥ ढूंड्यो ग्राम में पत्तो न पायो । मिल पुछ्याइ जी ॥ स ॥ ८
आया वाडा में तो नहीं पायो । रक्त पड्यो तिण ठायो जी ॥ मन माहे घणो वेम, भरा
यो वाहिर आयो जी ॥ स ॥ ९ ॥ वृक्ष शाखा ए लटकतो मुकन्द । एकनी द्रष्टी आ-
योजी ॥ हाक मारी सहूने वोलाय । तेह वतायो जी ॥ स ॥ १० ॥ दोडी आया जो

अश्चर्य पाय । बान्धीने कुण लटकाया जी ॥ खोलंतां गाठ खुले नहीं ॥ तोडी नीचे ठाया जी ॥ स ॥ ११ ॥ दंशन नहीं एक मुखमा रहीयो । मारथी अंग वन्ध गइयोजी ॥ घेसतथी शुद्ध किंचित नाहीं । वड२ रहीयो जी ॥ स ॥ १२ ॥ बावा भोपा वैद्या बुलाया । जोतषी जोगी आया जी ॥ निज२ का सहू मत प्रमाणे । दोष बतायाजी ॥ स ॥ १३ ॥ ❁ ॥ मनहर ॥ जोतषी ग्रह देखी । मेख मीन राख पेखी । अंगुली के वेडा गिणी । कू ग्रहो बतावेहै ॥ नाडी गृही वैद्य जोय । वायू शीत उष्नप होय । बावा जोगी डोरो बांधे । व्यंतर सतावे है ॥ फकीर तो जिन्द केवे । भोपो धुणीः आखा देवे । चन्डी मन्डी भेरु भूत । केइ संका लावे है ॥ सर्व धन केरी आस । सत्यासत्य करे प्राकस । अमोल ज्ञानी ढोंग देख । कथीन भरमावे हे ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ झाडा डोरा औषधी मंतर । बहुला करवा लागाजी ॥ भाग्य जोग तिण आंख उघाडी । पूर्व पुण्य जागा जी ॥ स ॥ १४ ॥ घरे उठाइ तिणने लाया । हिपाजत बहुती कीधी जी ॥ पाप तणा फल हाथो हाथ । भुक्ते इण त्रिधीजी ॥ स ॥ १५ ॥ घणा दिना में शुद्धी आइ । पण ऊठण नहीं पाइ जी ॥ गेंदू हाथका सोंठा खाया त । साले घणाइजी ॥ स ॥ १६ ॥ घणा मास सा हुवो सावध । पण नहीं छोडी अन्याइ जी ॥ अनंत काल से संगत पाप की ।

किम भूलाइ जी ॥ स ॥ १७ ॥ ज्ञानी जन ए वातसुणीने । पर स्त्री संग पर हरसी जी । ते दोनों लोके सुख भोगवी । जगो दधी तरसी जी ॥ स ॥ १८ ॥ धन्य २ सती लीलावती तांइ । संकट मे स्थिर रहाइ जी॥ गेंदू पण धन्य सेवक साचो । हुवो वक्के स. हाइ जी ॥ स ॥ १९ ॥ मुकंद तो इहा रहे सुख मां । सती गेंदू मग जावे जी ॥ मर्द गालण ए ढाल अमोलख । सहूने सुणावे जी ॥ स ॥ २० ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ सती तुरंग गेंदू पगे । भरत पुर मारग जाय ॥ तम गयो रवी प्रगट्यो । तव तस चित स्थिर थाय ॥ १ फिर कहे लीलावती । में तिण वाडामाय । किम जाणी गेंदू कहो । ते कही वीती तांय ॥ २ ॥ बजारथी आइ जोड्या।आप नहीं पाया मुज ॥ चौकस की घणी ग्राम में ।कोइ न दाख्यो गुज ॥ ३ ॥ परगाम थी जाणियो । पटेलकी कू चाल । इहां आयो निशी रह्यो । सुणी में आप पुकार ॥ ४ ॥ सेवा साधी शक्ती समी । ते सहु जाणो मांय ॥ भ-लो कियो भाइ विस थी । लीनी मुज बचाय ॥ ५ ॥ इम वातां करता थका । आया उदक आगार ॥ सुंखडी दोनो भोगवी । पीयो जल चित ठार ॥ ६ ॥ आगे जावण सज्ज हुवा । तेतले कर्म पसाय ॥ उपसर्ग अचिन्त उपजे । सुणो श्रोता चितलाय ॥ ७ ॥ ❁ ॥

गोचरी ॥ यह० ॥ देखो कपटीरे दुष्टी नी दुष्टता ।

कपटी चपटी मारे जी ॥ अयोग्य काम जी ते करता थका । मन संका नहीं धारेजी ॥
देखो ॥ १ ॥ तिण समय त्रिजय पुर नामे नगर थी । दुमुख नो मंत्री जेहो जी ॥ वि-
श्वासी बीजा आदमी साथले । जावे भरत पुर तेहो जी ॥ देखो ॥ २ ॥ अनुक्रमें
फिरता जी चौकस कारणें । किहां पतो नहीं पायो जी ॥ हार्या थाक्या
फिरीने चालीया । होणहारने सायोजी ॥ देखो ॥ ३ ॥ चलता फिरताजी आया
जलागरे । तुरी चडी लीलावती जोइजी ॥ हर्ष्यो कुरुदत्त ए कुण अप्पछरा । सुन्दर
अद्भूत होइजी ॥ देखो ॥ ४ ॥ निश्चय होसीरे यह लीलावती । चौकस कीजे जाइ जी ॥
जो निकले यह अपण ने चावती । तो सफली मेहनत थाइजी ॥ देखो ॥ ५ ॥ कहे सा-
थी थी उतावल मत करो । सहू जन चुपका रीजोजो ॥ चौकस करुं में कला करी इहां
। ते सहू देखी लीजे जी ॥ देखो ॥ ६ ॥ साथी कहे जी हम बोलां नहीं । तुम मन आवे
सो कीजेजी ॥ हम चाकर छांजी राज हूकम का । बुद्धी थी खबर करीजे जी ॥ देखो ॥
७ ॥ कूरुदत्त आयोजी तब सेरीता ढिगे । पूछे गेंदू थी तामोजी ॥ किहां थी आया जी
जावो किहां चली ॥ गेंदु उत्तर दे आमो जी ॥ देखो ॥ ८ ॥ कुलनाभें गाम थी हम
इहां आवीया । जयंती पुर जाणो जी ॥इण बाइरो पीयर छे तिहां । ले जाइ पहों चाणो

जी ॥ देखो ॥ ९ ॥ पुनः गेंदू कहे तुम छो किहां तणां । किसो गाम चल जावो जी । हमने पूछो छो कहो किण कारणे । एही भेद बखाणो जी ॥ देखो ॥ १० ॥ कपटी कुरुदत्त कहे भइ सुणो । भरत पुर थी हम आया जी ॥ रायजी भेज्या विजयपुर हम भणी । जिहां चन्द्रसेण राय जी ॥ देखो ॥ ११ ॥ भरतपुर नाम सुणी लीलावती । मनमें घणी हर्षाणी जी ॥ कुरुदत्त सामें जोवे मुलकती । बोले मधुरी वाणी जी ॥ देखो ॥ १२ ॥ भरतपुर थी आया भाइ तुम । जिहां सज्जन सेणराणा जी ॥ सुणी कुरुदत्त हर्ष्यो अति घणो । काम फते हुवा म्हाणाजीः ॥ देखो ॥ १३ ॥ हां बाइ साव सज्जन सेणजी । मूजने विजयपुर भेज्यो जी ॥ आप किम जाणो हम राजा भणी । ते कृपा कर कहज्यो जी ॥ देखो ॥ १४ ॥ लीलावती कहे तुम कुण तिहां तणा । ते कहे में फोज दारो जी ॥ म्हारे साथे ए माणस दइ । भेजीयो छे दरबारोजी ॥ देखो ॥ १५ ॥ बाइ तूहाराजी नाम फरमावीये । सती कहे तुम नहिं जाणो जी ॥ सज्जनसेणजी काका माहेरा सुणी कुरुदत्त हरखाणो ॥ देखो ॥ १६ ॥ कहे कुरुदत्त में तो ओलख्या । तूम लीलावती बाइजी ए दिशा देखी में मन चमकीयो । एकला किम रहाइ जी ॥ देखो ॥ १७ ॥ नेना श्रुत हो कहे लीलावती । कर्म गत खोटी आइजी ॥ विजयपुर पर धाड पडी फिरं । हम भा-

गी निकल्याइ जी ॥ देखो ॥ १८ ॥ पत्तो नहीं छे श्री महाराजरो । हमे भरत पुर जाता जी ॥ तुम मिल्या सन्मुख ए चोखो हूवो । तिहां तो को नहीं पाताजी ॥ देखो ॥ १९ ॥ आपण सहू संग चालां भर पुरे । हूवो मुजने आधारोजी ॥ गेंदू पण जाणो होसी सज्जना । कपट को कुण लहे पारोजी ॥ देखो ॥ २० ॥ सहु जन एकठा मिलिया हर्षथी । तीजा खन्ड नी दाखीजी ॥ ढाल विविधरस भरने ए कथा । अमोलख ऋषि भाखी जी ॥ देखो ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ कुरुदत्त हर्षी तदा । पकडी अश्वलगाम ॥ नेत्र आश्रू नितारतो । बोले करी प्रणाम ॥ १ ॥ अहो२ घणो खोटो हूवो । पडी विपत्ता आय ॥ होणहार होतव्र हुवे । चाले नहीं उपाय ॥ २ ॥ अब फिकर नहीं कीजीये । चलिये अपणे गाम ॥ तिहां तुम सुखथी रिजीये । काका काकी धाम ॥ ३ ॥ हुं रजा लेइ राज की । जास्यू चौकस काम ॥ चन्द्रसेण महाराजने । जोइ लास्यूं ठाम ॥ ४ ॥ दिवस रह्यो अब थोडलो । करणो किहां विश्राम ॥ एहतो वन विहामणो । चलिये कोइ गाम ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १० मी ॥ आउखो टूटाने सान्धो को नहींरे ॥ यह ॥ कुरुदत्त कहे लीलावती भणीरे । चलणो पेली कानी गामरे ॥ तिहां पहचान है आपणीरे । रात रहस्या तिण ठामरे ॥ देखो कपटी रणी कपट रे ॥ कपटीने दया न लगारे ॥ आं ॥ १ ॥ घोडाने तत-

क्षिण फ़ेरीयोंरे । विजयपूर भणी कियो मुखरे ॥ स्यान करी साथी दारनेरे । सत्र जणा पाया सुखरे ॥ देखो ॥ २ ॥ गेंदू कहे ऊंदा क्यों चलोरे । यो मार्ग विजयपुर जायरे ॥ भरतपुर तो इदर रह्योरे । तुमको खबरहै की नायरे ॥ देखो ॥ ३ ॥ कुरुदत्त केहेरे मूर्खा रे । तुजेन खबर नहीं कांयरे ॥ हमतो हमारे गाम चाली यारे । थने आणो होतो आयरे ॥ देखो ॥ ४ ॥ मुजने मूर्ख किणपर कहोरे । उदर भरत पुर नांयरे ॥ में बहू वक्त ए मार्गेरे । मानो जरा मुज वायरे ॥ देखो ॥ ५ ॥ कुरुदत्त तब कोपी कहेरे । वड २ किण कामरे ॥ हम तो इणही रस्ते जावसांरे । तुंजा धारे थारे गामरे ॥ देखो ॥ ६ ॥ गेंदू घबराइ तुरी कने गयोरे।दृढपकडी लगामरे ॥ अहो सिरकार मानो म्हारीरे । फेरे तुरंगने तामरे ॥ देखो ॥ ७ ॥ करुदत्त क्रोधातुर होइरे । धक्को देइ किदो दूररे ॥ साथी से कहे मारो इण भणीरे । यो करे घणी मगरूररे ॥ देखो ॥ ८ ॥ बाइ साहेब ने लेयनेरे । तुं किहां भागी जायरे ॥ हराम खोर तुं कौण हेरे । इम कहता मारण धायरे ॥ देखो ॥ ९ ॥ तब गेंदु चित चमकियोरे ॥ अरर हुवो खोटो कामरे ॥ विश्वास थी मार्या गयारे । दगो हुवो सही आमरे ॥ देखो ॥ १० ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ कपट विहुणा मानवी । केम पतीरया जाय ॥ गफ़ूर मुखे मधुरो लवे । सांप सपूछो खाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ यह छे शत्रू

तणा मानबीर । साथ हे बहुला लोकरे ॥ आपण तो रह्या एकलारे । करणो किस्यो इहां थोकरे ॥ देखो ॥ ११ ॥ पाछो तो पग नहीं देवणोरे । जिहांलग पिण्ड माहे जीवरे ॥ निमक हलाल इहां करूंरे । पाडूं शत्रु मांहे रींवरे ॥ देखो ॥ १२ ॥ सोंठो लेइने सामें थयोरे । देखां मारे भूज कोणरे ॥ तुम नारी कंकण चूरवारे । मोठा मुज । कर ए द्रोणरे ॥ देखो ॥ १३ ॥ इम दोनों लडवा लगारे । गेंदू एक ते अनेकरे ॥ मारी मस्तक में जोर थीरे । कुरुदत्त ने दियो गुडायरे ॥ देखो ॥ १४ ॥ सब उलटी पडया गेंदूपरे । मारी शिर ने मांयरे । रक्त धार छूटी तदारे । गेंदू पडयो मुरछायरे ॥ देखो ॥ १५ ॥ कुरुदत्त ने सावध कियोरे । शीतल करी उपचाररे ॥ ऊंठी कूरुदत्त क्रोधातुरोरे । जोसे करे यों ऊचाररे ॥ देखो ॥ १६ ॥ मारोरे मारो दुष्ट नेरे । साथी दार तस केहरे ॥ हम म्हारी नहाख्यो तेहनेरे । ते पडी मुरदानी देहरे ॥ देखो ॥ १७ ॥ कुरुदत्त खुशी हुवोरे । फेका दियो खेतमांयरे ॥ लीलावती इम देखनेरे । अतिही गइ घबरायेर ॥ देखो ॥ १८ ॥ बिल २ ती बोले जोर थीरे । फोजदार करो इम केमरे ॥ किम मार्यो मुज आदमीरे । ठेरो जरा करो क्षेमरे ॥ देखो ॥ १९ ॥ हुं सावध करुं तेहनेरे । तिण कियो मुजपे उपकाररे ॥ इम कही उतरण लगीरें । कुरुदत्त कहे ललकाररे ॥ देखो ॥ २० ॥ चुप चाप

बैठी रहेरे । इम कही अश्व चलायरे ॥ प्रांण रक्ष ए हुइरे । अमोल तीजा खन्ड मांयरे ॥ देखो ॥ २१ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ वयण सुणी कुरुदत्त का । चमकी सती मनमांहे ॥ नोकर होइ माहेरः । किम बोले कियो यह अन्याय ॥ १ ॥ पुछे आहो .फोजदारजी । बोले बचन विचार ॥ कहे स्युं हूं काका भणी । नोकर न्हाख्यो मुज मार ॥ २ ॥ कोपातुर कुरुदत्त भणे । कुण हेरी फोजदार ॥ चुप जाप बेठी रहे । नहीं तो होसी खुबार ॥ ३ ॥ लीलावती घबरा गइ । अरर हुइ ये घात ॥ नहीं नोकर काका तणा । शत्रू तणा देखात ॥ ४ ॥ कूवाथी निकली करी । पडी समुद्र में आय ॥ धिकर कर्मए म्हारा । किस्यों करों जिन राय ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ११मी ॥ जय जिन राया २ । जय सत्गुरूजी धर्म व ताया ॥ यह ॥ जोवो २ भाइ जोवोर भाइ । कपटी कैसी करी कपटाइ ॥ आं ॥ रुदंती सती चिन्ते मन माइ । आगे आपणी गत कैसी थाइ ॥ जोवो ॥ १ ॥ एक आसरो थो तेभी बिरलाइ । हे अर्हत अव सरण थाराइ ॥ जोवो २ ॥ कूरुदत्त तब साथी ने चेताइ । छोडी रस्ता ऊवट चालो मेरे भाइ ॥ जोवो ॥ ३ ॥ रखे कोइ चौकस करे आइ । पत्तो आपणो लाग्यां दुःख थाइ ॥ जोवो ॥ ४ ॥ सहू जन रस्तो छोड चाल्याइ । सती मनने तमजाइ ॥ जो ॥ ५ ॥ होणहार सो चूके नहीं । वक्तपर कोइ होसी सहाइ ॥ जो ॥ ६

अश्चर्य धर पूछे तिग तांइ ॥ तुम कुण मुजने ले जावो किण ठाइ ॥ जो ॥ ७ ॥ कुरु-
दत्त तब खरी चेताइ । कंखरथराय ना हम छां सिपाइ ॥ जो ॥ ८ ॥ सोंपसा विजय पुर
लजाइ । ते तुमने पटराणी वणाइ ॥ जो ॥ ९ ॥ सुख भोंगवजो तिहां नित्य वाइ ॥
सुण सती रोमाचित थाइ ॥ जो ॥ १० ॥ चिन्तें मुखणी में हाथे फसाइ ॥ गेंदू दीथी
वात पहिलां फिराइ ॥ जो ॥ ११ ॥ जिनका दुःख थी में घर छोड्याइ । ते दुःख म्हारे
आगे दोड्याइ ॥ जो ॥ १२ ॥ कुरुदत्त थी कहे अति नर माइ । अहो म्हारी दया जरा
करो भाइ ॥ जो ॥ १३ ॥ में तुमारो विगाड्यो कुछ नाहीं । क्यों फसावो गरीब गाइ
तांइ ॥ जो ॥ १४ ॥ कृपा कर छोडी दो इहांइ । एकली रहस्यूं जंगल मांइ ॥ जो ॥
१५ ॥ कुरुदत्त बोले जोस भराइ । हमतो नहीं छोडांगा कदाइ ॥ जो ॥ १६ ॥ पुनः पग
पडे सती करे नरमाइ । अहो शिरदार करो इत्ती कृपाइ ॥ जो ॥ १७ ॥ कहे कुरुदत्त
क्यों वड२ लगाइ । नहींछोडा२ क्रोड उपाइ ॥ जो ॥ १८ ॥ साथी ने कहे अश्व चालो
दोडाइ । जरा दूरा चल काढांगा राइ ॥ जो ॥ १९ ॥ इम चलतां ग्राम खेडो आइ ।
फूटा धर्म शाल थी वारांइ ॥ जो ॥ २० ॥ उतारिया सहु जन तब त्यांइ । कुरुदत्त वि-
छोना कर पोडयाइ ॥ जो ॥ २१ ॥ मार्ग थाक ऊपर मार खाइ । तेहथी ज्यर अंग

गयो भराइ ॥ जो ॥ २२ ॥ लीलावती बैठी एकांत जाइ । दुःखियाने किम आवे निद्राइ ॥ जो ॥ २३ ॥ पहिली तो पुरी गइ थी कष्टाइ । गेंदू वियोग तस घणा साल्याइ ॥ जो ॥ २४ ॥ रोवणो उमटी छाती भराइ । कुरुदत्त डरथी लेवे दबाइ ॥ जो ॥ २५ ॥ इण दुष्टांरे पाने पडी आइ । रखे सील मुज भांगे कदाइ ॥ जो ॥ २६ ॥ सूती चमकी वार२ जागी थाइ । इम लीलावती निशी खुटाइ ॥ जो ॥ २७ ॥ आगे गेंदू की सुणो कथाइ । ढाल ११ की अमोलख गाइ ॥ जो ॥ २८ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ रजनी शतिल व्यापी तदा । इन्दूप्रभा रण वाय ॥ गेंदू पडयो थो खेतमे । लागी तस तन आय ॥ १ ॥ शीतल थी शान्ती हुइ । चैतन्यता तव आय ॥ हुइ बैठो चउदिश जुवे । विचार करे मन मांय ॥ २ ॥ विश्वास घात करी पापीये । राणी जी भोलप जोग ॥ दुःखीया तो दोनों भया । पडयो अचिन्त्य विजोग ॥ ३ ॥ हिवे इहां सुस्तावण तणो । अपणे अवसर नाय ॥ पतो लगे राणी जीरो । जोवू हिवणा जाय ॥ ४ ॥ भेप बदलने चालीयो । जोतो ग्रामानु ग्राम ॥ एह कथा मत भूलजो । हिवे लीलावती काम ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १२ मी ॥ सुमती सदा दिलमें धरो ॥ यह ॥ दिन कर जब प्रकट भयो । कुरुदत्त हुवा होंश्यार ॥ श्रोता॥ ज्वर जोग चालण तणी । तनमें शक्ति नांय ॥ श्रोता ॥ कर्म तणी गती सांभलो ॥ कर्म

जबर संसार ॥ श्रों ॥ आं ॥ १ ॥ लीलावती का केकाण पे । कुरुदत्त ने बैठाय ॥ श्रो ॥ अश्व चलायो वेगथी । सतीने पगे चलाय ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ २ ॥ कंकर कांटा पग चुने । चालतां पग अथडाय ॥ श्रो ॥ ठोकर लगे रक्त नीकले । किण थी कह्यो नहीं जाय ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ ३ ॥ मेहल गलिचा छोडने । चलण काम पड्यो नाय ॥ श्रो ॥ उवराणे पग चालणो । शिघ्र तुरी लरांय ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ ४ ॥ चल२ जलदी चाल तूं । उपर सिपाइ को ताप ॥ श्रो ॥ थाकी घणी इम चालतां । उपर थी पटे ताप ॥ श्रो ॥ ५ ॥ स्वेदे तंतू भींजींया । खुरती गइ कुमलाय ॥ श्रो ॥ श्वाग्न उरे मावे नहीं । अतिही गइ घबराय ॥ श्रो ॥ ६ ॥ पांव ऊठे नहीं जरा भरी । बैठ गइ तिण ठाय ॥ श्रो ॥ पांव पडी भणे सहू भणी । भाइ मुज थी न चलाय ॥ होभाइ ॥ क ॥ ७ ॥ एक पांव भरवी तणी । मुज में शक्ति नांय ॥ होभाइ ॥ कृपा करी मुज छोडीये ॥ रोइ कहे विल विलाय ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ ८ ॥ कहे भट नखरा क्यों करे । सीधी२ चाल हो ॥ वाइ ॥ मोटा पणो इहां नहीं चले । पाछे२ धीरे हाल हो ॥ वाइ ॥ कर्म ॥ ९ ॥ कुरुदत्त कहे यों बोलो मती । यह है अनि सुकुमाल हो ॥ भाइ ॥ मै पण हैरान हुवो घणो । कांइ करणो भर फाल हो ॥ भा ॥ क ॥ १० ॥ यो सामे मंदर केहनो। इणमे ही करो मुकाम

हो ॥ भा ॥ मुजेने साता हुवां थकां । काल जास्यां निज गाम हो ॥ भाइ ॥ कर्म ॥
११ ॥ फूटा देवालय त्रिषे । रह्या सहु जन आय हो ॥ श्रो ॥ कम्बल ओडी कुरुदत्त
पड्यो । सती बैठी एकान्त जाय हो ॥ श्रो ॥ क ॥ १२ ॥ पेट पूरण ने कारणे। चन्द्रा
न नी करी तैयार हो ॥ श्रो ॥ दैर्धा मसाला घृत पुरी । कांही न लागी वार ॥ श्रो ॥
क ॥ १३ ॥ गुढा थं दुहा ॥ हस्तना पुर से ऊपनी । चन्द्र तणे अनुहार ॥ अग्नि सेजा
पोडती । उपर दे प्रहार ॥ १ ॥ क्षिण२ सोवे क्षिण ऊठे । ले निद्रा न लगार ॥ तेतले
भोगी आवीया । गहणा लाया चार ॥ २ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ लीलावती ने कारणे । थाल
करी तैयार हो ॥ श्रो ॥ घृते पुरी वाफला । व्यंजनादी संस्कार ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ १४ ॥
शीतोदक छाणी करी । लोटो भर दियो तास हो॥ श्रो ॥ लीलावती जीमण लगी । पण
गले नहीं उतरे ग्रास हो॥ श्रो ॥ क ॥ १५ ॥ गांठ गले हूइ उष्णथी ।थाक्या दुःखे शरीर
हो॥ श्रो ॥ थोडो खायो वड जोरी थी ।ऊपर पीयो नीर हो॥ श्रो॥ क ॥१६॥ पेट भरी
सहु जीमीया । मिल बैठा एक ठाम हो ॥ श्रो ॥ चिलम तम्बाखु फूकतां । करता बात
हुवा काम हो॥ श्रो ॥ क ॥ १७ ॥ ❀ ॥ इन्द्र जिन ॥ नाचत कुदत ताल बजावत। खु-
शी होतहे सब कामन्ना ॥ दोडत पोडत मोडत तोडत । लावे कमाइ परदेश से धन्ना ॥

राय शाह बादस्याह पैगम्बर हुकम उठावत बडे २ रन्ना ॥ ख्याल रसाल पसंद करे जब अमोल पडे पेटमे अन्ना ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ लीलावती सती एकली । आगली करती फिकर ॥ श्रो ॥ अब कांइ होसी माहेरो। सुणती तेहनी जिकर ॥ श्रो ॥ क ॥ १८ ॥ सन्ध्या समय बच्यो अहारजे । सहू मिलीगया खाय ॥ श्रो ॥ सती की मनवार करी घणी । पण तिण खायो नाय ॥ श्रो ॥ क ॥ २० ॥ बिस्तर बिछाड सूइ रह्या । रात गइ एक जाम ॥ श्रो ॥ तिहां थी थोडा अंतर परे । होनो छोटो सो ग्राम ॥ श्रो ॥ क ॥ १२ ॥ न्टत्या राग तिहां सांभल्यो। कुरुदत्त निद्रामें जोय ॥श्रो ॥ बीजा जन कहे चालीये । तमासो अच्छो होय ॥ श्रो ॥ क ॥ २२ ॥ हिवणा देखी आवस्यां सहू गया तब चाल ॥ श्रो ॥ अमोल कहे मावथ सती । ए हुइ रंगी ढाल ॥ श्रो ॥ कर्म ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ सती सुती बात तेहनी । सुणी सर्व देइ कान ॥ सहु जन गया जान ने । तरिक्ष णहुइ सावधान ॥ १ ॥ ऊठी चउ तरफ जोडयो । कोइ न देवलसांय ॥ कुरुदत्त पण निद्रा वशो रह्यो अछे घुरराय ॥ २ ॥ तब मन में सा चिन्तवे । एसो न मिलसी दाव ॥ दुप करथी बचाव तणो । करु हिव उपाव ॥ ३ ॥ इहां रह्य थीम्हारा सील को होसी विना श ॥ संगत तजिया एहनी । पूरसे जिन देव आस ॥ ४ ॥ जीव जावे तो डरनहीं । नहीं

जावां देवू सील ॥ अल्प काल को दुःखये । काटी पामस्यू लील ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इन्द्र वि-
जय ॥ राज जावो सब काज जावो । समाज जावो तोहि नहीं डरुंरी ॥ दुःख सहु अरु
भूख सहु । तन दहु ज्वाला में धरुंरी ॥ जीव दमू सब रीव खमू । शितोष्ने रमू भय
नाय धरुंरी ॥ अमोल अतोल यह समय लही । कभी शील को खंडन नाहीं करुंरी ॥ १
॥ ❀ ॥ इम चिन्ति त्रिछोणा तणो । गोटो दीर्घा कार ॥ करी दुसालो औढात्रीयो ।
जाणे सूती नार ॥ ६ ॥ पंच प्रमेष्टी स्मरकरा साहस मन में धार ॥ पिछले रस्ते नीकली
। चाली उजड मझार ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ १३ मी ॥ गाय २ घाटां रह्या ॥ यह ॥
बन में राणीजी चालीया । कांइ कोइ नहीं तेहनी लार ॥ कर्म गति वांकडी ॥ आं ॥
तम छायो दीसे नही कांइ । रस्ता को सुझ्मार ॥ कर्म ॥ १ ॥ पांच सात पगला भरी ।
पुनः पाछी फिरने जोय ॥ कर्म ॥ रखे पाछल ते दुष्टिया कोइ । पकडण आया होय ॥ क-
र्म ॥ २ ॥ पवन जोग तरु पत्र को । कांइ शब्दज तिहां थाय ॥ कर्म ॥ धस्की छिपे द्रुम
आसेर । कोइक आयो दिखाय ॥ कर्म ॥ ३ ॥ सुकुमाल पग मांखण समाने । पहरण न
हीं पग पोषे ॥ कर्म ॥ कांटां गोखरु कांकरा । कांइ लाग्या उड जाय होंस ॥ कर्म ॥ ४॥
मोटा २ पत्थर तणी कांइ पग में लागे ठेस ॥ कर्म ॥ लांप जो चारा माहली ते । अंग

में जावे पेल । ॥ कर्म ॥ ५ ॥ पग पडे वोर जाली विपे । नव थर २ धूजे अंग ॥ कर्म
माटा वृक्ष शिला थकी । कांइ शरीर करे कथी जंग ॥ कर्म ॥ ६ ॥ पहरण वस्त्र झीणा
घणा ! घांचाथी फाटा तेह ॥ कर्म ॥ शीतल प्रचन्ड पवनथी । तिहां थर २ कम्पे देह
॥ कर्म ॥ ७ ॥ स्वपत्र के हा वन वासिया । सती नेडा होइ जाय ॥ कर्म॥ सिंघ चिना
सियालिया । गिरि द्वरा रह्या गुंजाय ॥ कर्म ॥ ८ ॥ शब्द भयंकर तहना । सुणी हृदय
जाय थर राय ॥ कर्म ॥ पग पडे खड्डा विपे ते लचकावे मोचाय ॥ कर्म ॥ ९ ॥ भय प-
श्चात है मन में । तेहथीं न ले विश्राम ॥ कर्म ॥ झाडी सघन अति घणी । तहथी न शि
घ्र चलाय ॥ कर्म ॥ १० ॥ अंबर लीरा उतर्या ने । चीरा पड्या शरीर ॥ कर्म ॥ तीन
जामें हूवा भागतां । पण हीयो धरे नहीं धीर ॥ कर्म ॥ ११ ॥ प्रकाशी भानू प्रगट्यो ।
पेखयो पहाड उतंग ॥ आवू गिरि औपधी भर्यो । काइ भय हुवो तव भंग ॥ कर्म ॥१२
॥ धैर्य आइ मन में । थाकज लग्यो ते वार ॥ कर्म ॥ वट वृक्ष पुष्करणी । सिला पट म-
नुहार ॥ कर्म ॥ १३ ॥ विश्रामो सती लियो । कांइ दुःखे छे सघलो अंग ॥ कर्म ॥ वन
देख विहामणो । तस चित थयो तव भंग ॥ कर्म ॥ १४ ॥ कर कपोल धर बेठीछे । कां
इ । द्रष्टी भूमिये ठाय ॥ कर्म ॥ चिन्ता केइ चित उपजे । कांइ आर्त रही छे ध्याय ॥

कर्म ॥ १५ ॥ योतो वन बिहामणो । अब रहणो किण घर जाय ॥ कर्म ॥ क्षुधा पण लागी अछे इहां करणो कांइ उपाय ॥ कर्म ॥ १६ ॥ किहा राज सुख महारा ने । किहा प्राणेश्वर होय ॥ कर्म ॥ निराधार रही एकली । अब आगे किस्योक जोय ॥ कर्म ॥ १७ ॥ पवन शरीर ने लागता । कांइ सूजी गया तमाम ॥ कर्म ॥ चीरा पड्या झग२ करे । अग्निनी परे जाम ॥ कर्म ॥ १८ ॥ नश२ बान्धा गइ । ने रग२ पडी छे गांठ ॥ कर्म ॥ जन्म भर में एहवो कांइ । दुःख नो नही सीखी पाठ ॥ कर्म ॥ १९ ॥ क्षिण रोवे क्षिण जोवती ने । क्षिण सोवे क्षिण बठ ॥ कर्म ॥ इण पर लीलावती वने । कांइ सह कर्म अखेट ॥ कर्म ॥ २० ॥ शील सहाइ सती तणे । तेहथी सहायक मिले इहां आय ॥कर्म॥ क्रिया ढाल खन्ड तीसरे । कांइ ऋषि अमोलख गाय ॥ कर्म ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ कुरुदत्त का साथी सहू । जोइ ख्याल खुशाल ॥ एक जाम निशी रह्यर । तेहि अस्थान आय चाल ॥ १ झोका खाता नींद में । पडिया दिशो दिश तेह ॥ भानु उदय नहीं जागिया । कुरुदत्त जागी केह ॥ २ ॥ बोलाया बोले नहीं । तव लीलावती ने जगाय ॥ तेहि पण उठी नहीं । तब तस हाथ लगाय ॥ ३ ॥ लीलावती कर ना लगी । तव ते गयो धस्काय ॥ लात मारी साथी भणी । घबरी सहु ने उठाय ॥ ४ ॥ दोडी जोइ चउपखे ।

पत्ता न लागयो लगार ॥ पस्ताइ सहू चालीया । जोवण सती ते वार ॥ ५ ॥ ७ ॥ढाल ॥ १४ मी ॥ असाड भूती अणगार ॥ यह० ॥ ऊजड वन के मांय । वट वक्ष की छांय ॥ कर्म वश ॥ लीलावती रही एकलीजी ॥कपोल हाथ लगाय । वात केइ याद आन ॥ कर्म वश ॥आर्त आवे वली २ जी ॥ १ ॥तिण अवसर ने मांय । वृद्ध वाइ चलाय ॥ कर्म ॥ सती तिण ने देख लीजी ॥ दुर्बल तेहनी काय। एक करे काठी साय ॥ कर्म ॥ धीरपे आवे ते एकलीजी ॥ २ ॥चांदी वरणा केश । वट पडिया छे विशेष ॥ कर्म ॥ भाले कंकू लगावीयो जी ॥ सल पडिया छे कपोल । ऑख्या उंडी खोल ॥ कर्म ॥ तिक्षण घ्राण वाली ठवीयोजी ॥ ३ ॥ गलमा तेहने पोत । लडा लटके बहूत ॥ कर्म ॥ राढा मणी चूडी कर विषेजी ॥ कमर थोडीसी वांक । ताम्र कुंभ तस खांक ॥ कर्म ॥ सूर्त सुहामणी दीखेजी ॥ ४ ॥ भारती तेहनो नाम । देव धर तेहनो श्धाम ॥ कर्म ॥ विजयपुर छोडी रेवताजी॥ वारी लेवण काम । आवी रही ते वामै ॥ कर्म ॥ पुष्करणीपे चित देवताजी ॥ ५ ॥ ज लागरें कने आय । सन्मुख द्रष्ट लगाय ॥ कर्म ॥ आश्चर्य धर उभीरहीजी ॥ देखे मेखा नमेख ।मन में चिन्ते विशेख ॥ कर्म॥ ए कुण बैठी इहां सहीजी ॥६ ॥ जलदेवी वनदेवि होय । इन्द्रकी अपछरा कोय ॥ कर्म ॥ के विद्या धरणी खरीजी ॥ सूरती अति मनोहर

। गहणा मोल अपार ॥ कर्म ॥ वस्त्रकी शोभा सिरीजी ॥ ७ ॥ क्यों बेठी इण अस्थान । उदास मुख को वाम ॥ कर्म ॥ किस्यो दुःख छे ए मनेजी ॥ साहस धारी मन । पूछ-ण भणी ततक्षिण ॥ कर्म ॥ डोकरी आइ सती कनेजी ॥ ८ ॥ मिष्ट वयण कहे एम । वाइ छे तुमने क्षेम ॥ कर्म ॥ किहां रहणो छे तुम तणोजी ॥ इहां आया किण काम । कौन तुमारा श्वाम ॥ कर्म ॥ दुःख दीसे तुम मन घणोजी ॥ ९ ॥ लीलावती सुण वात। दूःखथी छाती भर आत ॥ कर्म ॥ बोलन मुख से नीसरेजी ॥ श्वास न मावे उर माय । रोवण लगी चिल्लाय ॥ कर्म ॥ दुःखी दुःख किम विसरेजी । ॥ १० ॥ डासी दुःखणी थाय । बेठी पास तस आय । क ॥ बोले अंतःस दया धरीजी ॥ रोयां से कांइ होय । वन मां सांभलें कोय ॥ कर्म ॥ बोल मुजथी दुःख किसरीजी ॥ ११ ॥ इम सुण सती धर धीर । कहे नेण पूंछे चीर ॥ कर्म ॥ अहो माताजी सांभलोजी ॥ मुज सम दुःखणी न कोय । किंचित आधार न होय ॥ कर्म ॥ दुर्भागणी में थांभलो जी ॥ १२ ॥ जन्म तां आइ हुंती मोत । तोक्यों दुःखणी होत ॥ कर्म ॥ तिर्यंचणी जो हुइ हुंतीजी ॥ बोलतां छाती भराय । मनकी नाही कहवाय ॥ कर्म ॥ टपकर आश्रू चूतीजी ॥ १३ ॥ वस्त्रे मुख ढाक । गोडे गरदन न्हांख ॥ क ॥ ठसकर रोवण लगीजी । बुढी कहे धर हाथ ।

चालो महारी संगात ॥ कर्म ॥ नेडी झोंपडी इहां जगीजी ॥ १४ ॥ रहो हमारे घेर । अ
व मत कर बाइ देर ॥ क ॥ जाणो बेगी मुज भणीजी ॥ नहीं पुछो गुप्त बात । जो तूं
कहणी न चहात ॥ कर्म ॥ तूं पुत्री छे हम तणीजी ॥ १५ ॥ राखस्यूं जीवन प्राण । हु-
कम करी प्रमाण ॥ कर्म ॥ और कहो किसी कहुंजी ॥ जो बच्च ने नहला फेर । तो सोग न
खाया केइ पेर ॥ कर्म ॥ हम कैसा ते जाणसी सहुजी ॥ १६ ॥ लीलावती सुणी वचन
। खुशी हुवो तस मन ॥ शील सहाइ ॥ जाणी धर्मात्म डोकरीजी ॥ धृल्हिका भर लियो
नीर । सती संग ली धीर ॥ शील सहाइ ॥ आइ तबही झोंपडीजी ॥ १७ ॥ देव घर ते
वार । पूंछे हर्षी अपार ॥ शील ॥ ए बाइ किहांथी लावीयाजी ॥ भारती कहे लज्जा कर
। में गइथी जल आगर । शील ॥ तिहां ए बाइ पावीयाजी ॥ १८ ॥ दुःखी देखी इण
तांय । लाइ छूं पुत्री बणाय ॥ शील॥ अभय बचन देइ करीजी॥डोसो तनुजा तस जाण
।आदर दीयो प्रेम आण॥शील॥एतुज घर जाणोस्वरीजी॥१९॥लीलावतीने आइ धीर।देखी
तिणरी पीर॥शील॥रहे सुखे तिणही कनेजी॥मिल्या तीनो गुणवंत।प्रिति जमी अत्यंत॥ शील॥ स
ती निज बीतक भनेजी॥२०॥ते पण कहे सुण धीय।हमारी बीती तीय॥कर्म॥मुज पुत्र बहूर्था
तुज समीजी ॥ कंखरथ दुष्ट राय । राखी तेहने भरमाय ॥कर्म॥ पुत्र ने कैदे दियो दमी

जी ॥ २१ ॥ घर वार लूटीलीध । हमने कहाडी दीध ॥ कर्म ॥ आइने इहां रह्या जी ॥ थारो हुयो आधार । मत कर कोइ विचार ॥ चरित्र केइ डोसे कह्या जी ॥ २२ ॥ इम बडा २ पर पड्या दुःख । पुनः ते पाया सुख ॥शील ॥ तिम तुज दुःख विरला वसी जी ॥ इम धर्म कथा में मन रमाय । सती सुखे काल वीताय ॥ शील ॥ तीनो रहे भला भाव थी जी ॥ २३ ॥ जे शील में द्रढ रेह । तेतो सुख सदा लेह ॥ शील ॥ कर्म कदापि दुःख लहेजी ॥ थोडा काल के मांय । सुख यश घणोइ पाय ॥ शील ॥ सत्य जाणो ऋषि कहेजी ॥ २४ ॥ एथयो तीजो हुल्लास ॥ अमोल कियो प्रकास ॥ शील ॥ धन्य२ सती लीलावतीं भणीजी ॥ जोग जुगतथी रसाल । हूइये पुर्वकी ढाल ॥ शील सहाइ ॥ शील तणी महिमा घणीजी ॥ २५ ॥ ❁ ॥ खन्ड सारांस- हरी गीतछन्द ॥ लीलावती राणी । गुण खाणि ।सती सिरोमण जाणिये ॥ संकट समय आत्मा बश कर । शील राख्यो शाणीये ॥ मूकुन्द मंद मति मंद। तेहना फन्द मा जे नही फसी ॥ कुरुदत्त करी कुमत देवल छत्त थी तेखसी ॥ १ ॥ गेंदू हजुर्या गुणवंत । ले सहायंत आगे आवसे ॥ वक्ता प्रकासे श्रोता हूल्लासे चरित्र चितमा लावसे ॥ तीजों भाग मनोहर राग श्रूती सार अमोसख ऋषि कहे । गावे गवावे सुणे सुणावे । ते नित्य मंगल लहे ॥ २ ॥ ❁ ❁ ❁

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्म चारी मुनीं श्री अमोलख ऋषिजी महाराज रचित. चन्द्रसेण लीलावती चरित्रका लीलावती प्रबन्ध नामक तृतीय खन्ड समाप्तम् ॥ ३ ॥

॥ दुहा ॥ जगपत आदि अर्हंत जी । सिद्ध साधु गुण वंत ॥ केवली भाषित धर्मको । सरण लहुं मन खंत ॥ १ ॥ ज्ञान दर्शन चारित तप ॥ शिव सुखका दातार ॥ चउ सं_घ को सरण लही । चउ खन्ड करुं उच्चार ॥ २ ॥ जादव वंश उज्वाली यो ॥ श्य स सुन्दरा कार ॥ पशू दया ले राजुल तजी । प्रणमु नेम कुंवार ॥ ३ ॥ विचित्र रस विचित्र कथा । हैइन खन्ड के मांय ॥ आदि अन्त साम चन्द्र को । चरित्र इणमें कथाय ॥ ४ ॥ स्वामी भक्ति कारणे । कैसो संकट सेय ॥ बुद्धिवन्त निर्लोभिता । चिन्तित सुख तेह लेय ॥ ५ ॥ ❁ ॥ श्लोक मन्दा क्रान्त ॥ पर स्त्रि मातेव क्वचिदपि नलोभ पर धनं । न मर्यादा भा क्षणमपि न नीचेषु पिरति ॥ रिपौश्चर्य धिय विपदि विनयस्य पदिसिता । दिन त्वं तर्ज्ञात भरत नियतां यस्यं सि सदान् ॥ १ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ विजपुर गुस स्थान में । चन्द्रसेण कामान्विश ॥ तीनों सल्ला विर्धा करी । पूर्ण करण जगीश ॥ ६ ॥ सोन्न

चन्द्र प्रधानजी । प्रदेशी भेष बणाय ॥ चन्द्र नृपपनें ढूंढवा । निकल्या विदेश मांय ॥७ ॥ ते बुद्धि बले मार्गे । न्याय कियो लीयो यशः ॥ आग संकट सेहीने । मिल्या नृप चन्द्र श ॥ ८ ॥ चन्द्र नृप लीलावती तणी । आवसी मध्ये बात ॥ प्रमाद तज श्रोता सुणो । जिम रस भर हर्ष आत ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ढाल १ ली ॥ इण सरवरियारी पाल ॥ यह० ॥ सोमचन्द्र प्रधान प्रदेशी वेशथी ॥ हो सुजाण ॥ प्रदेशी वेशथी ॥ चाल्या विजय पुर छोड मिलण नरेशथी ॥ हो सुजाण ॥ मिलण नरेशथी ॥ आस पासने ग्राममें चौकसीकीधी घणी ॥ होसु ॥ चौकस ॥ पण नही पाइ सुध । नृप राणी तणीं ॥ होसु० ॥ नृप ॥ १ ॥ इम ढूंढता जाय । मही मन्ड ऊपरे ॥ होसु० ॥ मही ॥ मोटा २ मुकाम । करत आगे संचरे ॥ हेसु ॥ कर ॥ मालव मनोहर देश । आयो इम चालतां ॥ हो ॥आयो ॥ पदस्थान पुर नयर । नयण निहाल ता ॥ होसु ॥ नयण॥२ ॥ गढमढ महेल बजार । निहाल्या चिन्ता शमे ॥होसु ॥ निहा ॥ योगी सोगी भोगी मन । आइ तिहां रमे ॥ होसु ॥ आइ ॥ हरी श्री नामे वाग ग्राम ने पाखती ॥ होसु ॥ ग्राम ॥ राजेश्वर को तह

*अर्थ–पर स्त्री को माता जाने, किंचित ही लोभ नही कर, मर्यादा का उल्लघन नहीं करे क्षिणेक भी नीच का सग नही करे वैरीयों के स्थान शूरत्व धारे,-विनय वंत, गरीबी से रहै, सा नर पूर्ण यशवत होवे.

जेहनी शोभा अती ॥ होसु ॥ जेह ॥ ३ ॥ तिण वगिचा माहे । भवन सिरे पेखीयो ॥
होसु ॥ भव ॥ साता कारी स्थान । सचीवे जीदेखी यो ॥ होसु सचीव ॥ विश्रामों तिहां
लेया । आहार जल भोगी या॥होसु ॥ अहा ॥ करी विछोना शयन । तिहां सुखथी किया
॥होसु ॥ तिहां ॥ ४ ॥ तस पुरना शिरदार । प्रताप सेण जाणिये ॥ होसु० ॥ प्रता ॥
न्याय निति गुण धाम । प्रजा तात मानिये ॥ होसु ॥ प्रजा ॥ अश्व फेरण ने काज ।
ग्राम बाहिर आवीया ॥ होसु ॥ ग्राम ॥ हवा खावण ने बाग । तेही चित चावी या ॥
होसु० ॥ तेही ॥ ५ ॥ फिरता उध्यान ने माय । सदन पर द्रष्टी गइ ॥ होसु० ॥ सद
॥ सोम चन्द्र ने देख । आश्चर्य अतिलइ ॥ होसु ॥ आ ॥ शिघ्रथी मिलवा काम । सन्मुख
चल आवता ॥ हो ॥ सन्मु ॥ सचिवजी तस देख । अति हर्षावता ॥ होसु ॥ अति ॥
६ ॥ ऊठ धाया सन्मुख ।लुली नमन कियो ॥होसु० ॥ लुली० ॥ राजेश्वर मधु वयण ।
घणो आदर दियो ॥ होसु० ॥ घणो ॥ आवेठ्या बंगला माय । पूछे राजे श्वरु ॥होसू ॥
पूछे ॥ दीवानजी एकला आप । किम हुवे देशे फरु ॥ होसू ॥ किम ॥७॥ कहो विजय
पुर ना हाल । नृपाल चन्द्र हे सुखी ॥ होसु ॥ नृप ॥ इम सुणी विलखाय । हृदय हुवो
दुःखी ॥ हों सू ॥ हृद ॥ दुःखी देखी तस राय । वात छोडी दइ ॥ होसु ॥ वात ॥८॥

किम उतर्या इहां आय । छोडि घर आपणो ॥ होसु ॥ छोडि ॥ चालो रावला मांय ।
न करो दूजा पणो ॥ होसु ॥ न । मंत्री हुवा लार । राय हुकम दियो ॥ होसु ॥ राय॥
सचिव को सराजाम । भट रथ में ठयो ॥ होसु ॥ सचि ॥ ९ ॥ गजा रूढ दोनो होय ।
मध्य बजारथी ॥ होसु ॥ मध्य ॥ आया महेल मांय । सहू परिवारथी ॥ होसु ॥ सहु ॥
भोजन भक्ति करी । राय प्रधानकी ॥ होसु ॥ राय ॥ सुख शैया बैठा आय । वात पुछे
आनकी ॥ होसु ॥ वात ॥ १० ॥ हम साहूजी चन्द्रमहाराज । सपरिवार है सुखी । हो
सु ॥ सप ॥ प्रधान कहे नहीं भाग्य । सुखी हुं कहुं सुखी ॥ हो सू ॥ सुखी ॥ इम सुणी
बचन । नृप विस्मय भया ॥होसु॥नृप॥ कोणछे जग समर्थ । चन्द्र ने दूःखी किया ॥ होसु
॥ चन्द्र ॥ ११ ॥ सचीव कहे कर्म गत॥विचिल महारायजी॥ होसु॥विचि॥ दगा बाज से
राज। पार कुण पायजी ॥ होसु ॥ पार ॥ कन्कपुर को कंग्व रथ । धाडेती आवीयो ॥ हो
सु० धाडें ॥सन्ध्या समय अचिन्त्य । ग्राम में भरावीयो ॥ योसु॥ग्राम ॥ १२ ॥ एक दम
करी धाम धूम । शैन्या सहू तेहनी ॥ होसु ॥ तव गया राणी राय । खबर नहीं जेहनी
॥ होसू ॥ खबर ॥ खबर करण ने तास । हूं प्रदेश चालीयो ॥ होसू ॥ हूं ॥ शत्रू ताबे
भयो राज । ते हम मन सालीयो ॥ होसू ॥ ते हम ॥ १३ ॥ प्रताप सेण सुण वात ।

मने सुरजाविया ॥ होसु० ॥ दुष्ट कन्करथ राय तेहना दाव फावीया ॥ होसु ॥ तेह ॥ एकदा चन्द्र महाराय को पत्तो लगावीये ॥ होसु ॥ पत्तो ॥ फिर हम सहु मिल एक । के शत्रू भगावीये ॥ होसु० ॥ शत्रू ॥ १४ ॥ इम केइ करता बात । निशा व्यापी गइ ॥ होसु ॥ निशा ॥ सूता सुखे निज२ स्थान । सुख शैया मही ॥ होसु ॥ चतुर्थ हुलास की ढाल श्वाती तारा तणी ॥ होसु ॥ श्वाती ॥ अमोल ऋषि कहे आगे । पारिक्षा बुद्धि की भणी । होसु ॥ परि ॥ १५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ तिणही राते तिण पुर विषे । आयो कोइक न्याय ॥ राज पुरुषों चोकस करी । मूल हाथ नहीं आय ॥ १ ॥ वादी अने प्रति वादी को । ग्रही भट लेजाय ॥ आया राज शभा विषे । पसरी बात ग्राम मांय ॥ २ ॥ सहश्रा गम परजा तदा । आइ शभामें भराया ॥ देखां न्याय किण पर हुवे । प्रकटे तस्कर मायं ॥ ३ ॥ नृप प्रधान जागृत हुइ । शुची करी नित्य नेम ॥ भोजन आदि निव्रत हुवा । हुवो कचेरी टेम ॥ ४ ॥ सोम चंदने साथ ले । आया शभा मां राया । सिंहासणे बैठा भूपती । मंत्री मंत्री ने ठाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ जी ॥ सुणो। चंदःजी । श्री मंदिर परमात्मा पासे जाव जो ॥ यह ॥ सुणो श्रोता हो । न्याव करण की रीत प्रधान तणी इहां ॥ बुद्ध भारी हो । सोमचंद समान और कहो है किहां ॥ आं

॥ नृप प्रधान बेठा आइ । सहु शभा चुपकी थाइ । तिहांका प्रधान ते बेलांइ । अरजी करे ऊभा थाइ ॥ सुणो ॥ १ ॥ आज न्याय अचंभ तणो । कलोल पुर कशावो सुहामणो । कामेती न्याइ तिहां तणो । पण नीवेडो न हुवो एह तणो ॥ सुणो ॥ २ ॥ तिण थी भेजा इण ठामे । साक्षी दार कोइ नहीं थामे । स्त्री कर्यो असंभव कामे । ते सुणो राजेश्वर आमे ॥ सुणो ॥ ३ ॥ विद्युमति श्री मति बाइ । मृत्युक तनुजे लेकर आइ । नृप कहै बुलावो तिण तांइ । दोनों सन्मुख आ ऊभी रहाइ ॥ सुणो ॥ ४ ॥ विद्युमति इण विध बोले । मुज शोकण आ शत्रू तोले । मे गइथी बाहिर कामोले । ते पीछे आइ मुज घर खोले ॥ सुणो नृपतजी । न्याय इण झगडा को साहेबजी कीजिये ॥ अहो मही पत जी । सत्य असत्य तणो खुलासो दीजीये ॥ आं ॥ ५ ॥ मुज पुत्र सूतो थो पालणां मांही । इण आइ ने लीयो उठाइ । गले नख देइ मार्यो तिण तांइ । रोवा लागी खोलामां सुवाइ ॥ सुणो ॥ ६ ॥ या ना कहे हिव न्यावज्ञ कीजे । इण दुष्टण ने शिक्षा दीजे । गरीबनी की दया लीजे । वादण को बोलणो एहीज ॥ सुणो ॥ ७ ॥ श्रीमति कहे सोगन खाइ । में इसो काम कीनो नांइ । विन कारण कलङ्क मुज शिर ठाइ । में निराधार गरीब गाइ ॥ सुणो ॥ ८ ॥ मुज इज्जत की रक्षा कीजे । इण वात ने पुरी विचा-

रीजे । कर जोडी कहुं मुज तन छीजे । प्रनि वाडग बोले सत्य मानीजे ॥ सुणो ॥ ९ ॥
इम कही दोनों चुपकी रहाही । शभा जन न्यायपर चित ठाइ । सोम चन्द ऊभा थाइ ।
बोल्या नृपतसे कर नरमाइ ॥ सुणो ॥ १० ॥ महाराजा तस्दी नहीं लीजे । यह हुकम
म्हारे उपर कीजे । न्याय करण की रजादीजे । नहीं होवेतो आप सुधारीजे ॥ सुणो ॥
११ ॥ भूधव कहे खुशी थाइ । शभाजन मान दो यां तांइ । यह सुज्ञ घणा चतुर न्याइ
। न्याय नीवेडो करसी ह्याइ ॥ सुणो ॥ १२ ॥ सोमचंद दोनोंने बोलावे । दोनो त्रिया
ऊभी रहावे । विचारी मंत्री फरमावे । सोगन इष्ट ना दीरावे ॥ सुणो शभाजन हो ॥
न्याय ॥ १३ ॥ जो कभी बोलसो खोटो । तो साजना में पडसी टोटो । सीपाइ नो खा
सो सोंटो । आयुष्य नहीं फिरहै सोटो ॥ सुणो ॥ १४ ॥ फिर पूछो विद्युमति तांइ । ते
बोली सोगन खाइ । इण मार्या मुज बालक तांइ । झूट होवे तो करो जे इच्छाइ ॥ सुणो
मंत्रीजी ॥ न्याय ॥ १५ ॥ कहे मंत्री थें मारतां देख्यो । विद्युमति कहे नहीं पेख्यो । मं
त्री कहे तब इम किम लेख्यो । नारी कहे नख की गले रेखा ॥ सुणो ॥ १६ ॥ फिर
प्रधान इण पर को । इणरो नाम तुं क्यों लेवे । दूसरी मार्यो यों भाप देवे । झूटो आल
शिर क्यों ठेवे ॥ सुणो ॥ १७ ॥ विद्युमति कहे महाराजा । में बाहिर गइ पाणी काजा ।

सुणो ॥ १८ ॥ इम सुण प्रति
आइ देखो घर माजा । इण सिवाय न कर्यो अकाजा ॥ ते कहे नीची द्रष्टी ठाइ । सुणो सत्य होवो मु-
वादण बोलाइ । साची बोल इहां बाइ । म्हारो पुत्र है मन मनावु ।नित्य
ज सहाइ ॥ सुणो॥१९ ॥ अहो निश इणरे घर में जावुं । कल फजर गइ इण
खोले लेइ रमावूं । नहीं देखुं कभी तो दुःख पावूं ॥ सुणो ॥ २० ॥ पुत्र तन पर नहीं देखी
घर आडी । माहें गइ द्वार ऊघाडी । इण ने में हाकज पाडी । काया शीतल लागी तांइ । तब शं-
साडी ॥ सुणो ॥ २१ ॥ ढांकण ने लिण पास गइ । तन अति भें घबराइ । खो-
का मुज मन लइ । नाक हवा न निकलइ ॥ सुणो ॥ २२ ॥ गाल्या दवण लागी मुज तांइ॥ सुणो
ले रोवणो लगाइ । ते तले ले पाणी ए आइ । जे जाणीजैसी सुणाइ।किंचित झूट इणमें नांइ । कलङ्क
॥ २३ ॥ पीछे की में जाणुं नांइ । शुभा सुणी अचंभी रही । पूर्वा तारा की ढाल कही
उतारो कृपा लाइ ॥ सुणो ॥ २४ ॥ अमोल कहे आगे सुणो जही॥सुणो ॥ २५ ॥ ॥ दुहा ॥
। सचीवजी बुद्धि अधिक सही। पर घर स्त्रीने जावनो । जुक्तो
सोम चंद कहे श्री मती भनी । तू क्यों गइ तस धाम ॥ इसी संका मुज उप
नहीं बिन काम ॥ १ ॥ सुना घरमा जायने । थेंइ कियो अन्याय ॥ तागो मत एक पक्ष ॥ में
जे । बोल सच्च अब चाय ॥ २ ॥ ते घावरी कहे मंत्री जी ।

कारण कहूं ते सुणी । न्याव करो हो दक्ष ॥ ३ ॥मुज पति फरजन्द कारणे । मुज अग्रह
पारथा एह ॥ क्लेशी स्वभाव हे इण तणो । तेहथी जुदी रहूं मेह ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इन्द्र
बीजय ॥ सुखकोधार बरीदो नार । हुइ कलेह कार । देवे दुःख भारी ॥ खावण पेरण
सोवण जोवण । रोवणो न मिटे निश दीह मझारी ॥ रीसाय भगजाय घुरकाय दबाय ।
गालयों दिराय सुणे झकमारी ॥ इज्जत जाय पीछे पस्ताय । अमोल समजाय मत परण
दो नारी॥१॥❀॥ढाल॥पति प्रदेश सिधावता॥अग्रह कर करी चेताय॥ नित्य प्यारो पुत्र सं-
भालजे । तिण नित्य जावूं म्हाराय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ३ री ॥ यारस सेलडी ॥ यह ॥
अहो शाणा सुणजो । बुद्धो सोम मंत्री तणी ॥ आं ॥ दोनो भामनी से कहे मंत्री ।
मुज कह्यो करो प्रणाम ॥ तेहीने हू साची जाणू । कहे विद्युमती ताणा हो ॥ अहो ॥
॥ १ ॥ जो कहो सो अभी करूं म । साच के नहीं आँच ॥ पुत्र को बदला मुजने दि-
रावो । पूरी करिने जाच हो ॥ अहो ॥ २ ॥ श्रीमती से मंत्री बोले । करसी में कहूं ते
ह ॥ करजोडी कहे पहिला भाखो । कारण स्त्री मेह हो ॥ अहो ॥ ३ ॥ योग्य काम हु
वो तो करसूं ॥ अयोग नहीं कराय ॥ सोम मंत्री भाखे तब सुणजो । शिरकार यों फर-
माय ॥ अहो ॥ ४ ॥ वस्त्र तजी ने होवो दिगम्बर । होइ मध्य बजार ॥ हीरी श्री उद्या-

न यक्ष के । पग विच निकालो लार हो ॥ अहो ॥ ५ ॥ विद्युमति उतावली तास्क्षिण । वस्त्र दिया उतार ॥ श्री मनी कहे मुज से न होवे । हिवणा न्हाखो मार हो ॥ अहो ॥ ॥ ६ ॥ सोम सचीव खुश हो कहे नृप मे । न्याय हुवो महाराज ॥ श्रीमति नारी निर्दो-षी । विद्युमाति गुन्हेगार हो ॥ अहो ॥ ७ ॥ लज्ज भूषण हे सहुजन को । भामनी केतो अधिक ॥ मरणो धार्यो नहीं छोडी लज्जा । या नारी हुइ समिक्ष हो ॥ अहो ॥ ८ ॥ अश्चर्य मुझ ने साहेब मोटो । सगी मा मारे बाल । कारण कांइ जरूरज होणो । कैसी करीये निकाल हो ॥ अहो ॥ ९ ॥ शभा माहे स्यू एक पुरुष तब । ऊभो हुवो तत्काल । गरजी कहे ध्यान २ मंत्रीश्वर । कियो साचो न्याय एकताल हो ॥ अहो ॥ १० ॥ मंत्री कहे ते तुम किम जाण्यो । ते कहे सुणो महाराय ॥ मैं छूं इणरेघर पाडोसी । जाणू वात विगताय हो ॥ अहो ॥ ११ ॥ परस्यूं विद्युमति घर बाहिर । सूतो हूं निशी मझार । सवा योम यमनी व्यति क्रम्या ।आयो कोइ क जार हो ॥ अहो ॥ १२ ॥ थापदार लगाइ ए आइ । लीनो तात्क्षिण माड ॥ भूली द्वार ढकन गये मांहे । काम क्रिडा लगाइ हो ॥ अहो ॥ १३ ॥ दीप प्रकाशे हूं सहू जोवूं। बालक रोवा लाग्यो ॥ भोगमें अंतराय हूंती जोई क्रोधानल यस्य जाग्यो हो ॥ अहो ॥ १४॥ जार अग्रह थी वडरती आ। अरो त-

स धवाइ । पटकी पालणे गइ सेजापर । कोंभे व्याकुल थाइ हो ॥ अहो ॥ १५ ॥ पुनः ते बच्चो रोवा लाग्यो।पुनः जार इणने कहाडी।।धसमसतीआ तेने धवाइ।तस गइ तवही ताडी हो ॥ अहो ॥ १६ ॥ तीजी वार ते रोवा लाग्यो । तवए असूरत्त थाइ ॥ विप अन्धी मार्यो पुत्र ने । गले नख लगाइ हो ॥ अहो ॥ १७ ॥ यह हकीगत निजरा देखी । तैसी मैं दरसाइ ॥ धन्य २ इम कहूं प्रधान ने ॥ न्याय कियो राम साइ हो ॥ अहो ॥ १८ ॥ सहु शभा सुण अश्चर्य पाइ । विद्युमति ने धिक्कारी ॥ न्हाखी कैदमें श्रीमती.ने । पहोंचाइ घर सत्कारी हो ॥ अहो ॥ १९ ॥ देखी तित्र बुद्धि मंत्री की । नृपादि सहु हर्षाया । सुखे रहे मंत्रीश्वर इहां । पयठाण पुर आया हो ॥ अहो ॥ २० ॥ यह कथा तो रही इहां ही । हिवे विजयपुर की कहाइ ॥ अभिचतारां तणी ढाल ये ॥ ऋषि अमोलिक गाइ हो ॥ अहो ॥ २१ ॥ ❀ । दुहा ॥ एक दिन विजयपुर नगर में । करी दरवार तैयार ॥ कंखरथ ने दुःमुख जी बैठा सहु परिवार ॥ १ ॥ हर्षित हृदय नृप कहे । सांभलो सघला लोक ॥ दुमुखजी जी बुद्धि थकी । मिल्या वांछित थोक ॥ २ ॥ वकसीस लक्खी पौं शाकको । दी मंत्रीने राय । शभा सहु वहावा करे । दुमुख माने अकडाय ॥ ३ ॥ कहे हम चाकर राज का । करां ते थाडो हाथ ॥ लायकी जाणे आपसा । मुज सम है जग

कोय ॥ ४ ॥ गाजे वाजे मंत्रीने । दिघा धरे पहों चाय ॥ माने चडियो दुमुख्यो । करण लग्यो अन्याय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ४ थी ॥ मानव जन्म२ । रत्न तेने पायोरे ॥ यह । सुनो भाइ२ दुमुखकी अन्याइरे । करे खोटी कलाइ ॥ सुना ॥ आं ॥ राज मंत्री लम्पट दोनों । तस शिर अंकुश नहीं कोनोरे ॥ मदान्ध ते थाइ । सुणी रुडी लुगाइ । तस पकड़ मंगाइ ॥ सुनो ॥ १ ॥ इम जाणी चन्द्रसेण के कामेती । सुख सेन लक्ष्मी घर चेतीरे । सहू आपणी नारी ॥ दी पीयर पुगारी । दोनो रह्या तिहांरी ॥ सुनो ॥ २ ॥ एह समा चार दुमुख जाणी । मन माहे रीस आणीरे । चिन्ते मन माहीं । दोनो दुशमन तांइ । देवूं कैद कराइ ॥ सुनो ॥ ३ ॥ राजा पासे राते आया । सत्कारी कने बैठायाजी ॥ पूछे नृपाला । लीलावती का हवालो । कहो पाइ न हालो ॥ सुनो ॥ ४ ॥ दुमुख कहे तब उदास होइ । सुभट आया सहु जोइजी । तस पत्तो न पावे । सुण राय घबराय । नि-श्वास न्हखावे ॥ सुनो ॥ ५ ॥ में जाण्यो थे लाधा होसो । मुजने दियो थो भरोसो जी ॥ तिण सुन्दरी काजे । किया सहु इलाजे । पण मिलीन आजे ॥ सुनो ॥ ६ ॥ तेह बिना सहू संरत सूनी । लाय लागी दिल दूनीजी ॥ प्रधान तब भाखे । तुम भाव राणी पाखे । मुज पग दुःख दाखे ॥ सुनो ॥ ७ ॥ नृप धैर्य राखो मन मांइ । हूं लासू

पत्तो लगाइजी ॥ धाणी भूख भगासुं । वचन सत्य जणासुं । ज्यादा किस्यो कहुं थांसुं ॥ सुनो ॥ ८ ॥ पण एक पहली वंदो वरत कीजे । शत्रू से निडर नहीं रीजे जो । चन्द्रसेण का सिरदारो।दोनों ग्राम मझारो।ते छे होंशारो॥सुनो॥९॥जो लीलावती ग्राममें आसी।ते खवर ते पीसा जी । कैरसां को उपचारा । तेहने कैदमे डारा । फिर फिकर न लगारो ॥ सु ॥ १० ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ हस्ती अंकुश मारेण । केस हस्तेन वाजीना ॥ श्रृंगणा दंड हस्तेन । खड्ग हस्तेन दुर्जना ॥ १ ॥ ❀ ॥ इम छुछ कारि दुमुख लगाइ । रजा लेइ निज घर जाइजी । दूजो दिन ऊग्यो ज्यारे । करी शभा तैयारे । नृप मंत्री बेठारे ॥ सु ॥ ११ ॥ पुछे राजा जाणो तो बतावो । कोइ वैरी रह्यो इण ठावो जी । तब मंत्री दरशावे । दोजन इहां रहावे । कौश शैन्य धीशावे ॥ सु ॥ १२ ॥ हाड वैरी ते अपना कहीजे । छुट्टान तस छोडीजे जी ॥ नृप भट्ठ पठावे । दोनो पकडी मंगावे । भट घस मस जावे ॥ सु ॥ १३ ॥ अरी भट सुख सेण आता जोइ । सम ज्यों मतलब सोइ जी ॥ अंगिया की कस तोडी । निज भट भेजो होडी । दों भंडारि ने छोडी ॥ सु ॥ १४ ॥ भन्डारी कस देखी भेद पाया । खसीने शिघ्र सिधाया जी ॥ ज्यों हाथे नहीं आवे । नारी पीयर जावे । तिहां सुखे रहावे ॥ सु ॥ १५ ॥ सुखसेन ने भट पकड ले जावे । कंखरथ सामे

लावेजी ॥ कैदे तस डाल्या । दुःख मन तस साल्यां । फस्या अवसर पाल्या ॥ सु ॥ १६ ॥ जिन भुंवारामे कैद तस डाल्या । तिहां द्वार शैन्या पति भाल्याजी ॥ सुरंग तस जाणीं । मन हर्ष भराणी । निकल्या शैन्याणी ॥ सु ॥ १७ ॥ दुरा जाइ रात सराय में रहाइ । गेंदू चल तिहां आइजी । तम राह्ये छवाइ । पैचान न थाइ । सुखसेन बोलाइ ॥ सु ॥ १८ ॥ तुम कौन किहां थी इहां आया । तव गेंदू दरशाया जी ॥ में गरीब महाराजा । फिरुं पेटके काजा । इहां आयो छूं आजा ॥ सु ॥ १९ ॥ वचन सेंदो लग्यो तिण तांइ । कहें गेंदू सरीखा जणाइजी । ते पण ढिग आइ । शैन्या पति ओलख्याइ । दुःख उमटी आयाइ ॥ सु ॥ २० ॥ रोवंतो गेंदू ने राखीं । पूछे राणी राजा किहां दाखीजी॥ते कहे तेवारे । राणीजी था मुज लारे । भरतपुर जांतारे ॥ सु ॥ २१ ॥ कुल म्राने कपटे फन्दे फस्याइ । तिहांथी महाराःणी छोडाई जी ॥ त्यांथी आगे जा तांइ । मिल्या शत्रू ना सीपाइ । तिण करी कपटाइ ॥ सु ॥ २२ ॥ भरतपुर का बण्या राणी भरमाया । पाछे ते प्रगटाया ची ॥ में झगडा लगाया । पण घणा ते रहाया । मुजे मार गिराया ॥ सु ॥ २३ ॥ लेगया वि॰यपूर राणी जीतांइ। शीत थी सावध हुं थाइजी॥हिंवणा आयो चलाइ । आप मिल्या सुख थाइ । आप किहांथी आयाइ ॥ सु ॥ २४ ॥ सूख सेण वीती बात

सुणाइ । सुखे सुतः दोनों तिण ठाइ जी । अनुराधा ताराई । ढाल अमोल गाइ । आगे सुणो चित लाइ ॥ सुणो ॥ २५ ॥ ० ॥ दुहा ॥ प्रात थयां जाग्रत थया । गेंदू शैन्या पति जाम ॥ चिन्ते राणी सहाय ने । चलो विजयपुर गाम ॥ १ ॥ जो मिले ते मार्गमे विषे । तो लेस्या राणी हाथ ॥ मगदूर नहीं छे नहनी । जो अपणे सामें थात॥ २ ॥ जो पहोंचा होसी शहर में । तो पण करस्यां उपाय ॥ उद्यम थी कार्य हुवे । सुस्ती नो अवसर नाथ ॥ ३ ॥ सज हुवा चालण भणी । थयो भानू प्रकाश ॥ ततले तिहां खुणा विषे । पत्र पड्यो देखाय ॥ ४ ॥ शैन्या यती लेइ वांचीयो । अर्थ नहीं समझाय ॥ दुसरी दा वांचण लग्या । दीर्घ द्रष्टी फेलाय ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ५ मी ॥ श्रीजिन आया हो ।

विजय पुरमें कुसुम का प्रणाम कुशल कुन्दनकी

सोरठ देश मझार ॥ आं ॥ शत्रुंजय पुरथीहो द्रिवानन कर प्रणाम । कुशल चांवलदाता

लीलावती में लोभाया मेरा मन फिर हा पकड़ ने को प्रीत

तणी । इन शोभावे हे । लोभावे मेरा मन । वायु गत ग्रह वा भणी ॥ १ ॥ खपी-

गये दहोत दिन आशा पूरी नहीं शोक से दुबला

या वहुलाहो । जे जगत प्रकाश । आस फास तूटी नहीं ॥ दुजी नार थी हो । अर्धथयो

हुवा मुज शरीर पानी अन्न नहीं भावे यहुतक मन्त गमावो जलदी लादेवो

मुज तन । जविन अन्न रुस्या सही ॥ २ ॥ दीर्घ न वीतावो हो । पानी दिदो लाय

र तको यहां आना मेहल पछि के रस्तेसे प्रवश करो कोइ न जाने ज्यो योदिन धन्य गिनूगा
थाय चक्षुहीन वालमे ॥ रहीस पीठे हो । पेसो अलक्ष अन्य । धन्य होस्यु ते ताल में
वं खरथ ने सी.पाद भेजेहै मैने उनको दक्षिण मे भेजेहै. यो न मिले एसा
॥ ३ ॥ काक्षा वाहन हो । रक्षक हुवा प्रयाण । यम दिग मे पठावी या ॥ छांयन पडेहो
पसी हैं शागी रस्यना इस सिक्षासे होगा चिंतीत शरीरको बचना शीत ताप से
। एह राखो दक्ष ताय । सासन होवे फावीया ॥ ४ ॥ गेह बचाजो हो । जाडा ताता थी
तुमारा दया मया रखना उत्तर देना एसाही गुप्त तुमारे हमारे बिच
तुम । धर्म मूल सदा राख जो ॥ दाहिण दिगनेहो ।सन्मुख देजो इण पेर । तुम हम विच
भगवान है.
हरि साखजो ॥ ५ ॥ पत्र पठन्ता हो। ।जिमर अर्थ समजाय । तिमर क्रोध व्याप्यो घणो
॥ मूढने चाने हो । अरुण नेत्र तत्र होय । वरण पलट्यो मुखड़ा तणो ॥ ६ ॥ पूछे गेंदु
हो । किस्यो लिरयो इण मांय । किम जोस तुम तन व्यापीयो ॥ इम सुण वाणी
हो । शैन्या पति ते वार । नेत्र नीर वर्षावी यो ॥ ७ ॥ अहो२ म्हारी हो । शक्ति हुइ
निकाम । जाणी आम चुपको रहु ॥ मुज मालिकनी हो । ले कोइ पत्नी नो नाम । त-
त्क्षिण यम दाढे दहुं ॥ ८ ॥ किम करुं गेंदू हो । नहीं अबी बलको है काम। समता धरी
कल कीजिये ॥ दुष्ट लम्पटी हो । रच्या कैसा उपाय । लाय उठे छे एह वांचता ॥ ९ ॥

राजा मंत्री हो । दोनो लम्पटी यह ॥ धाडो डाल्यो इण कारणे ॥ दुमुख दागीलो हो रचे खोटे परपंच । राणीजी अंग धारणे ॥ १० ॥ गइ राणीजी हो । निश्चय विजय पुर सांय । चालो तिहांइ ढील न कीजिये ॥ आज कालज में हो । पहोंचा तिहा राणी साहब । अपण पण खबर लीजिये ॥ ११ ॥ जो मिले मांगे हो । तो होवे रूडोजी काम । छोडावा सती भणी । गेंदू भाखे हो । ते नो नर घणा श्याम । तिहांसी चाले आपणी ॥ १२ ॥ सुख सेण के वे हो । सांभल शाणा मित । होय जिहा सो जाणी ये ॥ ❀ ॥ दो नयइन्द्र विजय ॥ दोनो कर मिले ताली बाजती । दो पग से चहावे वहां जावे ॥ दो नयनों से सब जग देखत । एक नेत्र को कानो कहवावे ॥ स्त्री पुरुष मिले वंश चलावत । निशी वासर मिल वर्षादी थावे ॥ एकको टेक रहे नहीं कवहु । अमोल होय जहां मोवल आवे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ रूप दोनो में होय होवे तो घणो जोर । चूंर कूं सम्पीनिल घाणी में ॥ १६ ॥ हिम्मत राखो हो । कार्य उद्यमथी हो होय । मंजार उद्यमे पय चाखीया ॥ इस धर हिम्मत हो । दोनो शूर तत्काल । विजय पुर मग पग न्हाखीया ॥ १४ ॥ चउ दिन पेखन हो । आया विजय पुर पास । ग्राम बाहिर देवालय रह्याया ॥ १४ ॥ प्रच्छन रहवा हो । दोनो रूप पलटाय । शिष्य गुरू जोगी भया ॥ १५ ॥ ऊन आटी

नी हो । मोटी जटा बणाय । गिर शिखर जो शिरे ठवी । सिंदुर टीको हो । रुद्राक्ष माल गलाविषेते शोभवी॥१६॥लंगोट कसीयो हो नंग उतंग वदन । भूणी भकाइ मुख आगले ॥ भभुत रमाइ हो । मोटो चिमटो भर पास । गांजा चिलम श्रय स्नांग ले ॥ १७॥ भिक्षा ने मिसे हो । वक्त वे वक्त ने मांय । खपर ले गेंदू जागइ ॥ गली २ घर २ हो । अलख जगाइ ने जोग । राज महल मांइ आवइ ॥ १८ ॥ इम फिरता हो । न लागी खबर लगार । चिन्ता करे दोनो तदा ॥ फोडो भोग्यो हो । राज घराणा को कोग । तेह थी कार्य होय मदा ॥ १९ ॥ इण उपाये होग । गेंदु ने सिखाय । जाय नित्य राज द्वार ते ॥ भुणी जगावे हो । लगावे ललकार । करामात करे केइ जहार ते ॥ २० ॥ एतो बातज हो । भाइ रही इण ठाय ॥भुलजो मतीअमोलख कहे॥ढाल रोहणी हां । तोरा रां रुथा ए होग । आगे चन्द्र सेणकी सुख लहे ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ तिण काले ते अनसरे । कनकपुर मझार ॥ चन्द्र नृप कारा गृह । करे काल प्रसार ॥ १ ॥ चिन्ते नित गं एकदा । जे शत्रु थी भाग्गो डर ॥ तेह तणा राजज विषे । वण्यां केन्दी कर्म कर ॥ २ ॥ जिहां लगन ओलगे । तिहां लग छुटको होय ॥ तो कार्य करी सकु । नहीं तो सगा नहीं कोय ॥ ३ ॥ अहो कर्म विचित्रता ॥ राजा को हुवो चोर ॥ सुवर्ण स्थान लोहो प-

ड्यो । दुगंधी ए ठोर ॥ ४ ॥ तुच्छ अन्न निरव्यन्जने । भु शय्या शोक रमण । निर्बल
ता अति क्षिन वदन । करते ऐम समण ॥ ५ ॥ ❀ ॥ढाल ६ ठी ॥ पास जिनेश्वररे स्वा
मी ॥ यह ॥ शाणा सुणजो हो चित लाइ ॥ चन्द्र नृपनी हकीगत भाइ ॥ आं ॥ पुर्व
संचित पुण्य संजोग । मिले हैं अशुभ माहे शुभ जोग ॥ शाणा ॥ १ ॥ कारा गृह पर
एक सिपाही । पहरो देवे टैम पर आइ ॥ ते तो हूंतोजी गुण ग्राहीं । पण कर्मे ए नोक
री पाइ ॥ शाणा ॥ २ ॥ दयालु मयालु ने मिलापु । दुःखिया ने शक्ति ये सुख आपू ॥
ल तो सांभलज केदीयों केरी । पर सुख देखी ने मन हर्षेरी ॥ शाणा ॥ ३ ॥ एकदा रा
तीये पहरा पर होतो । कैदी भणी चउ पाख जोतो ॥ सर्व वंदी जनरे सूता । चन्द्र सेण
जागता हुंता । शाणा ॥ ४ ॥ ते शिघ्र आयोजी नृप पासे । मिष्ट गिराथी इम प्रकासे ॥
तुम जागोछो हजू भाइ । तुम ने निद्रा क्यों नहीं आइ ॥ शाणा ॥ ५ ॥ चन्द्र सेण भा
खे हो सुण शाणा । नहीं चिन्ता ते नींद घोराणा ॥ दुजो काम म्हारो छे कांइ । आवे
निद्रा तो लेवूं भाइ ॥ शा ॥ ६ ॥ भट तव भाखे हो सुणो भाइ । तुम मन ऐसी चि-
न्ता कांइ । जेहथी निद्रा गइ छे रीसाइ ॥ सुख चहावो तो देवो सुणाइ ॥ शाणा ॥ ७॥
मही धर चिन्ते हो मन माही । आपण शत्रू राज के मांइ ॥ रखे सच कहता हो दुःख

थाइ।इम चिंतीकहे क्या कहुं भाइ॥ शाणा ॥ ११ ॥ भट भाखरे मत छिपावो । किंचित डर म्हारो मत लावो ॥ अन्य दूत जैसो मुज मत जानो । मुज जाती को बाह्मण मानो ॥ शाणा ॥ १२ ॥ म्हारा गुण मुज मुख कहवा । ये तो युक्त नहें सुख देवा ॥ तुमे दुःखी देखी मुज लागे । तेहथी पूछु छूं तुम आगे ॥ शाणा ॥ १३ ॥ तूम बोली गुण देखी मै जाणा । छो कोइक थे मोटा राणा ॥ तुम वीतक सुणी शाक्ति सारू । करस्यू तुम दुःख ने हूं निवारु ॥ १४ ॥ ❁ ॥ इन्द्र विजय ॥ ताराकी जोत में चन्द्र छिपे नही । सूर्य छिपे नहीं बादल छाया ॥ रण चड्यो राजपुत छिपे नही । प्रिती की रीति छिपे न छिपाथां ॥ चंचल नारी का नेण छिपे नहीं । दाता छिपे नही मंगत आया ॥ कवी गंग कहे सुन शाह अकबर । कर्म छिपे नहीं भभूत लगाया ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ चन्द्र सेण केवे हो सुणो भाइ । या अश्चर्य कथां थां सुणाइ ॥ कारा ग्रह का होजे सिपाइ ॥ तेहने हृदय दया किम रहाइ ॥ शाणा ॥ १५ ॥ बोले विप्र ए साची भाखी । जैसे देखी तैसी दाखी ॥ पण मुज भणी न अजू पहचान्यो । तेहथी कहुं चारित्र म्हानो ॥ शाणा॥ १६ ॥कंख रथ राजजी का बाप॥मुज तात ने दीजागीरी आप॥मुज बाप मूवां याते खोसी॥ हुं मुज तन नही सकीयो पोषी ॥ शाणा ॥१७॥ तुरंग पति के म्हारी प्रीती । तिण मुज दीनो

करी एती ॥ वर्सू हिरण मासकी आवे । खातां वस्त्र थी उगरावे ॥ शा ॥ १८ ॥ आंध लूला पंगु प्राणी । तेने देवू हुं हित आणी ॥ वृद्ध वय दूजो न सूजे कांइ । तेहथी आयु खुटावू छांड ॥ शा ॥ १९ ॥ एह मुज विरतंत तुमने सुनायो । कहो थाने जो होवे इच्छायो ॥ ढाल अरुंधा नाराकी कहीये । अमोल चन्द्र नृप आगे सुख लहीये ॥ शा ॥ २० ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ अवनी पत चित चिन्तवे । ए भद्रिक प्रणाम । इणने दुःख दर्शावतां । होसी अपणो काम ॥ १ ॥ ततले विचुद्ध बोलीयो । मुज मन दुःख अपार ॥ शिघ्र कहो वीतक कथा । संशय चित निवार ॥ २ ॥ थांरे म्हारे बीचमें । साक्षी श्री भगवान ॥ किंचित कपट जो में करुं । तो पडूं नर्क के स्थान ॥ ३ ॥ ओर नहीं वश म्हारो । कहो जो इच्छा होय ॥ निश्चय भयो म्हार मने । तुम नृपत छो कोय ॥ ४ ॥ अत्यन्त्य अग्रह जाणने । कहे नृप चन्द्रसेण ॥ सुण भाइ म्हारी कथा । सुखियो कर मिला सेण ॥ ५ ॥ ❀ ॥ढाल७ मी॥सतगुरु निर्वाणी२॥यह०॥सुनो भाइ कर्म कहानी कर्म कहानी चन्द्रसेण राजानी ॥ शा ॥ आं ॥ चन्द्रसेण मुज नाम कहीजे । विजय पुरी रहवानी ॥ दुष्ट कंखरथ करी चडाइ । लूंटी नगरी म्हानी ॥ सुनो ॥ १ ॥ गत समय अचानक आइ । चोर तणी मती ठानी ॥ राज स्वजन छोड मे निकल्यो । दगाथी हुयो हेरानी ॥ सु ॥ २ ॥ रन बन अट

वी में जा पडिचो । खाया फल पीयो पानी ॥ इहां तण भट पकडी लाया । चोरज मुजने जानी ॥ सु ॥ ३ ॥ विप्र भट तव पग लागी कहे । क्षमीयो मुज नादानी । विन पहचाने दुःख मे दीना । बोल्यो कम जवानी ॥ सु ॥ ४ ॥ अब कांइ फिकर करो मत । मिलसी संपत पुरानी ॥ यह बुद्धि आप अच्छी बापरी । राखी बात छिपानी ॥ सुनो ॥ ५ ॥ होण हार होती जो हुइ ॥ न चिन्तो बात गुजरानी ॥ उभय पीद कीजो मुज लामे । बेडी तोडूं थानी ॥ सुनो ॥ ६ ॥ बाहिर निकल सीधा पधारो । रहजो मा इन ठिकानी ॥ पाछी संपत पावो श्वामी । सार कीजो तव म्हानी ॥ सुनो ॥ ७ ॥ धराधव कहे बात विचारो । वेडी काट्या म्हानी । किल्ला पतीने मालम पडिया । कुन्दी करसी थानी ॥ सु ॥ ८ ॥ कहे ब्राह्मण फिकर न कीजे । यहां पोल तणी राज ध्यानी ॥ गजराज सा गडक होजावे तो । थारी कांइ चलानी ॥ सु ॥ ९ ॥ म्हारी फिकर न करो जराभर।पग झट करो मुज कानी ॥ चन्द्र नृप पग लम्बा कीना । शस्त्र ला शिघ्रानी ॥ सु ॥ १० ॥ वेडी तोडी बाहिर कहाडया । द्वार लग पहोंचानी ॥ वक्त याद करीजो श्वामी । कह आ बैठ्यो ठिकानी ॥ सु ॥ ११ ॥ गुप्त मार्ग अन्धार में भमता । आया गाम बारानी ॥ सीधाइ ते वनमें चाल्या । मग न दिखे नजरानी ॥ सु ॥ १२ ॥ विषम झाडी में आ पडीया । रह्या आगि

या चमकानी ॥ जाण्यो ग्राम तणा ए दिवा । लहु विश्रामो त्यानी ॥ सु ॥ १३ ॥ तस अनुसारे शिघ्र चालतां । पड्या खाडमां जानी । शरीर टोंचाणो मस्तक फूटयो । लागी चोट सिल्लानी ॥ सु ॥ १४ ॥ पानी माहे वस्त्र भीना । जे दिया ते विप्रानी ॥ सावध होइ आगल चाल्या । विषम पहाड ते जानी ॥ सु ॥ १५ ॥ रखे पडूंहू वीजे स्थाने । तेह डरे कड झुकानी । हाथ से मार्ग जोता जावे ॥ कम्मर लगी दुःखानी ॥ सु ॥ १६ ॥ स्वपद आपदे हाथे आवे । जेहरी जीव वन म्यानी ॥ पुण्य जोग कोइ दंश करे नहीं । जीव जावे घवरानी ॥ सुनो ॥ १७ ॥ गुफा माहे सिंह गुंजावे । जावे पहाड मर्जानी ॥ जाणे नृप ए आइ खावे । तिथी खुटीं आयुष्यानी ॥ सुनो ॥ १८ ॥ आगल मार्ग अतीही विषमो । जागा नहीं जावानी ॥ शीलापट एक मोटो वांको । वैठा तिण पर जानी ॥ सु ॥ १९ ॥ कम्मर सीधी करवा लेट्या थाक्या लम्बा तानी॥ आलस आयो निद्रा घेरानी॥मनमें रही उठवानी ॥ सु ॥ २० ॥ गुडिया पडिया पर्वतथी ते । गुडता चाल्या ते ठानी ॥ पकडन ने नहीं आसरो कोइ । गया चित अकुलानी ॥ सु ॥ २१ ॥ कंकर गोखरु तिक्षण कोरथी । शरीर गयो झाडानी ॥ खाइ कांठे खेजडी आइ । गृही तास द्रढतानी ॥ सु ॥ २२ ॥ तिण आसेर रह्या पढीते । वायु अंग भरानी । टोंचणो सहु अंग सूजीयो । वीजली तन चम

कानी ॥ सुनो ॥ २३ ॥ शीतल पवने थर२ कांपे । दुःख अंग अंगानी ॥ इण परे ते रात खुटाइ । गति विचित्र कर्मानी ॥ सुनो ॥ २४ ॥ छेला पापनी वेदनी भुक्ति । ढाल मघा तारानी ॥ कहे अमोल आगे हिव सुणिये । चेतनृप पुण्य वानी ॥ सुनो ॥ २५ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ प्रभाते प्रकाशीयो । दीसण लाग्यो नेण ॥ बेठा हुवा नृपती । पेखंता तत्क्षेण ॥ १ ॥ खाइ ऊंडी अति घणी । तास किनारे झाड । ते झाली कहाडी रात मे । पड़तां टूटता हाड ॥ २ ॥ ॐ ॥ श्लोक ॥ ~ने रणे शत्रू जलाग्नि मध्ये । महा रणे पर्वते मस्तकवा ॥ सुप्तं प्रमत्यं विषमः स्थितवा । रक्षंती पूण्यानी पुरा कृतानी ॥ १ ॥ ॐ॥ दुहा आयुष्य पुण्य का बलथी । आज वच्या मुज प्राण ॥ हिवे आगल होसी किसो । जाणे श्री भगवान ॥ ३ ॥ किहा प्रिया किहां मंत्रवी । पतो नहीं तास मुज ॥ म्हारो पिण तस कुणकहे ।जे मे भुलच्यो गुज ॥ ४ ॥ चित स्थिर कर समरण कियो।मंगलिक महा नवकार । जिके तो प्रगट हुवा । झल झलाट दिनकार ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल८ मी ॥ में मुख देख्यो गोडी पारसको ॥ य० ॥ सुणो हो चतुर नर पुण्य प्रवल जग । दुःख मिटी सुख थायजी ॥ आं ॥ सूर्य तेज प्रभावे भूपनी । शीतल ता हुइ दूरजी ॥ अकडानो अंग रग तब छूटी प्रफूलित्त भयो नूरजी ॥ सु ॥ १ ॥ पहाड ऊंचा अति भयकर दीसे । खाड झाड असराल

जी ॥ चडन की शक्ति नहीं अंगमें । दुःख भोगी तन हुवो खालजी ॥ सु ॥ २ ॥ तिहां
ही शुद्ध भूमी कर करथी । कर पग खुल्ला कीधजी ॥ आलस मोडी सुस्ती भगाइ । आ
गें चालण चित दीधजी ॥ सु ॥ ३ ॥ क्षिण२ अन्तर ले त्रिसामा । चमके सघलो अंगजी
॥ भूख प्यास पण घणेरी । तेहथी चित होवे भंगजी ॥ सु ॥ ४ ॥ योग फल लेइ खाया
। पीयो झरणारो नीरजी ॥ आधार थोडो हूवो तेहनो । स शक्त हुवो शरीर जी ॥ सु ॥
५ ॥ खाड उल्लंघता पहाड पे चडवा । निशी रह्या तरु पर तेहजी ॥ तीन दिवस इम नृप
खुटाया । थाकी घणी तस देहजी ॥ सु ॥ ६ ॥ आगल आयो मैदान मोटो । रमणिक
उध्यान देखजी ॥ फक्ती बंध वहू वृक्ष मनोहर । साता कारी विसेखजी ॥ सु ॥ ७ ॥
आम्रू जांव लिम्व केल आमली । दाडिम सीता फल जी ॥ रामफल निगोद केतोडी
बील पलास्या । द्राभ अंगुर नी वेलजी ॥ सु ॥ ८ ॥ वड पिंपल उम्बर ने वरदी फल ।
नारंगी फणस कचनार जी। चंपा चमेली गुलाव केवडा।जाइ जूइ मोगरा गुल जार जी ॥
सु ॥ ९ ॥ पत्र पुष्प फल करीने भरीया । हरीया घणा शोभायजी ॥ पक्षी नाना क्रिडा
करे तिहां । मंजुल शब्द गुंजायजी ॥ सु ॥ १० ॥ तोता मेना सारस सालूंकी । चकवी
चकवा चकोर जी ॥ चिडीयां वहु रंगी कमेडी कबूतर । तीतर परेवा मोरजी ॥ सु ॥११

॥ झरणा झर रह्या ज्यो टूटयो । जाणे मुक्ताफा हारजी ॥ कुंड पुष्करणी कूवा सर नाला देख्या लगे मनो हार जी ॥ सु ॥ १२ ॥ ❁ ॥ गाथा ॥ नाणा दुम्म लगाइ नं । नाना पक्खी निसेवी यं ॥ नाणा कुसम सं छिन्नं । उज्झाणं नदणो वमें ॥ ३ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ मोटी सीला घटारी मटारी । जाणे विछायो चौरंगजी ॥ तिण उपर नरपतजी विराज्या । वन देखी हुवा दंगजी ॥ सु ॥ १३ ॥ थोडी देर विश्राम लइने । पेट पूजाके काज जी ॥ मधूर नरम ने पुष्टिदायक । फल लेइ खोला माजजी ॥ सु ॥ १४ ॥ तब अबाज आयो पाणी को । तिण दिस रायजी जायजी । मही सरीता सागर नीता । तिहां बेठा फल खायजी ॥ सु ॥ १५ ॥ पाणी की कलोल निरखता । मगर मच्छी ने कच्छजी । कपी कपिणी निज बालक लेइ । बेठा नृप पास स्वच्छजी ॥ सु ॥ १६ ॥ इत्यादी तमासो देखी । नृपती दुःख गया भूलजी ॥ पेट भरी फल अहारज कीधो।पाणीपी कियो कुलजी ॥ सु ॥ १७ ॥ तेह पचावण ठेहले तिहां नृप । वन श्री जोय हर्षाय जी ॥ दीर्घ सिलपट देखी भूधव। सूता तिणपर जायजी ॥ सु ॥१८॥ चिन्ते शोभा किण इहां निपाइ । वनश्री मनो हार जी ॥ इम अनेक विचार करता । निद्र वश हुवा जार जी ॥ सु ॥ १९ ॥ एक थकाने रात उजागरो । फल थी पेट भराणो जी ॥ निश्चिन्त स्थान एकान्त ते

जोइ । निद्रा में नृप घेराणो जी ॥ सु ॥ २० ॥ इहांइ सहायक मिले आइ सारा । ते सुणो आगे अधिकार जी ॥ पूर्वा अर्न उत्तरा का ताराकी ॥ ढाल अमोल उचारजी ॥ सु ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ तिहां थी अति ढूंकडी । भाल पल्ली थी सुखदाय ॥ पल्ली पती सहु परि वार थी । रहतो थो सुख मांय ॥ १ ॥ तिण समय ते सज हुवो । रेशमी धोती कस ॥ जरी पोशाक हेम कुडदोरो । अंग चंग कृष्णश ॥ २ ॥ तीर कमान कर में ग्रही । अपणा मैत्री संग ॥ खेलण आयो उद्यान मे । धरतो चित उछरंग ॥ ३ ॥ तिणही वन फिरतां थका । आंया राजा पास ॥ सूरत सेंदी देखकर । मनमे करे हियास ॥ ४ ॥ है काइ पुण्य वंत जीव यह । पण दुःख पाया पूर ॥ जाग्या थी सहू पूछस्युं । बैठ्यो तिहां हर्ष उर ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल९ मी ॥ सील पर समकित खुल रही । दयापर दोलत झुक रही ॥ यह ॥ पुण्यो दय होवे पादरो । कांइ पुण्य बडो संसार हो श्रोता ॥ पुण्य थकी संपत मिले कांइ । चिन्तीत पडे सहू पार हो श्रोता ॥ पुण्य ॥ १ ॥ पहर दिन बाकी रह्यां । कांइ जाग्या चन्द्र भुपाल हो श्रोता ॥ आलस तज बैठा भया कांइ । निद्राथी चक्षुलाल हो श्रोता ॥ पुण्य ॥ २ ॥ पल्ली पतने औलखी । कांइ अश्चर्य थया त्रपाल हो श्रो । अहो रामजी किहां थकी । तुम इहां आया चालहो श्रोता ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ अति

आश्चर्य वन चर पति । कांइ ऊठी कियो जुहार हो श्रोता ॥ श्वामी जी आप किहां थकी । इहां विराज्या पधार हो श्रोता ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ हर्षा नन्द ना आं सूडा । कांइ आया उभयने नयन हो श्रोता ॥ आज सारो दाडो माहेरो । कांइ पल्लीपत कहे वयनहो श्रोता ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ पुनः नृप पूछे किहां थकी । तुम आया इहां वन मांय हो श्रोता ॥ परिवार सहू तुम सुखी अछे । बैठो सहु दो सुणाय हो श्रोता ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ कर जोडी पल्लीपत भणे । कांइ सांभलो आप सिरकार हो श्वामी ॥ तमारा चरण प्रताप थी । हमो सहु छां सुख मझार हो श्वामी ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ पल्ली हमारी इहां अछे । सपरिवारे इहां छे वास हो श्वामी ॥ आपकी धरणी ए सहु । अने हमे सहु आप का दास हो श्वामी ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ ❀ दुहा ॥ दूर रहे ते न घटे । उत्तम मनकी लाग॥सो जुग पाणी में रहे । न बुझे चक मक आग ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ नृप पूछे पल्ली पत ने । थां विजय पुर छोड्यो किण वार हो मित ॥ प्रधानजी आदि किहां अछे । थे जाणो तो करो उपाय दो मित ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ भिल द्विप कहे जिण रातरा । कांइ शत्रू ये डाली धाड हो श्वामी॥तिण दिने हुं इहां आवी यो।पाछे सुणिया सहु दिया काडहो ॥ श्वामी॥ १० ॥ सुणीने में पठावी या कांइ । जोवा ने लोक हो श्वामी ॥ पतो नही लाग्यो कोइ-

को ॥ कांइ महनत हूइ सहू फोक हो श्वामी ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ कूपणो मण्यो कहतो हू-
तो । कांइ हम ने मार्ग माय हो श्वामी ॥ वैपारी एक मिलयो हूंतो । पण पाछो नहीं ते
पाय हो श्वामी ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ राय कहे ते तो हुंइज हतो । पण अशुभ कर्म ने जोर
होमित्र॥ पकडी ले गया कन्कपूर कांइ ।सीपाइ कर चोर हो मित्र॥ पुण्य ॥ १३ ॥कारा
गृह भुक्ति करी । मुझ कूट्या हुवा दिन चार हो मित्र ॥ होण हार टले नहीं । कांइ की
धा क्रोड प्रकार हो मित्र ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ पस्ताइ रामा भणे । कांइ म्हारी जान गिंवा-
रहोश्वामी । एकला आपने मेल ने । गेंडा गया गांव मझार हो श्वामी ॥ पुण्य ॥ १५ ॥
नृप कहे तिण नहीं ओलख्यो । अने में नहीं कह्यो पूछ्या भेद हो मित्र । तो पण स्वा
गतकी धणी । तुम किंचित मत करो खेद हो ॥ मित्र ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ पछी पती क-
हे पूण्य थी । कांइ आप का होवा दर्शन हो श्वामी ॥ मन वांछित फल सिद्ध हूवा । ही
यो हूवो प्रसन हो श्वामी ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ नृप निश्वासो न्हाखीयो । कांइ मुख कीयो
उदास हो श्रोता ॥ तस्कर पती इण पर भणे । आप मत करो कोइ विमास हो श्वामी॥
पुण्य ॥ १८ ॥ होण हार जो हो गयो । अब नहीं कमी लगार हो श्वामी॥ आप ॥ हूकम
में हम अच्छा कांइ । बीस हजार जूजार हो श्वामी ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ परिवार ढूंढा

मलावसा । अने करस्यां शत्रू का नाश हो श्वामी ॥ थोडा दिन में आपका । पहला त्रिलसो सुख वास हो श्वामी ॥ पुण्य ॥ २० ॥ सुणी बचन पल्ली पत का । कांइ नृपती धैर्य लाय हो श्रोता ॥ भरणी कृता कासतारकी । यह ढाल अमोल सुणाय हो श्रोता ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ तिण अवसर तिहां आवीयां । कृष्णा मण्यो दोइ भील ॥ आया पेखी चन्द्र नृप ने । कहे पती ने धर लील ॥ १ ॥ यही ते वैपारी छे । मिल्या था जंगल मांय ॥ रामाजी कहे गांडा भया । एह नृप चन्द्र महाराय ॥ २ ॥ तुम छोडी गया एकला । पीछे पाया घणो दुःख ॥ चमक्या इम दोनो सांभली । प्रणमी बोले मुख ॥ ३ ॥ क्षमा अपराध एह हम तणो । जेम अजाणे कीध ॥ चन्द्र मधुर स्वर इम कहे । ए हम कर्म की विध ॥ ४ ॥ अजाणे तुम मुझ भणी । दीनो घणो संतोष ॥ इम सुण दोनो मन विष । पाया घणोहि तोष ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १०मी ॥ राघव आवीया हो ॥ यह० ॥ तेह वन रमणीक जाणी । राय को लाग्यो मन ॥ तंबू डेरा बंधाया तिहां । रहने को राजन ॥ सुगुणा सांभलो हो । चन्द्र सेण पुण्य प्रकाश ॥ आं ॥ १ ॥ शरीर को निर्मल बनावै ॥ कियो मर्दन तेल ॥ स्नान औषध आदि सेवी । पोढ्या मुखमल पेल ॥ सू ॥ २ ॥ एकदा रामाजी बिचारे । निज मुख्य सामन्त बोलाय ॥ आपण

चाकर राजा का । सेवा करो वक्त पाय ॥ सु ॥ ३ ॥ ते पण कहे यह धर्म अपणो । न
बाइ इण मांय । वक्त सेवक सेवा साधो ॥ श्वामी ने सुख उपजाय ॥ ४ ॥ संतोष वनृ
पती चितवे । रणांगण मा काल ॥ सहु सूर ने करा भेला । नृप खुश होसी भाल । सु
॥ ५ ॥ और जोगी करी सल्ला । जची सहु के मन । ते प्रमाणे सज्ज हूवा सहु । सामां-
त दूजे दिन ॥ सु ॥ ६ ॥ नफर पास बजावे ढोल ने । बहु ऊंचस्थाने जाय ॥ सुणी सुर
ते धनुष्य बाण ले । रणां गणे भग आय ॥ सु ॥ ७ ॥ क्षिण तरे सहु आइ जमीया ।
दो दश सहस्र तहां भील ॥ करी अर्जी चन्द्र नृप ने । रामाजी आदि मिल ॥ सु ॥८ ॥
देखीये श्वामी शैन्य आपकी । है केवी दुरदंत ॥ आप हुकमे एक क्षिण में । आणे शत्रू
अंत ॥ ९ ॥ राय आया तम्बू बाहिर । ऊंच्चस्थान खडा रेय ॥ देख समोह प्रबल चंगो
। अन्द अंग व्यापेय ॥ मु ॥ १० ॥ केइ कर तरवार वरछी । फरसी खड्ग कटार ॥ वंदू
क तमंचा पिस्तुल तोमर । गुप्ती शोटा धार ॥ सु ॥ ११ ॥ इत्यादि तारह २ का । जु-
दा २ शस्त्र हाथ ॥ धनुष्य बांण ने गोफणी तो । छजी सहु ने साथ ॥ सु ॥ १२ ॥ सं-
तोषा णा नृप देखी । रामो भाखे इम । प्रमेश्वरनी साखथी । आप फरम कहुं जिम ॥ सु
॥ १३ ॥ कपट इण से कभी न करस्यूं । पालस्यु पुत जेम ॥ मंही पत कहे सुणो सहु-

ही । मुज वयण न फिरे केम ॥ १४ ॥ ए सहू मुज प्राणसे ज्यादा । राखस्यु उम्मर भर ॥ जिहां सूधी ए नहीं बदले । तिहां सूधी न अन्तर ॥ सु ॥ १५ ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥
चलंतिमेरु मंदिर कदाचित । चलंती धरणी ग्रह चन्द्र सूर्थ ॥ सत्पुरुष वाक्यं नैव चलंती । प्राणांत राजन् धर्म वदंती ॥१॥ ❁ ॥ढाल॥ तव पल्ली पती सहु भीलोने।हाक मार कहे एम ॥ इष्ट देव ना सम खाइ सहू । बोलो अटल शुद्ध प्रेम ॥ सू ॥ १६ ॥ चन्द्रसेण है नाथ हमारा । रहस्या आणे सदाय ॥ किंचित दुःख थावा न देस्यां । मूंडकी जो जाय ॥ सु ॥ १७ ॥ सहू जननमकरीने। कहे इम पूकार ॥ आप हूकम प्रमाण म्हाणे ।चन्द्र सेण शिरकार ॥ सु ॥ १८ ॥ जय २ कार गर्जाव रव जिम हूवो।तब तिण स्थान॥मंगल को सहु ते दिन मानी । कीना मिष्ट खान पान ॥ सु ॥ १९ ॥ चन्द्र नृप कहे आजथी नित्य । सहु आणो इण जाय । एक प्रहर संग्राम नी कला । सीखिये धर लाग ॥ सु ॥ २० ॥ कबूल कर सहू गया स्थाने । नित्य वक्त सिर आय ॥ राजेश्वर अति चुंप धर तस ॥ विवध कला पढाय ॥ सु ॥ २१ ॥ निशाणा मारण जात प्रकृती । सहुथी होंश्यार ॥ गुप्त लडाइ गुजरीती । सिखाते नित्य घडी चार ॥ सू ॥ २२ ॥ भिल पत थया चन्द्र नृप । सत ज़णा तस आगे मान ॥ कार्य साधन आपणो । तस विश्वासीनर जान ॥ सु ॥२३॥

सुख रहे चन्द्र नृप तिहां । आस धरत अपार ॥ और सज्जन मिले इहां । ते आगे अ-
धिकार ॥ सु ॥ २४ ॥ खन्ड चतुर्थ अमोल भाखे । शत भिषं विन्दू हीण ढाल ॥ सती
लीलावती तणा । आगे सुणियो हवाल ॥ सु ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ हिवे महा सती
लीलावती । देव धर भारती घेर॥काल क्रमण करे सुखे।आपसे प्रेम बहु पेर ॥ १ ॥जाणी
गुणवन्त दम्पती । दाना ने धर्म वन्त ॥ एकदा निज मत्य वारता ॥ सती तास भणन्त
॥ २ ॥ सुणी दे.नो अश्चर्य हुवा । अहो महाराणी। आप॥कर्म घेर्या आया इहां । रखे को
पामो संताप ॥ ३ ॥ क्षमजो गुन्हो जे हमतणो । जे कीधो अजाण ॥ लीलावती कहे आ
पतो । मात पिता ने समान ॥ ४ ॥ सुख पामी तुम थी घणो । भक्ति न मुजथी होय ॥
अवसरे उपकार फेडस्युं । क्षमजो अपराध मोय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ११ मी ॥ तीर्थ ते न-
मूर ॥ यह० ॥ इम तीनो ने आपसे । रहे सम्पसेरे । वीताड ते वार ॥ कर्म गती सांभ
लोरे ॥ पुत्री सरीखी जाणने । माया आणनेरे । जाप तो करे अपार ॥ कर्म गती संभ
लोरे ॥ १ ॥ एकली बेठण दे नही । कथा कही । पूराण तणी रस भर ॥ कर्म ॥ सती
पण जनक जननी परे । भक्ति करेरे । नबणे एहवो अवसर ॥ कर्म ॥ २ ॥ उपर थी खु-
शी रहे । मन दुःख दहेरे । विसरे किम भोग्या सुख ॥ पति चित क्षिण२ संभरे । नहीं

याद करेरे । जिम चकवी भानु मुख ॥ क ॥ ३ ॥ ❀ ॥ छपय ॥ सज्जन अंतसे खुच रहे । मिले केइ सज्जन समाना ॥ तिनकी होड नहोय । कनक पित रंग एक जाना ॥ परिक्षक भूल न गुन । जोये जिन अनल तपाना ॥ बदले नहीं जेरंग । भोगवे विपती नाना ॥ तिनकी याद कहा कीजीये । जेह कभी विसरे नहीं । अमोल सच्चे सज्जना । विरला जग पावे सही ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ कब ऐसो दिन आवसी । पती पावसीजी । कब पुरसी मुज आस ॥ कर्म ॥ ४ ॥ जागृत हो आर्ती करे । मन संभरेरे। ज्ञान थकी समजाय ॥ कर्म ॥ इम काल अती क्रमें । इन्द्रि दमेरे । करे तप अनेक शोषे काय ॥ कर्म ॥ ५॥ मन राखे दोना तणो । ते माना घणो । सती तणो उपकार ॥ कर्म ॥ तेतले कर्मना जोगथी । कोइ रोगथीरे। वृद्धिका हुइ वीमार ॥ कर्म ॥ ६ ॥ शीत ताप रक्षा करण । नहीं को सरणरे । स्थान वस्त्र ते पास ॥ कर्म ॥ औषधी पण किहां थी करे । वनमे वसेरे । क्षिण शरीर थयो तास ॥ कर्म ॥ ७ ॥ चाकरी सती करे घणी । जे वक्ते वणी । पण न देसके आयु भाग ॥ कर्म ॥ आयु नेडो जाणने । हित आण नेरे । कराया पच्चखाण ॥ कर्म ॥ धर्म कथा संभला वइ । जिन गुण कही । बंधाव्यो भातो सुजाण ॥ कर्म ॥ ८ ॥ काल समय कालज करी । शुभ गति वरीरे । दुट्यो ए पण आधार ॥ कर्म ॥ डोकरो

आर्त करे घणो । हिवे कुण मुज तणोरे । सती धैर्य दे ते वार ॥ कर्म ॥ ९ ॥ जेजे जीव पूं-
जी लावी या । ते पावीया जी । वधे घटे न लगार ॥ कर्म ॥ एकलो जीव आवी यो ।
तिम जावीयो जी । नहीं जगे को राखनार ॥ कर्म ॥ १० ॥ ® ॥ श्लोक ॥ एकाकी जा
यते प्राणी । तथै काकी विलाय ते ॥ सुख दुःख सथे काकी । भुक्तं कर्म वशं धूवं ॥ १
॥ ® ॥ ढाल ॥ सती पण चिन्ता करे । कर्म इण परेरे । छोडे नहीं मुज लार ॥ कर्म ॥
किंचित सुख जो कधी बने । कर्म तेह हनेरे । ए हुइ तीजी वार ॥ कर्म ॥ ११ ॥ आपस
में वातां करे । एकेक आसेरेर । आपां किया पाप करुर ॥ कर्म ॥ ते इहां उदय आवही ।
सुख जावहीरे ॥ कर्म ऐसा निष्ठूर ॥ कर्म ॥ १२ ॥ आपसमे समजा वाइ । ज्ञानज दइरे
। रोयां दुःख नहीं जाय ॥ कर्म ॥ जो सुख रह्या नहीं । गया वहीरे । तिम दुःखही वि
रलाय ॥ कर्म ॥ १३ ॥ पुरुष पाल ते वृद्ध सही । सती वाल वइ । दोनोइ सुख माल ॥
कर्म ॥ आश्रय नारी नारी तणो । होवे घणोरे । वाणियो खुटावे काल ॥ कर्म ॥ १४ ॥
तो पण कर्म धाया नही।आगे सुणो सही।इहां पण जे थाय।कर्म।मूलतारा तणी।अमोलख भणी
जी।आगे सुणो चित लगाय।।कर्म॥१५॥®।।दुहा॥तिण अवसर तिण वन विषे।धाडायतीकी टो-
ली एक। भटकती थाकी आइ तिहां । गुप्त सुख स्थान देख ॥ १ ॥ ते वावीथी कुछ अन्तरे

। उतर्या लियो विश्राम ॥ भोजन पान नो सज करे । पाया जरा आराम ॥ २ ॥ मालि
क ते टोली तणो । उंच्चस्थान को पेख ॥ विछा विस्तर सुतो थको । चउ बाजू रह्यो दे-
ख ॥ ३ ॥ तिण अवसर लीलावती । जल भरवाने काम ॥ आवी ते पुष्करणिये । बैठा
मांज घट ताम ॥ ४ ॥ याद आवी माजी तदा । लेगइ इहांथी लार ॥ आसरो हूंतो घ
णो । कर्म करी निरधार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ १२मी ॥ धम्मो मंगल मही मानीलो ॥
यह० ॥ तस्कर पति दृग पेखता । लीलावती द्रष्ट आय ॥ अविलोकी अनोपम छवी ।
नयन गया ललचाय ॥ १ ॥ जो वो विचित्र गति कर्मकी ॥ किहां न छोडे तेह ॥ अट
वीमा सती रहे । तिहां पण आवी पुग्या तेह ॥ जोवो ॥ २ ॥ आहा यह अपच्छरा इ-
हां । कहां से आइ चलाय ॥ वन देवी के विद्या धरी । मेखान मेख पे खाय ॥ जो ॥
३ ॥ माधव केशव ते बोलाइयो । देखो यार यह नार ॥ ऐसी मैने देखी नही । कौनहै
रौ विचार ॥ जो ॥ ४ ॥ मनुष्य शब्द सुण ने सती । जोवो द्रष्ट लगाय ॥ धाडयती
ने देखने । गइ मन में घबराय ॥ जो ॥ ५ ॥ तत्क्षिण जल भर ने चला । धरती चित
कइ वैम । खे आया ते पापीया ॥ खोसी ले म्हारो क्षेम ॥ जो ॥ ६ ॥ जाती जोइ स-
ती भणी । माधव मन अकुलाय ॥ डर पण आवे चित मे । ए मोटे घरकी देखाय॥जो॥

६ ॥ कहे केशव को गुप्त तुम । जावो इसके संग ॥ पता लावो कहां रहे । कैसा है ६२
का ढंग ॥ जो ॥ ८ ॥ पीछे केशव चल्यो । देखी झोंपडी रही दूर ॥ यह वश आणी स
जहे । हर्ष्यो मुख को नूर ॥ जोवो ९ ॥ जलदी२आय कर । कहे सुनो राव साव ॥ ब
टाटि की झोंपडी । उसमें रहे जनाव ॥ जोवो ॥ १० ॥ मधव कहे फिकर नही । देखेंगे
जाती वक्त ॥ आजतो याही रेवेगे । थक गयेहैं शक्त ॥ जोवो ॥ ११ ॥ भोजन पान इ
च्छित किया । लाया लूटी माल ॥ ते संभाली जमा कियों । मन में लीलावती ख्याल ॥
जावो ॥ १२ ॥ संध्या हुइ रवी छीप्यो । मह्व तस्कर हुवा होंशार ॥ समेटी सरा जामने
। चालण हुवा तैयार ॥ जो ॥ १३ ॥ लीलावती ने बृद्ध तें । बैठा प्रणकूटी बार ॥ कहे
बृद्ध फीकर करे मती । थोडा दिवस मझार ॥ जो ॥ १४ ॥ दुष्टकंखरथ का नाश कर ।
चन्द्रनेस लेसी राज । तुमने ते भूलेनहीं । लेसी जरुर वोलाज ॥ जो ॥ १५ ॥ इत्ते तो
तिहां सांभल्यो । मनुष्य पाद झणकार ॥ चमकी लीलावती भणे । पिता साब होंशार ॥जो॥ १६
॥ तेतल ते आवी पड्या । लियो ब्रद्ध ने बान्ध ॥ हाथा जोडी घणी करी । जरा न दी
यो ध्यान ॥जो ॥ १७ ॥ ऊंची मुशक्या बांधने । दी यो वृक्ष ने लटकाय । थर २सती
कांपती थकी । छिपी झोंपडी में जाय ॥ जो ॥ १८ ॥ मधव बड २ तो थको । गयो कू-

_ा ने मांय ॥ कर गृही सती तणों । खेंची बाहीर लाय ॥ जो ॥१९॥ आगलगाइ झोपडी भणी । मनमे घणा हर्षाय ॥ यारों काम अपना हूवा । अब ठेरना नही ढांय ॥ जो ॥ ॥ २० ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥ बालकों दुर्जने श्चौरो । वेंधो विप्रश्च पुंत्रिका ॥ अर्थी नृपो ऽ ती-थी वैश्यां । नविदुःसह शां दशं ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ लीलावती ने लेय ने।निर्भय चाल्या जाय ॥ आनुराधा पूर्वा उत्तरा मिली । ढाल अमोक गाय ॥ जोवो ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ गामडा लूटता थका ।चाल्या आगे जाय ॥ खाइ आइ ऊंडी तिहां।तब ऊग्यो दिन राय ॥ १ ॥ गुप्त ते स्थानक जाणने सहू लियो विश्राम ॥ विछायत विछायने । बेठा माधव ताम ॥ २ ॥ केइक तो लग्या काम में । केइ निद्रा गत थाय ॥ पेट पूजा केंइ करे । निर्भय सहू रहाय ॥ ३ ॥ सती बैठी एकान्त में। धरती आर्त ध्यान । नेणाथी वारी झरे । थाकी हुइ हैरान ॥ ४ ॥अहो २ कर्म गति महेरी । विषमी बहु जणाय ॥ सुख इच्छाहूवी गइ । आयुष्य रह्या ढिग आय ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ १३ मी ॥ बडे घर ताल लागीर ॥ य० ॥ कर्भ गति जोय लीजो जी । दोष केने मनी दीजो जी ॥ आं ॥ माधव देखी सती भणी जी । मूछें देवे ताव ॥ एह राणि: होसी म्हारी जी । पूरस्यूं म्हारा चाव ॥ र्मे ॥ १ ॥ एक कसबा का ठाकर ने मारी । लेस्यूं तेहनो राज । फिर थोडीसी फोज

जमाइ । होस्यूं अन्य नृप सानाज ॥ कर्म ॥ २ ॥करामात से सबको वश कर । बनूंगा
मे राजान ॥ फिर तो सब डरेगा मुजदेखी । यह रूपवती मेरी जान ॥ क ॥ ३ ॥ कुँमर
धण होवेगा मेरे । बडेगा फिर परीवार । शेक शली इम मन माहे । करे अनेक विचार ॥
कर्म ॥ ४ ॥ततले राते लूट्या ग्राम का । मिलिया भील अनेक ॥ पत्तो लगाता आइ प-
होंचा तिहा । लीना तस्कर देख ॥ कर्म ॥५ ॥घेरो दियो खाइने चौपाखे । एक दम श-
स्त्र चलाय ।तेतो सहू निश्चिन्त रह्या था। दिया घणा नेगुडाय ॥ कर्म ॥ ६ ॥ मोटीश्रसि-
ला गुडाइ । किया कित्ता चकना चूर ॥ भागणको कोइ जागा नही । जावे किहा मग दू-
र ॥ कर्म ॥ १ ॥ गोली एक लगी माधव के । तना छूटा प्राण ॥ मन कर्म का विचार
जु जुवा । प्रत्यक्ष एक प्रमाण ॥ क ॥ ८ ॥ ● ॥ मन हर ॥ मन कहे पकान खावूं ।
तन को पूष्ट बणावू । कर्म के रावडी पावूं । ते न पूरी पेट भरी ॥ मन
के दूशाला ओढू । सूंहाली सेजापे पोढु । कर्म के कम्बल तोडू । रहजे भूंइ परी ॥ मन
रहवा मेहल चावे । भूषण वदन भावे । कर्म भाखसी मेठावे । लोह बेडी पगे धरी । मन
कर्म की लडाइ । साधु ज्ञानी नें समजाइ अमोल चिन्तित पाइ । मोक्ष लो कर्म हरी ॥
१ ॥ ● ॥ ढाल॥ चोर तणो द्रव्य लूटवाजी । उत्तर नलागालोक॥लीलावती डरी मनमे ।

आगे किस्यो होसी थोक ॥ कर्म ॥ ९ ॥ गुफा देखी एक ढूकडोजी । पेठी तिणरे मांय ॥ जिम २ शब्द आवे लोक को । तिम २ आगे जाय ॥ क ॥१० ॥ अंधार घोर में बैठ न जी । आर्त करे अपार ॥ अहो कर्म गति माहरी । कैसी उदय हुइ इण वार ॥ क २१ ॥ जे जे सहायक होवे महाराजी । ते ते पावे दुःख ॥ हुं कैसी हुं अभागणी । किया पाप घणा में कलुख ॥ क ॥ १२ ॥ तात समान थो डोकरा जी । राखतो पूरो प्रेम ॥ पुत्र वहू पतनी विरहा । अब म्हारो पण गयो क्षेम ॥ क ॥ १३ ॥इम केइ विचारनाजी । करती नेण नितार ॥ गरमीयेजीव अमु जा वीयो । जिहा हव न आवे लगार ॥ क ॥ १४ ॥ कान देइने सांभलेजी । शब्द न आवे लगार ।तव जाण्यो सहूजनगया । अव निकलू इणरे वार ॥ क ॥ १५ ॥ आइते मार्ग भूली गइजी । भटके गुफाने माय ॥ कंही लगे माथा विषे । कइ ठोकर खाइ गिरजाय ॥ क ॥ १६ ॥घावरी हुइ अति घणी । तव जोयो प्रकाश ॥ तिण अनुसारे नीकली जी । दूसरे रस्ते खास ॥ क ॥ १७ ॥ बाहिर आइ पेखतीजी आटवी महा भयकार ॥ जागा पण सेंदी नहीं । जाण्यो निकली वीजे द्वार ॥ क ॥ १८ ॥ जुथ विछोही कुरंगनीज्यों । रही तिण वन में फिर ॥ लागे कांटाने कांकराजी । कोइ नहीं तस तीर ॥ क ॥ १९ ॥ भूखी प्यासी था-

को घणीजी । स्वपदे अपट भयंकर । गहन घन आवला वलीजी । देख्यां लागे डर ॥क॥
॥ २० ॥ फल भक्षा जोड करीजी । पीयो निर झरणागेनीर॥वैठीवृक्ष तल कहे असोलख
। अश्लेषा मघा ढाल स्थिर ॥ क ॥ २१ ॥ ॥ दुहा ॥ पूग कर्म मुक्या विना । सुख
किहा थी पाय ॥ एक मिटे दुजो हुवे । कर्म इम सदा सताय ॥ १ ॥ तिण अवसर कुरु
दत्त ते । कुसुमनां संत्रीश ॥ आगो भमतो तिण मार्ग । लीलावती नी जगीस ॥ २ ॥
तरु तले ते एकलो । वैठी लीलावती जोय ॥ अन्ध नेत्र वंझा पुत ज्यों । हर्षित हिये
होय ॥ ३ ॥ देखी लीलावती तेहने । भस्काइ धूजे थर २ ॥ हाहा कर्म कष्ट महारा ।
भागी जाऊं किण पर ॥ ४ ॥ जेहने डरो देशोटारी । पडी फिर तेहने हाथ ॥ अब मुश-
किल है छूटको ॥ सरण श्री जगनाथ ॥ ५ ॥ ॥ ढाल १४ मी ॥ जालिटा जात्रा
निन्याणु करीयेरे ॥ स० ॥ सनीरे मांय संकट आवेरे । भलां आवे ते विरलावे ॥ स० ॥
॥ आ० ॥ कुरुदत्त अति हर्षाइरे । साथी दासने चेताइरे । अहो हुवा परमेश्वर सहाइ ॥
न ॥ १ ॥ते देखो लीलावती वेसीरे । छुपके भग आइ केसररे । पण अपनी करामात ते-
मो ॥ रा० ॥ २ ॥ लीधी डाव उपावे मिलाइरे । डारी घणी मेहनत थी पाइरे । रखे अ-
न किहां भगजाइ ॥ स० ॥ ३ ॥ सहू कहेने फिकर रहीयेरे । अब हम किम जावा दइयेरे

। वार २ भूल नाभइये ॥ स ॥ ४ ॥ सहू आइ तिणने घेरीरे । गैयाने वरगडा पेरीरे । तेहतो भयथी होगइ ढेरी ॥ स ॥ ५ ॥ ऊष्ठरी शक्ति रही नाहींरे । अंग २ पसीना छूटा इरे।मन में परमैर्ष्टा ध्याइ ॥ स ॥ ६ ॥ कुरुदत्त कहे क्रोधे भराइरे । तूं भागीने किहां जा इरे।हम लारे तुज लागाइ॥स॥७॥देखकैसी आइ ने पकडीरे।अबलजासाथने जकडीरे।देखो कि म अव खेले छकडी ॥ स ॥८॥ उठाइ तुरंग पे बैठाइरे।चोकानी ढेरी सीपाइरे ॥रहो हों-श्यारी से मेरे भाइ ॥ स ॥ ९ ॥ इणने भोली मत जाणोंरे । यह है महा कपटकी खा-नोरे । अब गइ तो खरात्री तुम मानो ॥ स ॥ १० ॥ सहू कहे अब तावे हमारेजी । तुम फिकर न रखो लगारेजी । चाल्या विजयपुर मार्गे जेवारे ॥ स ॥ ११ ॥ मन माहे सहू घणा राजीरे । अब फते हुइ जाणे वाजीरे । करे वातां मार्गे गाजी ॥ स ॥ १२ ॥ क्षिण विश्वास नहीं तस करतार । वारा सिर पेहरा वदलतारै । कुरुदत्त फिकर घणी धरता ॥स ॥ १३ ॥ इम विजय पुर तेआयारे । राते पेठा गाम मांयारे । जे दुमुख मार्ग वताया ॥ स ॥ १४ ॥ ते गुप्त रस्तेले आयारे । कोइ अन्य जाणन नहीं पायारे । गुप्त मेहल में तास छिपाया ॥ स ॥ १५ ॥ दी दुमुख ने जा वधाइरे । लायो तुम पटराणी तांइरे । वीती स-। विस्तारी सुणाइ ॥ स ॥ १६ ॥ सुण दुमुख घणो हर्षायोरे । ततक्षिण गुप्त मेहल मे

आयोरे । लीलावती देखी आनन्द पायो ॥ स ॥ १७ ॥ हिवे जन्म सफल मुज थासीरे । घणा दिन की इच्छा विरलासीरे । इम तरंग कइ विमासी ॥ स ॥ १८ ॥ शावासी दी कुरुदत्त तांइरे । हिवे प्रधान लेस्यूं वनाइरे । हूं वनू नृप दिन थोडा मांइ ॥ स ॥ १९ ॥ साथी सीपाइ ने इनाम दीनारे । वात करण शक्त मना कीनारे । तेपण प्रभू सोगन लीना ॥ स ॥ २० ॥ यह वात रही इण ठाइरे ॥ ढाल जेष्ट मूला मिलाइ । अमोल सती के सत्य सहाइ ॥ स ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा । मगध देश पयठाण पुर । प्रताप सेण नृप गेह ॥ सोमचन्द्र मंत्रीश्वरु । सुखे रहे छे तेह ॥ १ ॥ चिन्ते चितमें एकदा । हूं निकल्या जिन काम । तेहनी चिन्ता परहरी । लुब्ध्यो सुखे ए ठाम ॥ २ ॥ धिक्कार होवो मुज भणी । श्वामी भक्तिये प्रमाद । हिवे विलम्ब करनो नहीं । तजणो यह विखवाद ॥ ३ ॥ राय राणी जिहां लगे । नहीं मिले मुज तांय ॥ तिहां लग अव मुज भणी । इम रहणो किहां नाय ॥ ४ ॥ इम निश्चय मन में करी । नृपतीनी रजा लेय । चाल्या आगे सचीव जी । दिगे मन पानी मंय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १५ मी ॥ न्याल देकी देशी में ॥ धन्य सेवक जे जग विषे जी । कांइ आवे मालिक के काम ॥ संकट सही सकट हरेजी२ कांइ । तास रहे जग नाम ॥ धन्य ॥ १ ॥ मार्ग चलतां मंत्रीश्वरुजी कांइ । मन में करे विचार

॥ नृपती और राणी तणी जी २ कांइ । सुधीने लागी लगार ॥ धन्य ॥ २ ॥ किहां जाइ
रह्या होसीजी कांइ । पहाड खाड ग्राम मांय ॥ साथ नहीं कोइ तिण तने जी । दम्पती
भेला के जूदाय ॥ धन्य ॥ ३ ॥ भरत पुरतो ज्यावे नहीं कांइ । पडती वक्त के मांय ॥
राणी पण साथे नहीं २ कांइ ॥ संग्राम में थीगयाय ॥ धन्य ॥ ४ पुरुष पाल राजा अछे
जी कांइ । सही सखे कधी दुःख । पण सुख माल राणी लीलावती२कांइ । जन्म थी भो
गव्या सुख ॥ धन्य ॥ ५ ॥ शीत ताप किम सेवसीजी कांइ । किम करे पगथी विहार ॥
सुखना विभागी सहू हूवाजी२कांइ । दुःखमां दियो न आधार ॥ धन्य ॥ ६ ॥ इम अनेक
विचार में कांइ । काटण लागा पन्थ ॥ आगल रन एक आवीयोजी २ कांइ । सघन भया
नक कन्थ ॥ धन्य ॥ ७ ॥ उतंग पर्वत विपम छेजी कांइ । न पडे रवी प्रकाश ॥ तिहां
शुद्ध आइ संलीने जी । चमक्या देखी ताम ॥ ध ॥ ८ ॥ हुं आयो किहां नीसरी जी कां
इ । होणहार सो होय । पेखंता आगल चाल्याजी । विपम झाडी में सोय ॥ ध ॥ ९ ॥
पूरी मण्डल रवी आवीयोजी कांइ । क्षुद्या लागी तेवार ॥ भोजन करण विराजीया जी २
कांइ । पेखी वारी अगार ॥ ध ॥ १० ॥ पासे भानो जे खोलीयो जी कांइ । भक्षण कि
यो विचार ॥ तब कर्म आइ फिन्याजी । अणचिन्त्या तेवार ॥ ध ॥ ११ ॥ टोलो कीतांइ

नर तणी जी कांइ । दोडती ते दिशा आय ॥ लंगोटी तंग बांधवाजी । अन्य वस्त्र नहीं पाय ॥ धन्य ॥ ११ ॥ चोटी मोटी सिर परे जी कांइ । शस्त्र तिक्षण हाथ ॥ दीसे राक्षस सारिखा जी । प्रचंड तन सहू साथ ॥ धन्य ॥ १२ ॥धैर्या आइ मंत्री सने जी कांइ । शस्त्र वस्त्र दूर डाल ॥ बांध्या मजबूत तेहने जी २काइ । करे कांइ ते घणा भाल ॥ धन्य ॥१३ ॥ ❀ ॥ इन्द्र विजय ॥ कहना माने जिसी को कीजीये । नहीं माने तहां बात क्या कामकी ॥ दुष्ट अनार्य अविनीतसे बोलीयां।हानी होवे आबरु अरु दामकी ॥ कहतां सुलटी जो उलटी ग्रह । हीये वसे तस द्रष्टी हरामकी ॥यश सुबुद्धि आराम के इच्छक । मौन रहो अमोल ते ठाम की ॥ १ ॥ ❀ ॥ढाल मृत्युक पशू तणी परे जी कांइ। घसीटता लेजाय ॥ छीलाय त्वचा मंत्रीकी जी२कांइ।अंग सूल पेसे रक्त वहाय ॥ धन्य ॥ १४ लटकावे उलट खन्धा परे जी कांइ। धस्के देवे न्हाक ॥इम चाल्या जाव रण बन माजी२ कांइ । समजे न तेहनी भाख ॥ धन्य ॥ १५ ॥ देवालय एक आवीयो जी काइ । मनुष्य हड्डी यो ढग जोय ॥ सोमचन्द घवरावीया जी । आव आयो मरणोय ॥ धन्य ॥१६ ॥ न्हाख्यो एक खाडा त्रिपेजी कांड । चन्डिका ने कहे तेह ॥ बल लाया माता तुम भणी जी२कांइ ।काल देश्या भक्त एह॥१७॥ इम कही सहू सूइ रह्या कांइ।नींदे रह्याघुराय ॥ मं-

त्री अवसर देखने जी । तटके बन्ध तोड्याय ॥ धन्य ॥१८ ॥ भागा तिहाथी जीव लेय ने जी कांइ । भोपो जाग्यो एक तब ॥ जावती देख सिकार ने जी कांइ । चिल्लायो हुवो गज़ब ॥ धन्य ॥ १९ ॥ केइ ऊठी लारे भग्या । जी कांइ प्रधान लगाइ दोड ॥ मनुष्य वृंन्द आगे देखने जी २ कांइ । भरायो तिणमें भय छोड ॥ धन्य ॥ २० ॥ मनुष्य बन्द देखी करी जी । भोपा भागी गया तत्काल ॥ अमोल ऋषिये यह भणी जी २ कांइ मूल मृग आदरा ढाल ॥ धन्य ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ सचीव पेठों नर वन्द में । ते देखी हर्षाय । दोचार नरमिल करी । तत्क्षिण लीयो द्रढ साय ॥ १ ॥ बन्धन बान्धी द्रढ तस । दीयो नाव में ढाय ॥ अश्चर्य पायो मंत्री घणो । यह कोन करसी काय ॥ २ ॥ फास तोडी हूं भागीयो ।पाडियो अग्नि मांय हाहा कर्म गति माहारी । आगे २ धाय ॥ ३ ॥ सुणी बात सहू जन तणी । कैचक नर जाण्या तास ॥ अन्य देश लेजायने। वेंचे यह नरखास ॥ ४॥ मुझनेदूर किहा बेंचने । बनावसी ए गुलाम॥ इच्छा ए निज पूरसी । मूं मांग्या ले दाम ॥ ५ ॥ होणहार सो होवसी । फिकर कियां कांइ होय ॥ इम धैर्य धारी रह्यो । आगे सुणो सहू लोय ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ढाल १३ मी ॥ पांडव पांचो वंदता ॥ यह० ॥ ते कैचक नर हर्षित हुवा । नर लाग्या घणा हाथरे ॥ चा

लो हिवे बेंची करी । लेवा अपणे कर आथै ॥ सुज्ञ नर सांभलो । मंत्री नी हकीगत भा इ ॥ जी ॥ आं ॥ १ ॥ नावा लाया वाहण ढिगे । सहू नर भर्या तिणरेमांइजी ॥ बंधन छोड्या सहू तणा । जल मग किम भागी जाइ ॥ सुज्ञ ॥ २ ॥ जहाज चलाइ समुद्र में । सहू जन बेफिकर भयाइ जी ॥ कीनो नशो मदिरा तणो । सहू कैचक पड्या मुरछाइ॥ ॥ सुज्ञ ॥ ३ ॥ सचीव जी चिन्ते अवलोयने । ए अवसर छूटको थाइजी ॥ तोही जीतब आपणो ॥ नहीं तो गति होसी पशुसाइ ॥ सु० ॥ ४ ॥ पेखंता जलनिधी विषे । एक काष्ट वहतो आइजी ॥ ग्रह्यो तेहने प्रधानजी । यह होसी मुजने सहाइ ॥ सुज्ञ ॥ ५ ॥ जेष्टिकां ग्रही नौका थकी । ते काष्टे आरुढ थयाइ जी ॥ जहाज ने टेकी लकडीने । बहू जोर से धक्का दिधाइ ॥ सु० ॥ ६ ॥ कोसधकोस तेहथी गया । आगे कपाट ते संथभ्याइ जी ॥ धक्का देवण आश्रय नहीं । जल कलोले रह्या घूमाइ ॥ सु० ॥ ७ ॥ जल काटत ते जेष्टि थी । धीरे २ आगल चाल्याइजी ॥ करपद थक्या इम हालता । पाछी झकोल घेरी लेजाइ ॥ सु० ॥ ८ ॥ उर्ध अधो थावा लाग्या । ततले बृद्ध जलचर आइजी । लेगयो पटिया पातलमें । प्रधान रह्या देखतांइ॥सु०॥९॥निराधार हुवा सोमजी।भुजथी सिन्धू तरिण लगाइजी ॥थाकी ने अशक्त हुवा।तब निरास सुस्ता रहाइ ॥सु० ॥१०॥ उछली आय झकोल

थी । तने पृथ्वी फरस लगाइजी ॥ उठ शिघ्र आया वाहीरे । ओल तोय गया भराइ ॥ ॥ सु० ॥ ११ ॥ उंधा लटक्या द्रुम ने । नीर सहू नीताऱ्याइजी ॥ उतरी सुग्वाया वस्त्रने संतोष ते मन ने लाइ ॥ सु० ॥ १२ ॥ अवतार नवे जानें आवीया । रवी उष्णथी शीत भगाइजी ॥ धैर्य धरी चल आवीया । एक टूकडा पुरने मांइ ॥ सु० ॥ १३ ॥ सुवर्ण मुद्राथी कर विषे । वेची नाणो तास बणाइ जी ॥ भोजन वस्त्र तेहथी लिया । द्रव्य तिहां सर्व थाइ ॥ सु० ॥ १४ ॥ ❁ ॥ इन्द्रविजय ॥ लाज रखे केइ काज करे । मोटा जो बजे बहु आदर दइया ॥ मिल परिवार बणे के हजार । नारी धरे प्यार लेत बलइया ॥ सवदेश प्रदेश रहे कीर्ती हमेश । दिन में केइ वेश रु माल चरइया ॥ कहे अमोल रहे वर बोल । बणे सुर ताल जो गांठ रुपइया ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ ग्राम बाहिर सराय में । रह्या मंत्रीसर आइजी ॥ तव आया एक प्रदेशीया । ते सेंदासा देखाइ ॥ सु० ॥ १५ ॥ पेछाणीं अनुमानथी । दोनों का हीया हुलस्याइजी ॥ अहो बुद्धि सागर मंत्रीश्वरु । आप किहांथी आया ए ठाइ ॥ सु ॥ १६ ॥ ते कहे हूं भरतपूर थकी । जिण दिन विजयपूर आयाइ जी ॥ अशुभोदय तिणही निशी। वैरी धाडा आय डाल्याइ ॥ सु ॥ १७॥ प्रात जोया विजय पुर विषे । राय राणी मुज न पायाइजी ॥ चिन्त्यो जावु किम स्वामी

कने । साथ विण लीधां वाइ ॥ सु ॥ १८ ॥ इम चिन्ती निकल्यो हूं जोववा । जोवतो आयो इण ठाइजी । आप किहांथी पधारीया । किहां राय राणी दो वसाइ ॥ स ॥१९॥ सोमचन्द्र निज वीती चरी । आदि अन्त दोगे संभलाइजी ॥ आयुबले रह्यो जीवतो । पुण्य वले हुवा आप सहाइ ॥ सु ॥ २० ॥ हिवे दोनों मिल सोभसा । चन्द्रसेण लीलावती तांइजी ॥ रेवती तारा अर्धनी । ए ढाल अमोलख गाइ ॥ सुं ॥ २१ ॥ ❀ ॥

॥ दुहा ॥ सुखे सूता दोनों तिहां । दूजे दिन प्रभात ॥ राय दम्पती ढूंढवा । दोनों चल्या संघात ॥ १ ॥ मोटी अटवी में पड्या । एकेक को आधार ॥ बुद्धि विनोद धर्म चरी । करता करे प्रसार ॥ २ ॥ रुदन सुणि विस्मय हुइ । आया तिहां वृद्ध जोय । द्रढ वन्धन से वांधीयो । वृक्षे लटके सोय ॥ ३ ॥ करुणा व्यापी छोडीयो । दीनो खानने पान ॥ साथे लेइ तेहने । आगे कियो प्रयान ॥ ४ ॥ पूछ्याथी ते वृद्ध कहे । कर्मोदय महाराय ॥ धाडाती मुज वान्धी गया । दीवी झोंपडी जलाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १७मी ॥ खवर नहीं है जग में पलकी ॥ यह० ॥ आगे जातां तीनों तांइ । वन मनहर आया॥ थाक्या विश्रामो लेवा कारण । वेठ्या सुखे छांया ॥ पुण्यवन्त सुखिया जग मांइ । पुण्यवंत ने पुण्यवंत मिले फले चिन्तित इच्छाइ॥आं॥१॥तिहांथी थोडेही अन्तरे।चन्द्रसेण राजा

न ॥ भील शैन्य सिखाइ सुधारे । राखी पूरो ध्यान ॥ पुण्य ॥ २ ॥ दोदशसहस्र भलि
था शूरा । दोय भाग कीना ॥ दश हजार पायदल अने । दशसहस्र ने अश्वदीना ॥ पु०
॥ ३ ॥ शमा । फोजपति बणाया । कृष्णा स्वार श्वामी ॥ मगियाजी पायदल पत बणि-
या । करवा सिद्ध कामी ॥ पु० ॥ ४ ॥ गुप्त प्रगट साकट गरुड जुद्ध । दव उठ चूकाणा
॥ इत्यादि संग्राम कलामां । हुवा णा शाणा ॥ पु० ॥ ५ ॥ पातशायजी विचक्षण प-
णाथी । सदा खबर लेता ॥ एक प्रहरनी नित्य कर कसरत । ते वक्त मिल्या थेता ॥ पु
॥ ६ ॥धूम धाम तो लागो घणेरो । धूंवो घराणो ॥ सत्घेनी नाली नर शब्दे । गुंज र-
ह्यो राणो ॥ पु० ॥ ७ ॥ तेह भयंकर नाद श्रवणकर। हेरो गिरी त्यागी ॥ सूर जंबूक आ
दि केइ स्वपद । छिप्याकेइ भागी ॥ पु० ॥ ८ ॥ अश्चर्य धर चिन्ते दो मंत्री । यह कौ-
न है राजानो । किण साथे इण महारण मांही । संग्राम मंडाणो ॥ पु० ॥ ९ ॥ ते नले
एक कुरंग तांइ । केसरी ग्रही जाइ ॥ चन्द्रसेण द्रष्टी गत होता । दिल दया आइ ॥ पु
॥ १० ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ प्राणीना रक्षणं श्रेष्टं । मृत्यू भीताही जंतवः ॥ आत्मौपम्य वि
जानाती । रिष्ट सर्वस्य जीवितं ॥ १ ॥❀॥ढाल॥ तुर्त अश्वचड सेल संबाही । सिंह लार
भागा ॥ ते तीनों के पासज होइ ॥ चल्या गया आगा ॥ पू० ॥ ११ ॥ कुंताग्रे मार्या

पशुपत ने । हिरण्यो छिटकाया ॥ दोनों जुदी २ दिश मे न्हाटा । दोनों बचाया ॥ पु०
॥ १२ ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥ हेम धेनु धरा दीनां । दातारः सुलभः भुवि ॥ दुर्लभ्य पुरुषो
लोके । यः प्राणीः अभयप्रदः ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ चन्द्रनृप ने भागा जोइ । पाछथी
रामो । अश्व दोडाइ लारे थइयो । श्वामी भक्ति कामो ॥ पु० ॥ १३ ॥ सोमचन्द्र ने रा
मो ओलखी । अश्व ने संथभायो ॥ लुली २ प्रणम्यो मंत्रीने । हर्ष उभरायो ॥ पु० ॥ १४
मंत्री ओलखी कहे रामाजी । तुम किहां इण ठामो ॥ ते कहे चन्द्र सेण महाराजा ।
कियो इहां मुकामो ॥ पु० ॥ १४ ॥ नृप नाम सुण अति आणन्दी । पूछे किहां श्वामी॥
ते कहे हिवणां गया सन्मुख थइ । औलख नहीं पामी ॥ पु० ॥ १५ ॥ रामो तुरी दो-
डाइ जाइ । दी राय ने वधाइ ॥ प्रधान साहेब नाथ पधार्या । सुणी भूप हर्षाइ ॥ पु० ॥
॥ १६ ॥ केकाण फिराइ राजा आइ । दोनो सामा धाइ ॥ नेण सेण मिल्या हृदय मे । सुद्धा
रस दुल्याइ ॥ पु० ॥ १७ ॥ दोनों पाडया राय पदांबरे । नृप तस उठाइ ॥ गाढालिंगन
देइ मिल्या । हर्षाश्रु वर्षाइ ॥ पु० ॥ १८ ॥ सहूजन आया डेरा मांइ । शैन्य सलामी
कराइ ॥ एकान्त बैठी निज २ बीती । चरी सहु सणाइ ॥ प० ॥ १९ ॥ कर्म गति की

॥ २० ॥ आदि अन्त सोम चंद्र चरितनो । चतुष्कन्ध थाइ ॥ ढाल चन्द्र कलाँ द्विभाखी ॥ अमोल पुण्य फल्याइ ॥ पु० ॥ २१ ॥ ❀ ॥ खन्ड सारांश हरीगीत ॥ मंत्री सोम कर्यो न्याय उत्तम । नृप आदी ने रीजा वीया ॥ श्वामी काज तज सुखसाज । मार्ग विसी पाविया ॥ भोपा कैंचक दुष्ट थी बच । बुद्धि सागर मिलाविया ॥ वृद्ध छोडी पुण्य प्रोढी । चन्द्र नृप ढिग रहाविया ॥ १ ॥ पल्ली में राजा भीलसाजा । मंत्री संग सुखथी रहै । महा सती लीलावती । गेंदू शैन्या पति विजयपूर सहै ॥ सदू को मिलाप पुण्य प्रताप । आगे श्रोता अमोलिक कहे ॥ गावे गवावे सुण सुणावे । तह नित्य मंगल लहे॥२

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के स्मप्रदाय के

वाल ब्रह्मचारी श्री अमोलख ऋषिजी महाराज रचित

शील महात्म प्रवन्ध चतुर्थ खण्ड समाप्तम्

॥ दुहा ॥ आदि नमु अर्हंत को । सिद्धाचार्य उपाध्याय ॥ साधू पंच प्रमेष्टि को । वंदू सीस नमाय ॥ २ ॥ पारस मणी से अति श्रेष्ट । पार्श्व नाथ भगवान ॥ भक्त वनावे आप सम । तासु नमु शुद्ध ध्यान ॥ २ ॥ पंचवृत सुमति धरा । पंचायण पंच त्याग ॥ पंचा

री पंच वंश करी । पंचमी गति दे भाग ॥ ३ ॥ अभय सत्य दत जत अममत्व । वृत
त्र प्रधान॥अधिक जानो शीला तेहमां । ताहि को यह बयान ॥ ४ ॥ ® ॥ श्लोक ॥
न्हिस्तस्य जलायते जल निधः कुल्यायते तत्क्षणा, न्मेरुः स्वल्प शिलायते मृग पतिः सद्यः
रंगायते । व्यालो माल्य गुणायते विष रसः पियूष वर्षायते । यस्यांगेऽखिल लोक वल्लभ
मं शीलं समुन्मीलति ॥ १ ॥ ® ॥ दुहा ॥ शील रक्षण सङ्कट समन । संग्राम सज्जन
लाप ॥ ये अधिकार इण खण्ड मे।वैराग्य शूरत्व विलाप ॥ ५ ॥ रस सरस फरस श्रव
। नयण वयण लेचन ॥ धार मार अपार यह । शील फील ने एन ॥ ६ ॥ विजयपूर
परी विषे । शैन्या पति सुख सेन ॥ गेंदू उभय योगी भेष में । परियटन करे दिन रेन
७ ॥ अर्ध पक्ष थयो तेहने । लक्ष निरक्ष ने मांय ॥ दक्ष चक्ष समक्ष कर । ते तव
हुली ठाय ॥ ८ ॥ पत्तो किहां लाग्यो नहीं । तव चिन्ता बहू होय ॥ राणी साहेब मि-
ग नहीं । रह्या ग्राम सहू जोय ॥ ९ ॥ ® ॥ ढाल १ ली ॥ जोबन धन पाहूणा दिन
रा ॥ यह० ॥ सुणो शैन्यपति की अकल तुम भाइ । लीलावती को पतो यों लगाइ
सुणो ॥ आ० ॥ एक दिन शैन्य पति गेंदू ने सिखाइ । मेल्यो गाम के मांइ ॥ कोइ
जा को नोकर भोलाइ । लावो इहां बुलाइ ॥ सुणो ॥ १ ॥ चिमटो खप्पर हाथ में लेइ

। चाल्यो अलख जगाइ ॥ राज मेहल के मांहे एकान्त । बेठो धुणी लगाइ ॥ सुणो ॥
॥ २ ॥ ले तले दुसुख रसोइयो । विप्र दंडवत कर्यो आइ ॥ आशीर्वाद दे गेंदू बोले ।
तुमतो गरीब दिख्यो भाइ ॥ सुणो ॥ ३ ॥ हमारे गुरुजी बडे करामाती । देते क्षिण में
दुःख गमाइ ॥ कीमीया भी केइ जानते हेंगे । देते वस्तु चहाइ ॥ सुणो ॥ ४ ॥ करामा
त हे मोटी जक्त में । सब को इसकी इच्छाइ ॥ बडे २ पडे इस झगडे में । नशीब जेसे
फल पाइ ॥ सुणो ॥ ५ ॥ इम अनेक तरह तस भरमांइ । संगले गुरु कने आइ पष्टांग
दंडवत कीनो । पूछी सुख शाताइ ॥ सुणो ॥ ६ शैन्य पति जोगी कहे हम सुखी हे । दु-
निया के फन्द छिटकाइ ॥ तुम्हारे जेसे भक्त जनों पर । होती हे गुरु कृपाइ ॥ सुणो ॥
॥ ७ ॥ लोभ अनेक दिया तिण तांइ । मोटा हे जग में आराइ ॥ गंभीरता तस देख्य
ण काजे । नवी २ बात सुणाइ ॥ सुणो ॥ ८ ॥ गेहरो साचो प्रतीत दार चातुर । वचन
न बदले कदाइ ॥ इत्यादि गुण देखी तेहमां । एकदा सत्य जणाइ ॥ सुणो ॥ ९ ॥ हम
तो नहीं हे जोगी भाइ । बने हें रातीके सहाइ ॥ तुमभी सहायक होवो तो । सुखी
हो घटाओ पुण्याइ ॥ सुणो ॥ १० ॥ लीलावती का पत्ता लगाणा । रुखी करणी तिण
तांइ ॥ विप्र कहे मुज शाक्ति जो भक्ति । चूकस्यूं नहीं हूं कदाइ ॥ सुणो ॥ ११ ॥ शैन्य

पातिं कहे विचार दुः मुखका । सुणो सो दो हमने जणाइ ॥ ते कहे ठीक करस्यू इम गु
स हूं । भेद न जाण न पाइ ॥ सुणो ॥ १२ ॥ इम कही निजस्थान विविध आ । रसोइ
ताजी बनाइ ॥ तब मुख कहे थाल परुसी । लेजा मेहल के मांइ ॥ सुणो ॥ १३ ॥ मां
गे सो तस खावा दीजे । अच्छी २ अग्रह कराइ ॥ और कछू वातज नहीं करनी । विप्र
सुनी हर्षाइ ॥ सुणो ॥ १४ ॥ ते कांसो तैयार कर चाल्यो । साथे दियो दूजो सिपाइ ॥
विप्र मेहल में देखी सती दुःख में । करुणाथ की हीयो भराइ ॥ सुणो ॥ १५ ॥ मनवा
र करतो कहे विप्र । निश्चिन्त जीमो तुम बाइ ॥ थाणा मन मान्या सहू होसी । थोडा
दिनरे मांइ ॥ सुणो ॥ १६ ॥ भातो अण थोडो खा सती । दीवी थाली सरकाइ ॥ लेइ
विप्र शिघ्र आयो रसोडे । शिघ्र सहू काम निपटाइ ॥ सुणो ॥ १७ ॥ शैन्या पती पासे
आइ दाखे । आज लीलावती बाइ । दुमुख गुस रखी हे मेहल में । में आयो हिवणा जि
माइ ॥ सुणो ॥ १८ ॥ गेंदू ने दासी को रुप बनाइ । भेज्यो तस लराइ । मेहल बतावो
अबी इणने। जिणमे महाराणी छिपाइ ॥ सुणो ॥ १९ ॥ वामण गुस मार्ग ला तिणने ।
दीनो मेहल बताइ ॥ बंदोंवस्त पुक्त जावा न पायो । कियो शैन्या पती ने तांइ ॥ सुणो
॥ २० ॥ सुण शैन्यापति हर्षाया । अब करस्यां उपाव साराइ ॥ प्रथम ढाल ए पंचम खं

डकी । अमोलख ऋषि गाई ॥ सुणो ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ दुःमुख हर्षित होयने । किया स्नान सिणगार ॥ बीदराजा सागे बण्या । वरण लीलावती प्यार ॥ १ ॥ किण वे-ला रवी आथ में । जावु मनावुं तास ॥ दुष्ट ध्यान इम ध्यावतो । ऊभो मेहल ने पास ॥ २ ॥ लीलावती सती तदा । सोग सागररे मांय॥ पूर्व पश्चात विचार का । रही है गो- । लगाय ॥ ३ ॥ हिवे हूं पर वश थइ । पडी दूष्टोरे वश आय । अन्याइ ए पापीया । किण विध मानसी वाय ॥ ४ ॥ ऐसा महा संकट समय । शरण श्री जिन राज ॥ रक्षा कीजो माहारी । रखीयो महारी लाज ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ जी ॥ विणजारी ॥ सखी प णिया भरन कैसे जाना ॥ यह० ॥ तुन सुनियो वात हमारी । नहीं करना विगर विचा री ॥ आं ॥ दूःमुख मेहलमें आया । लीलावती ने सोच भराया जी । ऊभी नीची द्रष्टी धारी ॥ नहीं ॥ १ ॥ दुःमुख कहे मुज ने पहचानो । कनक पुर नरेश्वर मुज जाणोजी । जरा निरखोनी इण वारी ॥ नहीं ॥ २ ॥ तव सती धैर्य धर भाखे । पर नर म्हारे शी साखे जी ॥ नहीं ओलख म्हारे तुम्हारी ॥ नहीं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ सती तात भ्रात पुत्र पती । तज नर बीजा सात ॥ भरी निजर जोवे नहीं । तो ओलख की शी वात ॥ ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ कहे दुःमुख में भरत पूर आया । ते भूल्या तुम दिन घणा थायाजी

॥ भलां खुशी छे तबीयत थारी ॥ नहीं ॥ ४ ॥ मनच्चिंतित तुम सुख पासो । मोटे पुण्य थी मिल्यो यह वासो जी । तजी फिकर हर्ष लो धारी ॥ नहीं ॥ ५ ॥पुण्ये चिन्ता मणी कर आवे । ते सुज्ञता नही छिटकावे जी । क्यों के सुख नी सहूने इच्छा री ॥ नहीं ॥ ६ ॥ केइ स्त्री जाणे छे एहवो । महारा पती गुणे मिष्ठ मेवो जी । नही तिण सम अन्य दूजारी॥नही ॥ ७ ॥ पण जो ते खोटो होवे । पाछे तेहथी मन नही मोहवेजी । कहो सच्ची बात यह महारी॥ नही ॥ ८ ॥ होणहार जो हूवो । अव म्हारा सन्मुख जुवो जी । नही लावो जरा शंका री ॥ ९ ॥ तव लीलावती यों दर्शावे ।तुम बोली समज में न आवे जी । कांइ बात थे रह्या उचारी ॥ नही ॥ १० ॥ दु:मुख कहे मुज मन की थां जाणा । पण छिपावो शरम मन आणी जी । तुम चेरो फूल्यो ज्यो गुल क्यारी ॥ नहीं ॥ ११ ॥ में कामाग्नि थी बल तो । प्रिय तुजसंजोगे तल मल तो जी ।सीचो आलिंगन रूपी वारी ॥ नहीं ॥ १२ ॥ लीलावती दावी रीस तांइ । कहे इम बोलणो युक्तो नाहीं जी । तुम छो माणस मोटा री ॥ नही ॥ १३ ॥ तेथी मोटी बुद्धी राखो । खरी खोटी विचारी भाखो जी ॥ परस्त्री ने किम कहो प्यारी ॥ नही ॥ १४ ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥ आत्म वत्सर्व भूतेषु । पर द्रव्येषु लोष्ट वत् ॥ मातृवत् पर दारेषु । यःपश्यती पंडिताः ॥ १ ॥ ❁ ॥ दुमुख

गर्भ में भराइ।बोलें मूछे ताव लगाइ जी। कोण दूजो होड करे ह्मारी. ॥ नही ॥ १५ ॥ महारो प्राक्रम जरा देखो। यो राज क्षिणमे लियो पेखो जी। दिया चन्द्र नृप ने भगरी ॥ न ॥ १६ ॥ तब लीलावती कहे सुणिये। स्वगुण स्वमुख नवि थुणिये जी ॥ इम होवे नहीं गुण धारी ॥ न ॥ १७ ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥ संपूर्ण कुंभो न करोती शब्दं । अर्धो घटो घोष मुपैति न्युनं ॥ गुणी नराणं नकरो गर्भ । गुणा विहूणा वहू वद यन्ती ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ काग हंस की जोडि न आवे। निर्गुणी घणा फुलावे जी ॥ यह प्रत्यक्ष दीसे यहां री ॥नही ॥ १८ ॥ तेइ कृत्घनी होइ । न्हाखे तस्कर जिम धाडोइजी । ते प्राक्रमी न लगारी ॥ नहीं ॥ १९ ॥ चोर जार अंते दुःख पावे। ढाल युग्ग सती दर्शावे जी ॥ कहे अमोल्य धन्य सत्य धारी ॥ नहीं ॥ २० ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ शैन्यपती अवसर लखी। कागद लिखिया दोय ॥ कहे गेंदू से शिघ्र जा। अवसर साध ए जोय ॥ १ ॥ एक दीजे लीलवती भणी। एक कंख रथ नृप हाथ ॥ दूत रुप धारी जवो ॥ ओलखे न को जात ॥ २ ॥ गेंदु झट सावध हुइ। दूत नो रुप बणाय ॥ दोनो पत्र ले चालीयो । सती ने गेह ढिंग आय ॥ ३ ॥ दुःमुख औलख्यो स्वरथी । ततक्षिण तिहां थी चाल ॥ आयो कंखरथ मेहल में । को न

सकिये पाल ॥ ४ ॥ नृप सन्मुख ते पत्र धर । अण बोल्यो फिर्यो झट ॥ लीला
वती ना मेहल ढिग । आवी ऊभो पट ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ३ री ॥ प्रभू त्रिभुन तिलो
जी ॥ यह० ॥ कपटी मित्र चरित्र श्रोता सांभलोजी ॥ कपटी झूठा ना सिरदार ।न मेले
अमोलजी ॥ आं ॥ राय कागद खोल वांचीयोजी । तात्क्षिण पाया भेद ॥ दुमुख घर ली
लावती । मिलवा की उपनी उम्मेद ॥ श्रोता ॥ १ ॥ ॐ ॥ पत्र में का श्लोक ॥ नृपश्च
कांक्षा इन्दू अर्धङ्ग । । त्व मित्र दुमुख गृहः गुप्त स्थान ॥ ते मित्र वंचक वर मिष्ट भाषी ।
सावध २ अहो कंखरथ ॥ १ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ तात्क्षिण सेवक बुलायनेजी । मेल्यो दुमुख
के घेर ॥ अबी लावो बोलायने जी । क्षिण मत करजो देर ॥ श्रोता ॥ २ ॥ उत्तर देता
दुमुख सतीनै । जित्ते भट ते आय ॥ हाक मारी कहे चालीये जी । राजा साहेब बुलाय
॥ श्रोता ॥ ३ ॥ दुमुख कहे चल आवूछूं जी । ते कहे चालो संग ॥ राज उतावल की
घणी । कह्यो निद्रा करवा भंग ॥ श्रो ॥ ४ ॥ सती भणी दुःमुख स्हे । हूं हीवणा आवूं
जाय ॥ इम कही गया राय भवन में जी । गेंदू अवसर पाय ॥ श्रो ॥ ५ ॥ पहरादार रों
क्या कहे । राय कंखरथ भेजो मुझ ॥ पत्र देइ अबी जावस्यूं । रोक्या कमबक्ती तुज ॥
॥ श्रो ॥ ६ ॥ ते चुप रह्यो गेंदू गयो जी । जा लीलावती डर पाय । पापी पाछो आयो

श्रेस । पण दूजो कोइ जाणाय ॥ श्रो ॥ ७ ॥ कागद भर कहे बांचजो जी । पाछो फिर्यो
तत्काल ॥ सेन्यापति पास आय ने जी । किया सघलाही हाल ॥ श्रो ॥ ८ ॥ गेनू गया
लीलावतीजी।सहू मेहल का जडिया कपाट ॥ सूती एकान्त जागने जी । मनमें भरती औ-
च्याट ॥ श्रो ॥ ९ ॥ कुसुम्ब आया वेगने जी । राय दियो सन्मान ॥ पास वेसाइ पूछे रि-
त थी । साचो कीजो बखान ॥ श्रो ॥ १० ॥ तुम कह्यो । सुखसेन ने जी नहाकम्य-
तैव के मांय ॥ तब तिहांथी भागी गयो । बीजो शत्रू पायो नाश ॥ श्रो ॥ ११ ॥ लीला
पती किमां गइ जी । में सुणगां छे नृप गेह ॥ कुंःसुम्ब तब इम कहे जी । आपथी गुप्त क-
छ केह ॥ श्रो ॥ १२ ॥ सोगन महाराज आपका जी । पत्तो नहीं लाग्यो तारा ॥ मोक-
ल्या भट फिर आवीयाजी । कोभी घणी तणारा ॥ श्रोता ॥ १३ ॥ धनरावी कंवरथ कहे
जी । आज हुवा में निरासा ॥ मेनथ सहू निष्फल हुइ । इम कही नहाकणो निश्वास ॥ श्रो
॥ १४ ॥ कुःसुम्ब कहज धनरावीये जी । आपको महा पुण्यवन्त ॥ पकडी संगातु तातनी
। करस्यूं लीलावती कन्त ॥ श्रो ॥ १५ ॥ इम गप्पा मारी करीजी। खुशी करी नृप तांय ॥
आज्ञा ले शिघ्र आवीयोजी । लीलावती मेहल मांय ॥ श्रो ॥ १६ ॥ पड्ड लग्या भाली क-
री जी । पुकार पट टपकार ॥ पाछो उत्तर नहीं मिल्याजी । चिन्ता व्यापी अपार ॥ श्रो

॥ १७ ॥ निरास होइ आयो घरेजी । सूतो ते सुख सेज ॥ निद्रातो आवे नहीं जी । उष्ण अंग हुवो तेज ॥ श्रो ॥ १८ ॥ काम ज्वर अंग व्यापीयोजी । न्हाखे उंडा निश्वास ॥ गाली देव रायजीने । बोलावी भांगी आस ॥ श्रो ॥ १९ ॥ पछी घणी लीलावती जी । सूती पट लगाय ॥ फजर चोकस करस्यूं सही जी।न्हांखु कपाट तोडाय ॥ श्रोता ॥ २० ॥ इत्यादि विचार में जी । निद्रिस्थ थैया तेह॥आद्यढाल अमोलख भाखी।वक्ते बुद्धी सुखदेह॥ श्रो॥२१॥*॥दुहा॥दुमुख गया पछे।कंखरथ करे विचार॥दुमुख कपट मुजथी करे।छिपाइ लीली नार ॥ १ ॥ गोरी नारी थी कहे।करो एक तुम काम ॥ प्राते कोइ मिस करी । जावा सचीव के धाम ॥ २ ॥ ललिावती चन्द्र नी प्रिया । लाया तेह उडाय ॥ पतो तास लगावजो । राखी किहां छिपाय ॥ ३ ॥ कोइ उपाय समजायने । जो तस करे मुज वश ॥ तो तुज पटराणी करुं । स्वेछा रहो अहो निश ॥ ४ ॥ गोरी कहे करस्यूं सहू । आप हुकम प्रमाण ॥ बचन रचन पक्का करी । सूता सहू निज स्थान ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ४ थी ॥ मत ताको हो नार विराणी ॥ यह० ॥ चन्द्र सखी जब गइ विदेह में । दिनकर जोत प्रकटाणी ॥ ऊठ लीलावती करी समायिक । चित कर एकण स्थानी । जे दोनो भवे सुखदानी ॥ सुणो श्रोता दुष्ट सेनाणी ॥ आं ॥ १ ॥ गाथा ॥ दिवस २ लक्खं । दइ सुवण

स्सं खान्डियं एगो ॥ इयारो पुण सामाइयं । कोवी न पहू पए तस्स ॥ १ ॥ सामाइयं कु-
णतो सम भावं । सावउ अ घडीय दुग्गं ॥ आउ सुरस्स बन्धइ । इति अमिताइ पालिया
इं ॥ २ ॥ बाणवकोडीओ । लक्खगुणसाठि सहस्स पणवीस ॥ नवसय पणवीस । सतह अ-
ड भाग पालेयस्स ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ स्मरण सज्झाय प्रति क्रमणादि । कियो तदा
धर्म ध्यानी ॥ समायिक पारीने चिन्ते । राखी पत्र दियो आनी । किस्यो लिखीयो ते
म्यानी ॥ सुणो ॥ २ ॥ खिडकी खोली पाछली मेहल की । जोइ चारों कानी ॥ कोइ
नर निजरे नहीं आयो । तब ते पत्र खोलानीं ।बांचे बुद्धि लगानी ॥ ३ ॥ पत्र – श्लोक॥
यदि मिच्छतो सुखं त्वमातं । व्याधी वन्त भव तुमः ॥ विलम्ब न कुरुते दक्ष । सुखे हे-
तवः कथंतीमी ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ बांच पत्र अश्चर्य अति पामी । ए लिखे बनो गि
ल्यानी ॥ मातु शब्द थी दीसे आपणो । पण बोल्यो नहीं बानी।कारण किस्यो जावे पिछा
नी ॥ सुणो ॥ ४ ॥ इम विचार में बैठी सती तिहा । देखी पहरा वाला नी । तात्क्षिण
दुमुख ने कह्यो आइ । ते तब चित हर्षानी । कहे कर काम शिघ्रानी ॥ सुणो ॥ ५ ॥
पट खिडकी को न्हाख तूं तोडी । उपाव कोइ लगानी । फिर हरकत नहीं होसी जावा
की । करस्या फिर मन मानी ॥ झट दोड्यो तात्क्षिणानी ॥ सुणो ॥ ६ ॥ गुप चुप आइ

चडीयो भींत पर । कमाड धर्यो मचकानी । सुण भडको लीलावती डरपी ।ले कपाट लगा
नी । खेंची तस कडी सानी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ कुंदा में फसी करांगुली । खेंचंता चकदार्णी
॥ कमाड छूट्यो पाट्यो भाग्यो । जोइ सती पस्ताणी ! उपाय किधो दुष्टानी ॥ सुणो ॥
॥ ८ ॥ झणणाट व्यापी अंगुली में । सूती एकान्त जानी ॥ सूजी चटका मेलण लागी
। ताप गयो अंग भरानी । मांदी पडी साचानी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ झट चट भोजन थाल
सजीने । दुमुख हुकम प्रमानी । आयो मार्ग पायो नहीं पेसण । तव संतरी कहे वानी ।को
इ जाइ पाछानी ॥ सुणो ॥ १० ॥ टुटी वारी के मार्गे होइ । जावो खोलो पटानी । ति-
महीं जाइ पट खोलीया । झट आयो मायानी । लीलावती सूती दिखानी ॥ सुणो ॥ ११
॥ चिन्ते ढोंग के साची मांदी । कहे उठो महाराणी । जीमीलो ए भोजन लायो । तव
सती कहे तानी । क्षुधा नहीं मुज ने लगानी ॥ सुणो ॥ १२ ॥ ताप शक्त आयो भाइ
मुजने । पटे अंगुली चबदानी ॥ विबुद्ध कहे भावेसो जीमी । पीवो थोडो सो पानी ।
सुख पासो जीवानी ॥ सुणो ॥ १३ ॥ भलां भाइ तुज कियां थी खावुं । जीमण लगी
बात मानी । पण गले ग्रास नहीं उतरे । उतारे घुटके पाणी । वदन गयो दुःखथी कुम-
लानी ॥ सुणो ॥ १४ ॥ थोडो खाइ थाल सरकाइ । पडी विछोना म्यानी ॥ ले विप्र ग-

यो बोलण न पायो । साथे थो अन्य प्राणी । साची मांदी पहचानी ॥ सु० ॥ १५ ॥
दुःमुख से पूछे आ कुरुदत्त । कहो जी निशानी कहानी ॥ दुमुख कहे ते तो जबर दगा
बाज । सूती पट लगानी ।बोलाइ हुयो हैरानी ॥ सु० ॥ १६ ॥ आज फजर खिडकी खे
ल ऊभी थी । ते पट न्हख्यो तोडानी ॥ अब जावण की हरकत नाहीं । जास्यूं आज
निशानी । मनास्युं लालच मीठी वानी ॥ सु० ॥ १७ ॥ नहीं तो फिर बलत्कार करीने
। करस्यूं मे मन मानी ॥ यह निश्चय लियो ठानी ॥ सु० ॥ १८ ॥ करनो किस्यो राजा
लार पडीयो । पूछ्यो थे राते बुलानी । अटम सटम थी समजायो । अब करनी तस्य
हानी । वनु में राजा वा रानी ॥ सुणो ॥ १९ ॥ तुम ने अब प्रधान बनावुं । देर नहीं है
दिनानी ॥ कुरुदत्त खुशी हो केवे।करो शिघ्र मेहरवानी ।.जावुं हू म्हारे ठिकानी ॥ सु० ॥
॥ २० ॥ दुमुख लीलावती वश करवा । चिन्तवे केइ तारानी ॥ पंचम ढाल रसाल
श्रोता । अमोल ऋषि से गवांनी ॥ सती ने शील सुख दानी ॥ सुणो ॥ २१ ॥ ❁ ।
॥ दुहा ॥ भींतान्तर ते विप्र रही । सांभली सघली बात ॥ काम सर्व समेटने । शै
न्यपती ढिग आत ॥ १ ॥ कही बात सहू मांडने । आज यामनी मांय ॥ दुष्ट दूमु-
ख सती परे । करसे महा अन्याय ॥ २ ॥ लीलावती विमार छे । हूं देखी आयो नेण॥

बीजो नर साथे हतो । बोली न सकीयो वेण ॥ ३ ॥ करनो हो सो कीजीये । हे जी आ
ज को काम ॥ सती का सहायक होय के । राखो कोइ तरह माम ॥ ४ ॥ तम व्याप्या
तीनो जना । रुप वदल तात्क्षिण ॥ लीलावती का मेह ढिग । ऊभा आ प्रछन ॥ ५ ॥
॥ ❀ ॥ ढाल ६ ठी ॥ नागजी सूतो खुंटी ताणरे ॥ य० ॥ भाइजी संध्या समय लीला
वती तणो जी कांइ । उतर्यों तन थी बुखाररे भाइजी ॥ बैठी हुइ सती तदाजी कांइ ।
मन में करती विचाररे ॥ भाइजी ॥ १ ॥ नाथजी सुणियो म्हारी पुकाररे श्वामी । मैं अ
पराध किस्यो किया हो नाथजी ॥ नाथजी संकट आवे वार वाररे प्रभू । नवा २ अण
चिन्तिया हो ना० ॥ २ ॥ ना० दुष्ठ मुज लारे पड्यारे प्रभू । अधार एक दीसे नहीं हो
॥ ना० ॥ ना० अब रहसे किम शील हो प्रभू । प्राण इहां जास सही हो ना० ॥ ३ ॥
ना० नेण झरे तस नीररे भाइ । क्षिण २ जोवे द्वारने हो ना० ॥ ना० अवी आवसी दु-
ष्टरे कांइ । नहीं करसी को विचार ने हो ना० ॥ ४ ॥ भा० दुमुख जी ते वाररे भाइ ।
सज सिणगार बनडा बण्या हो भाइजी । भाइजी आया लीलावती मेहलरे कांइ । हर्षित
हीये मन मण्या हो भा० ॥ ५ ॥ भा० सती देख धस्कायरे कांइ । थर २ अंग धूजण
लग्यो हो भाइ ॥ भा० तात्क्षिण ऊभी होय जी कांइ । व्रत भंग डर मन में जग्यो हो ॥

भा० ॥ ६ ॥ भा० दूमुख पकडण पग भरे । तब कहे सती खबर दाररे भा० ॥ भा० नेडो मुज आजे मतीर भाइ । बोलजे बचन विचाररे भा० ॥ ७ ॥ भा० सती को छल किया थकारे भाइ । सुखिया न हुवा कोयरे भा० ॥ भा० चित स्थिर ने सांभलोरे भाइ । कहूं द्रष्टांत में सोयरे भा० ॥ ८ ॥ भा० त्रिखन्ड केरो राजवी कांइ । रावण लङ्का को धणी हो भा० ॥ भा० सीता को छल किया थकारे कांइ । तास फजीती हुइ घणी हो भा० ॥ ९ ॥ भा० कौरव वंश को क्षय हुवो जी कांइ । कीचक खोया प्राण हो भा० ॥ भा० पद्मोतर स्त्री बण्याजी कांइ।द्रोपदी छल प्रमाण हो भा० ॥ १० ॥ भा० मणीरथ मे ण रया कारणे जी कांइ । भाइ की लूंटी जान हो भा० ॥ भा० सर्प डस्यो नर्के गये- इण पाप के एलाण हो भा० ॥ ११ ॥ भा० अन्य मत में पन भाखीया जी कांइ । गौ तम ऋषि की अहल्या थकी हो भा० ॥ भा० इन्द्रने भगेंद्र भयाजी कांइ । चन्द्रे कलंक लाग्यो नकी हो भा० ॥ १२ ॥ महेश लिंग पतन भयाजी । ब्रह्मा को पंचानन नाश हो भा० ॥ भा० इम घणा दुःखिया भया जी भाइ । तिणथी मत आ पास हो भा० ॥१३ ॥ दुमुख कहे नरमायरे प्रिय । आंपा दोनों खुशी भयारे कामणी ॥ कामणी तो सबी वे ठारे यारे प्रिय । दुःख देवा समर्थ को रयारे ॥ का० ॥ १४ ॥ का० दुःख होसी तो स

हस्यूं सहूरे प्रिय । डरुं नहीं तिणथी लगाररे ॥ का ॥ कृपा करी मुझ ऊपरे री प्रिय । गाडा।लिंगी कर प्याररे का ॥ १५ ॥ का० मुज वैभव तूं देखरे प्रिय । एकदा अर्पि प्राणरे ॥ का० ॥ १६ ॥ का० कायर कपटी दारिद्रीरे प्रिय । चंन्धानी तज आसरे का० ॥का० शूर बुद्धि वन्त ने प्राक्रमीरे प्रिय । जो मुज सरीखा विलासरे ॥ १७ ॥ का० पति नि- ·दा श्रवण सुणीरे भाइ । सती अंग ऊठी झालरे भा० ॥ दुष्टरे दगा बाज धाडेतीयार । तूं क्यों दे नाथ ने गालरे दुष्ट तूं ॥ १८ ॥ दुष्टरे मुज नाथ ना चरण रजकीरे तूं । करी न सके होडरे दुष्ट तूं ॥ दुष्टर कालो मुख कर जा अवेरे दुष्ट । जाणी में थारी खोडरे दुष्ट तूं ॥ १९ ॥ भाइजी दुमुख धडधडी बोलीयोजी कांइ । तूं भरी गुमानरे मायरे का० ॥ का० चंन्धार्थी हलको गिने मुजे । गुड खल सम जाने श्वानरे का० ॥ २० ॥ का० मो- ची तणा जे देवरे। ते पूजा इच्छे जुता तणीरे का० ॥ इम तूं न समजे मीठासथी । अव बलत्कार की आवणीरे का ॥ २१ ॥ भा० इम कही पकडण जायरे । तव लीलावती रो- से भरीरे भा० ॥ भा० मुजथी रहीये दूररे इम कही पछा पग रही भरीरे का० ॥ २२ ॥ भा० जिनेश्वर है मुज सहायरे । कांइ तुज दुष्ट को अन्त लावसीरे भा० ॥ जो सुख इच्छे तो घर जावरे । नहीं तो पाछे घणो पस्तावसीरे भा० ॥ २३ ॥ भा० ते पापी समजे नहीं

जी कांइ । कर धर्यां आइ सती तणोरे भा० ॥ भा० सती पुकार करी तदाजी कांइ । र-
क्षो नाथ हूवो घणोरे नाथजी ॥ २४ ॥ भाइजी सत्य को रक्षक सत्यरे कांइ । अणी पर
होवे सहीरे भा० ॥ भाइजी ते लेवो आगे सुणरे भाइ । अमोल ढाल षष्ठी कहीरे भाइजी
॥ २५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ शैन्यापाति क्रोधे भर्यो । गेंदूने आदेश ॥ देय कर कमबक्ती दु-
ष्ट की । पाछे श्वास न लेय ॥ १॥गेंदू दोडी तत्क्षिणे । जोरे सोंठो जमाय ॥ धस्काइ ध
धरणी ढल्यो । दीनों मुख दबाय ॥ २ ॥ पाद सुष्ठ लाठी करी । मारदी बे शुस्मार ॥
दया धरी सती वदे । अहो मुज सत्य रक्षवार ॥ ३ ॥ दया धरी छोडी देवो । न करो
मानव घात ॥ तत्क्षिण मारनो बन्धकर ॥ कर पद भेगा बन्धात॥ ४ ॥मुख मांहे वस्त्र भ-
री । छत्त कडी लटकाय ॥ लीलावतों ने लेयने । आया जिण दिश जाय ॥ ५ ॥ सती
ओलखी दोनों ने । आनन्द पाइ अपार ॥ शैन्यपती कहे विलम्ब को । अवसर नहीं ल-
गार॥ ६ ॥अश्वे सती ने वेठाय ने । भर्तपूर मार्ग जाय ॥ हिवे दूमुख कंखरथ की । कथा
सुणो चित लाय ॥ ७ ॥ ढाल ७ मी ॥ निंदक तूं मति मरजेरे ॥ यह ॥ शाणा सांभली
लीजोरे । कपटी झूटा होय ॥ शा० ॥ आं । कंखरथ नी राखी पत्नी । गोरी नारी प्रभा
त ॥ राय हुकम ने याद करी । दूमुख के मेहल आत ॥ शा ॥ १ ॥ चौदिश फिरती जो-

वतीजी । लीलावती न देखाय ॥ तब तिहां ठसको सुणीने । उंची द्रष्टी लगाय ॥ शा ॥
॥ २ ॥ बन्ध्यो दुमुख अवलोकनेजा । औलख्यो मुखडो जोय ॥ जाण्यो फल व्यभिचार
को । ते हिवडे हर्षित होय ॥ शा ॥ ३ ॥ वस्त्र मुखथी कहाडीयोजी । दूमुख जोइ ते वा-
र ॥ शरमायो मन में घणा । मिष्ट धीरो करे उचार ॥ शा ॥ ४ ॥ अहा बाइ देखो कि-
स्योजी । तस्कर बांध्यो मोय ॥ शिघ्र छोडावो मुज भणी । ज्यों जीव सुख में होय ॥ शा
॥ ५ शरम लाइ राजा तणीजी । ग्रन्थी छोडण जाय ॥ छूट न कोइ उपाय थीजी । त-
ब ते छुरी ले आय ॥ शा ॥ ६ काटी गांठ नीचे पड्यो जी । छोड्या बन्धन ताम । अंग
सहू अकडावियो । गांठ पडी अंग तमाम ॥ शा ॥ ७ ॥ नोकर ने भोलाय ने जी । गोरी
गइ निज स्थान ॥ चिन्ते धन्य लीलावतीजी । खन्ड्यो दुर्जन मान ॥ शा ॥ ८ ॥ दुमुख
तेल मशाल वियोजी । केइ लगाया लेप ॥ सिकताव आदि करी जी । खुल्यो अंग रह्यो
चेप ॥ शा ॥ ९ ॥ लकडी नो सारो ग्रही जी । आयो राजा पास ॥ विस्मय पाइ पूछे रा-
जा॥ किम हूवो तन नाश ॥ शा ॥ १० ॥ दुष्ट न छोडे दुष्टताजी । कीजे क्रोड उपाय ॥
जाती स्वभाव जावे नहीं जी । जीव भलाइ जाय ॥ शा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ मनहर ॥ प्या
ज लसुन लिम्ब काज । खात मृग मद सक्कर पाज । वारी गंग चंदन टट्टाज । सुगन्धान

थायगा ॥ श्वान पुंछ षट मांस । रखे बन्ध रहे बाँकास । शूकर तज मेवा रास । गन्ध गीही खायगा ॥ खारी खेत में अनाज । मर्कट भूषण साज । निरदयी जार को राज । रेइ पस्तायगा ॥ कहे यों अमोल ऋषि । ऐसे ही जो दुष्ट शिष्य । ज्ञानादी गुण को दिया । व्यर्थ ही गमायगा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ दुमुख कहे आप सुख के काजे । करी कठिण उपचार ॥ लीलावती ने पकड मंगाइ । तेहथी तब बिमार ॥ शा ॥ १२ ॥ औषधी करण गुप्त में राखी । आप बुलायो मुज ॥ रखे उतावल काम बिगाडे । यों न कह्यो में गुज ॥ शा ॥ १३ ॥ काल राते तस समजावा । गयोथो तेने पास॥आप तणा गुणतस बताया । जगाइ तेहनी आस ॥ शा ॥ १४ ॥ तेतले दो नर चुपके आइ । द्रढ लियो मुज बान्ध ॥ मार मारी यह हाल किया मुज । लेगया तक सान्ध ॥ शा ॥ १५ ॥ गोरी जी आ छोडीयोजी । हुयो कुछ आराम ॥ सेवा में हाजर हुइ में । कियो वीतक तमाम ॥ शा ॥ ॥ १६ ॥ राय कहे ते कौणथाजी । ले गया किण ठाम ॥ दूमुख कहे ते भट चन्द्रना । जासी भरतपुर गाम ॥ शा ॥ १७ ॥ नृप कहे किम हाथे लगे तें । दाखो सुज्ञ उपाय ॥ मंत्री कहे शैन्य सजी चालो । भरत पूर महाराय ॥ शा ॥ १८ ॥ दूर रही जणाव स्यांजी । दो शत्रू हम लाय । नहीं आ संग्राम करो जी । ते देशी शिघ्र आय ॥ शा ॥ १९ ॥

नृप कहे किम आप सी जी।प्यारा पुत्र जमात ॥ दुमुख कहे तस पुत्री नहीं ते । ते प्रधान नृप थात ॥ शा ॥ २० ॥ बाप ताम बाब्रो हुइ जी । घर२ मांगे धान ॥ तिण कारण ते देशी आपने । मानी नृप ते थान ॥ शा ॥ २१ ॥ कन्क पुर थी शैन्य मंगवा । भेज्यो दूतते बार ॥ महा सेन परभारा आज्यो । भरत पुर ने वार ॥ शा ॥ २२ ॥ इहा पण ते करे सजाइ । ढाल सप्तमी मांय । कहे अमोल आगे सुणिये । सती तणो जे थाय ॥ शा ॥२३॥❀। दुहा॥ लीलावती को लेय कर । तीनों चाल्या जाय ॥ नरमी लीलावती वदे । शैन्यापाति नें तांय ॥ १ ॥ उप कार अथाग मुज पर किया । राख्यो सीलने प्राण ॥ व-के ऊरण होवसूं । अहो गेंदू गुण खाण ॥ २ ॥ हिवे खबर राजेन्द्र की । कहो वशे कि-ण ठाय ॥ शैन्यापति कहे वश मात जी । एता पुण्य हम नाय ॥ ३ ॥भरत पुर मेली आपने । जास्यां चौकस काज ॥ नैना श्रूत निश्वासले । सती वदे किम मिले राज्य ॥ ४ ॥ विश्वासे तस तीन ते । दिन आयो मध्यान॥मंडप ग्राम तने विषे । जोवे उतरवा स्थान ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ८ मी ॥ धर्म जिनेश्वर मुज हिवडे वशो ॥ यह० ॥ जुग देव वाणी कनी जाग देखी तिहां । रजा मांगे तेवार ॥ ते हर्षी कहे सुखे बिराजीये । आप ही को घरबार ॥ १ ॥ मीठा बोलारे कपटी जाणीये । धीठा तेहना जी चित ॥ अरीठा

उपर विचित्र दीसे घणा । माय कठिण कुमित ॥ मी ॥ २ ॥ ❀ ॥ अरल छंद ॥ रात देखी म राच के भोला प्राणीया । मीठा बोला धूर्त जगत में जाणीया ॥ हियडो न दीजे हाथ अजाण्या माणने । पण हां । होसी जगत में हांस के दुर्जन जाणसे ॥ १ ॥❀॥ ॥ ढाल ॥ चउ तिहां उतर्याजी भक्ष निपाइया ॥ जीम्या सहू हर्षाय ॥ वातां करतां चिंती आपस में । जुगदेव सुणे गुप्त रहाय ॥ मी ॥ ३ ॥ ते तव हर्ष्योरे ए लीलावती । कंखरथ नृप जेह चहाय ॥ इनाम देवरे जे सोंपे एहने । हूं करुं एह उपाय ॥ मी ॥ ४ ॥ चौथें पहेर ते जावण सज्ज थया । वणिक कहे अती नरमाय ॥ जीमाया विन जावा दूं नहीं । ते तव मानीजी वाय ॥ मी ॥ ५ ॥ नशा तणो तस अहार जिमाड्यो । सूता सहू हो अचेत ॥ अवसर जोइ वैश्य निशा विषे । जगावा हेला जी देन ॥ मी ॥ ६ ॥ उतर न देता विछोना संत तव ।अवर सती ने उठाय॥ ऊंडे भूंयारे सुलाइ जायने । ढुंढ्याथी हीं पाय ॥ मी ॥ ७ ॥ तास दूसालो ने जल लोटीयो । न्हाख्यो उकरडे जी जाय ॥ सूतो जाइ कपटी स्थान के । पिछली रयण जव रहाय ॥मी॥८॥जावण जाग्यारे तीनो जोइयो । लीलावती न देखाय ॥ जाग्यो वडी नीत गइ अबी आवसी । भानू इम प्रगटाय ॥ मी ॥ ९ फिरिया गाम में चौकस की घणी । नहीं मिल्या हुवा उदास ॥ जुगदेव

पूछेरे किम दुःख तुम धरो । कह्यो तव वीत्यो प्रकार ॥ मी ॥ १० निश्वास न्हाग्वी ते कहे खोटो हुवो । चालो जोवाजी गाम ॥ फिरता आयाजी ते उकरडीये । कुंभ भूंसो देखी ताम ॥ मी ॥ ११ ॥ कहे शैन्याधिश शत्रू लारे पड्या । लेगया इहांथी उठाय ॥ निर्फल मेहनत सहू हुइ आपणी । गेंदू कहे किम मनाय ॥ मी ॥ १२ ॥ इहां को दुष्टी हरण किमे हुवे । जुग देव कहे सुणो राय ॥ किंचित वेम नधरो इहां तणो । झट जोवो वैम जिहां आय ॥ मी ॥ १३ ॥ ते तिहु चाल्या जी पुनः भरत पुरे । लीलावती जागी होय ॥ घोर अन्धारो जो चमकी चित्ते। गेंदु पुकारे सोय ॥ मी ॥ १४ ॥ उत्तर न मिलतां ते डरपी अति घणी । उठी फिरे भींत सहाय ॥ फिरे अथडातीजी मार्ग मिले नहीं । घबराइ चिल्लाय ॥ मी ॥ १५ ॥ दीपक लेइ जुगदेव आइयो । मीष्ट वयण बोलाय ॥ सती तस पूछे साथी किहां म्हारा । ते कहे सुण बाइ वाय ॥ मी ॥ १६ ॥ ते साथी था दुशमण तुज तणा । मारता राते तुझ ॥ मैं छोडाइ छिपाइ इहाथने । सुणी सती गइ धूज ॥ मी ॥ १७ ॥ आइ बाहिर कोइ दीठो नहीं । रोवण लागी ते वार ॥ बतावो भाइ साथी माहेश । मैं जावूं तेहनी लार ॥ मी ॥ १८ ॥ बाइ गया ते न मालम किहां । चल हूं देवुं पहोंचाय ॥ घोडो कसाइ बेठाइ उपरे । विजयपुरे लेजाय ॥ मी ॥ १९ ॥ चिन्ते चित्तमां

देइ कंवरथ ने । लेस्यु इछित इनाम ॥ अनजाने मार्ग जोव ते चली । सती मन मांहे विश्राम ॥ मी ॥ २० ॥ जे जे हो तब ते होवे सही । जोवो आगे विचार ॥ ढाल ए अ-ष्टमी जी पंचम खन्डनी । अमोल करी उचार ॥ मी ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ ते काले विजय पुर में । दुमुख कुरुदत्तने केय॥बलत्कारे यह दु.ख लियो। हाथे न आइ ते हे ॥ १ ॥ हांसी कर कुरुदत्त कहे । वहावह तुम प्राक्रम ॥ दुमुख केहरे राजा पर । क्षार न देवे श्रम ॥ २ ॥ पुनः जाइ हवे शिघ्र तूं । भरत मार्ग मांय ॥ परभारे तस सिद्दपुर । लेजा रखजे छिपाय ॥ ३ ॥ में भरमाइ रायने । भरत पूर जावू शैन्य संग ॥ तिहां पूरो कर राय ने । पूरस्यूं थारी उमंग ॥ ४ ॥ सुण हर्ष्यो कुरुदत्त मन ॥ पूर्वना नर संग लय ॥ भरत पुर मारग चालियो । लीलावती ग्रहणेय ॥ ५ ॥ भूपे दुमुख समजायने । शैन्य कराइ तैयार ॥ भरत पुर भणी चालीया । मद मता ते वार ॥ ६ ॥ ❀ ॥ढाल९मी॥ थारो गयोरे जोबन पाछो नहीं आवे ॥ यह० ॥ आगे जाता कुरुदत्त नांइ । लीलावती मिली सामे आइ ॥ देखी ने घणा हर्षावे । सुणो सुगणा आगे जे थावे ॥ १ ॥ जोइ सती थर २ कांपी । ज्यों केहर ने कुरंगी आपी । तत्क्षेण कुरुदत्त नेडो आवे ॥ सु ॥ २ ॥ लीलावती कहे जुग देव तांइ । मुज इणरे हाथ मत देवो भाइ । कुरुदत्त तब श्रम

कावे ॥ सु ॥ ३ ॥ जुगदेव कहे तुम कुण थावो । इण मार्ग थे किहां जावो । कुरुदत्त
तव दरसावे ॥ सु ॥ ४ ॥ तूं कोण इने किहां लेजाव । हम कंवरथ के भट थावे । जुग
देव कहे हर्षावे ॥ सु ॥ ५ ॥ में तुम अरी हाथे छोडाइ । ले जातो नृप पास भाइ । इम
सुण सहू एकल थावे ॥ सुणो ॥ ६ ॥ लीलावती अति मुरझाइ । अंग श्वेद घणा छुट्याइ
। नेत्र प्रनाल नीर वावे ॥ सु ॥ ७ ॥ तीजी वार हाथे आइ । अब जीवणरी न आसाइ
। कर्म से छूटी लीली किहां जावे ॥ सु ॥ ८ वीजय पुर में ते आया । कुरुदत्त चित द-
गा ठाया । छानी लेजावूं नृप न खबर पावे ॥ सु ॥ ९ ॥जुगदेप नस छोड नहीं । लागी
दोनारी लडाइ । कोटवाल सुण दोडी आवे ॥ सु ॥ १० ॥ दोनों ने दिया समजाइ ।
लीलावती सिपायां ने भोलाइ । कंवरथ नृप कने पहोंचावे ॥ सु ॥ ११ ॥ भटले सती
भरतपुर मग चाल्या । कुरुदत्त ना तव मन माल्या । जुग देव विलखाइ घरे जावे ॥ सु
॥ १३ ॥ कुरुदत्त मिल्यो सिपायां ने जाइ । दे लालच वश कीधाइ । सहू मिल शैन्य
पाछे जावे ॥ सु ॥ १४ ॥ गोरी सुणी दासी पास चरी । लीलावती ने लेजावे भट धरी।
तास घट में दया आवे ॥ सु ॥ १५ ॥ वैरागण वणी भगवा तंतु पहरी । मुख भभुती
कर कंठ माल छेरी । तत्क्षिण लीलावती पूठे धावे ॥ सु ॥ १६ ॥ ग्राम वाहिर थोडी दूर

आइ। शैन्यापती गेंदू मिल्या तिण तांइ । गोरी पुछे सरल भावे ॥ सु ॥ १७ ॥ अहो भा-
इ तुम ने मार्ग मांइ । कोइ आदमी देखी लुगाइ । शैन्यापती ने वैम आवे ॥ सु ॥ १८
॥ सुख सेंण पूछे अहो बाइ ! क्यों वैराग लियो योवन वय मांइ । गोरी वैरागण फरमा-
वे ॥ १९ ॥ धर्म करण की वक्त याइ । पडती वय कुछ थावे नाहीं । पुनः शैन्यापती बो
लावे ॥ सु ॥ २० ॥ किण नर नारी ने ढुंढो वेन । तब गोरी कहे मिष्टवेन ॥ चन्द्र अंग
ना लीलावती कहवावे ॥ सु ॥ २१ ॥ कंखरथ भट भरतपुर लेजाव । त छोडावा
म्हारो मन चहावे । इम सुणी तीनो ते हर्षावे ॥ सु ॥ २२ ॥ हर्ष्या देख पूछे गोरी । तु
म कुण कहो सत्य छे जोरी । हित वांछक जाणी गेंदू दरसावे ॥ सू ॥ २३ ॥ हम चाक
र चन्द्र सेण तणा । सती सहाय करना हम मना । चउ मिल भरतपुर मग जावे ॥ सु॥
॥ २४ ॥ यह वात तो इहां रही । हिवे चरि चन्द्र नृप नी देवु कही । नवमी ढाल अ-
मोलिख गावे ॥ सु ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ भील पल्लीये इन्दुरायजी । करी फोज होंशार
॥ एक दिवस बैठा एकला । सज्जन मिलण विचार ॥ १ ॥ तब ते देवधर डोकरो । नृप
ने एकला जोय । लुली मुजरो कर नृप ढिग । आइ बैठो सोय ॥ २ ॥ मिष्ट वयण पुछे
रायजी । किस्यो नाम छे तुम । कहा किण कारण आवीया । किंम दसे मन गुम ॥ ३

॥ वृद्ध कहे गती कर्म की । कहतां न आवे पार । जिम कर्या तिम भोगव्या । चाली आंश्रूधार ॥ ४ ॥ धैर्य देइ अवनीश कहे । सीधी तरह कहो बात ॥ रोया राज मिले नहीं । हिम्मत से सहु थात ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १० मी ॥ नमू अनंत चोवीसी ॥ यह० ॥ ते वृद्ध तव भाखे । सांभलो श्री महाराज ॥ मुज कर्म तणी गति । कहूं छूं आपने आज ॥ १ ॥ कन्क पुर निवासी विप्र के महारी जात । लडाइ करणने आयो कंवरथ संगात ॥ २ ॥ परिवार बुलाइ रह्यो विजय पुर मांय । एक दिन मुज बंधु कारण रावले जाय ॥ ३ ॥ देखी लम्पटी राजा । जबरीये घाली घरमांय॥हसने बाहिर कढाड्या । पुत्र कैद में ठाय॥ ४ ॥ रह्या वन में जाइ । तिहां हम पुण्य पसाय ॥ लीलावती नामे महा सती । रही हमारे घर आय ॥ ५ ॥ सुणी नाम प्रिया को । चन्द्र राय हर्षाय ॥ बेठा होइ पुछे । ते हिवणा किण ठाय ॥ ६ ॥ श्वामी अचानक एकदा । पड्या धाडायती आय ॥ प्रणकुटी जलाइ । मुजने वृक्षे बन्धाय ॥ ७ ॥ लेगया पश्चिम दिश ।रोवती सतीने तांय ॥ ते बात याद आइ । नैणा नीर भराय ॥ ८ ॥ तब रामजी आया । भूपने देख्या उदास ॥ पूछ्याथी शशी राय । वृद्ध चरी करी प्रकाश ॥ ९ ॥ लेइ स्वारने प्यादा । बुद्धिसागर मंत्रीश्वर लार । वृद्ध कहे सेनाने । देख्या गिरी शिखर ठाय ॥ १० ॥ फिरी ढूंढी थाक्या

। पण नहीं लाग्या समाचार ॥ सहू आया उदास हो । न मेली करे उचार ॥ ११ ॥
सुणी चिन्ता भराइ । तब एक कासीद आय । पत्र मेली सामने । मुखथी वात सुणाय
॥ १२ ॥ में जातो कन्क पुर ।राणीजी जोवा काम ॥ सिंह विणाइयो सूभट । मार्गे पड्यो
एक ठाम ॥ १३ ॥ तस पासनो पत्र ।ए लेइ आयो महाराज ॥ और मार्ग ग्राम में । सु-
णीयो एक अवाज॥ १४ ॥ चन्द्र सेण लीलावती । जो देवे पकडी लाय ॥ तस कंखरथ
राजा । इच्छित इनाम बक्षाय ॥ १५ ॥ इम कही ते बेठो । नृप क्रोधा तुर थाय । सो-
म मंत्री पासे ।पत्र तेह बचाय ॥ १६ ॥ लिखतं विजय पुरथी।कंखरथ महाराय ॥ कन्क पु-
र में महासेन । मानो चित्त लगाय ॥ १७ ॥ विजय पुर वश भयो । भागी चन्द्र सेण
राय ॥ सासरा के आसरे। छिप्या भरत पुर जाय ॥ १८ ॥ भरतपुर वश करवा । जावां ह-
म इणवार । तुम शैन्या संग ले। आ औ आठ दिवस मझार ॥ १९ ॥ मिती फागण सुदी
अष्टमी ने दीतवार । दसकत दुमुखका । बांचो सप्रेम जूहार ॥ १९ ॥ सुणी समाचार इ
म । रुठो चन्द्र नृपाल ॥ थर २ अंग कम्प्यो । रोसे अनन नेत्र लाल ॥ २० ॥ कहे पल्ली
पत ने ।सहू शैन्य शिघ्र करो सज्ज । इच्छित वक्त मुज । आइ भाइ यह अज्ज ॥ २१ ॥
तब भेरी बजाइ। सहू भील तात्क्षिण आय ॥ चन्द्र ऊभा रही । सहुने इम सुणाय ॥ २२

॥ अहो सुणीयो सूरा । इत्ता दिन सीख्या जेह॥ते कला अजमावण । वक्त आयो छे एह ॥ २३ ॥ कंवरथ अन्याइ । फोज करी तैयार । भरत पुर लेवाने । जाव धरी अहंकार ॥ २५ ॥ ते शत्रु आपणो ।मुज काज अन्यने सताय ॥ अब नाश तस करस्यूं । तुम तणी लेइ सहाय ॥ २६ ॥ अहो शूरा सूराइ। बतावो मुज ए वार ॥ इम सुण सहू बोल्या । चन्द्र नृप की जयकार ॥ २७ ॥ सहू शस्त्र बखतर सज्या । शूरत्व में मद मस्त ॥ चन्द्रनृप संघाते चालया । महूर्त प्रसस्त ॥ २८ ॥ एह वात इहां रही । हिवे भरतपुर अधिकार ॥ ढाल पंचम खण्ड दश । अमोल करी उचार ॥ २९ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ तब भरत पुर नयर में । सज्जन सेण राजान । गुण सुन्दरी राणी कहे । चिन्ता मन असमान ॥ १ ॥ प्रधान गया विजय पुरे । बीत्या बहुला मांस ॥ तस घरका चिन्ता करे । मुज पण होय विमास ॥ २ ॥ न लाया लीलावती । न भेज्या सभाचार ॥ कारण कांही कळे नहीं । । तब नृप करे उचार ॥ ३ ॥ निश दिन उपजे विचार मुज ॥ पेखी आज लगवाट ॥ प्रात भेजी कासीद ने । मंगावूं खबर दुःखकाट ॥ ४ ॥ प्राते भरत भूपती । बैठा सभा मां आय ॥ धार्यो किस्यो होवे किस्यो । सुणो सुज्ञ चित लाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल११मी ॥ सुणो सुगणारे तुम गुणवन्त मुनि को सेवो ॥ यह० ॥ सुणो शाणा हो तुम वात एक

चित लाइ । होणहार की, अजब गीत है भाइ ॥ आं ॥ गंग दत्त शैन्या पती कहे सुणो
महा राया । सीमाडीया अपणा समाचार पठाया ॥ कोइ कंखरथ भूपत अपणी भूम में
आया ॥ करे दुःखी प्रजा ने किसा वैर उपाधा ॥ सु ॥ १ ॥ इम सुण सज्जन नृप आश्चर्य
मन अति पावे । नहीं अरी को अपना ए कुण दुष्ट चड आवे ॥ ते तले आतो दूत एक
देखावे । रंग ढंग तस अजब आइ बधावे ॥ सु ॥ २ ॥ कन्क पुर का कंखरथ महाराया
। जे विजय पुर पत इण वेला कहवाया ॥ ए देइ मुज आपके पास पठाया । दो उत्तर
जल्दी सोच विचारी राया ॥ सु ॥ ३ ॥ शैन्या पती । तव कागद कहाड सुणावे । कंखर
थ सप्रेमे ऐम जणावे ॥ हम शत्रू नृपचन्द्र थांके राज भरावे । ते लाइ सोंपो मुज जो तु
मने सुख चहावे ॥ सु ॥ ४ ॥ नहीं तो सज्ज शैन्य हम सामे आजावो । हम प्रवल ब-
हुला तुम फते नहीं पावो । सोच विचारी शत्रू महारा पठावो । फिर सुखे राज करो ग-
मतो मोज मनावो ॥ सु ॥ ५ ॥ इम सुणी समाचार आश्चर्य नृप अति पाया । चिन्ता
व्यापी क्रोध अंग उभराया ॥ अरे इण दुष्टी मुज पुत्री जमाइ सतायां । ते इहां नहीं आ
या न जाने किहां सिधाया ॥ सु ॥ ६ ॥ सवरा मंडप में इणने रोस भराणो । ते पापी
आटाणे साध्यो है टाणो ॥ किम भागा प्राक्रमी चन्द्र सेण महा राणो। आश्चर्य मोटो पण हिव

णा एने भगानो ॥ सु ॥ ७ ॥ इम निश्चय करने दूत भणी पकडायो । कालो मुख कर
पिछले रस्ते भगायो । कहे जे तुज पतिने हूं आयो के आयो ।नवी जनीना दुःख कंवरथ
ने पायो ॥ सु ॥ ८ ॥ दूत तैसोइ कंवरथ कने आइ । वीगी हकीगत दी वताइ चेताइ ॥
ते शेन्य सज्ज ऊभो रणांगणे आइ । तन बल अणिका वलकी धरी गुमराइ ॥ सु ॥ ९ ॥
सजन सेण निज फोज ने सज्ज करावे । गज गाजी रथ पायदल मज्ज शिघ्र आवे ॥ श-
स्त्र वक्तर भल भलाट सद छकावे । थइ २मह कूदत शुरत्व अंग भरावे ॥ सु ॥ १० ॥ नृ
प ऊंचा ऊभा रही कहे सूणो सहू शूरा । तुम शिक्षा भुक्त ले सकल गुणे हुवा पूरा ॥ ते
सार निकालो तो करो शत्रू चक चूरा । फिर भरतपुर से मुण अरिजन रेवसी दूरा ॥ सु॥
॥ ११ ॥ सहू जय जयारव वधाया प्रयाण कराया । धरणी थरेर पग भार रजे नभ छा-
या ॥ ग्राम के वाहिर रणांगण मांही आया । सज्ज ऊभा सन्मुख संग्राम करण उमाया
॥ सु ॥ १२ ॥ ते वेला होतवता जोग सुणो हो शाणा । मगध देश पयठाण पुर का
राणा ॥ निज पती संगे सज्जन मिलण उमगाणा ।कुछ शैन्य संघाते भरत पुर किया परिया-
णा ॥ सु ॥ १३ ॥ सुखे मुकाम करतां भरत पुर के पासे । कोइ कैटक मिल्या जो ऊंडो
मन में विमासे ॥ यह किस्यो जुलम इहां कारण नहीं भासे । कोइ सुभट बुलाइ पूछण

लाग्या तास ॥ सु ॥ १४ ॥ ते कहे कनक पुर पत कंखरथ ए राजा । विजय पुर ने लूंटी लूंटण आयो इहांजा । मांगे चन्द्र सेण लीलावती देवो आजा । आया सज्जन सेण वैर लेवण के काजा ॥ सु ॥ १५ ॥ इम सुण प्रतापसेण नृप ने रोस भरायो । भलो हुयो यह दुशमण मरवा सन्मुख आयो । नहीं खबर शैन्य थोडीसी संग्घाते लायो । पण अन्याइ को नाश करुं इण ठायो ॥ सु ॥१५॥ सुसमाराणी ने सुभट संग्घाते देइ । परवारी भरतपुर मांय घरे भेजेइ ॥ आप आयो शैन्य में सज्जन नृप भेटेइ । कहे करो पिशुन को क्षय विलम्ब किसी छेइ ॥ सु ॥ १७ ॥ इम देखी सहायक सज्जन नृप हर्षाया । दूजोरा अंग में सज्जन शैन्ये भराया ॥ यह ढाल एकदश अमोल ऋषि सुणाया । न्याय वंत सील वंत फते सदाइ पाया ॥ सु ॥ १८ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ सज्जन कंखरथ राजीया । शूर सह शैन्य परिवार ॥ ऊभा रणांगण विषे । वैर भाव दिल धार ॥ १ ॥ आंगण सहू झडाविया । कँटक कंकर दूर ॥ नहखावी पूर खाडने । जल सींचन रज पूर ॥ २ ॥ हद्दी अन्ते रोपीया । निज सेनाण निशाण । नव रंग नेजा फर रहे । झलके जरी ज्यों भाण ॥२॥ प्रथम हुकमे सज्ज हुवा।सहू वक्तर ने संभार॥शस्त्र सैंठा सहावीया।पट अंतरथी कहाड॥३ ॥ दूजे हुकमें बांधीया । शूरा सहू निशाण । गजथी गज हय हय मिल्या । रथ पायक मि-

स्या अण ॥४॥ तीजो हुकम होतां थकां मंडाणो संग्राम॥जय प्राजय जेहनो हुवे । सुणो सहू चित ठाम ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १२ मी ॥ खडका की देशी॥दोनों शैन्यासजी । सन्मुख हुवा इष्ट भजी । अश्व गज रथ सूभट भारी ॥ रण भेरी वाजी रही । शरणाइ सणका दइ । शूरा शूर मद छक लिया भारी ॥ सुणरे भूप तुज भूप मम वल घटा। ढांकू क्षिण में क्यों घवरावे ॥ आं ॥ १ ॥ मयंगल मद भर्या । गंडस्थल मकन्द झर्या । काली घटा ज्यूं विधूहोदा चमके ॥ गज २ मिली धमशाण स्मशाण करे । जोरथी धरणी थर २ धमके ॥ सु ॥ २ ॥ तुरंग कुरंग संग । पलाण छे नवरंग । मही पर पाद स्थिर नहीं रेवे ॥ शेले तेगे जे धरी । भीडिया अरीअरी । कोपथी कठिण व॰ण केवे ॥सु॥३॥संग्रामी संग्राम में । वैठा धनुष्य धरी । घुघरा घणणण झण झणाट थावे ॥ वृषभ तुरी जोतरी । होंस मन में धरी । राणा ने राणा सामाजी जावे ॥ सु ॥ ४ ॥ शूर शस्त्र सजी । जाय रिपु दल लजी । गजी२शब्द हूंकार करता ॥ खंजर खड्ग नली । तेज जिम वीजली । पायक भट तणां प्राण हरता ॥ ५ ॥ तोप ना धोप थी क्षोप गगने भयो । गोळा का टोळा २ जी आवे । केइनो समचय भक्ष करी दीवी धरा भरी । धुम्रथी गगन में छत्त छावे ॥ ६ ॥ इम रण रुड झडे । धडथी शिर जुदा पडे । रक्त का खाल खललाट वेवे ॥ अ-

मिषे कादव जो कायर रोरव करे । कोला हल गगन त्यां गुंज रेवे ॥ ७ ॥ प्रताप सेज
नी फोज कटी घणी । फिकर मनरे मांहे भरावे ॥ जरा हटीया जदा । जाणी सज्जन
तदा । पोतानी शैन्य शिघ्र पहोंचावे । ८ ॥ फोज घटी जाण दुमुख कहे ताणने । मारो
२ किस्यो सामो जोवो ॥ इम शब्द सुणी फोज हुइ शूरी घणी । सज्जन शैन्य पग पाछा
देवे ॥ ९ ॥ भरतनो राणो भराणो साचमें।लाज भगवान अब किम रेसी ॥ तो पण मा
र २ कर सामा धसे । पुण्य प्रबल तस हार केसी ॥ १० ॥ तब चन्द्र राज सहू भील के
साज । रण सिंघो गरणाज शिघ्र चाल्या आवे ॥ कंखरथ देख करी । हर्ष्यो हीये भरी ।
जाणे महा सेण कन्क पुर थी धावे ॥ सु ॥ ११ ॥ फोज भीलां तणी । पाहिले शूरी घणी
। देख शत्रू भणी । रोश चडिया ॥ हूकम पामी चन्द्रनो । जणे अहमेन्द्रनो । कंखरथ शै-
न्य में जाय पांडया ॥ सु ॥ १२ ॥ ते भरोसे रह्या देखी अचंभे भया । होंश उडगया ।
गजब थावे ॥ यह कोण आवीयो । किंसो चित चहाावियो। कंग्वरथ दुमुख घबरावे ॥ सु ॥
॥ १३ ॥ यह किण तणो लस्कर वनतणा तस्कर । किण वैर शैन्य आपणी काटे ॥ अब
किस्यो कीजीये । शरण किण लीजीये । भागण जाग नहीं चौकोन दाटे ॥ १४ ॥ हर्ष्यां
सज्जन प्रताप नृप देख इम । दोइ रस्ता रोक जाय अडिया ॥ तीजी तर्फ चन्द्र चौथी त

ई सरीता गहरी । कंवरथ बीच में फस रहीया ॥ १५ ॥ धों धों तोपा तणो । गजा
ट्यो घणो हृदय शत्रू तणो स्थिर न रेवे ॥ दबा दब गोला पडे । मरे घणा लड थडे ।
ारर अः अः शब्द केवे ॥ १६ ॥ कुन्डलाकार कबाण खेंचने बाण । कान लग ताण ।
ाण हणता ॥ अचूक तीर भीलनो । अरी हीये चीरनो । आछो बुरो जरा न गणता ॥
१७ ॥ खेंच तरवार । दुशमण परिवार ने । संहार करवा झणणाट तेगा ॥ चमके विद्युस
म । वैरी मन धम धम । देखी कायर प्राण छोडे वेगा ॥ सु ॥ १८ ॥ भडड बन्दूक की
गोली अचूक की । उर हीय शिर भेदी जे जावे ॥ फटाफट झटा झटा कटा कट कड प-
डे । बनचर रंग रण में मचावे ॥ सु ॥ १९ ॥ चन्द्र नृप रोस धर्या । वीर रस तन भर्यो ।
किनकी मग दूर जो सामे आवे ॥ आभ विद्युत परे । क्षिणे इत उत फरे । चकोर चक्षु
रक्त रोशे जोवे ॥ सु ॥ २० ॥ कपा कप लपा लप अस्सी चलावतो । सणण तीर सण-
णाट जावे ॥ ले भक्ष केड़ना शत्रूनी देइना । थरर धूजी शत्रू शैन्य दावे ॥ सु ॥ २१ ॥
शत्रू का भाषण सुण्या त्रासण तणा । तिम भीलोंने घणो बधीयो जोरो ॥ घणी अणी-
का कटी जोइ कन्क पुर पति । शक्ति गइ सुख को उतर्यो तोरो ॥ सु ॥ २२ ॥ बाकी र-
ही शैन्य तिण शस्त्र न्हाखी दिया ।शरण छां २ कियो शोर ॥ कंवरथ धस्काइ पस्ताइ जो

वे दिग चउ । आधार न दीसे कोइ त्यां और ॥ सु ॥ २३ ॥ रामापक्षी पति करी चपलता अति । कन्क पुर कन्त ने बांध लायो ॥ शाम तस मुख कर्यो । चन्द्र सन्मुख धर्यो । जीत तणा डंको दिरायो ॥ सु ॥ २४ ॥ बंध हुवा संग्राम आराम पाया सहू । सील सत्य का चिन्तित थइया ॥ ढाल खडका तणी अमोल ऋषि भणी । आज थी सहू दुःख दूर गइया ॥ सु ॥ २५ ॥ ❋ ॥ दुहा ॥ दुमुख भाग्यो तात्क्षणे । छिप ऊभो एक स्थान ॥ श्वेद झरे तनथी घणो । निबल निरास हैरान ॥ १ ॥ कुरुदत्त लीलावती लइ । आयो तिहां चलाय ॥ जो संग्राम डरीयो घणो। छिपतो २ जाय ॥ २ ॥ एकन्त गुप्त स्थान में । लीलावती ने बेठाय ॥ ढूंढतो आयो दुमुख ने । धूजतो एकान्त पाय ॥ ३ ॥ कुरुदत्त ने पेखने । आदरे ढिग बुलाय ॥ कहो कार्य किण पर भयो । कुरुदत्त तब दर्शाय ॥ ४ ॥ ले आव्यो लीलावती । गुप्त रखी ते ठाम ॥ वधाइ आपण भणी । ढूंढतो आयो आम ॥ ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ढाल १३ मी ॥ मेहलां में बैठी हो राणी कमलावती ॥ यह ॥ दुमुख कहे रे इहां क्यों लावीयो । शिष्ट पुर लेगयो नहीं केम ॥ ते कहे मुझ वश नहीं रह्यो । राय भट धरी लाय ऐम ॥ सांभलरे भाइ । दुष्ट दुष्टाइ छोडे नहीं ॥ आं ॥ १ ॥ वारु लेजा तिण बाग में । रखी जे मुज तम्बू मांय ॥ हूं पण आवूं जरा ठेहर के । बान रखे प्रग-

टाय ॥ सां ॥ २ ॥ कुरुदत्त तिमही कियो । लीलावती रखी डेरा मांय । थाक्यो एकांत जाइ सोइ रह्यो । लीलावती भगवा चहाय ॥ सां ॥३॥कुल गामथी साथे लग्यां। मुकंद पटेल ते वार ॥ अवसर जोइ पेठो तम्बू में । घबरी सती अपार ॥ सां ॥ ४ ॥ कहे प्रिया मुज ओलख्यो । हूं छू मुकंद पटेल॥ दुष्ट फन्दे तुज फसी देखने । छोडावा आव्यो थारे गेल ॥ ॥ सां ॥ ५ ॥ चालो शिघ्र संग माहेरे । पटेलण तुज ने वणाय । मन मानी मोज भोगवे । सुण सती कोपी कहे वाय ॥ सां ॥ ६ ॥ लम्पटी वेशरमी भूलीयो । जे तुज दीयो जीवित दान॥ पाछो आयो मरवा भणी । दुमुख आया जे टाण ॥ सां ॥ ७ ॥ पटेल मंत्री पेसण न दीये । तव कुरुदत्त ने जगाय ॥ कुरुदत्त कोपे आइने । दी तस मुंडकी उडाय ॥ सां ॥ ८ ॥ मंत्री मरीयो जाणने । मुकंद भाग्यो जीव लेय ॥ दुमुख गया तम्बू विषे । लीलावती धस्केय ॥ सां ॥ ९ ॥ अति नरमी दुमुख भणे । प्रिये अब मती सताय ॥ तुज तात ने भगाइया । फते मुज संग्रामे थाय ॥ सां ॥ १० ॥ तुज काज उपाय सहू किया । अब दे मुज आराम ॥ सती कहे दुष्ट किम वदे । तुझ अजु बुद्धी न आइ ठाम ॥ सां ॥ ११ ॥ इम झोड चाली आपस में । दुमुख तस पकडण जाय ॥ सती दोडे इत उत तम्बू में।ते तले सहायक आय ॥ सां ॥ १२ ॥ मुकन्दने सामा मिल्या । सुक सेन

सह परिवार ॥ मुकन्द कहे नरमाय ने । करो मुज पर उपकार ॥ सां ॥ १३ ॥ म्हारी ना-
री ने चोराइने । दुष्ट रखी तंबू मांय ॥ मार्या म्हारा मंत्री ने । आप देवो ते छोडाय ॥
सां ॥ १४ ॥ सुख सेन साथे तस थया । आया तंबू पास ॥ लीलावती नो शब्द सांभ-
ली । पाया अति हुल्लास ॥ सां ॥ १५ ॥ तम्बु फाडा तब फेंकीयो । लीलावती जोइ ह-
र्षाय ॥ दुमुख ने खबर पडी नहीं ।काम अन्धते थाय ॥ सां ॥ १६ ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥ नेत्र
जन्मे निशी दिनम् क्रोध महंकार स्तथा । माया लोभो प्रेम द्वेषः मोह चिंते यौवन मदता
॥ चिन्ता मतिभ्रष्टं नरः ऋणं अपमानी यथा । क्षुधा तृषा विषय लुब्धः वीसंती अन्ध मु-
दारीतः ॥ १ ॥ पकडी टांग धरणी पाडीयो । लियो ऊंधे मुख बंधाय ॥ सुकुंद देख खु-
शी हुवो ॥ हिवे मुज कर प्यारी आय ॥ सां ॥ १७ ॥ शैन्यपति पूछे रोश में । कह कह
तुज त्रिया कोन ॥ डरतो अंगुलीये दाखे सती भणी । बांधीयो तस जोवो होण ॥ सां ॥
॥ १८ ॥ ❁ ॥ मनहर ॥ कर्म करे नर चीठा । तिण वेला लागे मीठा। शिक्षा नहीं माने
धीठा । गुरु हित जनकी ॥ मुद्दत न पके । तहां लग विष मधू चखे । पुण्य जव थके ।
तब लग सुख अंजनकी ॥ कोइ नहीं काम आवे । करे सोही दुःख पावे । पाछे तेह प-
स्तावे । लगे जब तजन की ॥ देख जरा नेत्र खोल । अमोल बोल हीये तोल । छोड पा

पहो म होले।बात यह सज्जन की॥१॥ ॥ढाल॥ततक्षिण चान्वीयो तेहने।कुरुदत्त द्रष्टी आय ॥
तिणने पण तावे कियो ।इम सहु वश थाय ॥सां॥१९॥गोरी आइ लीलावती कने।प्रेमे हुल
सी वतलाय ॥ रुप भेप पेखी तेहनो । सती मन अश्चर्य पाय ॥ सां ॥ २० ॥ गोरी कही
वीतक कथा । हूं श्रीधरकी नार ॥ कुंवरथ किया केःमे । सासु स्वसुर दिया कहाड ॥
सां ॥ २१ ॥ तुम सु मिलण भेष पलट के। हूं आइ यां लार ॥ सती सुणी हर्षी घणी ।
इण सासु सुसरा को उपकार ॥ सां ॥ २१ ॥ वनमें राखी मुज पुत्री ज्यूं । ए मुज भो-
जाइ समान ॥ आणन्दी राखी कने । हूवो आधार जरा प्रान ॥ सां । २२ ॥ शैन्यापती
नमी सती भणी । कहे हु जावू इण वार ॥ आप तातथी दुष्ट लडे । करुं सेवामें इण वार
॥ सां ॥ २४ ॥ गेंदू विप्रने गोरी भणी । देइ पुरी संभाल ॥ चाल्या शैन्या सन्मुख ।
अमोल यह तेरमी ढाल ॥ सां ॥ २५ ॥ ॥ दुहा ॥ प्रतापसेण अश्चर्य धरी । आया
सज्जनसेण पास ॥ ते सहायक कुण आवीया।राखी वाजी निज खास ॥ १ ॥ तेतले निज
राजा मिलण । बुद्धी सागर तिहां आय । निज प्रधान अवलोकने । भरत राय हर्षाय ॥
२ ॥ किहां थी आया सचीवजी । किसीये शैन्या लार ॥ तै कहे चन्द्रसेण रायकी।हुइ फते
इण वार ॥ ३ ॥ ते सहू शैन्या तेहनी । लीयो वक्के वैर ॥ सुणी दोनो राय हर्षिया ॥

हुइ पुण्य की खैर ॥ ४ ॥ चालो शिघ्र मिलवा भणी । कियो बडो उपकार ॥ आज मनो
र्थ सिद्ध हुवा । तुठया पुण्य करतार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १४ मी ॥ आज आणंद घन
जोगीश्वर आया ॥ यह ॥ पुण्य थी सज्जन मेला थावे । तव हृदय हर्षावे रेलो ॥ पुण्य
थी आणंद सहु जन पावे । पुण्यने जगत् सरावे लो ॥ पु ॥ १ ॥ बुद्धी सागर शैन्य सं-
भाला या । करो यूक्ती इण ठायारे लो ॥ दोनो नृप मिलवा को धाया । चन्द्र नृप अनु
खंग आयारे लो ॥ पु ॥ २ ॥ सुसरा साहू ने चन्द्रजी जोइ । हर्षे हीयो उमंग्योइरे लोरे
॥ गाढालिंगन देइ मिलिया । ऊचासण बेठा सोइरे लो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ सज्जनजी पुछे
चन्द्रजी से उमाइ । किहां लीलावती बाइरे लो ॥ मिलण हीयो मुज अति उमंगाइ ।
सुणी चन्द्रनी छाती भराइरे ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ तव जाण्या नहीं प्रेमला संगो । भया सहु
चित भंगोरे ॥ और सहु इहां जमीयो रंगो । एक नहीं अनुरंगोरे लो ॥ पुण्य ॥ ५ ॥
सुकसेण भरत शैन्या में आया । सज्जन नृप नहीं पायारे लो ॥ पूछया थी कहे चंद्र मि-
लण ने धाया । शैन्या धीश भी उमंगायारे लो ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ दोडी आया पड्या चन्द्र
नृप चरणो । ओलखी हर्ष उभराणोरे लो ॥ हृदय भीड्या तस चन्द्र राणो । सोमचंद
कहे तेह टाणोरे लो ॥ पु ॥ ७ ॥ सर्व मिल्या आज पुण्य की खाणी । पण एक खामी

मोटी रहाणीरे लो । पतो नहीं किहां ललितावती राणी । तब शैन्या पति बोले वाणीरे लो ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ महाराणी जी ने बाग के मांइ । हूं बेठाइ आयो इण ठाइरे ॥ सहू कहे भली दीनी वधाइ । चन्द्र उठ मिलवा धाइरे लो ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ राया राणा आदि बहु जन चाल्या । लीलावती मिलण मन माल्यारे लो ॥ चउ दिसथी नर दोडे हाल्या । त लीलावती भाल्यारे लो ॥ पुण्य ॥ १० ॥ औलख कोइ की ते नहीं पाइ । धस्काइ मन मांइरे लो ॥ शत्रूनी जीत थइ दीसे वाइ । म्हारी खबर यां पाइरे लो ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ अब लेजासी पकडी मुज तांइ । शीलने भंग कराइरे लो ॥ तिणथी श्रेय मरणा इण वक्ते । इम चिन्ती निघा चुकाइरे लो ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ ते तिहु जोताथ हर्ष उभराइ । अ-पणा सज्जन ए आइरे लो ॥ ते तले लारस्यू गइ लीली वाइ । कूवारे कांठे आइरे लो ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ तेनलेतो सव आया ते ठामो । शैन्या पती पूछे तामोरे लो ॥ किहां महाराणी शिघ्र बतावो । तिहूं लारे जोवे जामोरे लो ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ अश्चर्य अती पाया मन धस्काय । कहे अवीथा इण ठायारे लो ॥ बातां करता किहां सीधाया । भूं पेठाके गगने उडायारे लो ॥ पुण्य ॥ ६५ ॥ सहू जन सुण अति घबराया । अचंभ हौ बिलखायारे लो ॥ चन्द्रादि सहु दग्गण धाया । मुख२ शिर२ जायारे लो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥

लीलावती ऊभी अगडे कांठ । सरणा चारों संभारेरे लो । वृत अति चार सहू आलोया । परमेष्टी मन धारेरे लो ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ नहीं मरुं हूं दुःख थी घबराइ । मरुं सील रक्षः तांइरे लो । वैर विरोध नहीं किंचित किणथी । इम कही छुटो मेलो काईरे लो ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ ततले चन्द्रसेण निकल त्या आया । प्रिया पेखी हर्षायारे लो ॥ पडती झाली बाथरे मांहीं । सतीरा नेण मींचायारे लो ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ कहे दुष्ठ मत छीवो मुज तांइ । सती सतायां नांहीं भलाइरे लो ॥ क्यों म्हारे तूं लार लाग्याइ । छुटण अंग तडफाइरे लो ॥ पुण्य ॥ २० ॥ चन्द्र कहे दुष्ठ में सखो साचो । तुजने देइ अरी डाचोरे लो ॥ भागो क्षत्री पुत्र में होइ । साचो मार्यो तमाचोरे लो ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ बैठा तिहां खोला में सोवाइ । लीलावती वचन ओलख्याइरे लो ॥ किंचित नेग खोल निश्चय भयाइ । आनन्दनी आइ मुरछाइरे लो ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ पती पतनी आदि सहू मिल्या मालो । पंचम खन्ड चउदे ढालोरे ॥ ऋषि अमोलख कहे उजमालो ॥ पुण्ये सुखे विशालोर लो ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ सोमचन्द्र नृप राणी ने । ढुंढता तिहां आय ॥ दम्पति जो एकुण जगा । आणन्द उरनहीं माया ॥ १ ॥ करी सामिक्षा ततक्षिणे । सहू सज्जन ने बोलाय ॥ दोडी आया सहु तिहां ॥ जो जोडो हर्षाय ॥ २ ॥ शीत सुगन्धी उपचार तब । करिया

बहू प्रकार ॥ सावध हुइ लीलावती । नर गम जोया अपार ॥ ३ ॥ पति अंकित निज त-न विलो । लज्जित हुइ अति मन । तन वस्त्र ने संभरी । अलगी हुइ तत्क्षिण ॥ ४ ॥ बहू दिवसे सहू सज्जना । आइ मिल्या एकत्र ॥ ते सुख तस आत्मज लखे । के तो केवल पत्र ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १५ मी. ॥ अवके तो हेले बुंदी जीनले माजी ॥ यह० ॥पुण्य फल्या सज्जन मिलो श्रोताजी ॥ पूण्ये सव सुख पाय हो सुणिये श्रोताजी । आपससें अ-वलोकता । श्रोताजी ॥ आणन्द उर नहीं मांयहो । सुणिये श्रोताजी ॥ पुण्य ॥ १ ॥ गुण सुन्दरी राणी सुणी श्रोताजी । अतिही मन हर्षाय हो सु० ॥ रथा रुढ होइ तत्क्षिणे श्रोताजी। ते वाग में शिघ्र आय होसु० ॥ पुण्य ॥ २ ॥ लीलावती चरणे नमी श्रो० ॥ उठाइ हृदय लगाय होसु० ॥ नेणा नीर वर्षावती श्रो० ॥ हित मित वयण बोलाय होसु० ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ दुर्बल तन जो सती तणो श्रो० ॥ जाण्यो दुःख भोग्या पूर होसु० ॥ सती कहे गती कर्मनी श्रो० ॥ अब सहू दुःख हूवा दूरहो ॥ सु०॥ पुण्य ॥४॥ रथा रुढ दोनो भइ श्रो० ॥ गोरीने पास वेठाय होसु० ॥ दास दासी वृन्द परवरी श्रो० ॥ राज भवन मांय आय होसु० ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ तेही वगीचा माह ने श्रो० ॥ विछै विछायत बहु रंग होसु० ॥ चन्द्रादी नृपती सहू श्रो० । वैठा मिली सहू संग होसु० ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ रामा-

जी ने सुकसेनजी श्रो० । लाया अरि बंध माय होसु० ॥ कंखरथ दूमुख कुरुदतो श्रो० ॥
मुकुंद चउ ऊभा रहाय होसु० ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ अणिका धीश पूछे नृपने श्रो० । कहो क
सां यांरी किसी गत होसु० ॥ यह कट्टा शत्रू आपणा श्रो० । हृदय भरीया कूमत होसु ॥
पुण्य ॥ ८ ॥ सोमचंद कहे इण भणी श्रो० । हिवणां राखो कैद मांय होसु० ॥ बंदोबस्त
पूरो करो श्रो० । जिम भागवा नहीं पाय होसु० ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ हुकम ते सीश चडायने
श्रो० । कर पग श्रृंखल बन्धाय हो० ॥ बहू भट चौकस ने ठव्या श्रो० रामाजी भणी
भोलाय होसु० ॥ पुण्य ॥ १० ॥ चउ पस्तावे अति घणा श्रो० ॥ कीधा कर्म करी याद
होसु० ॥ सहायक कुण हुवे इण समे श्रो० ॥ किस्यो होवे किया विष वाद होसु० ॥ पुण्य
॥ ११ ॥ ❁ ॥ कुंडलिया ॥ जो मत पाछे ऊपजे । सो मत पहिले होय ॥ काम न विगडे
आपको । दुर्जन हंसे न कोय ॥ दुर्जन० ॥ सोग चिन्ता नहीं आवे ॥ लज्जा वित नहीं
जाय । नही पस्तावो थावे ॥ दाख संत अमोल खोल हीये जोय ॥ जोमत० ॥ १ ॥ ❁
॥ ढाल ॥ बटी बधाइ मिष्ठान नी श्रो० । बंदीवान बधाय होसु० ॥ जय ध्वनी का ना
स्युं श्रो० ॥ अम्बर रह्यो गर्जाय होसु० ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ शुभ महूर्ते सहू सज्ज हूवा श्रो०
॥ नृप तिहु गजा रुढ होय होसु० ॥ प्रधान पण नृपती ठिगे श्रो० ॥ इन्द्र समा रह्या

सोहय होसु० ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ शैन्या सहु भेगी करी श्रो० । नगर ग्रामिकशूर होसु०
॥ अनन्द भरीया ऊछले श्रो० । वाजे मंगल तूर होसु० ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ भरत नरी
आणन्दीया श्रो० । नगर सजाइ कराय हो सु० ॥ माचा ऊंचा बान्धीया श्रो० । बहुरंग
ध्रजा फरराय होसु० ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ जोवा जन जनी बहू मिल्या श्रो० ॥ नयन हृदय
माल सम होसु० ॥ कर पाल शिर्श वर्त करी श्रो० । देखी नृपने रह्या नमहोसु० ॥ पुण्य
॥ १६ ॥ मेघ धारा ज्यों वर्षावता श्रो० । हीरण सुवर्ण द्रव्य दान होसु० ॥ पुर जन
मोतीये वधावीया श्रो० ॥ नृप रखे सहू को मान होसु० ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ इण ठाठे
आया मेहल में श्रो० ॥ राज शभाने मझार होसु० ॥ वैठा सहूजन आयेने श्रो० ॥ हृदय
हर्ष अपार होसु ॥ १८ ॥ अठाइ महोत्सव माडीयां श्रो० जीमाया सहु जन तांय होसु०
हांसल सहु माफी किया श्रो० ॥ योगी वक्सीस वकसाय होसु० ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ प्रेमो-
त्सुक ते दंपती श्रो० । लीलावती चन्द्रसेन दोय होसु० ॥ मिलीया निज वीतक कह्या
श्रो । सुणीने विस्मित होय होसु ॥ पुण्य ॥ २० ॥ सती परसंस्यो गेंदू भणी श्रो ॥
तीनदा राख्या मुज प्राण होसु० ॥ गुणी गुण तिहां ऊचर्या श्रो । फेडन ने मिल्यो टाण
होसु ॥ पूण्य ॥ २१ ॥ सुखे रहे चन्द्र नृपती श्रोताजी । स परि वार श्वसुर घरहो सु ॥

औषधादी सेवन करी श्रो । शरीर किया भली परहो सु ॥ पूण्य ॥ २२ ॥ नित्यानन्द वरती रह्या श्रोताजी । पंचम खन्डरे मांय हो सुणेये श्रोताजी ॥ ढाल पंचदशें ए भइ श्रोताजी । पुण्य अमोल सुख पाय हो सुणिये श्रोताजी ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ ❀ ॥ खंड सारांस हरी गीत ॥ धन्य२ सती लीलावती यशः कीर्ती कहुं कहां लगे ॥ दुमुख अनीती करी अती कुरुदत्त पण तही ढगे ॥ वृत न खन्डयों धैर्य न छन्डयो । सुकसेन गेंदू सहायथी सगे । सहू सुख पाइ दुख गमाइ ॥ अब पुण्य दिन२ जगे ॥ १ ॥ चंद्रसेण राजा भील साजा लेइ दुशमण हटावीया ॥ सहू सज्जन मिलीया दुःख टलिया स्व सुर घरे रहाइया ॥ पंचम खन्ड सहू सुख मन्ड निज मति अमोलख ऋषि कहे ॥ गावे गवावे सुणे सुणावे तेह नित्य मंगल लहें ॥ २ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदायके बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलख ऋषिजी रचित सील महात्म पर चन्द्रसेण लीलावती चारित्र का पंचम खन्ड समाप्तम् ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ तीर्थ नाथ तीर्थंकरु । सिद्ध गणाधर सूल धार ॥ मुनि गण षष्ठम मम

गुरु । सर्व को कर नमस्कार ॥ १॥ श्री महावीर वीराधिप ॥ वली अरि कर्म किये नाश
॥ साशण पत के पद नमत।पटम खण्ड प्रकाश ॥ २ ॥ छे वृत धर छे काय रक्ष । छे रि-
पु किया जिन दूर ।' छे अवश्यक छे शुद्ध करे । छे छन्दी छे गुस शूर ॥ ३ ॥ ए. गुणव-
न्त के पंखज पद । मुज मन षट पद लोभाय । षटम हुल्लास आरंभता । बुद्धि विशुद्ध
ए पसाय ॥ ४ ॥ पुण्य उंचो लावे जीवने । पुण्ये सदे धर्मार्थ ॥ सब सुख खानी पुण्य
है । हावे जीव समर्थ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ सर्वोत्तम गतिर्विदायकः गौत्रैर्तीर्थ कर द-
ः । मुक्तिर्गमनः धर्म लभ्यस्तै सौभाग्य सूरुप शौर्यता ॥ बुद्धिः बल कुल शील स्वजन
शुभ ऋद्धि सुख समागमः । सर्व सुइच्छित संपजे जग जनः यस्य भन्थी पुण्योतमः ॥
॥१॥❀॥दुहा॥ पुण्य प्रगट ने दुष्ट दंड । पुरः प्रवेश बकसीश ॥ मुनि दर्श सद्बोध सुण
। पूर्व भवान्त जगीश ॥ ❀ ॥ कुमर जन्म अणगार जन्म । आत्म साधन शिव गत ॥ स
मासी पाटावली । षट खन्ड एह कथत॥६॥धार सार श्रवणी कथा।आचर श्रेय आचार॥ टा-
र असार के प्यार को । कर विचार उचार ॥ ७ ॥ वैसूधा पति वर्सु दिवस लग । वरया
पत्नी पिता घर ॥ सुख विलस्या सुर सारिखा । पूर्व पुण्य अनुसार ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ढाल १
ली ॥ महारे आज आणन्दनो दिन छेरे ॥ यह० ॥ देखो सज्जन पुण्य की संपदारे । पुण्य

फल्याथी भागी जावे आपदारेजी ॥ देखो ॥ आं ॥ भरतपुर मांहे श्वसुरघेरजी ॥ चन्द्र भू
पती मन से सल्ला करेजी॥देखो ॥ १ ॥ मैं तो लुब्ध्यो छूं सासरा का सुखमांजी । वीत्या
तोही न जाणू पर दुःखमांजी ॥ दे ॥ २ ॥ जैसी मुज मन में लीलावती तणीजी । तैसी
इच्छा प्रधान कटकाधीश नी जी ॥ दे ॥ ३ ॥ पण मैं नहीं पूछी तस बात ने जी । हां
हा ! धिक २ म्हारी जातनजी ॥ दे ॥ ४ ॥ हिवे पुछु हूं सहू कुटम्ब चरीजी । फिर मि-
लवा ने शिघ्र चलणो खरी जी ॥ दे ॥ ५ ॥ सासरा में घणो रमणो नहींजी । एह वी
शिक्षा नीती में कहीजी ॥ दे ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ श्वशुर गृह निवासी स्वर्ग तुल्यो नराणां
यदि भवन्ति विवेक पंच षट दिनानी ॥ दधी घृत पय पूर्ण मास मेकं । नन्तर भवतां
खर तुल्यो मानव मान हीना ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ इम विचारी बोलावीयाजी । दोनों
मंत्री आदर दे बेसावीयाजी ॥ दे ॥ ७ ॥ कहो अन्य कुटम्ब अपणो किहांजी । शिघ्र चा
लणो सहू होवे जिहांजी ॥ दे ॥ ८ ॥ वली राज आपणो संभालणो जी । वन्ध्या शत्रू
को मद गालणोजी ॥ दे ॥ ९ ॥ दोनों कर जोडी ने इम कहेजी । भंडारी संग कुटम्ब पा
रा पुर रहेजी ॥ दे ॥ १० ॥ तेह तणी फिकर नहीं कीजीयेजी । इच्छा होवे त्यों सुखे
रती जीयेजी ॥ दे ॥ ११ ॥ नृप कहे काले चलणो सहींजी । वहू कार्य शिघ्र करणो भ

हीजी॥दे॥१२॥सज्जन सेण नेपुछे हि ने सिधाइयेजी।कृपा करी आज्ञा फरमावीयेजी॥ दे ॥ १३ ॥
रहवा अग्रह कियो भर्त नृप घणोजी ।पण न मान्यो अवसर सहू भेण्याजी ॥दे॥१४॥ रामाजी
ने हुकम फरमावीयाजी । सहू लश्कर तत्क्षिण सजावीयाजी ॥ दे ॥ १५ ॥ भरत राय प
ण शैन्या सज करीजी । पहोंचवा विजय पुर लग जरीजी ॥ दे ॥ १६ ॥ प्रताप सेणजी
पण तव सज भयाजी । चन्द्र नृप ने पहोंचावा संग रयाजी ॥ दे ॥ १७ ॥ तीनो कटक
वीकट मिली ने चल्योजी । मही धुजी जाणे सहश्रनो फण हल्योजी ॥ दे ॥ १८ ॥ गुण
सुंदरी सुसमान लीलावतीजी । गोरी चारां प्रिती जमी अती जी ॥ दे ॥ १९ ॥ सज्जन
प्रताप और नृप चन्द्रजी जी । तीनो दीपे है जैसा महेन्द्रजी जी ॥ दे ॥ २० ॥ सरोवर
का जल सुखावताजी । पंशू रवीमंडल घन जिम छावताजी ॥ दे ॥ २१ ॥ बडा २ भूधव
ने नमावताजी । होइ पावणा माल नित्य खावताजी ॥ दे ॥ २२ ॥ दुःखी जन का दुःख
गमावताजी । जाचकाने निर्जाचक बणावताजी ॥ दे ॥ २३ ॥ इम मोज मजा में जाव-
ताजी । पारा पुर की सीम में आवताजी ॥ दे ॥ २४ ॥ बधाइ भेजी आगे भंडारीनेजी॥
ढाल पहीली अमोल उच्चारीने जी ॥ दे ॥ २५ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ पारा पुर में ते समें ।
युग महीला एकान्त ।बेठी नेणा नीर भर । कह वीत्यो विरतंत ॥ १ ॥ प्रेम सुंदरी शैन्या

पती तणी । अनंग सुंदरी सचीव की जाण ॥ पलि फिकर पती तणी । धरती आर्त ध्यान ॥ २ ॥ दिवस घणा हुवा नाथ ने । गया नृप जोवा काज ॥ हजू खबर लागी नहीं । मिलिया के नही महाराज ॥ ३ ॥ सोम चंद सुत नानड्यो । मात रुदन्ती जोय ॥ कहे मैं लाबु बुला तातने । फिकर करे मत कोय ॥ ४ ॥ ❀ ॥ गाथा ॥ बालका नांहि भाषाया॥भाषाया योषिता मपि॥औत्पाति कोच भाषाया।स वै भवति नान्यथा॥१॥दुहा ॥इम कही द्वारे आवीयो । ते तले पुण्य पसाय ॥ चन्द्र नृपती पठावीयो । कासीद आयो ते ठाय ॥ ५ ॥ दी बधाइ आइया । चंद्र नृप सज्जन संघात । नाश कियो सहू अरी तणो । सहू सुणी हर्षात ॥ ६ ॥ उर लगायो कुमार ने। फलिया थारा बचन ॥ बधाइ लाया पुर विषे । मिलिया सहू सज्जन ॥ ७ ॥ ढाल २ जी ॥ गाफल मत रहरे ॥ यह ॥ पुण्य फल देखो । श्रोता जन पुण्य फल देखो । पुण्य बडा है जग माही । पुण्यवन्त नित्यानंद पाइ ॥ पु ॥ आं ॥ थोडा दिवस सुखे तिहां राहिया । फिर चलण हुकम नृप दइया । सहू परिवार संगे लहिया ॥ काशमीर देश में आया । कनक पुर अनुखंगे रहाया ॥ पु ॥ १ ॥ सीमाडिया उपद्रव जोइ । भाग आये महासेन पर सोइ । कहे अरी शैन्य आया कोइ । लश्कर उनके पास भारि । लगी नहीं हमारी कुछ कारी ॥ पु ॥ २ ॥ महा सेन क्रोधे भराया ।

तत्क्षिण निज दल सजाया। नल चन्द्रनृप सन्मुख आया। देखी जो अरिदिल प्रबला। पेटमें मचगड खल-बल ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ सोचे मनमें घबराया । मैं व्यर्था सन्मुख आया । लडनेमें मरग मुझ थाया ॥ चून लूण जित्ती न भेरी फोजों । यहां क्या लगे मरा खोजो ॥ पुण्य ॥ ४ ॥
॥ कुंडलिया ॥ जंबुक हरी देखे नहीं । तब लग करे गुमान ॥ थइ२ करे शिखरी चडे । मान न किनकी कान ॥ मान० ॥ मगरुरी मनमें लावे । वन चर पशु गरीब । घुरराड तास डरावे ॥ अमोल वदे यों ढोंगी नर । सिंह देखत छोडे प्रान ॥ जंबुक० ॥ १ ॥
॥ ढाल ॥ महासेन सामंत पठावे । जावो लावो चर्चा कुण दावे । यह अपने राज में आवे ॥ सामन्त नम्य मंत्री ने आइ । पूछे कर जोडी नरमाइ ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ कोन नृपनी कहांसे पधारे । फरमावो कारण क्या धारे । तब मंत्री इम उच्चारे । यह चन्द्रसेन महाराया । कंखरथ डाला कैद मांया ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ सामंत भेद सब पाया । तत्क्षिण महा सेनपे आया । सहु बीतक हाल दरशाया ॥ सुनी महासेन नरमी आइ । नम्या चन्द्रसेन भूप तांइ ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ सैन्या पती केद ताको कीया । कनकपुर बाहिर डेरा दीया । पुरजन सुणी हर्षा हीया । समाचार ग्रामो ग्राम पठाया । उमराव गामाधिप बोलाया ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ गेंदू सूभट कुछ संघ लइ । खेड ग्रान में आतो तेइ । जुग देव

भणी पकडेइ । कन्कपूर लेइ बांधी तास लाया ॥ कैदीयो मांहीं बेठाया ॥ पुण्य ॥ ९ ॥
सब उमराव सामंत आया । चन्द्रनृप को सीस नमाया । निज स्थान सहू उतराया । श-
भा की कीनी तैयारी । मन्डप एक सज्ज कियो सिणगारी ॥ पुण्य ॥ १० ॥ बिच पडदा
लम्बा डलाया । मध्य सिंहासन बीछाया । चन्द्रनृप विराज्या ते ठाया । प्रतापसेण सज्जन
सेण पास । मंत्री आदि सहू हुल्लास ॥ पूण्य ॥ २१ ॥ सहु योगस्थान बेठाया । पुर जन
शभामे भराया । नारीगण पटन्तर रहाया ॥ लीलावती आदी ऊंचस्थाने । पुरी नारी भ-
री भूमग म्याने ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ तब सब केदी ने बुलाया । रामाजी सहुने लाया। एक
देश ऊंच बेठाया। सहू जन धिक्कारे ते तांइ । करी जिन मोटीं अन्याइ ॥ पुण्य ॥ १३ ॥
सोमचन्द्र तब ऊभा थाइ । नृपतेन नमन कियाइ । सत्करी बचने सहु तांइ । कहे सुणो
शभा जन सारा । न्याय पेखो मन मझारा ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ यह कंखरथ नामे राणा ।
विन वैर रोश भराणा । धाडा पाडी लुट्या पूर म्हाणा । व्याभिचार करण इच्छा धारी ।
कू कर्म भया कैदी इण वारी ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ यह दूजा दुमुख जी जाणो । लम्पा-
कपट की खाणो । महासती लीलावती पे मोहाणो । मारण धार्यो कंखरथ तांइ । कर्मे
फस्या कैदमें आइ ॥ पु ॥ १६ ॥ तीजा कुदत्त मंत्री यांरा । दिया दुःख सतीने अपारा

। सचीव होवण लालच दिल धारा।कुसंगते कैदी कहवणा।पाप का फल प्रगटाणा ॥ पु ॥ १७ ॥ चौथा पटेल ए मुकुन्द राम । मार्ग सती ठगी निकाम । वस्ये मनमे सदा हराम । दुसरीदा करण आय अन्याइ । थंधी त्रान महाणा थयाइ ॥ पु ॥ १८ ॥ पंचम जुग देव वणिक महा लोभी । इनाम इछा धर योभी । देनशो ठग्या शंन्यापती थोभी । इनाम यह मोटो अब पाया । कर्मसे भाग किहां जाया ॥ पू ॥ १९ ॥ छट्टा शंन्यपती महासेण । नहीं इणथी हमने लेण देण । पण व्यभचारी ना यह चेन । कंखरथ राणीने बिगाडी । इसो न करे कोइ अगाडी ॥ पू ॥ २० ॥ सातमी कुसीता राणी । हम चन्द्रनृप देख मोहाणी । पण नहीं यश इच्छा पूराणी । कराग्रह डाल्या भूप तांइ । नारी जाणी पकडी हम नाहीं ॥ पु ॥ २१ ॥ इम निज२ कर्म के जोग । सातों ए पड्या सुनियोगे । उपार्जित फल ए भोगे ॥ दोश नहीं म्हाणो ने किन केरो । राज नीती ज्यों कियो येरो ॥ पु ॥ २२ ॥ राजा सो रहा में चाले । पुत्र पर परजा पाले । अन्याइनी संगत टाले । तेहने माने परजा सारी । चले तसे अज्ञा मझारी ॥ पु ॥ २३ ॥ जोको दृष्ट राजा प्रजा जान । तो तेहनो पक्ष न ताणे । करे पंच पद भ्रष्टवाने । यह नीती दरसाइ । ज्यों नृप राष्ट सुख पाइ ॥ पु ॥ २४ ॥ इम कही बैठा प्रधानो । सहू न्याया न्याय पहचान्यो ।

यह षष्टम खंड के भ्यानो ॥ ढाल दूजी अमोल ऋषि गाइ । सुणी मजलस सहू हर्षाइ ॥ पुण्य ॥ २५ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ कंखरथ राजा तणा । मोटा पांच उमराव ॥ कर जोडी ऊ. भा हूवा । नमीचन्द्र ने भल भाव ॥ १ ॥ कर जोडी अर्जी करे । सर्व राष्ठ वती तेह ॥ काशमीर सरणहै आप के । रखे हिवे देवो छेह ॥ २ ॥ अन्याइ का राजमें । सहू अति पाया दुःख ॥ ते फन्दे न पसावतां । देवो तात तुम सुख ॥ ३ ॥ पूछे शभा थी पंत्तते । कहो चित नो सत्य चाव ॥ सहू कहे मान्या अधिपती । चन्द्रसेण महाराव ॥ ४ ॥ जयर ध्वनी सहू करी । औ अति दुःखिया होय ॥ किया कर्म उदय भयां । सहाय न होवे कोय ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ३री ॥ मुक्तिरो मार्ग दोहीलो ॥ यह० ॥ पुण्य प्रगठ्या सुख संपजे । मिले सज्जन संयोग ॥ दुःख दोहग दूरा टले । संचो पुण्य सहू लोग ॥ पुण्य ॥ १ ॥ एकी शभा को मत जाणीयो । सहु चन्द्र नृप चहाय ॥ दुहाइ फिराइ तत्क्षिणे । हर्ष धुंघर्वा वजाय ॥ पुण्य ॥ २ ॥ जेजे जागीरी जागिरदार की । कंखरथ दावी तेह ॥ दीनी पीछी संभलायने । बूंध्यो सहुनो स्नेह ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ काराग्रह खाली कियो । जेम रह्या चन्द्र राज ॥ सहू केदी छूटी आवीया । जयरकरता अवाज ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ देवधर श्रीधर ओलखी । लागो पिताजीरे पाय ॥ बृद्ध हर्ष्यो घणो चित में ।जन्म आधार ये थाय

॥ पुण्य ॥ ५ ॥ गोरी अवसर देखने । तत्क्षिण शभा माहें आय ॥ लज्जा थी सुसरा भरतारने । नीचो सीस नमाय ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ वैरागणरो भेप देखने । सहू अश्चर्य पाय ॥ सा करजोडी चन्द्र नृपथी । भणे अति नरमाय ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ ए सुसरा ए पति माहे रा । गया कंवरथ लार ॥ विजय पुर वस्या सासू वहु गइ । रह्या तिहां स परि वार ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ अनीती करी कंवरथ मुज। कियो पतिवृत भंग ॥ परवस्य स्यूं करुं नातजी । अव किस्यो म्हारो ढंग ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ कहो जलूं ज्वाला विपे । तो पण हुं छूं तैयार ॥ कृपा हुवे ने भलो लगे । तो मिलावो परिवार ॥ पुण्य ॥ १० ॥ पुरोहित एक ऊभो हो भणे । सुणो नीती बुद्ध ॥ परवस्य कृतव्य जे नीपजे । पश्चातापे ते हुवे शुद्ध ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ परं वस्यं कर्त कर्म । अन्तारंग निर्लिपितम् ॥ पश्चातापे न शुद्धन्ती । न तस्यः जपः तपः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ गण कारण मिलाइये । परिवारथी इण तांय । सहू कहे येही योग्यहै । सचित्र हुकम कराय ॥ पुण्य ॥ १२ शोभाग्य वेस पेराइने । दीनी श्रीधर हात ॥ नृप आज्ञा ते मान ने । ले गयो गोरी संगात ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ तीनो ने बुलाइ लीलावती । राख्या आपणे पास ॥ सती उपकार भुले नहीं । दिनो सुख सहू तास ॥ पु ॥ १४ ॥ विप्र सिपाइ तुरंग को । सुणी चन्द्रसेण नाम ॥ जाण्य

। कियो
हांसी तेही जीते । आइ कियो प्रणाम ॥ पु ॥ १५ ॥ ओलखी तस शशी रायजी । कियो
घणो सत्कार ॥ सहू समक्ष नृप इम कहे । थांरो मुज पर उपकार ॥ पु ॥ १६ ॥ कन्कपुर
तस आपीयो । ते वक्सीस ने माय ॥ वक्त करीया सुकृत्य । इम फलोदय पाय ॥ पु ॥
१७ ॥ और सहू ने संतोषीया । बंदोबस्त किया सर्व ॥ आनन्द वर्त्या राजा में । हुवा
अठाइ पर्व ॥ पू ॥ १८ ॥ काल केतोही तिहां रह्या । श्रीचन्द्र भूपाल ॥ अमोल कही ढा
ल तीसरी । पुण्ये सुख विशाल ॥ पु ॥ १९ ॥ दुहा ॥ निजपूर जावण रायकी । इच्छा
इ ते वार ॥ हुकम देइ शैन्यापति भणी । शैन्य कराइ तैयार ॥ १ ॥ तीहूं राजा मं
आदि । सातों केदी पण संग ॥ थथा योग्य वाहन रुढे । चाल्या धरते रंग ॥ २ ॥ सुखे
मुकाम करता थका। मनाता निज आण । आया विजयपूर अनुखंग। रह्या सहू सुख स्थान
॥ ३ ॥ बधाइ भेजी आगले । आया चन्द्र भूपाल ॥ सामान्तादि सहु भणी । जणाया ते
हाल॥४॥ सहू सुण अति आणन्दिया । पूर सजाइ कराय ॥ पुण्यात्म संयोगने। हित र्थ
सहू चित चहाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल४ थी ॥ पोष दशम दिन आणंद कारी ॥ यह० ॥
आज विजयपूर नगर के मांइ ॥ हर्षित हुवे सव लोग लुगाइ ॥ आं ॥ द्रविक भाविक क
चरा कढाइ । रागने [illegible] माफ कियाड ॥ सुगंधोदक दिया छिटकाइ । पूष्य वि

सुगंध मह काइ ॥ आ ॥ १ ॥ सिणगार्या हाट हवेली तांइ। नवा नव रंग चित्र विचित्र भर्याइ ॥ द्धजा पताका गुडी फरगाइ । इंद्र पुरीसी पुरी ते वणाइ ॥ आ ॥ २ ॥ नर नारी सहु सज्ज थयाइ । षोडश सिण गारे अमर सुरी दाइ ॥ पुष्प फल कर दधी भात पाणी । कुंभशिर कडी बालक महाइ ॥ आ ॥ ३ ॥ इत्यादिशुभ सकुन प्रेरक । शुभ द्रव्य ले गोरी सन्मुख आइ ॥ मंज्जुल दीर्घ मनोहर नादे । मंगल गीत रही मिल गाइ ॥ आ ॥ ४ ॥ भूषण वस्त्र गान तानने । वाजिंत्र थी रह्यो गगन गरजाइ ॥ जोता मार्ग ऊभा पूर गोपूरे । नृप दर्श ने नयन लोभाइ ॥ आ ॥ ५ ॥ ततले राय सवारी आइ ।पुरजन झुली२ प्रणम्याइ ॥ मध्य वजारे चाली सवारी । जय२ कारे सहूजन वधाइ ॥ आ ॥ ६ ॥ मुक्ता-पल ना मेह वर्षाया। देखत गोरा गोरडी लोभाइ । ठाट पाट से आया भवन निज ॥ उत 'रिया राज शभा के मांइ ॥ आ ॥ ७ ॥ राज सिंहासण चन्द्रजी विराज्य. । दोनो नृप विराज्या नेडाइ ॥ प्रधानजी प्रधान पदस्थे । यथा योग्य सहू शभा भराइ ॥ आ ॥ ८॥ निजराणा किधा सहू खुशीका । बधाइ में वटे मेवा मिठाइ ॥ सोमचंद्र मंत्री ऊभा होइ । कह सुणियो शभा जन स्थिर थाइ ॥ आ ॥ ९ ॥ होणहार की गति विचित्र । एक रात्री मे श्रेष्ठी बदलाइ ॥ आखिर सत्यकी जय हुइ है। अन्याइ पडया कैद के मांइ ॥ आं ॥

१० ॥ अथथी मांडी इति सूधी । सहू हकिगत दी संभलाइ॥सुन सहु जन अश्चर्य पाया ।
धन्य२ कहे नृपराणी के तांइ ॥ आ ॥ ११ ॥ सोमचन्द्र और शैन्या पति को । काशमीर
देश दिया आधा आधाइ ॥ सोमचन्द्र मंत्री हुवा श्रीधर । शैन्यापति मंत्री गेंदू बण्याइ ॥
आ ॥ १२ ॥ शिछपुर विप्र सीपाइने दीयो । भील परगणो दीया रामाजी तांइ ॥ बुद्धी
सागरेन देता जागीरी । सज्जन सेण देवादी नाहीं ॥ आ ॥ १३ ॥ रसोया विप्रने कुल
ग्राम दीयो । और वकसीस यथा योग्य दीराइ । वस्त्र भूषणे सहूने संतोष्या । आनन्द मं
गल रह्या वरताइ ॥ आ ॥ १४ ॥ सहू केदी ने जुदे२ स्थानक । नजर कैद में दीना ठा
इ । आहार वस्त्र की साता सहू विध ॥ वंदोबस्त किया पुक्ताइ ॥ आ ॥ १५ ॥ चारक
शाला खाली कराइ । अठाइ महोत्सव दिया मंडाइ ॥ दान शाला मांडी घणो देश ।
पोशे दुःखीया दीनके तांइ ॥ आ ॥ १६ ॥ सज्जनसेण ने प्रतापसेणजी । काल कित्तोइ
रह्या तिण ठाइ॥सहु प्रकारकी शान्ती वर्ती । लेइ रजा निज राजे ते जाइ ॥ आ ॥१७॥
हिवे चन्द्र सेण न्रपती महा राजा । सती लीलावती सब सुख पाइ । पंच इन्द्रिका सुख
भोगवे । एकदा खीर सिंधू स्वपन पयाइ ॥ आ ॥ १८ ॥ जागी नृपने स्वपन जाणायो
नृप कहे होसी कुंवर सुख दाइ ॥ स्वपन पाठक पण तिमही प्रकास्या । अखुट द्रव्य दे

किया बिदाइ ॥ १९ ॥ नवमांस बीत्या जन्म कुँवरजी । जन्मौत्सव दशोटण क धाइ ।
गुण निष्पन्न सागर चन्द्र नाम दियो । बृद्धी होवे इन्दू ज्यों पंच धाइ ॥ आ ॥ २० ॥
योग वये सहू कला पढाइ । धर्म नीती भी अधिक सिखाइ ॥ परणाइ राजेश्वर कन्या ।
जुगराज पद दिया बेठाइ ॥ आ ॥ २१ ॥ राज काम सहू संभाल्यो कुँवरजी । चन्द्र ली-
लावती निवरा थवाइ ॥ जन्म सुधारण आगे सुख कारण ।धर्म ध्याने तन मन रमाइ ॥
॥ आ ॥२२॥ दान दे देवावे लेवे घणो लावो । सील पाले तपें तन तपाइ ॥ शुभ भाव
भावे गावे अमोलख । पट खन्ड ढाल चौथी सुख दाइ ॥ आ ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥
तिण अवसर भूमन्डले । विश्वऋषि आचार्य ॥ चरण करण ज्ञानीगुरु । तारण जग सिन्धू
नार्थ ॥ १ ॥ महाव्रत सुमती गुप्तीधर । जीत्या इन्द्रि कषाय । ब्रह्मगुप्ती आचार धर ।
छत्तीस गुण शोभाय ॥ २ ॥ सम दम खम उपसम धर । तप जप खप नित्य ठाय ॥
पंचसेय मुनिवर संगे । विचरे जन पद मांय ॥ ३ ॥भव्य भाग्योदय आवीया । विजय पु-
री ने वार ॥ मनो रमा उद्यान में । वन पाल आज्ञा धार ॥ ४ ॥ उतर्या सहू मुनिवर
तिहां । ज्ञान ध्यान में लीन ॥ वेयावच्च सज्झाय तप में । रझ्या रत्त प्रवीन ॥ ५ ॥❀॥
॥ ढाल ५ मी ॥ कुविश्न मार्ग माथे घिग २ ॥ यह०॥ सुणो भवी धन्य २ मुनि राया ॥

जिन जिन मार्ग दिपायाजी ॥ मनोरम वागीचाने शोभाया । माली हर्ष भरायाजी ॥ सु
॥ १ ॥ अच्छा सिणगारे तन सजाया । राज सभा मांहे आयाजी ॥ कर जोडी नृप ने
शीस नमाया । बधाइ देवे उमायाजी ॥ सुणो ॥ २ ॥ गणिवर विश्व ऋषि मुनि संगे
। विराजा बाग में आइजी ॥ श्रवणी अत्यान्धा नरेश्वर । रोम राइ हुलसाइजी ॥ सुणो
॥ ३ ॥ तज सिंहासण वंदन किनो । वकसीस दीवी माली तांइजी ॥ राज चिन्ह वर्जी
तन भूषण । बाराँलाँख हिरण दिराइजी ॥ सु० ॥ ४ ॥ वन रक्षक गया गेह हर्षाइ । म-
हीपत हुकम फरमाइजी ॥ चतुरंगणी सहू शैन्य सजवाइ । सहू चालो दरशन तांइजी ॥
॥ सु० ॥ ५ ॥ नर वर न्हाइ सिणगारे सजीया । पेखी इन्द्र जावे लजीयाजी ॥ सामंत
मंत्री आदि सहू आया । शशी तारे परिवारे छजीयाजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ मोंटे मयंगले भू-
प विराज्या । कुँवर मंत्रीश्वर साथेजी । और उमराव गयवर यथा योगे । चौपखे नर ना-
गेजी ॥ सु० ॥ ७ ॥ छत्र चमर आग ताप विराजे । अष्ट मंगल आगल चाले जी ॥ अ-
ष्टोत्तर शत हय गय आगे । कोतल भूषण भालेजी ॥ सु ॥ ८ ॥ पायक सहु मुख आगल
चाले । जय २ शब्द उचरंताजी । तुरग स्वार लारे धर भाले । थइ २ नृत्य करंताजी ॥
॥ सु ॥ ९ ॥ तस पाछल रथ मांहे विराजी । लीलावती ने कुँवराणी जी ॥ ठकराणी से-

ठाणी बहुली । भूषण रुपे इन्द्राणी जी ॥ सुणो ॥ १० ॥ अष्ट देश देशनी बहुदासी । निज २ वेस सुहाइ जी ॥ निज भाषा में गीत गावे।गगन गयो गरजाइजी॥सुणो ॥ ११ ॥ प्रत्येक रथने आगे वाजिंत्र । जुदी २ तरह झणकारे जी ॥ लारे शिवकाये शाह विराज्या । निज २ घर परिवार जी ॥ सुणो ॥ १२ ॥ अन्य अनेक पुर जन सहू सजीया । इच्छा जुदी२धारीजा । केइतो मुनि दर्शन काजे । केइ जेष्ट की लारीजी ॥ सुणो ॥ १३ ॥ देश ना सुणवा प्रश्न पूछवा । जोवा प्रषदा मिलण सज्जनो जी ॥ कितोल ठोल तमाशो पेखण । चाल्या मिल बहु जनो जी ॥ सुणो ॥ १४ ॥ वाजिंत्र नादय अंतलिख गाजे । नीशाण नेजा फररावे जी । मध्ये पुरे हो बहु ठाठ हर्षे ।चन्द्र वंदन ने जावे जी। सुणो ॥ ॥ १५ ॥ बाग नेडा आय मुनि देखाया । ऊभा तिहां हू राही जी ॥ विनय विवेक मर्यादा काजे । अभिगमन पंच संचाइ जी ॥ सुणो ॥ १६ ॥ सचित वस्तु रखी सहू दूरी । अजोग अचित पण छोडीजी॥ए कपट सेडी मुख आ... सण । नम्र भाव कर जोडीजी । सुणो ॥ १७ ॥ नहीं दुग मनासन आया । पाचा ... नमायजी । तिखुत्तो विधीस्यूं वन्द्या । आनन्द उर न समायाजी ॥ सुणो ॥ १८ ॥ लीलावती आदि सहू नारी । ते पण इण प्रकारोजी ॥ छइ निंजर करी पण आया । ...प हरण ने विचारो जी ॥ सुणो॥

॥ १९ ॥ पुरजन आदि प्रषदा भराइ । जोग आसन बेठाइजी ॥ मुनि मुख पेखत त्रस न-
होवे । नयण वयण विकसाइजी ॥ सुणो ॥ २० ॥ ❀ ॥ घन ॥ चकोर निशापति देख ह-
र्षाया । रवी दर्श कमल विकसाया ॥ घन गर्ज केक नृत्य ठाया ।युवती संग यौवनी लुब्धा
या ॥ भ्रमर कुसूम रस लपटाया । राज हंस मुक्तासिन्धू पाया ॥ ऐसे भवी गुणी मु.नि
पासे । अमोल मन होत है उल्लासे ॥ जी जिन तूंही ! ! ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ षटम हु-
ल्लास यह धर्म प्रकाशक । ढाल पंचम मन रंगेजी ॥ कहे ऋषि अमोलख आगे । धर्म क
था उमंगे जी ॥सु॥२१॥❀॥दुहा॥ परिषद भरी मुनि आगले।वाणी सूण नउमंगाय॥क्षुदित अन्न
नीर पिपा सित ॥ जिमते लवल्या लगाय ॥१॥ आस निरासी कारणे।तारण जगोद धी जंत॥
वारण अघ संचित सघन । धारण गुग निज नंत॥ २ ॥ निराच्छित यश शिष्य द्रव्य ।
इच्छित परोप कार ॥ मयुर स्वरे बुठ घटा । गर्जारव तेंप्रकार॥ ३ ॥ अक्षेप विक्षेप कारणी।
संवेग वेराग्य पूर ॥ देवे मुनिवर देशना । सुणे श्रोत हर्ष नूर ॥ ४ ॥ ❀ ॥ढाल ६ठी ॥
चन्द्रायणामें ॥ प्रथम नमन करी श्री नवकार ने । देवे देशना भव्य जीवोंको तारने । सु
णो श्रोता प्रमाद अंगर्था टारने । निश्चय कर जिन वाणी लो चित धारने । भव भ्रमण
मिट जाय पाय गति सारने ॥ पणहां ॥ जो तुम वांच्छो होवा खेवा पारने ॥ सुणो हो

भव्य लोको । लावो लेवो जी अवसर पायके ॥ आं ॥ १ ॥ भ्रमण करत चौरासी लक्ष
ज्योनि मांय तूं । पर वश रहियां दुःख अनन्ता पाय तूं । क्षेल वेदना नर्क मांय अति स
हाय तूं । छेद भेद तिर्यंच गती में थाय तूं । मनुष्य भिखारी देव सेवक कहवाय तूं ॥
पणहां ॥ इम चहू गति में भ्रमण करत इहां आय तूं ॥ सुणो ॥ २ ॥ नीठ२ ये पायाहे
नर देय ने । आर्य देश उत्तम कुल में जन्म लेयने । काया निरोगी इन्द्रि पूर्ण छ्येने ।
दीर्घ आयु निग्रन्थ गुरुजी सेयने । सूल सुणो शुद्ध राखो श्रद्धा नयने ॥ पणहां ॥ धर्ममें
प्राक्रम फोडे मुक्ति मिले जेयने ॥ सुणो ॥ ३ ॥ काचा कुम्भ कांच सीशी जेसी काय छे
यत्न करंता छिनमे छेह देखाय छे । सात धातू मल मूत्रसे उत्पन्न थाय छे । शुद्ध करण
ने क्यों मल२ ने नहाय छे । ऊपर चर्म विष्टित घिनता माय छे ॥ पणहां ॥ तप क्रिया
थी काया पाक कहवाय छे ॥ सुणो ॥ ४ ॥ ❁ ॥ मनहर ॥ देख इस शरीर में । अनेक
सुख मान रह्यो । इतनी तो विचार । यामें कौन बात भलीहै ॥ हाड हाड बिच मांस ।
मांस बिच नशा जार । पेटसी मिटारी तामे । थोड२ मली है ॥ हाडनके हाथ पांव । हा
डन के दांत नाक । हाडनके पिंजर में । हाडन की नलीहै ॥ शंकर कहे देख जन । या
मे तूं भूलो मत । भीतर तो भंगार भरा । ऊपरसे कली हैं ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ मात

पिता सुत भ्रात कुटुम्ब और कामनी । सब स्वर्थ का जान खुशामत दामनी । विन मत
लव नहीं कोइ सेवा करे श्वामनी । हुकम सहू उठाय धन लेवा हामनी । सब दूरा भग
जाय बिगडे काया चामनी ॥ पणहां ॥ मूर्ख रह्या लल चाय खोवे खर्चे नामनी ॥ सुणो
॥ ५ ॥ ❀ ॥ श्लोक शार्दुल० ॥ वृक्षं क्षिण फलं तज्यंति विहंगा । शुष्कं सर सारसा ॥
निगन्दः कुसुमं तज्यंति मधुपा । दग्धं वनात मृगाः ॥ निर्द्रव्य पुरुषं तज्यंति गणिका ।
भृष्टं नृप सेवकाः ॥ सर्व स्वार्थ वश जगोपि रज्यते । नो कस्य को वल्लभाः ॥ १ ॥ ❀ ॥
ढाल ॥ पंच इन्द्रिना भोग रोग सम जाणीयें । फल किंपाकनी औपमा तास वखाणिये ।
भोगतां लागे मिष्ट प्रणाम दुःख खाणीये । मृग मपतंग मीन कुंजर यह प्राणीये । एकेक
इन्द्री वश भर्या अन्नाणीये ॥ पणहां ॥ पंच इन्द्री वश जे तस गत किसी जाणीयें ॥ सु
णो ॥ ६ ॥ ❀ ॥ श्लोक उपजती० ॥ कुरंग मतंग पतंग भृंगा । मीन हता पंच भिरेव पंच
॥ एके प्रमादे सतते हन्यतेय । सेवितया पंच कथं चिरायु ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ आयुष्य
चंचल जानो कुंजर का कान जो । पाणी बुद बुदा अथिर पीपल का पान ज्यो । ओस
न्द विद्यु प्रभ संध्या का भान ज्यों । क्षिण२ होय बिनाश सडेला धान ज्यों । विश्वास
नहीं क्षिण एक पारधी बान ज्यों ॥ पणहां ॥ क्यों रह्या अचेत समजकर छान जो ॥

सुणो ॥ ७ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ आयुर्वर्ष सतेन्द्राणां प्रमितं । रात्रोतदर्ध गतं ॥ तस्या धंस्य
तदर्ध मर्धम परम । बालत्व वृद्धत्व यो ॥ शेषं व्याधी वियोग दुःख सहितं । सेवादी भिर
नीयते ॥ जेव वारी तरंग बुंद२ समें सौक्य कुतः प्राणी नाम ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ जर
जोरु जमीन जगमें अथिर है । इस काज लडे केइ भूप मरे केइ वीरहे । ।किनके साथ नहीं
गइ जला डाला हीर है । परिग्रह इसका नाम क्यों करता पीर है ।पुण्य से ढग मिल जा
य पापे जावे खिरहै ॥ पणहां ॥ समाता रखे दिल माहे वडावे धीरहै ॥ सुणो ॥ ८ ॥ ❀
॥ श्लोक ॥ कन्क कान्ता सुत्रेण वेंष्टितं सकलं जगत् ॥ता सूत्रे षु वि मुक्तपु॥द्धि भुजा पर-
मेश्वरं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ संसार माहे जे जीव ते सुखिया नहीं । धन वंत तथा गरीब
देखो द्रष्टे सही । गरीव करे धन आस धनवन्त चिन्ता गही । अहो निश धन्धा माहे
जाय जगका वहीं।निश्चिन्त जे होय छोड जग फन्द दही॥पणहां॥साधू निरागी जेह तेह सुखिय।
मही मही॥॥सुणो॥९॥❀॥गाथा॥❀॥नवीसुही देवता देव लोए।नवी सुही पुढवी पइराया॥ नवी
सुही सेठ शेन्या वहीए।एकन्त सुही साहू वियगर्गी॥१॥❀॥ढाल॥काया कुटम्बके काज अकाज
घणाके।त्रस स्थावर जे जीव प्राण तेहना हरे।पोते वान्धे कर्म पेट दूजा भरे । भोला सम
जे नःय दुर्गत से ना डरे । काय कुटम्ब यहां रेय विसी जीव पर पडे ॥ पणहां ॥ समजे

कोइ सुजाण निर्ममत्व पद वरे ॥ सुणो ॥ १० ॥ त्रण सरण नहीं कोय जक्तमें तेराहै । सब मतलब के काज कुटम्ब तुज घेराहै । मुढ इसमे भरमाय कहे मेरा मेरा है । इस दुनिया के मांय दो दिनका बसेराहै । कर सुकृत करणी जीव आय तेरे लेरां है ॥ पणहां धर्म सदा सुख कार आधार घणेरा है ॥ सुणो ॥ ११ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ शिखरणी ॥ पिता माता भ्राता प्रिय सहचरी सुनु निवहः । सुहृत श्वामी मद्यत्करी भट रथाश्व परिकरः निमज्जंतं जंतू नरक कुहरे रक्षितू मलम् । गुरोर्धर्मा धर्म प्रकटन त्कोऽपि नपरः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ धर्म दोय प्रकार कह्या जिनराजरे । पहिला सूत धर्म जाण सुणे व्याख्या नाजरे । नव तत्व भेदानु भेद धारे हीया माजरे । पट द्रव सप्त नय निक्षप प्रमाणाजरे । चतुर्थ गुणस्थान रह्या छे घणाजरे ॥ पणहां ॥ मोक्ष गामी निश्चय तेह बैठा धर्म जहाजरे ॥ सुणो ॥ १२ ॥ दूसरा चारित्र धर्म भेद दो जाणरे । सागारिक श्रावक वृत पहचानरे । अणुवृत हे पांच तीन गुण खाणरे । शिक्षावृत च्यार धार शास्त्र प्रमाणरे । पंचम गुणस्थानक स्फर्श्य सु प्राणरे ॥ पणहां ॥ पंदरह भवके मांय निश्चय निर्वाणरे ॥ सुणो ॥ १३ ॥ दूजा अणगार के वृत पांच मोटा सही । अहिंशा सत दत ब्रह्म निर्मत्व गही । निशी आहार के त्याग ए कदा खन्डे नहीं । माता जे प्रवचन वर्सुप ले चही । मर्याद में उपकरण रख

ममता दही ॥ पणहां ॥ एक या तीजे भव मुक्ति तेही लही ॥ सुणो ॥ १४ ॥ इण प्रमा
ग कमाइ बणे सो कीजीये । सर्व देश वृत दोनों सदे सो लीजीये । अभय सूपात्र दान
नित्य प्रत दीजीये । सम्यक्त्व युक्त सहू धर्म चैतन्य आदरीजीये । जिनागम रहस्य धार
अनुभव सुधो पीजीये ॥ पणहां ॥ प्राप्त मानव भव सफल करीने जीजीये ॥ सुणो ॥१५
॥ कहणा हमारा करना मरजी श्रोता तणी । जो मानेगा वात तो शोभा रहसी
घणी । दोइ भव मिलसे चेन छूटसे दुःख अणी । नहीं तो चउगत मांहे होसी फजीती
घणी । हात न रहसी वात पछतासो सुख भणी ॥ पणहां ॥ वक्त पर चेते जेह तो होवे
शिव धणी ॥ सुण ॥ १६ ॥ जब तक शरीर सशक्त तब तक होवे धरम । वृद्ध पणा जब
आय होवे ताकत नरम । इंद्रियों वल हट जाय चित्त में रेवे भरम । शुद्ध बुद्ध वीसर जा
य रहे न जरा शरम । फिर मन में मुरजाय बान्धे उलटा करम ॥ पणहां ॥ अवसर लेवे
लाभ तो पावे गति परम ॥ सुण ॥ १७ ॥ ❀ ॥ श्लोक शार्दुल ॥ यावत् स्वस्थ मिदं
शरिर मरुजं यावज्जरा दूरतो ॥ या वच्चेचाग्द्रिय शक्तिर प्रतिहता यावच्चिरो वायुषः ॥
आतम श्रेय सिताव देवही जनेः कर्तव्यं धर्मोद्यमः । संदिप्त भुवनेहि कुप खननं प्रत्युद्यमः
किं दशः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ इत्यादि बहू भांत उपदेश सुणावीयो । जिन वाणी रुप

तोय श्रोताने पावीयो । भव्य जीव चत्रक समान हीयो उल्लसावीयो । जावाशा जिम कुद्र ष्टी हीये मुरजावीयो । भव्य जीवोंको मिथ्या ताप नशावीयो ॥ पणहां ॥ स्याद वाद सद्रूप शिव पन्थ बतावीयो ॥ सुणो ॥ १८ ॥ सुणी घणा जमन वैराग्य मनमें आणने। सम्यक्त्व धारी तीन तत्व पहिचान ने । केइ श्रावक व्रत लिया हित जाण ने । केइ संयम लेवा चितमें ठाण ने । इम घणो उपकार हुवो विज्ञान ने ॥ पणहां ॥ नृप आदि सहू वन्दे मुनि जग भाण ने ॥ सुणो ॥ १९ ॥ नमन विधी सुं करी गुण मुख ऊचरी । बैठा वाहणे आय हर्ष दिलमें धरी । आया जिन दिस जाय साहू साथे करी । मार्ग में वाख्यान तणी करता चरी । आया निजर स्थान गुन हृदय भरी ॥ पणहां ॥ मुनिराज महाराज ज्ञानादि गुण झरी ॥ सुणो ॥ २० ॥ छट्टो उल्लास छट्ठी ढाल औछावणा । भव्य जन सुण वैराग्य मनमें लावणा । शक्ति सम पच्चखाण चितमें ठावणा । वक्ता रस भर श्रोता आगे गावणा । हूवहू वैराग्य रस दरसावणा ॥ पणहां ॥ कहे ऋषि अमोल राग चन्द्रायणा ॥ सुणो ॥ २१ ॥ ॥ दुहा ॥ दूसरे दिन ते नृपती । कराइ शैन्य तैयार ॥ पूर्व पर सब ठाठ ले । आइ वन्द्या अणगार ॥ १ ॥ चन्द्रसेण कर जोडने । पूछे मुनिसे आम ॥ पुर्व जन्म की मुज कथा । कृपा करी कहो श्याम ॥ २ ॥ किस्या कर्म किया हमें । तेहथी पाया दुःख ॥ राज

गयो कंखरथ कर । कुबुद्धी करी दुमुख ॥ ३ ॥ कृपा करी फरमावीये । जेहथी टले संदेह ॥ हलु कर्मी प्राणी सुणी । कर्म वन्ध डर लेह ॥ ४ ॥ विश्व ऋपि कहे भूपति । सुणो पु-
र्वे विरतंत ॥ जे कर्म वन्धे जीवडो । ते भुक्तया छुटन्त ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ७ मी ॥ श्री वीर जिन्द सासन धणी ॥ यह० ॥ मुनिवर कहे भव्य सांभलो पुर्व भव वातां । वेर वांध्या इण जीवडे । तिणथी दुःख पाता ॥ ज्ञानी भुक्त ती वक्त । दोष नहीं किणरो दरसाता । बीनी वात जे होय ते भवों जन ने सुणाता ॥ एक चित रख सांभलो ए जिंद्र वीकथा टा-
र ॥ संवेग पामी अहो जीवां । लीजो संयम भार ॥ १ ॥ पश्चिम दिशीरे मांय । देश संडिल मनोहर ॥ तिहां राय धानी ग्राम । साणंद नाम छे सुख कर ॥ सम्राट विभू नृप । न्याय ने नीती गुण धर ॥ कमलनी नामे नार । शील रुप गुण आगार ॥ वाणी नीधी प्र-
धान जी ए । सुखे२ करे राज ॥ पुण्य प्रवल जग जेहने । तेहने कमी कछू नाज ॥ २ ॥ तेहि नगरी मांहे वसे धन पाल व्यवहारी ॥ धन धान्य घर पूर्ण । लक्ष्मी नामे तस नारी ॥ पूर्व पुण्य ने जोग । कुमर युगल जन्म्यारी ॥ रुप कला ए बुद्ध वन्त । नीती ए कुल उद्योत कारी ॥ मोटा हुइ ग्रह कला भण्या । मंत्री हुवा दोइके दोय ॥ धनदत को सुदेव छे । श्रीदत्त चारुदत्तरे जोय ॥ ३ ॥ तिण नगरी में वणिक वसे वसुदत्त ए नामें । यशो

मती तस नार । नाम तैसा प्रणाम ॥ तेहना नंदन दोय हरीचंद गुणचंद पामे ॥ बुद्धि वंत पुण्य वंत । भणी लग्या घर के काम ॥ द्रव्य अल्प छे घर विषे ए । करे तुच्छ वैपार ॥ ष्कर होवे आजीविका । फिर ते नयर मझार ॥ ४ ॥ हरीचंद ने गुणचंद । मंत्री छे प्रेम प्यारो । सुनक्षत्र ने वरदत्त चारों मिल करे वैपारो ॥ खावण पहरण लेन देण बहू आपसमें ज्यांरो ॥ कोइ बात को अंतर रखे नहीं ते लगारो ॥ इम सुख थी काल निर्गमे ए । काल केताइ मांइ ॥ धनपाल नामे सेठजी । विदेशे कमावा जाय ॥ ५ ॥ धन दत्त श्रीदत्त इम जाण । आया पिताजी पासे॥में जावां परदेश। आप रहो घरे उल्लासे॥ब्रद्ध वय तुम तात पुत्र जन्म्या शीं आसे । येही वक्त आवे काम । भाग्य पिताजी तपासे ॥ भाग्य परिक्षा प्र-देश में । गयां मनुष्य की थाय । बुद्धि बल चातुरी बडे । कीमत होय स्वाय ॥ ६ ॥❀॥ दुहा ॥ पान पदार्थ सुगड नर । अन शोल्याइ बिकाय ॥ ज्यों२ प्रदेश संचरे । त्यों२ महें-गा थाय ॥ १ ॥ ॥ इम सुणी पुत्र बचन । पिता आणंद अति पाया ॥ शुभ महूर्त दे खाय । नगरमें पडह बजाया ॥ अमुक दिन धनपाल कुमर परदेश सिधावे ॥ जो जासी तस लार तास ते राज दिरावे ॥ वैपार करी वर्ष पांच मेंए । पाछा आसी इण ठाय ॥ इम सुणी वैपारी घणा । मनेमें हर्षित थाय ॥ ८ ॥ हरीचंद गुणचंद दोनों । सुणी

पिता कने आया ॥ कर जोडी शिर नामी । पोताने विचार जणाया ॥ हम जावां धनदत्त साथ । करण विदेश कमायां । आप प्रशादे कमाय । थोडा दिन रहसां आवा । पुत्र व-चन वसुदत्त सुण । शक्ति सारु धन देय ॥ होंश्यारी से रहजो सदा । विश्वासी इम के-य ॥ ८ ॥ दोनों दोइ मिल बुलाय । मन की वात जणाइ ॥ ते पण कहे तुम साथ । हमे पण चालां भाइ ॥ तात नी आज्ञा लेय । लियो वित्त करण कमाइ ॥ हरीचन्द भगा नी ली ।धनदत्त गेह चल्याइ ॥ वहू जन आया देखनेए । धनदत्त हर्पित थाय ॥ देशावर में खपे जिसो । मालथी सकट भराय ॥ ९ ॥ सहू जणा हिली मिली । अंवू निध तीर आ-या ॥ मोटा मजवूत वाहणो।लाया माल भराया ॥ शुभ सुकन शुभ महूर्त बेठा सहू जन माया ॥ योग्यविधीये पूज तिहांथी वाहन चलाया ॥ निर्विधन ते चालना । थोडा दिनके मांय ॥ वरुद्वीप में आवीया । वाहण कंठ थो भाय ॥ १० ॥ आपणो २ माल लेइ । सब थले उतारिया ॥ जुदा २ गाडा मांय । जुदा २ माल ते भरिया ॥ उक्षीया नयरी मांय सहु जण मिल संचरीया ॥ जुदी २ जोग हट सहू जन भाडे करिया ॥ जुदो २ वेपार क-रता थका । जुदी २ वुद्धि चलाय ॥ वसुदत्त पुत्र न पुण्य थी । कमाइ हुइ स्वाय ॥ ११ ॥ थोडा दिनारे मांय । कोटी सोनैया कमाया ॥ ते देखी सहू साथ मन में आश्चर्य पाया

॥ तिहां का वैपारी नागदत्त । हरीदत्त पासे आया ॥ रूप पुण्य वित देख । मन में अति हर्षाया ॥ निज पुत्री परणाववा । आमंत्रण जस कीध ॥ अवसर ज्यो हरी चंदजी । वाक्य ते मानी लीध ॥ १२ ॥ अति आडंबर कर धूयां तिणने परणाइ ॥ धन दियो बली घणो । खुशी हुवा सुसरा जमाइ ॥ हरीचंद मदन रेखा दोनो । विलसे सुख देवता साइ ॥ भाइ मंत्री चलावे वैपार । फिकर दिल में नहीं कांइ ॥ इम ठाट इणरो देखके ए । धन पाल पुत्र दोय ॥ उदासी मन में धरे । पुण्य विना कांइ होए ॥ १३ ॥ तिहां रहतां दिन घणा हुवा । धनदत्त ते वारो ॥ जावा भणी परदेश ।माल कीधो तैयारो ॥ हरीचंदने कह्या समाचार । ते हर्श्या ते वारो ॥ गुग चंद ने चेताया हुया चलवा तैयारो । नागदत्त हट करी घणी । नहीं मानी तस बात ॥ माल भराइ रथ में । धनदत्त साथे जे आत ॥ ॥ १४ ॥ सहू जणा मिली ताम । समुद्र के कांठे आवे ॥ अर्ध २ वाहण बाँट । ते मांहें माल भरावे ॥ पुत्री पिता से मिली ने अधिको नेह जणाये ॥ जन्म विछोवा जाण । नेणा नीर वहावे ॥ शिर कर ठवी नगदत्त तव । पुत्री ने शिक्षा देय ॥ मन उदासी घरनो थको । फिर आयो घर तेय ॥ १५ ॥ शुभ शुकने हुवा आरुढ । चल्यो वाहण ते वारो ॥ हरीचंद ऋद्धी देख । धनदत्त पस्तावे अपारो ॥ दरिद्री आया लारे । आधो वाहण

भर्यो थांरो ॥ लालच दे गुणचंद ने । फटायो वे विचारो ॥ ते भोलो समज्यो नहीं । दगा फटका के मांय ॥ धनदत्तरे हुकमें चले । एक दिन अवसर पाय ॥ १६ ॥ कुसुमा नाम को गुमासतो । तहने तिहां बुलायो ॥ धन हरण विरतंत लालच दे तास चेतायो ॥ भाग लेवण ले वचन । तिणरे हुकम में थायो ॥ श्री दत्त संग वन्ध्यो प्रेम । जाणं भाइथी सवायो ॥ इम संप कर श्री दत्त तव । हरी चंद मारण उपाय ॥ कुबुद्धि उपाय ने । करण लग्यो अन्याय ॥ १७ ॥ खाटलो एक लेय । वाहण बाहिर वन्धायो ॥ मिष्ट वचन धन दत्त । हरीचंद भणी बुलायो । भाद्रिक समज्यो नाद । खाट पर तास वेठायो ॥ धनदत्त हरी चंद दोय । वातनो नाद लगायो ॥ कपटी श्री दत्त आयनेए । नाडो काट्यो तेह ॥ हरी चंद उदधी में पड्यो । कर्म गति ये जेह ॥ १८ ॥ उदधी में पडंत स्मरण नवकारनो कीधो ॥ पुण्य जोगथी तदा । काष्ट कटको कर लीधो ॥ तात्क्षिण हुवा स्वार । पाणी में जावे सीधो । तीन दिन के माय । पार पाया जलनीधो ॥ तिण वन मांय जाय नेए । कियो फल फूल को अहार ॥ काल निर्गमन दुःखथी करे । रहे तिण वन मझार ॥ १९ ॥ गुणचंद इण पर देख । मन में रोस भरायो ॥ श्रीधर मारण काज । धम २ तो आयो ॥ धनदत्त श्रीदत्त दोय । तिण ने मार दवायो ॥ चारुदत्त मंत्री सहाय करण आयो तिण

ठायो ॥ तेंतले गुणचंद बान्धने ए । चारुदत्त पकडयो जाय ॥ बंधन में तस बांधने दियो
तिहांही गुडाय ॥ २० ॥ श्रीदत्त तिंहां बेठाय । धनदत्त औरी में आया ॥ चरुदत्त जोश
में आय । बंधन तटकें तुडाया ॥ फिर बन्धयो फिर तोडया । इम तीन वार कराया ॥
फिर तोडया तिण वंध। पाणी में दीया वहाया॥इम हंसी कर्म करे जीवडा । भुक्तलां मुशि
किल होय ॥ अमोल भणे ढाल सातमी । कर्म करो मत कोय ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥
गुणचंद चरुदत्त भणी । दिया समुद्र में डाल ॥ मच्छ पृष्ट जाइ पडया । आयो नहीं जरा
आल ॥ १ ॥ इतरे ते मच्छ चालीयो दोड़ बैठाहा होंश्यार ॥ थोडी वेरने अंतरे । मेहीपर
कियो उतार ॥ २ ॥ तिण वनमें फिरतां थकां । हरीदत्त मिलियो आय ॥ देखीने हर्ष्यो
घणा । मिल्या धरी उत्सहाय॥३॥ मदनरेखा सुनक्षेत्र की।पुछे हरिचंद वात ॥ ते कहे हम जा
णा नहीं । लार तुमारे आत ॥ ४ ॥ तीनों जणां तिहां रहे । करी पुण्य फल आइ.र ॥
हिवे पिछली वाहण तणो । चरी सुणो नर नार ॥ ५ ॥ ढाल८मी ॥ नव घांटी माहें
भटकल आयो ॥ यह० ॥ मदन लेखा ए तमाशो देखी । थरर धूजी देह ॥ अररर अब
म्हारो किस्यो होसी । सज्जन दीधो छेह ॥ जोवो पूर्व विरतंत राजाजी ॥ जो० ॥ १ ॥
सुनक्षेत्र के पास ते आइ । करवा लागी विलाप ॥ सुनक्षेत्र कहे धरो धैर्य । कांइ होवे

किया संताप ॥ जो ॥ २ ॥ ततले तो धनदत्त निहां आइ । बोले इण प्रकार ॥ ते तो पुत्र हूंता दरिद्रिका । पुण्य हीण निराधार ॥ जो ॥ ३ ॥हम छां नगर सेठ का कुँवर । जोवां हम बिलास । तेह दारिद्री की आसा छोडो । पूरो सघली आस ॥ जो ॥ ४ ॥ सुनक्षेत्र सुण रीस भरायो । लडवा हुवो हो॑शार ॥ विश्वास घाती अरे महा पापी । क्यों बोले अ-विचार ॥ जो ॥५॥ धनदत्त सुणी क्रोधातुर हो । पड्यो तिण ऊपर जाय ॥ मुशक्या बन्धी थप्पड मारी । मन में अधिक पोमाय ॥ जो ॥ ६ ॥ इम देखी मदन रेखा घबराइ । मरणो मनमें धार ॥ चुपकेथी ते ऊठी भागी । पडवा दरिया मझार ॥ जो ॥ ७ ॥ धनदत्त आडो तस फिरियो । ऊभी नीची द्रष्ट धार ॥ भोगोप भोगकी करे आमंत्रण । तेहने वारम्वार ॥ जो ॥ ८ ॥ रीशाणी बोले मदन रेखा । अरे निर्लज सिरदार ॥ म्हारा ही कुटंब को नाश करीने । इछे सुखबे विचार ॥ जो ॥ ९ ॥ संतप्त हुइ तस जाणी धनदत्त । एक कोटडी मांय ॥ बेठाइ बाहिर तालो लगायो । बेठो स्थाने आय ॥ जो ॥१० ॥ मदनरेखा अति आर्त करे मन । अहो२ कर्म प्रकार ॥ तात मात तो रह्या बेगला । बिच डूब्या भरतार ॥ जो ॥ ११ ॥ निशा व्यापी तम पसरत धनदत्त । आयो मदनरेखा पास ॥ मधुर वचन थी तास संतोषि । करे भोगकी अरदास ॥ जो ॥ १२ ॥ माननी री

स भरी तब भाखे । क्यों लाग्यो मुज लार ॥ कर कालो मुख वेगो यहां थी । नहीं तो मरुं इण वार ॥ जो ॥ १३ ॥ दुष्ट धनदत्त तब रीसे प्रजली । मदनरेखा बांध । वाहण का तलियामें डाली । भोगव दुःख तूं रांड ॥ जो ॥ १४ ॥ अवसर विचारी बोले सुनक्षेत्र । कहो सो करस्यूं काम ॥ दया लाइ तस बन्धन छोड्या । राख्यो तिणने तिहां स्थाम ॥ जो ॥ १५ ॥ मदनरेखा गरमी थी घबराइ । आयुष्य पूर्ण थाय ॥ अकाम निर्जरा सील प्रभावे । भवनवासी नी देवी थाय ॥ जो ॥ १६ ॥ दिन ऊगां तस प्रेतने जोइ । दी गुप्त जलमें पठराय ॥ पस्तावो कियो हातन आयो कुछ । मेहनत निष्फल जाय॥ जो ॥ १७ ॥ सुनक्षेत्र बात ए जाणी ॥ मोह वश होइ अन्ध । पडी मयों समुद्र के मांहीं।भवनवासी में हुवो उत्पन्न ॥ जो ॥ १८ ॥ हरिचंद आदि तीनों वनमे । कियो वनफल को अहार ॥ रोग व्यापो मरीने तीनों । लियो भवनपती में अवतार ॥ जो ॥ १९ ॥ मदनरेखा देवी हुइ हरीचंदकी । तीनो सामानिक हूवा देव ॥ एक पल्य को सहू आयुष्य पाया । करणी का फल लेव ॥ जो ॥ २० ॥ येह बात तो रही इहांही । हिवे वाहण नो बयान ॥ अ- ढाल अमोलख दाखी । आगे सुणो धर ध्यान ॥ जो ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ वाहण तिहं थी चालीया । पाप उदय हूवा आय ॥ अकाले गाज बीजीयो । पवन रह्यो सणणाय ॥ १

॥ थरर जहाज धूजण लगी । मचो घणो अहंकार ॥ अहो कर्म किया प्रगट्या । लोक व-
दे यों वाय ॥ २ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ पाप छिपाया न छिपे । छिपे तो मोटा भाग ॥ दाबी
दूबी न रहे । रूइ लपेटी आग ॥ १ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ कडा कड लकडी भागकर । उडीने
चउदिश जाय ॥ कुकर्मे वर्ज्या नहीं । ते डूब्या जल मांय ॥ ३ ॥ धनदत्त आदि चारुंके ।
मछवो आयो हाथ ॥ पवन वेग ते चाली यो । सिन्धू तीर ते पात ॥ ४ ॥ चारोंइ तिहां
उतरिया । गया ते अटवी मांय ॥ क्षुधा समावा कारणे । फल ते तोडी खाय ॥ ५ ॥ ❀
॥ ढाल९ मी ॥ गोतमरासा की देशी में ॥ फिरता चारुं तिण वन विषे जी । तापस कों
देख्यो एक ठाम ॥ जटा धारी बाबा घणा । राख रमाइ अंग तमाम जी । करे धान्य
जपे प्रभु नामजी । तिणरे आतम साधण स्युं कामजी । चारों आया आचार्य जामजी ।
बैठा करी लुली प्रणाम जी ॥ सुणो राजिन्द्र पूर्व जन्मकी कथा ॥ १ ॥ तापसा चर्य कहे
तेहथी । तुम कहां से आया भाय । चेहरादीसे उदासियः कहो जे होवे मन मांय जी ।
ते कहे श्वामी सुणो हम वायजी । माले ले सिन्धु में रह्या आयजी । मारग में जहाज
डूब्यायजी । नाव थी वारीपर थायजी । तुम दर्श हुवा पुण्य सहायजी ॥ सुणो ॥ २ ॥
तापस सद्बोध कहे तदाज़ी । फिकर न कीजे भ्रात ॥ तन धन संपत कारमी । या पुण्य

थी भेली थातजी । पाप उदय आयां विरलातजी । इने छोडे ते सुख पातजी । फिर च्चिन्ता कभी नहीं आतजी । परभव मे मिले चहातजी ॥ सुणो ॥ ३ ॥ ॥ श्लोक शार्दुल ॥ आयुर्वारी तरंग भंगूतरंग श्री स्तूल तुल्य स्थिती ॥ स्तारुण्यं कैरि कर्ण चंचल तरं । सप्नोपमाः संगमाः ॥ यच्चान्यद्र मणी मणी प्रभृतिकं वस्तुंच तच्चा स्थिरं ॥ विज्ञायेति विधीय ताम सुमता । धर्मः सदा शाश्वतः ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ इम उपदेश सुणी योगी को जी । वैराग्य आणी मन ॥ योगाश्रमी चारों भया । ते आचार्य ढिग तत्क्षिण जी । सीख्या रीति करी नमन जी ॥ करे नित्य आतम दमनजी । ज्ञान ध्यान ने नाम जपनजी । इम वीतावे ते दिनजी ॥ सुणो ॥ ४ ॥ एक दिन श्रीदत्त वन विषेजी । लेवा गयो कंद अहार ॥ जावता जुगल पेखियाजी । कुरंग सुन्दराकार जी ॥ तास करतो थो सिंह सिकारजी । ते देखी कष्ठ प्रजारजी । आगे से कियो सिंह परिहार जी । मृग मान्यो तस उपगारजी ॥ सुणो ॥ ५ ॥ कंद फल लेइ आवीयो जी । चारों ही जीम्या ताम ॥ दर्शना वरण घेरो दियो कियो तिहां आरामजी।श्री दत्त ऊठीयो जामजी।एक तापस उपकरण तमाम जी । हँसी में छिपाया गुप्त ठाम जी। पाछो सूतो निज विश्राम जी ॥ सुणो ॥ ॥ ६ ॥ तापस उठ जोया नहीं जी । उपकरण हुवो अभीर ॥ पूछे बतावो लिया किणे ॥

जले छे महारो हीरजी ॥ श्रीदत्त हंसी मेलया तीरजी । इम हंसे सदा फिर फिरजी । एक अन्य तापस मिल पीरजी । हिल मिल रहे खीरें नीर जी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ पुष्प फल तास लाइ देवेजी । रेवे दोइ जणा पास ॥ तप किया नित्य साचेवासहन करे भुख प्यास जी । मित जयदेव मानी जासजी । रहे अभीमाने छक हुल्लास जी । दोइने पडी प्रेमकी फासजी । वीती वात कही सहू खास जी ॥ सुणो ॥ ८ ॥ एकदा अजाणे कोइजी । तापस पड्यो कूप मांय ॥ तेहने कहाड्यो जीवतो । धनदत्त ते पुण्य बंधाय जी ॥ वली भद्रिक भावे सदायजी । सहू तापस नी चित लायजी । करे सेवा साता उपजाय जी । ते हथी सहू भणी सुहाय जी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ चारुदत्त राम भावथी जी । आत्म साधन करंत ॥ तीनोइ मित्र ने ऊपरे ते अधिको प्रेम धरंतजी ।' हुकम प्रमाणे चरंतजी । इम चारोंनो विरतंतजी । पांचामो भेलो श्रीदत्त मिंतजी ॥ सहू सुखथी काल वीतंतजी ॥ सु ॥ १० ॥ किताक काल के अंतरे जी । जुदा२ चवीया चार ॥ जोतषी ग्रह विमाण में । एक पल्य माठे रो आयु धारजी । विलसे सुख तिहां श्रेय कारजी । नाटक चेटक नव२ त्थारजी । देवना सुख छे अपारजी ॥ सुणो ॥ ११ ॥ हरीदत्त भवन थकी चवी जी । बाकी रह्या पुण्य प्रभाव । कन्कपूर शौरी राजा घरे । जन्म्य हुवो औछावजी । नाम कंख-

रथ थावजा । भण्या कला नीती दरसावजी । तव हुइ राज की चाव जी । गादी बैठ धर उत्साव जी ॥ सु ॥ १२ ॥ मदनरेखा देवी चवी जी । पोलास पूर मझार ॥ जीनारी राजा घरे कुंवरी पणे लियो अवतारजी ॥ पुर्व भवने नेहा धार जी । परण्या कंखरथ कुंवार जी । कुसीता राणी नामे नारजी । रहे सुखे स्त्री भरतारजी ॥ सु ॥ १३ ॥ गुणचंद शिष्ट पुरने विषे जी । रिष्ट ठाकर के गेह । कुमर नाम दुमुख दियो । मोटा हूवा तिहां तेह जी । पूर्व भवनों अकर्ष्यो स्नेह जी । मिल्यो कखरथ था जहजी । नंत्रीबण्या प्रीति अछेह जी । सदा तिण पासे रेह जी ॥ सु ॥ १४ ॥ सुनक्षेत्र तिहां क्षत्री घरे । हूयो प्रेमसागर को पूत । कंखरथ शैन्यापति कियो । देख शरीर मजबूत जी । पूर्व स्नेह मयों ते सूतजी । कुसीता से जम्यो नेह नूतजी । दोनो कर्थ से रह्या खुत जी । भोगवे राजने दूतजी ॥ सुणो ॥ १५ ॥ वरदत्त तिहां थी चवी जी । तिणही पुरके मांय ॥ कमलदत्त वाणिक घरे । कुरुदत्त नामे कुँवर थाय जी । दुमुखने मिल्यो आय जी । प्रिति. जमी दोइ की सवाय जी । चाले मिलके हुक्म के माय जी । ए पंच को अधिकार थाय जी ॥ सु ॥ १६ ॥ धनदत्त गृहदेव थी चवी जी । विजयपुर का राजिंद । विजयसेण घर ऊपना जी । नाम दियो कुँवर चंदजी । ऋद्धी पाम्या चंपक कंदजी । पिता मिल्या जाइ मुनिब्रन्द जी ।

राज बैठा धर आनन्दजी । औरा को सुणो संवंदजी ॥ सु ॥ १७ ॥ श्रीदत्त कपट भाव
थी जी । स्त्री वेद धारण कीधा ॥ भरतपुर जयसेण घरे । लीलावती जन्म लीधजी । पू-
र्व स्नेह सबरा मन्डप रिधजी । थाने तिहां वर लीधजी । हुइ प्रीती दोइ की प्रसिद्ध जी
। सुख विलसिया बहु विधजी ॥ सुओ ॥ १८ ॥ चारुदत्त इणही पुरे। मही धर ठाकर घेर
। सुखसेण नामे पुत्र हुवा । ज्रगी प्रिती फेरजी । कियो शेन्या पति धर मेहर जी । पुण्य
बिलसी सुखकी लेहर जी।सार करे शैन्या की खेरजी ।यह तप तणा फल हेरजी ॥ सुणो
॥ १९ ॥ तापस मित्र श्रीधर को जी । मान तणे प्रसाद ॥ दासी पुत्र गेंदू हुवे । रहे
सेवा में तज प्रमादजी । टाल्या केइ इणे विख वाद जी । बलवन्त अवसर उस्ताद जी ।
रखे प्रिती दोइ स्यूं नादजी । ए जाणो सुख का स्वाद जी ॥ सुणो ॥ २० ॥ कुसमो गु-
मास्तो विंत्र थी चवी जी । कुल ग्राम को हुवो पटेल ॥ मृग युग भव भ्रमण करत ।
श्रीधर भारती हुवे पेहल जी ॥ तापस उपाधी चोरी खल जी । ते वैश्य जुग देव छेटल
जी ।कूवे काहाड्यो तापस ठेलजी । ते तुरंग भट विप्र दीं गेलजी ॥ सुणो ॥ २१ ॥ और
वाहणे डूब्या घणा । नहीं बर्जो करत क काम ॥ ते मर्या घणा संग्राम में । किहां तक
कहिये नामजी ॥ तापसा चार्थ मरण पामजी । हुवा रामो जी भील का श्याम जी । केइ

तापस हुवा भील धाम जी। वयावच्च की ते दियो आराम जी ॥ सुणो ॥ २२ ॥ यह कर्म गति देखलो जी । चन्द्र नृप आदि शभा लोक ॥ धन हरण न्हाख्या समुद्र में । तिण दुःख सागर में दिया झोंक जी । मदनरेखा तलघर में दी रोक जी । तेथी कारागृहे न्हाख्या चोंक जी । कहाड्यो तापस कूवा थीं ढोक जी । छोडचा बंधन विप्रते धोक जी । ॥ सुणो ॥ २३ ॥ तापसनी मेवा किया जी । दियो सहू मिल साज ॥ कपटे लीलावती नारी हुइ । करवी पडी तेहथी लाजजी ॥ इम सहू कथा को सार लो आज जी । छोडो राग द्वेष अकाजजी । नहीं बोलणा मर्म मोसाजर्जी । गत बंधन भोगव्या ह्यांजजी ॥ सु ॥ २४ ॥ वक्त या सुधारण तणी जी । जन्म सुधारो सेण । संयम धर्म समाचारो तो पावो अविचल चेन जी ॥ ये हित कर म्हाणा वेनजी । षष्टम ढाल नव केनजी । कहे अमोलख धारो एनजी । भव्य होवे समजे ततक्षेनजी ॥ सुणो ॥ २५ ॥ ॥ दुहा ॥ इम सुण मुनिवर देशना । भरम तम हुवो नाश ॥ हिया पो लगावता । जाति स्मरण प्रकाश ॥ १ ॥भव पेखी चमक्या चितेअहो२ कर्म को जोर ॥ बंधती वक्त न समजिया । भुक्तण बडा कठोर ॥ २ ॥ वंध्या शोही भोगव्या । नहीं ह्यां कोइको दोष ॥ हिवे डर आत्म बंधथी । तज सहू जीवथी रोश ॥ ३ ॥ कर करणी साचे मने । कर कर्म चक चूर ॥ तो फिर

दुःखीयो न हुवे । मिले सुख भरपूर ॥ ४ ॥ इम चिन्तीने दम्पती । ऊठ्या हर्षीने अपार ॥ विधी वंदी गुरुराज को । इण विध करे उच्चार ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १० मी ॥ जंबूक यो मानलेरे जाया ॥ यह० ॥ तहत वचन प्रभू आपका । इणमें संदेह नहीं लगार । वे प्रभाइ आप छो । यथा तथा कियो उचार ॥ धन्य२ जे जगे भाइ जे छोडे जग जंजाल ॥ आं ॥ १ ॥ सत्यवाणी सुखदाणी प्रभू । मे श्रद्धी मन वच काय ॥ प्रतीत आइ मनमे रुची । अब फरसणरी हुइ चहाय ॥ धन्य ॥ २ ॥ मुनि कहे अहो देवानु प्रिया । प्रति बन्ध न करो लगार ॥ सुख होवे जो जलदी करो । यो अवसर पामी सार ॥ ध ॥ ३ ॥ सुणी वचन हर्ष्या घणाजी । कर वंदन नमस्कार ॥ आया तिण दिश चालीया । ते मनमे वैराग्य धार ॥ धन्य ॥ ४ ॥ निजस्थान आइ बोलाइयाजी । सागरसेण कुँवार ॥ कहे तुम राज करो सुखे । हम लेसां संयम भार ॥ धन्य ॥ ५ ॥ नेना श्रूत हो कुँवर कहे । तात । मुजने किनको आधार ॥ वय लगुछे माहेरी । किम उपडे राज को भार ॥ ध ॥ ६ ॥ राय कहे वच्छ सांभलो । जगमें न किणको आधार ॥ एकलो आयो जीवडो । लायो शुभा शुभ कर्म लार ॥ ध ॥ ७ ॥ सार करे कोण कौन की । काल आयां ले जाय ॥ सब धर्यो ह्यांइ रहे । पुण्य पाप का फल पाय ॥ ध ॥ ८ ॥ संयम में किस्यो अधिक छे पिता ।

पाम्या संपति भोग ॥ बृद्ध वय आयां थकां । फिर आदर जो आप जोग ॥ ध ॥ ९ ॥
चन्द्र कहे राज मोटा इण थकी । मैं पायो अनंती वार ॥ गर्जन सरी कुछ माहेरी । संयम थी होय उधार ॥ धन्य ॥ १० ॥ गाथा ॥ लभ्भंती विमला भोए । लभ्भंती सुर संपया ॥ लभ्भंती पुत मित्तंच । एगो धम्मो दुलभ्भइ ॥ १ ॥ ढाल ॥ पाव घडी की खबर नहीं भाइ । कुण जाणे चौथो आश्रम ॥ यौवन वय गयां पछे । नहीं वणी सके कोइ धर्म ॥ धन्य ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शेर ॥ करना होसो जल्दी करो । यह वक्त दोडा जाता है ॥ पाव घडी सिरपर रक्खी । क्यों करे कालकी बातां है ॥ ताकत तेजी घटे बदन की । फिर बुड्ढा कहलाता है । अमोल सास्वत संगले प्यारे । वो आगे मजा पाताहै ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ हिवे तुम राज कीजीये भाइ । दीजे परजा ने सुख ॥ न्याय प्रमाणे चालणो भाइ । टालणो दुःखिया का दुःख ॥ धन्य ॥ १२ ॥ परस्त्री माता गिनो पुत्र । पर धन गिनो पाषान ॥ दुष्ट संग नहीं कीजीये पुत्र । आप समा सब प्राण ॥ धन्य ॥ १३ ॥ ६ प्रेम रखणो सदा । धर्मी को करो सन्मान ॥ सुखवृती रहणो सदा । साधु दरसण सुणो बखाण ॥ ध ॥ १४ ॥ इत्यादि हित शिक्षा दइजी । करायो राजाभिषेक ॥ सागर सेण राजा तणी । आण फेराव देश छक ॥ ध ॥ १५ ॥ लीलावती पास आवियाजी । चन्द्र-

सेण भूपाल ॥ सती कहे आज्ञा दीजीये।हूं लहस्यूं संयम हाल ॥ ध ॥ १६ ॥ नृप कहे तुम स्त्री अछोजी । संयम दुक्कर काम ॥ तुमसे निभे तो भले लहो । नहीं होड करण को धाम ॥ ध ॥ १७ ॥ सती कहे में परत्रस्य पणे जी । सहिया दुःख अपार ॥ तेसा संयम में दुःख नहीं । होवे थोडाभें खेवा पार ॥ धन्य ॥ १८ ॥ सुणी चन्द्रनृप हर्षीया जी । दोइरा उत्कृष्ठ भाव॥जाणी सागर राजीया जी । उत्सव माडे ते ठाव ॥ ध ॥ १९ ॥ पुर जन जाणी विस्मय हुवाजी । सहू कहे धन्य अवतार ॥ ऋद्धि ऐसी तज करी । सुधार अपणो जमार ॥ ध ॥ २० ॥ आणंद वर्त्यो पुर त्रिपेजी । ढाल दशमीं के मांय ॥ अमोल कहे आगे सुणो । किता संयम लेवा उमाय ॥ धन्य ॥ २१ ॥ ※ ॥ दुहा ॥ सागरसेण नामे नृपती । दिक्षा पत्री लिखाय । सेंदा छोटा मोट राजमें । सामंत हाथ पठाय ॥ १ ॥ कनक पुर पोलासपुर । भरत पयठाण पुर जाण ॥ सिष्टपुर कुल ग्रामादी । दीधी पत्री आण ॥ २ ॥ सोमचन्द्र सुखसेण जी । प्रतापसेण मति साग्र । गेंदू आदि सहू सुणी । छोडी सहू कदाग्र ॥ ३ ॥ झट पट सब सज्ज होयने । लेइ शैन्य परिवार ॥ आइ चन्द्रनृप भेटीया । पाम्या हर्ष अपार ॥ ४ ॥ सत्कार यथा योगो तदा । सागर नृप व राय ॥ खान स्थान सुख दे सहू।मंगल रह्या वृताय ॥५॥ ढाल११ मी ॥ सिद्ध चक्र जिन पूजोरे भ-

विका ॥ यह० ॥ चन्द्रनृप पास सहू राजा आया । कर जाडी सीस नमाया ॥ किम लेवो
संयम कमी किसी छे ।किसी हुइ चित चहाया ॥ हो राजंद वैराग्ये मन रमाया ॥ आं ॥
१ ॥ भाव मुनि कहे अहो सुणो मंत्री । लि दुःख लग्या मुज लारं ॥ मूलसे नाश करुं
हिवे तेहनो । लेइ संयम भारहो मत्री ॥वै॥२॥ अशाश्वत सुख मुजने मिलिया ।तेहथी तृप
ती नहीं पामी ॥ शाश्वत सुख लेवा संयम लूं । मिटावण ए खामी हो मंत्री ॥ वैरा ॥
३ ॥ ए उपाव जो थां कने होवे । तो मुज वेग बतावो ॥ नेह कर संसार मांहे लो भावूं।
पूरुं थाणो चावो होम० ॥ वै ॥ ४ ॥ सर्व सुणी निरुत्तर थइया । कहे सुख होवे सो कीजे
॥ मोह उमटाणो नेणा नीर वहिया । विरह जाण मन छींजे हो राजंद ॥ वै ॥ ५ ॥ भूप
कहे सुणो प्यारा मंत्रीश्वरो । तुम साजे पुनः राज पायो ॥ नहीं तो कहो गती कैसी होती
मुज । सुधारण करुं मे उपायो ॥ होमंत्री ॥ वै ॥ ६ ॥ पूर्व भवकी मुनि कही कथा । ते
सहू भणी संभलाइ ॥ संवेग्या जाणी नीयती गती यह । कहे धन्य ज्ञानी तांइ हो राजा
॥ वै ॥ ७ ॥ अज्ञान तप तणे प्रभावे । एसी संपत पाइ ॥ हिवे ज्ञान सहित जो करणी
करांतो । देवा जन्म मरण मिटाइ होमंत्री ॥ वै ॥ ८ ॥ यह सब संपत कारमी जाणो ।
एक दिन तो छिटकाणो ॥ शुभा शुभ कर्म साथे आवे । आगे फल तस पाणो होमंत्री

॥ वे ॥ ९ ॥ ❀ ॥ काव्य ॥ चिच्चा दुप्पयं चउप्पयंच।खित्तं गिहं धण धन्नं च सव्वं ॥ स-कम्म पवीउ अवसो पायाइं । परं भव सुंदर पावगं वा ॥ १ ॥ ❀ ढाल ॥ इण संपत में सुखजो माने । तेतो मुढ गिंवारो ॥ अलपसुख आगे दुःख घणेरो । करो हिते च्छू विचारो होमं ॥ वै ॥ १० ॥ विनाशिकका त्याग करे तो । अविन्याशी सुख पावे ॥ जो विनाशी में लुब्ध रहे तो । दोनो हाथ से गमावे होमंली ॥ वै ॥ ११ ॥ जो थाने अविछल सुख चा-हिये तो । छोडो यो संमारो ॥ श्री विश्व ऋषिवर चरण भेटने । सफल करो अवतारो होमंली ॥ वें ॥ १२ ॥ इम उपदेश सूणी सहू भूधव । प्रति बोध्या ते वारो ॥ हाथ जोड नरमी इम बोले । हम पण होवां अणगारो होराजा ॥ वै ॥ १३ ॥ तव नृपं वैरी कैदी ने बुलाया । ते कर जोडी ऊभा सामें ॥ चन्द्रसेण खमाइने बोले । करो जिम तुम सुख पाम होमंली ॥ वै ॥ १४ ॥ सहू अरी नरमाइ बोले । आप बडा उपकारी ॥ राज सुख हम कुछ नहीं चावां । मरजी दिक्षा लेवारी होराजा ॥ वै ॥ १५ ॥ इम सुण चन्द परमानन्द पाया। सहू बरोबर बैठाय ॥ कुसीताने लीलावती पासे । पहोंचाइ भाव जणाया होमंली ॥

अर्थ—मनुष्य पशु धन धान खेत घर सब को छोड कर फक्त शुभाशुभ कर्म को साथ लेकर मनुष्य नर्कमें और स्वर्गमें जाता है वहां कृत कर्मानुसार दुःख सुख पाता है. उत्तराध्येन अ०१३

वै ॥ १६ ॥ अन्य मंत्री गण भूपसे नृप कहे । सहू निज राजे पधारो ॥ निज२पुत्रने राज समर्पि । इहां आवो लेइ परिवारो होमंत्री ॥ वै ॥ १७ ॥ इम सुणी नमी सहू शशी नृपने । सजाइ जे घर आया ॥ ढाल एकदश षष्टम खंडे । अमोल ऋषि गुण गाया होमंत्री ॥ वैरागी ॥ १८ ॥ ❀ ॥ दुहा॥आप आपका कुँवर ने । कह्या सहू समाचार ॥ प्रश्नोत्तर हुआ घणा । आज्ञाली ते वार ॥ १ ॥ सोमचंद्र अनंगसेण ने । कन्क पुर राज दीध ॥ श्रीधर पुत्र अमरसेण ने । सचीव तेहना कीध ॥ २ ॥ सुखसंण क्षिर्ता चन्द्र ने । पोलासपुर राज देय ॥ गेंदू ने साथे लियो । वैराग्य भाव उमंगेय ॥ ३ ॥ सज्जनसेण गुणचंद ने । भरतपूर पाट बेठाय ॥ बुद्धि सागर परज्जुनने । तास प्रधान बणाय ॥ ४ ॥ प्रतापसेण जगसेण ने । पयठाण पुर पत कीध ॥ सहू नृप निज२ नारीने । आप ने साथे लीध ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १२मी ॥ काकंदी नगरी भली सरे ॥ यह० ॥ शैन्या परिवार सहु साथ लेइने ॥ सहु नृप विजयपुर आया ॥ सागर नृप सहूने सन्मानी योगस्थान उतराया ॥ घणा जना वैराग्या देखी चन्द्र नृप सुख पाया जी ॥ थे सुणजो शाणा । धन्य२ वैरागी लोकने ॥ आं ॥ १ ॥ सहु चतुर्वीस नर नारीने । वैरागी चन्द्र जाणी । चतुर वीस शिवका सजाइ सहश्र पुरुष उठावानी ॥ अन्य सजाइ सहु सजीछे । मंगल रह्या वरत्तानी हो ॥ थे ॥ २ ॥ कुं·

त्तीया वणकी दुका१ से सरे । ओगा पातरा मंगाया ॥ लक्ष अष्टदिया सानैया । ते पण मन हर्षाया ॥ चौवीस लक्ष दे नापिक तांइ । खुर मुंडण करवाया जी ॥ थे ॥ ३ ॥ चतुरंगुल नी शिखाज राखी । लोच करणने काजे ॥ ऊगटणा पीठी करी सरे । साजिया सिणगट साजे । जुदा२ शिवीका के माही । स परिवार विराजे जी ॥ थे ॥ ४ ॥ गजगाजी रथ पायका सरे । तुरंग शैन्य सजाइ ॥ कौतल आगे चालीया सरे । अष्ट मंगल भल काइ । गोरडी गीत वाजिंत्र के नादे । गगन रह्यो गरजाइजी ॥ थे ॥ ५ ॥ मध्य बजारे चालीया सरे । देखे घणा नर नार ॥ कर जोडी गुण ऊचरे सरे । लुली करे नमस्कार ॥ मोह झाल उदय हुवां सरे छूटे आंश्रू धारहो ॥ थे ॥ ६ ॥ ॐ ॥ इन्द्र विजय ॥ कोइ कहे धन्य इनके तांइ । राज मोहो तज संयम लेवे ॥ कोइ कहे यह सुख सायबी । प्रभू इनको भोगण नहीं देवे ॥ कोइ कहे जोग लिख्यो कर्म में । कोइ कहे नाम राखण सेवे ॥ दुनिया दुरंगी बोले बहू विध । आत्म तारण ले अमोल केवे ॥ १ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ जय२ नंद। भद्दा भद्दंती।मुख२ करे उचार॥बागके पासे आवीया सरे।तजी सवारी ते वार॥ॐ॥पंच

---

* १ साचित वस्तु दूर रखी, अचित अजोग बस्तु दूर रखी ३ उत्तरासण किया (मुख के आगे वस्त्र लगाया) ४ दोनो हाथ जोडे, ५ मनमें विशुद्ध विनय भाव धारन किया, यह पच अभिगम साचवन किये.

अभिगम साचवी सरे । । मुनेवर पास पधार हो ॥ थे ॥ ७ ॥ विधी स्यूं
कीधी वंधना सरे । प्रणामी करे उचार ॥ अलीता पलीता लग रह्या सरे । जली रह्या
संसार ॥ जन्म जराने मरण के दुःख से। पार करो म्हाने त्तार हो ॥ थे ॥ ८ ॥ इशाण
कुणमें आय ने सरे । तजीया सहू सिणगार ॥ स्व हस्ते लोचन कर्यो सरे । पंच मुष्ट ते
वार ॥ खोमयुगल वस्त्र विखे सरे । कुमरां झोल्या बारहो ॥ थे ॥ ९ ॥ साधु साध्वीका धा
रीया सरे । श्वेत वेश श्रेयकार । पंदरह साधु नव आर्जिका । शोभाया परिवार ॥ गणीवर
पासे आयने सरे । लुली कियो नमस्कारहो ॥ थे ॥ १० ॥ अति उत्सुक होइ प्रकाशे ।
तारो२ महाराय ॥ जन्म जराने मरण लाय से लेवो म्हाने बचाय ॥ मुनिवर अवसर देख
ने सरे । मधू गिरा फरमाय हो ॥ थे ॥ ११ ॥ आज्ञा मांगी परिवार की सरे । ते नयना
श्रुत देय ॥ कर जोडी वैरागी वैरागण । उभा गुरुजी केय । जाव जीव सावद्य जोग का ।
नव कोटी त्याग छेय हो ॥ थे ॥ १२ ॥ संत विराज्या साधू पंक्ते । सती साध्वी मांय ॥
सफल दिवस ते जानता सरे । छूटी सर्व बलाय ॥ ज्ञान ध्यान तप संयम से । अब दवां
कर्म खपाय हो ॥ थे ॥ १३ ॥ सहू परिवार वंदन कर मुनिने । कर जोडी करे अरदास॥
आज तक को सहू गुनो माफ कर । दे दर्श पूर जो आस ॥ फिर२ जोता मुख सहू जन

। गया निज आवास हो ॥ थे ॥ १४ ॥ निज२ ग्रामे सहु सिधाय।पालि सुख से राज ॥ धर्म कर्म नीतीसे आराधे । सुधारे सर्व ही काज ॥ खंड दूणी ए ढाल अमोलख । कहे धन्य २ मुनिराज हो ॥ थे ॥ १५ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ नविदिक्षित सती संत की । वृद्ध दिक्षित मुनिराय ॥ भक्ति करण उमगा रह्या । संयमें मन रमाय ॥ १ ॥ अहार पाणी खादिम स्वादिम । वस्त्र पात्र दवा दान ॥ आमंत्रे उत्तम अति।मिष्ट गिराए सन्मान ॥ २ ॥ प्रतिलेखन परिठावणिया । वैयवच्च करेय ॥ तेतो करावे नहीं । धर्म प्रेम बृद्धेय ॥ ३ ॥ दूजे दिन आचार्यजी ॥ एकान्त स्थानक मांय ॥ नवि दिक्षित ने बुलाइया । यत्नाये आया हुलसाइ ॥ ४ ॥ वंदन करीने सन्मुखे । मर्यादे कर जोड । वैठा संत सती सहू । हित सीख सुणनकी कोड ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १३ मी ॥ सुगुणा साधू जी हो मुनि थांग मन ने पाछो फेर ॥ यह० ॥ मिष्ट गंभीर उंची गीरा ॥ हो मुनिवर ॥ अचार्य जी फरमाय ॥ आत्म संयम सुख वाहनी । हो मुनिवर ॥ धारो शिक्षा मन मांय ॥ धन्य २ साधू जी हो मुनिवर । धन्य थांरो अवतार ॥ आं ॥ १ ॥ शिक्षा दो प्रकार की ॥ होमुनिवर ॥ ग्रहनाते आचार॥असेवना छे ज्ञान की ॥ हो मु० ॥ धारो जे हित कार ॥ धन्य ॥ २ ॥ अपनो विनय मूल धर्म छे ॥ मुनि० ॥ नरमाइ सुखकार ॥ गुरु आदि बडा त-

णी ॥ होमु० ॥ रहणो अज्ञा मझार ॥ ध० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ गाथा ॥ विणओ सासण मूलं ॥ विणओ निव्वाण साहगो ॥ विणओ विप्प मुक्कस्स । कओ धम्मो कओ तवो ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ विनयथी ज्ञान बृद्धे घणो ॥ होमु० ॥ ज्ञानथी सम्यक्त्व आय ॥ सम्यक्त्व से चारित्र फले ॥ होमु० ॥ चारित्र तपे मोक्ष पाय ॥ धन्य ॥ ४ ॥ ❀ ॥ गाथा ॥ विणओ नाणं । नाणाओ दंसणं ॥ दंसणाओ चरणं । चरणं हुंती मोखो ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ ज्ञानाभ्यास पहिलां करो ॥ होमु० ॥ जिणथी तत्व जणाय ॥ दया तपस्या फिर हुवे ॥ होमु० ॥ फिर जीव मुक्ति जाय ॥ धन्य ॥ ५ ॥ ❀ । गाथा ॥ पढमं नाणं तओ दया । एव चिठइ सव्वसंजए ॥ अन्नाणी किं काही । किवा नाइ सेया पावगं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ आचार मूल पंच महा वृत ॥ होमु० ॥ त्रिकरण जोग अराध ॥ त्रस स्थावर हिंशा तजी ॥ होमु० ॥ दीजो सहू ने समाधा ॥ धन्य ॥ ६ ॥ असत्य वचन सर्वथा तजी ॥ होमु० ॥ बोले स्वल्प सुखदाय ॥ सच्चित अचित त्रणादिक ॥ होमु० ॥ आज्ञा विन ग्रहो नाय ॥ धन्य ॥ ७ ॥ ब्रह्मवृत नव वाड शुद्धे ॥ होमु० ॥ पालो इन्द्रि जीत ॥ परि ग्रह ममता परि हरो ॥ होमुं० ॥ धर्मोप करण कम प्रित ॥ धन्य ॥ ८ ॥ शीत मात्र निशी ने समय ॥ होमु० ॥ पास न रखो चउ अहार ॥ यह छः वृत शुद्ध पालीये ॥ होमु० ॥ ये मुनि

सूल आचार ॥ धन्य ॥ ९ ॥ पेग्वी धनुज्ग धरणी भणी ॥ होमु० ॥ चलणो धीमी चाल ॥ भाषा दोप सहू परि हरी ॥ होमु० ॥ बोलगो सदा संभाल ॥ धन्य ॥ १० ॥ दोप बे-ताली टालने ॥ होमु० ॥ लो अहार वस्त्र स्थान ॥ मर्यादित उपाधी रखो ॥ होमु० ॥ निर्वद्य स्थान परि ठान ॥ धन्य ॥ ११ ॥ मन वचकाया गोपवो ॥ होमु० ॥ जों न कूमार्गे जाय ॥ यह अष्ट वचन मात तणा ॥ होमु० ॥ पाठे सदा ऋषि राय ॥ धन्य ॥ १२ ॥ क्षुधादि परि सह सहू ॥ होमु० ॥ सहणा सम परिणाम ॥ चउ कपाय पतली करो ॥ होमु० ॥ जो चाहो मोक्ष धाम ॥ धन्य ॥ १३ ॥ इत्यादि हित शिक्षा दीवी ॥ हो श्रोता ॥ संयमी ने सुखकार ॥ सुणीने हृदय धारजो ॥ होमु० ॥ जिम होवे खेवा पार ॥ धन्य ॥ ॥ १४ ॥ वहु सुत्री थिवर वुलायने ॥ हो श्रोता ॥ नव दिक्षित सुप्रत कीध ॥ भणावो ज्ञान क्रिया वली ॥ होमु० ॥ जिम होवे कार्य सिद्ध ॥ धन्य ॥ १५ ॥ सती सुवृता जी भणी ॥ होमु० ॥ दी सतीया संभलाय ॥ प्रमाण वचन गुरु का करी ॥ हो श्रोता ॥ निज २ स्थान सहू आय ॥ धन्य ॥ १६ ॥ थोडा काल ने माय ने होमु० ॥ सीखी हुवा प्रवीन ॥ नय कूंची शास्त्र तणी ॥ होमु० ॥ यथा तथ्यली चीन ॥ धन्य ॥ १७ ॥ वहू सूत्री प्राक्रमी तेज पुंज ॥ होमु० ॥ वादी विवेकादि गुण ॥ जाणी गुरु आज्ञा दीनी ॥ होमु०॥

स्वेच्छा ए विचरो निपुण ॥ धन्य ॥ १८ ॥ परिवार गृही पोता तणो ॥ होमु० ॥ कियो चन्द्र ऋषि विहार ॥ ढाल तेरे अमोलख भणी ॥ हो मुनिवर ॥ धन्य जे तारे संसार ॥ ॥ धन्य ॥ १९ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ लीलावती धर्म लील में । तन मन गयो रंगाय ॥ आगम सूत्तार्थ धारीया । प्रवीन अतीही थाय ॥ १ ॥ लज्जा महासिक शूरत्व । चातुर ज्ञान आचार । क्षमा दया आदि गुणे । सोहे तेज दिनकर ॥ २ ॥ भव्य गण तारण कारणे । दे गुरुणी आदेश ॥ निज परिवार साथे लइ । स्वइच्छा विचारे देश ॥ ३ ॥ वचन सीर्श चन्डायने । सतीयां संग घणी लेय ॥ विचारी सती लीलावती । धर्म दीपावे तेय ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ढाल १४ मी ॥ बधावो श्री राम को ॥ यह० ॥ चौवीसी भूमन्डले । करता विचरे उपकार ॥ वंदो भव्य भाव स्यूं ॥ जथा नाम तथा गुण । जुदा२कहूं उचार ॥ वंदो भव्य भावसे ॥ १ ॥ चन्द्रथी अधिक चन्द्र ऋषि ॥ सौम्य धर्म प्रभा प्रसार ॥ वंदो ॥ तारागण सम मुनि गणे । निकलंक मही मझार ॥ वंदो ॥ २ ॥ सज्जन ऋषि सज्जन छे कायका । प्रताप ऋषि प्रतापिक ॥ वंदो ॥ कंखरथ ऋषि कांक्षा मोक्ष की । ए चारुं नृप गुणाधिक ॥ वंदो ॥ ३ ॥ सौम्यस्वभावी सोमजी ऋषि । सुख ऋषि सुखकार ॥ वंदो ॥ बुद्धि सागर ऋषि बुद्धवन्ता । लेक्ष्मी ऋषि क्रिया आधार ॥ वंदो ॥ ४ ॥ दुमुखऋषि दुमूत्र संसारथी ।

सिंहासेण ऋषि सहु सयण ॥ वंदो ॥ श्रीधर ऋषि वृत श्रीधर । गेंदू ऋषि गुण गेंदरयण ॥ ॥ वंदो ॥ ५ ॥ कुरु ऋषि करुर पणो हण्यो । मुकुंद ऋषि मन आनन्द ॥ वंदो ॥ जुगदेव ऋषि जग रक्षा करे । यह पन्दरह साधू समंद ॥ वंदो ॥ ६ ॥ लीलावती सती लीली संयमें । धर्म की लीला वधाय ॥ वंदो ॥ गुणसुन्दरी गुणसुन्दर भर्या । सुसमाजी सूसं रक्षा रक्षाय ॥ वंदो ॥ ७ ॥ कुशीता लुशील इच्छा तजी । ए चारों राणी शोभाय ॥ वंदो ॥ अनंग सुन्दरी वश अनंग कियो । प्रेम सुंद्री को संयमें प्रेम ॥ वंदो ॥ ८ ॥ प्रद्युन सुंदरी प्रद्युन हण्यो । आनन्दी धर्में आनन्द ॥ वंदो ॥ गोरी गोरव गुणोत्तम ॥ यह नव सतीयों का समंद ॥ वंदो ॥ ९ ॥ सहु मुनि सती गुण गण भर्या । सहू सहू गुण भर पुर ॥ ॥ वंदो ॥ यत्किंचित गुण एकथ्या । पुरन कथन मग दूर ॥ वंदो ॥ १० ॥ सम दम उपशम खम करे । जप तप खप अहो निश ॥ वंदो ॥ अचार विचार उचार ते । शूद्ध है विश्वा वीस ॥ वंदो ॥ ११ ॥ प्रमाद विखवाद सवाद् न । तजे भजे जिन आण ॥ वंदो ॥ गुणरत्ना आदि तप करी । करे कर्म की हाण ॥ वंदो ॥ १२ ॥ स्याद्वाद शेली मधु गिराथी । दे मुनि सत्युपदेश ॥ वंदो ॥ हलु कर्मी सुणीने प्रबोधे । धारी धर्म की रेश ॥ वंदो ॥ १३ ॥ केइ समकित उचरे । केइ लेवे वृत धार ॥ वंदो ॥ केइ वैराग्य पामीने । संयम

ले होवे अणगार ॥ वंदो ॥ १४ ॥ इम घणा जीवने तारता । टालता मिथ्या अन्ध ॥ वंदो॥मालता भूखन्डज परे । प्रकाशे ज्ञान प्रबंध ॥ वंदो ॥ १५ ॥ घणा वर्ष संयम पालीयो । अवसर आयो जाण ॥ वंदो ॥ कश्मिर देश तणे विषे ॥ नवफूल पाटण वखाण ॥ ॥ वंदो ॥ १६ ॥ लोल तोल पर्वत परे ॥ एकान्त स्थानक जोय ॥ वंदो ॥ सहू मुनि अणसण कियो । आति चार अलोय ॥ वंदो ॥ १७ ॥ धर्म ध्याने ध्य.नस्त हुवा । शुक्ल ध्यान इच्छाय ॥ वंदो ॥ जीवित मरण उभय भव । काम भोग नवंछाय ॥ वंदो ॥१८॥ एक मास सलेपणा । आयुष्य पूर्णज थाय ॥ वंदो ॥ ग्रयवेक छट्टाविपे । उपज्या चंद्र ऋषि राय ॥ वंदो ॥ १९ ॥ वीजा मुनि करणी जिसा।पाया उत्तम देवलोक ॥ वं ॥ चन्द्र ऋषि मनुष्य हुइ । विदेह सुं जासी मोक्ष ॥ वं ॥ २० ॥ वीजा ऋषि भव थोडा में । पामसी पद निर्वाण ॥ वं ॥ सती लीलावती तिमही । आयु ढिग अवसर जाण ॥ वं ॥२१॥ सलेपणा अणसण करी । दिन पंदरे जव थाय ॥ वं ॥ आयू पूर्ण छठा ग्रीवेक । चन्द्र ढिग देव पद पाय ॥ वं ॥ २२ ॥ वीजी सतीयों पण इण परे । संथारा कर गइ स्वर्ग ॥ ॥वं॥थोडा भव नर देवना । कर वरसी अपवर्ग ॥वं॥ २३ ॥ श्री शील महात्म रासको ॥ चन्द्र सेण लीलावती चारित्र ॥ वं ॥ संपूर्ण हुवो खण्ड छेः विपे ॥ ढाल चउदह पवित्र ॥

॥ वं ॥ २४ ॥ चउवीसी संत सती तणा ॥ हुवा आत्म कल्याण ॥ वं ॥ अमोल ऋषि
कर वंदना ॥ इच्छा लेवण निर्वाण ॥ वं ॥ २५ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ चन्द्र सेण ऋषि रायजी
। कंखरथ महाराज ॥ लीलावती कुसीता राणी । आदि सहू जन माज ॥ १ ॥ कथा स-
मी कथनी कथी । अधिकार सम भर वेन ॥ प्रणाम पण तिम वृनिया । शुभाशुभ सम जे-
न ॥ २ ॥ पण सहू उत्तम निवड्या ॥ सुधार्या आतम काम॥द्रव्य वेर त्यागने॥किया पाया
शिव सुख धाम ॥ ३ ॥ तिम हूं अतःकर शुद्ध कर । लुली करी प्रणाम ॥ माफी मांगू
सहू थकी । जे शब्द किया निकाम ॥ ४ ॥ ते क्षमजो सहू महात्मा ॥ कृपा करी मुज पर
॥ सेवक जाणी साहोवा । दीजो मुज मुज जर ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १५ मी ॥ जंबू द्विप
प्रसीद्ध प्रमाणे ॥ आं ॥ अहो श्रोता शील महात्म रास को । मारंस विचारो ॥ सुणियों
को कुछ सार येही है । सद्गुण हृदय धारो ॥ १ ॥ अंतर द्रष्टी देखो चन्द्र राजा । और
लीलावती राणी ॥ प्राणांतिक उपसर्ग सह्यापण । न करी वृत में हाणी ॥ २ ॥
उन संत सती का नाम आज लग । जग में सुमुख गवावे ॥
इम हीज आखडी आय खडी रहे । तव नर नारी निभावे ॥ ३ ॥ओ-
र कंखरथ कुसीता आदि । कूसंगत ने प्रभावे ॥ राज गमाया दुःख घणा पाया ॥ सुसंग

त शिव सुख पावे ॥ ४ ॥ तिम कुसंगत हितेच्छु त्यागी । सूसंगत सदा कीजे । तो दो
नों भव सुखिया हो सो । हित शिक्षा चित दीज ॥ ५ ॥ अति लालच कपट किया थी।
धन दत्त श्री दत्त दोइ ॥ दोनों भव में दुःख ते पाया । साथी दार संगोइ ॥ ६ ॥ इम
जाणी दगो लालच त्यागो । निर्मम आर्यता धारो ॥ और सहू कथा मद्बोध थी भरी । सु
ज्ञ चुन ग्रहो सारो ॥ ७ ॥ भेट श्रोता वक्ताने चडावो । निज २ शक्ति प्रमाणो ॥ ज्ञान
धर्म प्रत्याख्यान बधावो ॥ योहीज साचो नाणो ॥ ८ ॥ ❀ ॥ गाथा ॥ एयं खुणाणी णो
सारं । जं न हिंसइ किंचणं ॥ अहिंसा समयं चेव । एतावतं वीयाणीया ॥ १ ॥ ❀ ॥
॥ ढाल । श्री वीर प्रभू निर्वाण के नन्तर । श्वामी सुधर्मा आचर्य ॥ सत्तावीस पाट लग
धर्म सूचाल्या।फिर भस्म ग्रह किया अकार्थ ॥ ९ ॥ सत्य मार्ग दिनो दिन लुपाणो । अ-
संयती अधर्म बढायो ॥ चाँरसो (४७०) सीत्तर वर्ष वीर पीछे । रायवीक्रम जी थायो ॥ १० ॥ सं-
वत तास पन्नरसत (१५३१) एकतीस । दो सहंश्र (२०००) वर्ष हुवा पूरा ॥ अमदाबाद में शाह लोंकाजी ।
शास्त्र पढी हुवा शूरा ॥ ११ ॥ पुनरोधार कियो जिन सासन । लोंका गच्छ थपाणा ॥

❀ अर्थ—ज्ञान प्राप्त करनेका सार येही है की किस भी जीव की कदापी किंचित हिंसा नहीं करनी. ऐसा अहिंसा मय धर्म सर्व मतावलम्बीयों मानते हैं सुय गडा सूत्र अ १ उद्देशा ४ गाथा १०

आगल फिर यती पडिया ढीला । तव लवजी ऋषि प्रगटाणा ॥१२॥ न्याय मार्ग अमोध चलायो । शिष्य सोमजी ऋषि तास ॥ तस्य शिष्य पुज्य प्रभाविक कहानजी । ऋषि कियो रवी ज्यों प्रकाश ॥ १३ ॥ तासु सम्प्रदाय यह विख्याती । हुवा ताराऋषि जी स्वामी । गुजरात देश में धर्म फेलायो । खंभायत सिंघाडो नामी ॥ १४ ॥ काला ऋषि जी तस्य शिष्य दीपता । मालव देशे रहिया ॥ तास शिष्य वक्षूऋषि दीप्या । धनजी ऋषि ने दड़ा ॥ १५ ॥ तस्य जेष्ट शिष्य पुज्य खूबाऋषिजी । क्रिया उत्कृष्टी धारी । चालीस वर्ष लग संयम पाल्यो । महा क्षमा वंत गुण भन्डारी ॥ १६ ॥ तस्य शिष्य गुरुदयाल आर्य भावी । चेना ऋषिजी महाराजा ॥ मुज दिक्षा नन्तर दो मास में । तस सीज्या आतम काजा ॥ १७ ॥ तात संसारी दिक्षा धारी । तपस्वी केवल ऋषिजी ॥ तीन वर्ष रहा ता पासे । फिर ज्ञान काजे तुपिजी ॥ १८ ॥ कवि वेरंद्र पुज्य तिलोक ऋषिजी का । पाटवी शिष्य गुणवन्त ॥ रत्न ऋषिजी चरण ने सेव्या । जे दिक्षा दाता महन्त जी ॥१९॥ कृपा कर मुज ज्ञान पढायो । साज दियो महा उपकारी ॥ तास आश्रय विचरत आ । दाक्षिण देश मझारी ॥ २० ॥ अहमदनगर जिलाके माही । कान्हूर पाठार सुग्रामो अमरचंदजी तांतेड के स्थानके । चतुर्मास रह्या सुख पामो ॥ २१ ॥ कथा तणो ग्रंथ लि-

हां मुज पायो । बांची मन हुलसायो ॥ रसिक उपकारीक बातत्ते जाणी । रास ए ताको बणायो ॥ २२ ॥ पिंगल व्याकरण पूर्ण न जाणू । स्वल्प मति अनुसार ॥ बाल ख्याल सम ए रच्यो।माविश चउ तीर्थ धार ॥२३॥ स्वमत अनुसारथी।बदल्यो समास बहु स्थान ॥ शुद्धी बृद्धी बहूली करी । तिणमें छद्मस्त प्रमाण ॥ २४ ॥ विप्रित विरुद्ध जिन ज्ञान थी । कथाया होय अधिकार ॥ तो मिथ्या दुष्कृत मुज भणी । कहू साखी केवली धार ॥ २५ ॥ षट खण्ड ढाल सत्यासीए । ग्रन्थ ए पूर्ण कीध ॥ श्री गुरु देव प्रशाद से ।हुवा मनोर्थ सिद्ध ॥ २६ ॥ श्री वीर निर्वाण वर्ष चौबीसैं सो । पैंचीस उपर मझारो ॥ विक्रम उन्नीसो पच्चावन में । कार्तिक शुक्ल अष्टमी चन्द्र वारो ॥ २७ ॥ जय जय सदा जैन धर्म की ॥ वक्त श्रोता की सदाइ ॥ ह्रीँ श्रीँ सुख संपदा अमोलख । आनन्द मंगल वरताइ ॥ २८ ॥ ❀ ॥ खण्ड सारांस हरीगीत छंद ॥ जय जय जग रहो सती संतकी । शील भली परे पालीयो ॥ पुण्य प्रवल जग यश जेहनो । विरह विस ने टालीयो ॥ शत्रू जय कर राज लीनो । मुनि उपदेश सुणाइयो ॥ परभव स्वरूप सुणीने भूप ।जग जंजाल छि-टकावीयो ॥ १ ॥ संयम धारीममत्व मारी । कर्म रिपुने हटावीया ॥ स्वर्ग पाया नरहोइते । वरसी शिव सुख चावीया ॥ षट खण्ड मझार अधिकार एला । सारंस संक्षिप्त ए सही॥

धार खेवा पार होवे । जिम चोवीस जीव की भइ ॥ २ ॥ सम दम खम नम यम गृही। रम भम कम गम क्षम करण ॥ अजरामर वर पद पावन । येहीमग असरण सरण ॥ देव अरिहंत गुरु निग्रन्थ । धर्म केवली आज्ञा मेहे । गावे गवावे सुणे सुणावे ते नित्य मंगल लहे ॥ ३ ॥ ❁ ❁ ॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषि जी महाराजके सम्प्रदाय के महंत मुनिश्री
खूबाऋषि जी महाराज के शिष्य वर्य आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी
महाराज के शिष्य वर्य बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलख
ऋषि जी महाराज रचित शील महात्म श्री
चन्द्र सेण लीलावती चरीत्र समाप्त ॥ ❁ ॥

चन्द्र सेन लीलावती चरित्र समाप्त